

भूमिका ।

व्याकरण कौमुदी की रचना द्वारा महामहोपाध्याय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विद्यार्थियों का बड़ा ही उपकार किया है। इसके द्वारा सुगम रीति से संस्कृत सीखने में उन्हें बड़ी सहायता मिलती है। यह पुस्तक भारत के प्रत्येक प्रान्तों में प्रचलित है। बंगला में इसके अनेक प्रकार के संस्करण निकल चुके हैं जिससे हाई स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थी महान् लाभ उठा रहे हैं। हिन्दी में भी इसके दो तीन प्रकार के संस्करण अवश्य निकले हैं, पर उनसे युनिवर्सिटी के परीक्षार्थियों को सभी आवश्यकतायें पूरी नहीं होती तथा मूल्य भी अधिक रखा गया है। विद्यार्थियों को इन्हीं असुविधाओं की पूर्ति के विचार से मैंने सुबोध व्याकरण कौमुदी नामक यह नवीन संस्करण प्रकाशित किया है। शब्दरूप में सर्वत्र अंग्रेजी अर्थ सहित शब्दों की सूचियाँ दी गयी हैं। धातुरूप में भी इसी प्रकार अंग्रेजी-अर्थ सहित धातुओं की बृहत् सूचियाँ दे दी गयी हैं। धातुरूप में लुङ् तथा लिट् लकार बड़े ही कठिन हैं अतएव लुङ् लकार ७ भागों में और लिट् दो भागों में विभक्त करके समझाया गया है जिससे विद्यार्थियों के लिये बड़ा ही सरल और सुबोध हो गया है। ऐसे ही विषय को सरल व सुबोध करने के लिये अनेक स्थानों के क्रम में परिवर्तन कर दिया गया है। शीघ्र २ में क्रियाविशेषण Degree of comparison आदि अनेक विषय बड़ा दिये गये हैं। प्रायः प्रत्येक स्थलों में पाणिनि के संस्कृत-सुत्र भी दे दिये गये हैं जिससे विद्यार्थी तीव्र कण्ठस्थ कर सकें। सर्वत्र शीघ्र २ में अभ्यास दिये गये हैं; इनके मनन व अभ्यास से विषय के पूर्णतया बोध होने में

विद्यार्थियों को बड़ी ही सहायता मिलेगी। मन्त में के सुभीते के लिये अक्षर के क्रमानुसार अंग्रेजी के रूप सहित प्रत्येक धातुओं की एक सूची दे दी गई इसके उपरान्त अनुवाद की सुविधा के लिये अंग्रेजी धातुओं की सूची में Alphabets (अक्षरों) के रखी है। विषय को सरल व सुबोध करने के लिये साध्य पूर्ण प्रयत्न किया है, पर मैं इसमें कहाँ तक हूँ, इसका निर्णय सहृदय पाठक ही कर सकते हैं एवं उक्त परिचित जी की संस्कृत व्याकरण की उक्त सुबोध संस्कृत व्याकरण नामक नवीन संस्करण किया था इसे शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने ऐसा समझा कि विहार में तो इसका सर्वत्र प्रचार हुआ। अतिरिक्त बंगाल, यू० पी० और सी० पी० की कमिटियों ने भी इसे अपने यहाँ टेक्स्ट बुक रखे; उल्साहित किया है। इसके निमित्त मैं सधों का हूँ। सुबोध संस्कृत व्याकरण का इस प्रकार भाव पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षा कर्मचारी इस सुबोध व्याकरण कौमुदी को अपनायेंगे, क्योंकि मैंने इसे सुबोध संस्कृत व्याकरण अधिक उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है, एवं इससे विद्यार्थियों का कुछ उपकार हुआ तो मैं अशकल समझूँगा।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिये इसके चारों अलग और एक साथ भी प्रकाशित किये जा रहे हैं प्रकार की सुविधा हो उसी प्रकार लाभ उठाने की

आप का विनीत-

रामसुन्दर शर्मा।

(सुबोध व्याकरण कौमुदी)

Pandit Ramsundar Sharma Kavyatirtha, H
t Zila School, Ranchi.

This book on Sanskrit grammar is not a mere Hi
ation of Vidyasagar's Kaumudi but, Pandit Ra
Sharma has made various improvements on :
Only the fourth part of Vidyasagar's Kaum
ned Sutras but, in the present publication the aut
en Sanskrit Sutras in the 3 preceding parts as we
en in the fourth part Panini's aphorisms have at plac
given side by side with Vidyasagar's Sutras. Th
feature of the publication renders it highly valuat
vanced students. The expositions of the Sutras a
concise and accurate. A large number of exercis
rection and for translations from English and Hin
anskrit and vice versa, makes the work immense
le for students. This excellent publication is pe
tly fit to be adopted as a text-book in Schools at
es. The equipment the student will get from i
s sure to be thorough and efficient.

Sd. Kashi Prasad Shastri,

KAVYATIRTHA, M. A., B. L., M. O. L.

(Examiner of Sanskrit Title Examinations etc.)

"Subodh Vyakaran Kaumudi" has been very ably
by Pandit Ramsundar Sharma, Kavyatirtha of
L. The general arrangement of the subject matter is
story. The author has taken great pains in carefully
this book which is sure to lay under immense
son the whole of the student world.

are are at every stage, excellent groups of exercises
, which is a new feature of this edition. They are
selected and arranged that they will be of great
the students in mastering the intricacies of Sanskrit

The chapter dealing with समास, वदित and कृदन्त are so complete that any student who knows them thoroughly will scarcely require the study of any other grammar for his ordinary purposes.

This attempt of the author is very commendable by issuing this work. He has removed the long-felt want of good Sanskrit grammar in Hindi. No doubt, the present book will not only serve the purposes of High School students but may, with advantages, be consulted also by junior students in colleges.

In my opinion the author has eminently succeeded in his object.

Sd. Ram Pratap Shastri,

VIDYANIDHI, VIDYABHUSHAN,

Senior Professor of Sanskrit

Govt. Morris College, Nagpur (C. P.)

प्रातःस्मरणीय प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने व्याकरण कौमुदी रचकर छात्रों का बड़ा ही उपकार किया, पर साथ ही साथ उन के इस उपकार से कुछेक विद्यार्थियों का कुछ अपकार भी हो जाया करता है। ऊपर की कक्षाओं में व्याकरण-कौमुदी के सूत्रों का ज्ञान नितान्त निरर्थक हो जाता है और परिणाम यह होता है कि बहुतेरे छात्र व्याकरण-कौमुदी के सूत्रों को भुला पाणिनि के सूत्रों के उल्लेख में पढ़ संस्कृत के अध्ययन से हताश हो जाते हैं। यदि आरम्भ काल ही में ये होनहार बालक पाणिनि के सूत्रों से कुछ परिचित हो जाते तो शायद उनकी दुष्प्राप्ति परित्यक्त रूप में नहीं करना पड़ता। बड़े हर्ष की बात है कि प० रामसुन्दर शर्मा जी ने छात्रों की इस असुविधा को बड़े ही सरल तरीके से दूर किया है। बहुत से छात्र संस्कृत केवल मैट्रिक परीक्षा आसानी से पास कर लेने के विचार से ही पढ़ते हैं। उनके लिये तो व्याकरण-कौमुदी का अध्ययन ही अर्थरहित है। परन्तु जो छात्र ऊपर भी संस्कृत पढ़ना तथा श्रद्धा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिये आरम्भ-

मद्विषि पाणिनि के सूत्रों का अन्वयन अतिरूप है । इससे ही ने व्याकरण कीसूरी का अन्वयन देना अपना किया है । व्याकरण पूर्ण प्रतिभावाली साधु गुरु के मुख का प्र उदा । अपने स्वयंस्व विद्या-सागर रूप सूत्रों के समक्ष ही से पाणिनि के द्विषे गने हैं जिनमें सब द्विषी की साथ पहुँचे । और भी, इनमें अन्वयन कार्य में भी सुविधा होती । जो निम्नलिखित रूप वाक्य जिनमें अन्वय भाग है, उन्हें व्याकरण कीसूरी पाने या सूत्र पहुँची पान्नु जो वैवाक्यण है उन्हें मद्विषि पाणिनि करने को तैवार हा मिलेगी ।

विशेषता इस पुस्तक की अन्वयों की भरमार है, जहाँ अन्वयम भरे पड़े हैं । इन्द्र-आत्मन्नी या धानु-रूपन्नी जहाँ । कीजिये, वहीं जैसे जैसे शब्द तथा धानुओं की सभी लिखित अन्वयों सहित लिखी मिलेगी । इसके विवाच अन्वयों में भी किसी प्रकार की कमी नहीं जिनमें साधुओं को अपने अन्वयों ज्ञान को प्रयोग में देखने या जाने का अन्वय सुयोग ।

साथ इस संस्करण की एक और सूची यह है कि अन्वय इस के अन्त में धानु पाठ और शब्द-कोष भी जोड़ रखा है । द्विषियों को अपने संस्कृत-भाष्यन काज में अन्वयान्वय पुस्तकों से न खटकने पाये ।

साधा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत प्रेमी छात्र-वर्ग इस संस्करण को अपनाकर उक्त पवित्रतरी के परिश्रम रहेगे ।

साहित्याचार्य्यं १० परमेश्वर प्रसाद शर्मा

एम. ए., पी. एल.

Senior Sanskrit Professor.

सूचीपत्र ।

सूचीपत्र

प्रथम अध्याय ।

पृष्ठ	प्रकरण	पृष्ठ
१	व्यञ्जनान्त शब्दः—	
३	पुंल्लिङ्ग और स्त्रील्लिङ्ग	११
४	क्रीवल्लिङ्ग	८०
६	सर्व्यनाम ...	८६
६	सर्व्यनाम से उत्पन्न	
१२	क्रियाविशेषण	६६
१७	संख्यावाचक	६६
२१	क्रियाविशेषण	१०३
२६	Degree of comparison	१०६
३२	अभ्यय...	१०८
३५	उपसर्ग	१०८
३६	क्रियाविशेषण	११२
४०	संयोजकादि	११६
४२	विरमयादिषोध्यक	११७
	अतिरिक्त अभ्यय	११८

द्वितीय अध्याय ।

१२१	स्वादि...	१२१
१२२	तनादि	१२३
	क्यादि	१२६
	रधादि, भदादि, हादि सन्धि	
१२५	के विशेष नियम	१५६
१२६	रधादि	१६०
१२६	भदादि	१६३
१३१	हादि...	१७१
१४२	अभ्यस्त के नियम	१७६
१४६	इ (इट्) विधान	१८६
	लुट्, लृट्, लृट्	१८८

समीन्द्र	...	११२	१ इ प्रकार	...	१११
न्द्रः—			२ म प्रकार	...	११३
Reduplicative	...	११५	पितृजन-प्रकरण	...	२१७
Periphrastic	...	२०३	मनस्य-प्रकरण	...	२२०
सुटः—			गङ्गा-प्रकरण	...	२२५
१ म प्रकार	...	२०७	साम घातु	...	२२६
२ व प्रकार	...	२०९	परस्मैैत् विधान	...	२३१
३ व प्रकार	...	२०८	आत्मनेपत् विधान	...	२३२
४ र्थ प्रकार	...	२१०	कर्मवाच्य सौ मात्वात्	...	२५०
५ म प्रकार	...	२१०	लकारार्थ-निर्णय	...	२४४
			तृतीय अध्याय ।		
हृत्-प्रकरण	...	२४१	द्विच विधि	...	३११
ठणादि प्रत्ययान्त शब्द	...	३०१	सुट् प्रत्याहार	...	३१२
			चतुर्थ अध्याय ।		
विभक्ति निर्णय	...	३१३	स्त्री-प्रत्यय	...	४१५
प्रथमा	...	३१३	समास	४०६
द्वितीया	...	३१४	भावपीभाव	...	४०७
तृतीया	...	३१५	तत्पुरुष	...	४१२
चतुर्थी	...	३१६	कर्मधारय	...	४२२
पञ्चमी	...	३१८	द्विगु	४२५
षष्ठी	...	३२०	बहुव्रीहि	...	४३०
सप्तमी	...	३२५	इन्द्र...	...	४३८
कारक	३२६	अलुक्...	...	४४६
कर्ता	३२८	मध्यपदलोपी	...	४५०
कर्म	३३०	सर्वसमास साधारणविधि	...	४५१
करण...	...	३३३	पूर्वनिपात	...	४५६
सम्प्रदान	...	३३३	सर्व समास शेष	...	४५८
अपादान	...	३३४	लिङ्गानुशासन	...	४६२
अधिकरण	...	३३६	घातुकोष	...	४७०
संज्ञित	३३६	English Sanskrit Verbs	...	५०६

है। स्पर्शपूर्ण दो प्रकार के हैं, ह्रस्व (Short) और दीर्घ (Long)। म उ ऋ ऌ, ये पाँच ह्रस्व स्वर हैं और मा ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ, ये साठ दीर्घ स्वर हैं। लृ का दीर्घ नहीं होता।

अक्षरार्ण—Consonants.

क ग ग घ ङ, न छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,
प फ ब म म, य र ल व, श ष स ह (') (:), ये ३१
अक्षरार्ण हैं ।

(१) वादोमात्रगताः—क से म तक २१ वर्णों को स्पर्श वर्ण कहते हैं क्योंकि जिहा के अग्र, मध्य और मूल इत्यादि भागों को स्पर्श करने से इनका उच्चारण होता है। स्पर्श वर्ण पाँच भागों में विभक्त हैं; वर्य—क ग ग घ ङ, वर्य—न छ ज झ ञ, टर्ण—ट ठ ड ढ ण, टर्ण—त थ द ध न, वर्य—प फ ब म म ।

(२) व र ल वा अन्तःस्थाः—स्पर्श और ऊष्मवर्णों के बीच में रहने से व र ल व को अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं ।

(३) श ष स हा ऊष्मालः—श ष स ह, इनके उच्चारण में अधिक ऊष्मा (वायु) बाहर निकलती है, इसलिये इन्हें ऊष्म वर्ण कहते हैं ।

(४) (') अनुस्वार और (:) विसर्ग को अयोगवाह कहते हैं, क्योंकि न् और म् के स्थान में अनुस्वार तथा र् और स् के स्थान में विसर्ग होने के कारण वाणिनीय ध्याकरण में इसका उल्लेख (योग) नहीं है तथापि प्रयोग में इसका कार्य (बहन) करता है ।

वर्ण के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श ष स को अषोषवर्ण

कू और व मिलकर ख होता है इसलिये यह संयुक्त वर्ण में गिना जाता है ।

भीर वर्णों के, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण तथा षष्ठ व वर्णों के उच्चारण करने हैं। वर्णों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्णों को अल्पजन तथा द्वितीय और चतुर्थवर्णों को महाजन कहते हैं।

वर्णों का उच्चारण-स्थान ।

१ मज्जुविभाष्यनीयानां कण्ठः—अ धा क ख ग घ ङ ह और (ः) विसर्ग का उच्चारण कण्ठ से होता है; इसलिये इन्हें कण्ठवर्ण (Guttural) कहते हैं।

२ इत्युच्यन्तान्तलु—इ ई ए उ ङ ञ झ ञ्झ और स का उच्चारणस्थान तालु है; इसलिये इन्हें तालुवर्ण (Palatal) कहते हैं।

३ शृङ्गवर्णो मूर्धा—श्रु श्रु ट ठ ड ढ ण र और य का उच्चारणस्थान मूर्धा है; इसलिये इन्हें मूर्धन्य (Cerebral) कहते हैं।

४ शृङ्गवर्णानां दन्ताः—लृ ल ध द ध न ल और स का उच्चारणस्थान दन्त है; इसलिये इन्हें दन्तवर्ण (Dental) कहते हैं।

५ उक्थगानीयातामोहो—उ ऊ ष फ य भ और म का उच्चारणस्थान ओष्ठ है; इसलिये इन्हें ओष्ठवर्ण (Labial) कहते हैं।

६ एदोतोः कण्ठात्—प और पे के उच्चारणस्थान कण्ठ और तालु है; इसलिये इन्हें कण्ठात्तलुवर्ण (Palato-guttural) कहते हैं।

७ ओदीतोः कण्ठीष्म्—ओ और ओ के उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठीष्मवर्ण (Labio-guttural) कहते हैं।

८. अकारस्य दन्तोष्म्—अ के उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ

है, इसलिये इसे **वर्तमानिक** (Present) कहते हैं।
 १. **वर्तमानिक**—(१) संस्कृत की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

२. **वर्तमानिक**—(२) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

३. **वर्तमानिक**—(३) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

वर्तमानिक ।

१. **वर्तमानिक**—(१) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

२. **वर्तमानिक**—(२) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

३. **वर्तमानिक**—(३) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

४. **वर्तमानिक**—(४) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

५. **वर्तमानिक**—(५) वर्तमानिक भाषिका की वर्तमानिक भाषिका है, इसलिये इसे वर्तमानिक (Present) भी कहते हैं।

हे उन्हें विभक्ति (Inflections) कहते हैं ।

३- धातु के परे लप्, य, ल्या इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें क्त (Verbal suffixes) कहते हैं ।

४- लटि-प्रातिपदिक के परे अ, इ, य इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें लटि (Nominal suffixes) कहते हैं ।

५- स्त्रीप्रत्यय-स्त्रीलिङ्ग में भा, ई इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें स्त्रीप्रत्यय (Feminine suffixes) कहते हैं ।

६- धातु-धातु के परे मिच्, मन् इत्यादि तथा प्रातिपदिक के परे अ, कास्य इत्यादि जो सब प्रत्यय होते हैं उन्हें धातु-प्रत्यय (Parts of roots) कहते हैं ।

७- ११-“सुमिहन्तं पदम्”—धातु और प्रातिपदिक विभक्तियुक्त होने से ११ (Inflected words) कहलाते हैं ।

८- भाषा-प्रकृति और प्रत्यय के रूपपरिवर्तन को भाषा कहते हैं । यथा, वृद्ध शब्द के स्थान में ज्य, स्था धातु के स्थान में लिप्, अन् विभक्ति के स्थान में उः इत्यादि ।

९- गुण-“अदेह् गुणः”—स्वर के गुण से यह समझा जाता है कि इ ई के स्थान में ए, उ ऊ के स्थान में ओ, अ ऌ के स्थान में अर्, लृ के स्थान में अल् होता है ।

१०- वृद्धि-“वृद्धिरादेव्”—स्वरा की वृद्धि कहने से यह समझा जाता है कि अ के स्थान में आ, इ ई के स्थान में ऐ, उ ऊ के स्थान में औ, और ऌ ड के स्थान में आर् होता है ।

११- लघु व गुरु-“ह्रस्वं लघुः संयोगे गुरुः दीर्घञ्”—ह्रस्व स्वर को लघु और दीर्घ स्वर को गुरु कहते हैं । संयुक्त वर्ण के पूर्व ह्रस्व स्वर को भी गुरु कहते हैं ।

१२- उपसर्ग-“उपसर्गाः क्रियायोगे”—क्रिया के साथ योग होने से अ, अप, अय, उय, भा, परा, नि, वि, परि, प्रति, भति, अधि,

अपि, अग्नि, सु, अनु, उन् (उद्), सम्, निर्, तुर, इन २० वृत्तों को उपसर्ग (Prepositional prefixes) कहते हैं ।

९ वर्ण—“तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्”—समान स्थान पर प्रयत्न द्वारा उच्चारण किये हुए वर्णों की वर्ण गणना होती है यथा, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ इत्यादि । पर एक स्थान उच्चारण किये जाने के कारण स्वरवर्ण और व्यञ्जनवर्ण सवर्णता नहीं होती । स्वरवर्ण की स्वरवर्ण के साथ और व्यञ्जनवर्ण की व्यञ्जनवर्ण के साथ सवर्णता होती है ।

१० टि—“अचोऽन्त्यादि टि”—शब्द के अन्त्य स्वर से ले आने के वर्णों की टि गणना होती है ।

११ अर्था—शब्द के अन्त्य वर्ण के पूर्व वर्ण को अर्था कहते हैं ।

सन्धि-प्रकरण ।

दो वर्ण परस्पर निकट होने से मिल जाते हैं । इसी मिलने को या मेल से जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं । सन्धि के ३ भेद हैं ।

(१) स्वरसन्धि—स्वरवर्ण के साथ स्वरवर्ण की जो सन्धि होती है उसे स्वरसन्धि कहते हैं ।

(२) व्यञ्जनसन्धि—व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण या व्यञ्जनवर्ण की जो सन्धि होती है उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं ।

(३) विसर्गसन्धि—विसर्ग के साथ स्वरवर्ण या व्यञ्जनवर्ण की जो सन्धि होती है उसे विसर्गसन्धि कहते हैं ।

स्वरसन्धि ।

(१) अक्षर वर्णों दीर्घः—दो सवर्ण (समान स्वर ह्रस्व व दीर्घ) इकट्ठे होने से दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं । यथा

(१) शश + अङ्कः = शशाङ्कः, कुश + आसनम् = कुशासनम्,
 + अर्णवः = इयार्णवः, विद्या + आलयः = विद्यालयः ।
 गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः, क्षिति + ईशः = क्षितीशः,
 गी + इच्छा = महतीच्छा, पृथ्वी + ईश्वरः = पृथ्वीश्वरः ।
 विधु + उदयः = विधूदयः, लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः,
 म् + उदयः = स्वयम्भूदयः, मू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्
 पितृ + मृणम् = पितृणम् । छातृ + ऋद्धिः = छातृद्धिः ।

शकन्धादियु परकथं घाच्यं । तच्च टैः—शकन्धु इत
 ररूप भादेश होता है । पूर्व शब्द में टि का लोप होता है ।
 -अन्धुः=शकन्धुः, कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः, मनस् + ईषा =
 - ईषा = हल्लीषा, लाङ्गल + ईषा = लाङ्गलीषा, कुल + अटाः
 + अजलिः = पतजलिः, सार + अत्रः = सारत्रः, सं
 = सीमन्ता, मार्त + अण्डः = मार्तण्डः ।

२) आद्गुणः—यदि ह्रस्व वा दीर्घ अ के परे ह्रस्व य
 स्र आवे तो अ इ मिल कर ए, अ उ मिल कर ओ ।
 लकर अर् हो जाते हैं । यथा, (१) देव + इन्द्रः =
 † ईशः = गणेशः, महा + इन्द्रः = महेन्द्रः, रमा +
 । (२) नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम्, एक+ऊर्जा
 तेनविशतिः, गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्, महा +
 र्मिः । (३) देव + ऋषिः=देवर्षिः, हिम + ऋतुः=र्
 - ऋषिः = महर्षिः, देवता + ऋषभः = देवतर्षभः ।
 ३. B. १ स्वादीरेरिणोः—ए के परे ईर और ईरि
 द्व होती है । यथा, स्व + ईरः = स्वैरः । स्व + ई
 गी । स्वैरं, स्वैरी ।

अशानृद्दिन्यामुपसंख्यानम्—अक्ष के परे ऊहिनी

दोनों मिल कर औ (वृद्धि) होता है । यथा, अज्ञ + ऊर्हिता = अज्ञौहिणी ।

३ प्राद्वहोशोर्ष्यैथ्येणु—अ के परे ऊढ, ऊढ, ऊढि रहे तां दोनों मिलकर औ (वृद्धि) होता है और एण या एण्य परे रहने से ऐ होता है । यथा, अ + ऊढः = प्राद्वः, अ + ऊढः = प्राद्वः, अ + ऊढि = प्राद्विः, अ + एणः = प्राैणः, अ + एण्यः = प्राैण्यः ।

४ प्रवत्सरकम्बलवसनार्णदशानामृणे—अ, वत्सर, कम्बल, वसन ऋण और दश के परे ऋण शब्द हो तो अ और ऋ मिल कर आर् होता है । यथा, अ + ऋणम् = प्रार्णम्, वत्सर + ऋणम् = वत्सरार्णम्, कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम् इत्यादि ।

५ ऋते च तृतीयासमासे—अकार या आकार के परे ऋत शब्द के ऋ रहने से तृतीया सत्पुरुष समान होने पर दोनों मिल कर आर् होता है । यथा, शीत+ऋतः = शीतार्तः । पर तृतीय समास भिन्न—परम + ऋतः = परमर्तः ।

६ उपसर्गावृत्तिधातौ—यदि उपसर्ग के अ या आ के परे धातु फी ऋ हो तो दोनों मिल कर आर् (वृद्धि) होता है । यथा, अप + ऋच्छति = अपाच्छति ।

(३) वृद्धिरेषि—ह्रस्व या दीर्घ अ के परे ए, ऐ, ओ, औ आवे तो अ ए या अ ऐ मिलकर ऐ तथा अ ओ या अ औ मिलकर औ हो जाते हैं । यथा, (१) एक + एकम् = एकैकम्, मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्, सदा + एव = सदैव, महा + ऐरावतः = महैरावतः । (२) जल + ओघः = जलोघः, चित्त + औदार्यम् = चित्तौदार्यम्, महा + औपधिः = महौपधिः, महा + औदार्यम् = महौदार्यम् ।

१ ओत्थोच्छ्रयोः समासे वा—अकार या आकार के परे धोतु या धोष्ठ हो और समास हो तो अकार या आकार का

विकल्प से श्लेष होता है । यथा, स्पूल + धोतुः = स्पूलोतुः , स्पूलोतुः (मोटी यिल्ली) ; विम्ब + ओष्ठः = विम्बोष्ठः, विम्बोष्ठः । समास नहीं होने से नहीं होता । यथा, तव + ओष्ठः = तवोष्ठः ।

२ एङि पररूपम्—उपसर्ग के अकार या आकार के परे (एष् और इ मित्र) धातु का ए या ओ रहे तो अ या आ का श्लेष होता है अर्थात् पररूप एकादेश होता है । यथा, प्र + एष्यति = प्रेष्यति, वप + श्लोषति = वश्लोषति । पर उप + एषते = उपेषते, भव + एति = भवैति; (एत्ये-धत्सुद्सु) ।

३ एवे चानियोगे—अकार के परे एव हो और अनियोग अर्थ हो तो दोनों मिल कर ए होता है । यथा, अय + एव = अयेव । नियोग अर्थ में—अयेव गच्छ ।

४ ओमाङोश्च—अकार के परे ओम् या आष् (उपसर्ग) रहे तो अ का श्लेष होता है । यथा, शिव + एदि (आ + इदि) = शिवेदि, शिवाय + ओम् नमः = शिवायोन्नमः ।

(४) इको यणचि—ह्रस्व या दीर्घ इ उ और ऋ के परे कोई भिन्न स्वर (इ के परे इ ई को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर तथा उ के परे उ ऊ को और ऋ के परे ऋ को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर) आवे तो इ का ए, उ का ए और ऋ का ए हो जाता है । यथा, (१) यदि + अपि = यद्यपि, अमि + उदयः = अम्युदयः, नदी + अम्यु = नद्यम्यु, देवी + आगता = देव्यागता । (२) अनु + अयः = अन्वयः, सु + आगतम् = स्वागतम्, अनु + एषणम् = अन्वेषणम्, सरयू + अम्यु = सरय्वम्यु, यधू + ऐश्वर्यम् = यध्वैश्वर्यम् । (३) पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः, पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा ।

(५) एनोऽयवायावः—स्वर घर्ष परे रहने से ए ऐ ओ औ के स्थान में क्रम से अष्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं । यथा,

(१) शी + भनम् = शयनम्, नं + जनम् = नयनम् । (२) विनी + भकः = विनायकः, सञ्जी + भकः = सञ्जायकः । (३) भो + भनम् = भयनम्, पो + भनः = पवनः । (४) पी + भनः = पायकः, भी + उकः = भायुकः ।

१ लोपःशाक्यस्य-पदान्त ए या ओ ऐ औ के स्थान में होने का अच्, अय्, भाय्, भाय्, के य् और ष् का विकल्प से लोप होता है । यथा, सखे + भागच्छ = सख भागच्छ, सखयागच्छ; तै एकदा = त एकदा, तयैकदा । प्रभो + भागच्छ = प्रभ भागच्छ; प्रभयागच्छ; प्रभो + एदि = प्रभ एदि, प्रभवेदि । श्रियै + अर्धः = श्रिया अर्धः, श्रियायर्धः । तौ + ईश्वरी = ता ईश्वरी, ताव ईश्वरी; विधौ + उदिते = विधा उदिते, विधाबुदिते ।

२ वान्तो वि प्रत्यये—ओ और औ के परे ऐसा प्रत्यय आ जिस के आदि में य हो तो क्रम से अच् और आच् हो जाता है । यथा, गो + यम् = गव्यम् (milk); नौ + यम् = नाव्यम् ।

मार्ग परिमाण बोध होने से गो + दूतिः = गव्यूतिः (घोष) होता है, अन्यत्र गोयूतिः (घीलों का एक जोड़ा) ।

गोरवह् स्फोटयन्तस्य—स्वर घर्षण परे हो तो 'गो' पद के ओ के विकल्प से अच् होता है । यथा, गो + ईशः = गवेशः, गवीशः पर इन्द्र और अक्ष शब्द परे होने से नित्य अच् होता है । यथा गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः, गो + अक्षः = गवाक्षः (window) ।

४ एष्ः पशन्तादचि—पदान्त ए या ओ के परे अ मात्रे तो एष् का लोप हो जाता है और अ के स्थान में एक ऽ ऐसा विकल्प रहता है । यथा, सखे + अर्षय = सखेऽर्षय, प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण ।

(६) निम्न लिखित पदों में समिध नहीं होती—

(क) निपात एकाग्रताष्—भोकारान्त तथा एक स्वर था

अव्यय के साथ उसके परे रहने वाले स्वरों की सन्धि नहीं होती । यथा, अहो + अच्युत = अहो अच्युत, आ + एवम् = आ एवम् ।

पर सीमा, व्याप्ति या ईषदर्थ बोध होने से या क्रिया के साथ योग होने से आ अव्यय की सन्धि होती है । यथा, सीमा-आ + अध्ययनात् = आध्ययनात् । व्याप्त-आ + एकदेशात् = एकदेशात् । ईषदर्थ-आ + आलोचितम् = आलोचितम् । क्रिया-योगे—आ + इहि = एहि ।

(ख) प्लुतप्रवृत्त्या अचि निस्थम् । ईषदेद्द्विवचनं प्रथमम्— प्लुत स्वर तथा द्विवचनान्त ई ऊ और ए के परे कोई स्वर आवे तो सन्धि नहीं होती । यथा, एहि हृष्ये इ, अत्र गौश्ररति, कवी + इमौ = कवी इमौ, साधू + इमौ = साधू इमौ, विद्ये + इमे = विद्ये इमे ।

(ग) अदधोमात्-अदस् शब्द के ईकारान्त और ऊकारान्त पदों की सन्धि नहीं होती । यथा, अमी+अश्वाः=अमी+अश्वाः, अम् + अर्भकौ = अम् अर्भकौ ।

अतिरिक्त ।

पर + अशः = परीशः, अन्य + अन्यम् = अन्योन्यम्, किमु + उक्तम् = किमुक्तम्, किमु उक्तम् ; सप्त + श्रुयोगाम् = सप्तश्रुयोगाम्, सप्त श्रुयोगाम् ; चमी + अत्र = चकिभत्र, चक्रुपत्र; गो + अप्रम् = गोऽप्रम्, गो अपम्, गवाप्रम् ।

Exercise 1

1. Join the following words:—अत्र + आसीत्, धी + ईशः, भासु + उदयः, साधु + ऊचुः, कर्तुं + आहुः, उप + इन्द्रः, हित + उपदेशः, महा + कर्षिः, प्र + कल्पति, सा + एव, प्र + एजते, उप + एति, विम्ब + भोष्ट, मनस् + ईषा, इति + आह, सप्त + कर्षयोगाम्, विष्णो + ए, गो +

N. B. १. श् च युक्त हो तो ऐसा नहीं होता । यथा, उत् + श्चोतति = उत्श्चोतति ।

२ शाल्लोपि—पदान्त त् या द्वा के परे श हो तो वैयाकरण लोग दोनों ही पद सिद्ध करते हैं । यथा, महत् + शकटम् = महच्छकटम्, महत्शकटम्, तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्, तच् शरीरम् ।

३ ऋयो होन्यतरस्याम्—पदान्त त् या द्वा के परे ह् हो तो त् के स्थान में द्वा और ह् के स्थान में ध् होता है । यथा, उत् + इतः = उद्धतः, विपद् + हेतुः = विपद्धेतुः । पर ऐसे स्थान में वैयाकरण लोग दो पद भी सिद्ध करते हैं । यथा, उत् + हरणम् = उद्धरणम्, उद्दहरणम्, तद् + हेयम् = तद्धेयम्, तद्दहेयम् ।

सातुनासिक वर्ण को छोड़ कर वर्ण के किसी वर्ग से परे ह तो उस वर्ण के स्थान में निजवर्ग का तृतीय वर्ण और ह् के स्थान में विकल्प से उसी वर्ण का चतुर्थ वर्ण हो जाता है । यथा, वाक् + हरिः = वाग्घरिः वाग् हरिः ।

४ पदान्त न् से परे श् हो तो न् का ञ् और श् का विकल्प से छ् होता है । यथा, महान् + शब्दः = महाऽछब्दः महाञ् शब्दः ।

५ चवर्ग के परे न् हो तो न् के स्थान में ञ् होता है । यथा, याच् + ना = याच्ञा, यञ् + नः = यञः ।

(२) घृणा ष्टु—स् या त्वर्ग के साथ प् या ट्वर्ग का योग होने से स् के स्थान में प् और त्वर्ग के स्थान ट्वर्ग होता है ।

१—त् और द्वा के स्थान में ट् द्वा पर रहने से ट् तथा ङ् द्वा परे रहने से ङ् होता है । यथा, तद् + टीका = त्ठीका, एतद् + टक्कुरः = एतद्दक्कुरः, उत् + डीनः = उद्दीनः, एतद् + टका = एतद्दका ।

२—ङ् या द्वा के परे रहने से न् के स्थान में ण् होता है ।

यथा, महान् + डामरः = महाण्डामरः, मथान् + दुण्डति
मथाण्डुण्डति ।

३-प् के परे त् के स्थान में द् और घ् के स्थान में ट् होता
है । यथा, आकृप् + तः = आकृष्टः, यप् + घः = यष्टः ।

(३) तोलि—ल् परे रहने से त् दु (तवर्ग) के स्थान में
और न् के स्थान में अनुस्वार सहित ल् होता है । यथा,
चूहत् + ललाटम् = चूहल्ललाटम्, पतद् + लोलोद्यानम् = पतर्ल्लो-
द्यानम्, महान् + लामः = महाल्लामः ।

(४) ष्मोहस्वादनि ङमु नित्यम्—यदि पदान्त न् के पूर्व में
ह्रस्व स्वर और परे कोई स्वर हो तो न् का द्वित्व हो जाता
है । यथा, धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः, हसन् + आगतः =
हसन्नागतः । दीर्घ स्वर के परे नहीं होता । यथा, महान् +
आग्रहः = महानाग्रहः ।

(५) नरुच्यप्रशान्—पदान्त न् के स्थान में च् छ् परे रहने
से अनुस्वार और श्, द्, ट् परे रहने से अनुस्वार और प्
तथा त् थ् परे रहने से अनुस्वार और स् होते हैं । यथा,
पश्यन् + चकितः = पश्यश्चकितः, चलन् + टिट्ठिमिः = चल-
टिट्ठिमिः, पतन् + तरुः = पतंस्तरुः ।

(६) नदवापदान्तस्य कलि—वर्गीय वर्ण परे रहने से पद के
मध्य में रहने वाले न् और म् के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम
वर्ण हो जाता है और ऊष्मवर्ण रहने से अनुस्वार होता
है । यथा, आशन् + का = आशंका, गम् + ता = गन्ता, दन् +
शनम् = दंशनम्, रम् + स्यते = रंस्यते । पर सम् + राद् =
सम्राट् होता है ।

(७) मोऽनुसातः—अन्तःस्थ या ऊष्मवर्ण परे रहने से पदान्त
म् का अनुस्वार तथा स्पर्शवर्ण परे रहने से अनुस्वार या म् के

तो घर्ण रहे उसी का पञ्चम घर्ण होता है । यथा, सत्वरम्
 घति = सत्वरं घावति, सत्वरम्घावति; सम् + शयः
 शयः, धनम् + ददाति = धनं ददाति, धनन्ददाति ।

क) यदि म् के परे य् य् ल् हो तो म् का अनुस्वार सहित
 ल् हो जाता है ।

८) ऐ च—ह्रस्व स्वर से परे छ् हो तो उसे च् सहित छ्
 जाता है और दीर्घ स्वर से परे हो तो थिकल्प से होता है;
 मा या मा के परे अयश्च छ् होता है । यथा, परि + छदः=
 उदः, वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया, मा+छादयति=माच्छादयति,
 छिदत् = माच्छिदत्, लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया,
 छाया ।

९) उः स्यास्तम्भोः पूर्वस्य—उत् उपसर्ग के परे स्या और
 धातु के स् का लोप होता है । यथा, उत् + स्थानम् =
 १म्, उत् + स्तम्भनम् = उत्तम्भनम् ।

१०) कृत्वाद्यन्ते—स्वरघर्ण, घर्ण का तृतीय या चतुर्थ
 र् य् र् ल् य् ह् परे रहने से असानुनासिक घर्णीय घर्णों
 में निज घर्ण का तृतीय घर्ण हो जाता है । यथा, दिक्
 ः = दिग्न्तः, वाक् + जालम् = वाग्जालम्, दिक् +
 = दिग्दस्ती (१-३ का N. B ४ देखो), अच् + धन्तः =
 ः, सघ्राट् + आगतः = सघ्राडागतः, जगत् + आदिः =
 देः, अप् + जम् = अब्जम् ।

११) खरि च—घर्ण का प्रथम, द्वितीय घर्ण या श् प् स् परे
 असानुनासिक घर्णीय घर्णों के स्थान में निज घर्ण का
 ण हो जाता है । यथा, ककुम् + प्रान्तः = ककुप्प्रान्तः,
 पतति = ककुत्पतति ।

१२) योनुनासिकेऽनुनासिके वा — न् या म् परे रहने से

(१७) मनस् और काम शब्द परे रहने से लुम् प्रत्यय के म् का लोप होता है । यथा, गन्तुम् + मनाः = गन्तुमनाः, कर्त्तुम् + कामः = कर्त्तु कामः ।

१८ ससञ्चयो ऋ । सखसानयोर्विसर्जनीयः— पद के अन्त में रहने से और क् ख् प् फ् श् प् स् परे रहने से स् और र् के स्थान में विसर्ग होता है । यथा, प्रातर्-प्रातः, बह्विस् बहिः ।

Exercise—2

1. Join.— हरिः + शेते, तत् + टीका, एतद् + सुरारिः, वाक् + मयम्, उक् + स्थानम्, तद् + शिवः, गृहम् + गच्छति, उत् + स्थितिः, तद् + मासम्, जगत् + नाथः, विपत् + कालः, सम्भक् + चरति, लक्ष्मी + क्षाया, महान् + छेदः, हस्तम् + आगतः, अक्षुप् + तः ।

2. Disjoin.— विपक्षयः, भवाञ्जीवितु, राज्ञी, निन्दन्गुहः, विपद्रेतुः, महच्छकदम्, हस्तं चलति, श्मश्रुवाच, तक्षीतम्, भक्तुकम्, दिग्गजः ।

3. Correct:— वाग्मयम्, विपद्काले, धैर्यमवलम्ब्य । भव सञ्जाटागतः । मेवः सूर्यमाह्लादयति । हस्तं चलति युवामौ । कवीश्राद्धय । व्यापारे महाहाभी भवति । तस्य नाकादम्बरोऽयम् ।

विसर्गसन्धि ।

(१) लोः श्चुना श्चुः । श्चुना श्चुः । विसर्जनीयस्य सः— विसर्ग के स्थान में ख् ख् परे रहने से श्, ट्, द् परे रहने से प् और त् ध् परे रहने से स् होता है । यथा, पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः, शरोः + छाया = शरोच्छाया, भीतः + टलनि = भीतलति, नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्, क्षिप्तः + पुत्कारः = क्षिप्तस्युत्कारः ।

(२) वा ञरि— श् प् स् परे रहने से विसर्ग के स्थान में विकल्प से क्रमानुसार श् प् स् होते हैं । यथा, सुप्तः + शिशुः =

सुप्तशशिशुः, सुप्तः शिशुः; मत्तः + पट्पदः = मत्तपट्पदः
 मत्तःपट्पदः; प्रथमः + सर्गः = प्रथमसर्गः, प्रथमः सर्गः ।

(३) सप्तज्योरुः । अतोरोरप्लुतादप्लुतेः । दृशि च— यदि विसर्ग
 के पहले अ और परे अ, घर्ग का तृतीय चतुर्थ या पञ्चम वर्ण
 अथवा य् र् ल् घ् ह् हो तो अ और विसर्ग के स्थान में ओ हो
 जाता है । यथा, नरः + अयम् = नरोऽयम्, वेदः + अर्घीतः =
 वेदोऽर्घीतः, शोभनः + गन्धः = शोभनो गन्धः, नूतनः + घटः =
 नूतनो घटः, शान्तः + रोपः = शान्तो रोपः, कृतः + लोमः =
 कृतो लोमः, शीतः + वायुः = शीतो वायुः, रामः + हस्तः = रामो
 हस्तः ।

(४) ओ भ्यो अपो अपूर्वस्य योऽशि— १ यदि विसर्ग के
 पहले अ और परे अ को छोड़ कोई स्वर हो तो विसर्ग का
 लोप होता है । यथा, कुतः + आगतः = कुत आगतः, नरः +
 इव = नर इव, देवः + ऋषिः = देव ऋषिः । विसर्ग के स्थान में
 पश्चान्तर में य् भी होता है । यथा, कुतः + आयातः =
 कुतयायातः ।

विसर्ग र—जात (र से उत्पन्न) होने से न तो उसका लोप होता
 है और न पूर्वस्थित अ के साथ मिल कर ओ होता है । यथा, पुनः
 + अग्नि = पुनरग्नि, प्रातः + एव = प्रातरेव, अन्तः + घानम् =
 अन्तर्घानम्, स्वः + गतः = स्वर्गतः, दुहितः + याहि = दुहित-
 याहि ।

पुनः, प्रातः, अन्तः, स्वः, प्रवृत्ति पदों का या ऋकारान्त शब्दों के
 सम्बन्धन एकत्रचन का विसर्ग र-जात विगर्ग है ।

२ विगर्ग के पहले अ और परे स्वरवर्ण; वर्ण का तृतीय चतुर्थ
 पञ्चमवर्ण अथवा य् र् ल् घ् ह् होवे तो विगर्ग का लोप होता है ।
 यथा, अरतः + अमी = अरता अमी, हताः + गजाः = हता गजाः ।

ः + धावन्ति = अथवा धावन्ति, उन्नताः + नगाः = उन्नता
 , नराः + लभन्ते = नराः लभन्ते, वाताः + वान्ति =
 वान्ति, बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति । स्वरवर्ण
 होने पर पश्चान्तर में विसर्ग के स्थान में य् होता है । यथा,
 + इमे = गजा इमे, गजायिमे ।

N. B. विसर्ग के लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती ।

(५) स्वयुगे षः—यदि विसर्ग के पहले व् वा को छोड़ कर
 कोई स्वर हो और विसर्ग के परे स्वरवर्ण, वर्ण का तृतीय
 या पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् होवे तो विसर्ग के
 में र् होता है । यथा, कविः + अपम् = कविरपम्, रविः +
 = रविरुदेति, निः + धनः = निर्धनः, वायुः + वाति =
 वाति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति ।

६) लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः—र् परे रहने से विसर्ग के स्थान
 र् होता है उसका लोप होता है और पूर्व स्वर का दीर्घ
 है । यथा, पितः + रक्ष = पिता रक्ष, निः + रसः =
 ; निः + रोगः = नीरोगः, विधुः + राजते = विधू राजते ।

७) एतत्तदोः लोपोऽकोरन्समासे हलि—सः और एपः के परे
 छोड़ कर अन्य किसी वर्ण के रहने से विसर्ग का लोप
 है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती । यथा, सः +
 = स आगतः, सः + गच्छति = स गच्छति, एपः + आयाति
 आयाति । 'क' प्रत्यय तथा नञ् युक्त होने से यह नियम
 गता । यथा, एपको वद्मः, असः—असो याति ।

। भो भगे अथो भूर्ध्वस्य षोऽति—स्वरवर्ण, वर्ण का
 वतुर्य पञ्चम वर्ण वा य् र् ल् व् ह् परे रहने से भोः के
 का लोप होता है । लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती ।
 तोः + ईशान = भो ईशान, भोः + गदाधर = भो गदाधर ।

सुखमस्ति, सुखं विद्मः सुखं च तदात्तं च सुखमस्ति।
 सुखं तदात्तं सुखं च तदात्तं सुखं च तदात्तं, तदात्तं सुखं ।

१। मन्त्रोक्तः । अन्वितोऽयं सुखं । इति च - यदि विद्वान्
 के पहले अ और परे अ को खंड कोई धार हो तो विद्वान् का
 अन्वितो सुखं होना अन्वितो विद्वान् के अन्वितो अन्वितो
 जाना है । यथा, सुखः + तदात्तं = सुखतदात्तं, वेदः + तदात्तं =
 वेदतदात्तं, सोमः + तदात्तं = सोमतदात्तं, नृपः + तदात्तं =
 नृपतदात्तं, ज्ञानः + तदात्तं = ज्ञानतदात्तं, वृत्तः + तदात्तं =
 वृत्ततदात्तं, गीतः + तदात्तं = गीततदात्तं, रामः + तदात्तं = रामतदात्तं
 इति ।

(४) भी अन्वितो अन्वितो अन्वितो अन्वितो— १ यदि विद्वान् के
 पहले अ और परे अ को खंड कोई धार हो तो विद्वान् का
 अन्वितो होना है । यथा, सुखः + तदात्तं = सुखतदात्तं, वेदः +
 तदात्तं = वेदतदात्तं, सोमः + तदात्तं = सोमतदात्तं, नृपः +
 तदात्तं = नृपतदात्तं, ज्ञानः + तदात्तं = ज्ञानतदात्तं, वृत्तः + तदात्तं =
 वृत्ततदात्तं, गीतः + तदात्तं = गीततदात्तं, रामः + तदात्तं = रामतदात्तं
 इति ।

विद्वान् र—जात (र से उत्पन्न) होने से न तो उभवा अन्वितो
 है और न पूर्वस्थित अ के साथ मिल कर भी होता है । यथा, सुखः
 + अन्वितो = सुखान्वितो, प्रातः + एव = प्रातरेव, अन्तः + प्रातम् =
 अन्तर्प्रातम्, स्वः + गतः = स्वगतः, दुहितः + माहि = दुहित-
 माहि ।

• सुखः, प्रातः, अन्तः, स्वः, प्रकृति पदों का या अकारान्त शब्दों के
 सम्बोधन एकवचन का विसर्ग र-जात विद्वान् है ।

२ विद्वान् के पहले अ और परे अन्वितो, अन्वितो का तृतीय चतुर्थ
 पञ्चमवर्ण अथवा र् र ल् व् ह् होके तो विद्वान् का अन्वितो होता है ।
 यथा, अन्वितो + अन्वितो = अन्वितो अन्वितो, इति + अन्वितो = इति अन्वितो ।

अम्वाः + धावन्ति = अम्वा धावन्ति, उञ्जताः + गगाः = उञ्जता गगाः, नगाः + लभन्ते = नगा लभन्ते, वाताः + वान्ति = वाता वान्ति, बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति । स्वरवर्ण परे होने पर पश्चान्तर में विसर्ग के स्थान में र् होता है । यथा, गजाः + इमे = गजा इमे, गजायिमे ।

N. B. विसर्ग के लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती ।

(५) सप्तम्यो र्—यदि विसर्ग के पहले अ या आ को छोड़ कर दूसरा कोई स्वर हो और विसर्ग के परे स्वरवर्ण, वर्ण का तृतीय चतुर्थ या पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह होये तो विसर्ग के स्थान में र् होता है । यथा, कविः + अपम् = कविरयम्, रविः + उदेति = रविरुदेति, निः + धनः = निर्धनः, वायुः + धाति = वायुर्धाति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति ।

(६) इलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः—र् परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है उसका लोप होता है और पूर्व स्वर का दीर्घ होता है । यथा, पितः + रक्ष = पिता रक्ष, निः + रक्षः = नीरक्षः, निः + रोगः = नीरोगः, विधुः + राजते = विधू राजते ।

(७) एतत्तदोः एलोपोऽकोरन्समाप्ते हलि—सः और एपः के परे अ को छोड़ कर अन्य किसी वर्ण के रहने से विसर्ग का लोप होता है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती । यथा, सः + आगतः = स आगतः, सः + गच्छति = स गच्छति, एपः + आयाति = एप आयाति । 'क' प्रत्यय तथा नञ् युक्त होने से यह नियम नहीं लगता । यथा, एपको रुद्रः, असः—असो याति ।

(८) भो भणो अपो अपूर्वस्य योऽशि—स्वरवर्ण, वर्ण का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य् र् ल् व् ह परे रहने से भोः के विसर्ग का लोप होता है । लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती । यथा, भोः + ईशान = भो ईशान, मोः + गदाधर = भो गदाधर ।

स्वरवर्ण परे रहने से पक्षान्तर में विसर्ग का व् होता है।
यथा, भोयीशान ।

(९) सोऽपरादी—क् ख् प् फ् परे रहने से निः, आविः, बहिः-
दुः, प्रादुः और चतुः के विसर्ग का प् होता है । यथा, निः +
कामः=निष्कामः, निः + खेदः = निष्खेदः, निः + वापः=निष्वा-
पः, निः + फलः = निष्फलः, आविः + कृतम् = आविष्कृतम्,
बहिः + कृतम् = बहिष्कृतम्, दुः + करम् = दुष्करम्, प्रादुः +
कृतम् = प्रादुष्कृतम्, चतुः + कोणम् = चतुष्कोणम् ।

(१०) इगुलोः सामर्थ्ये—क् ख् प् फ् परे रहने से हविः, सर्पिः,
बहिः, अर्चिः, रोचिः, शोचिः, आयुः, धनुः, चक्षुः, वपुः और वज्रुः
इत्यादि के विसर्ग का विकल्प से प् होता है । यथा, हविः+पत-
ति = हविष्पतति, हविः पतति; सर्पिः + पिषति = सर्पिष्पिषति
सर्पिः पिषति । पर धातुः + पुत्रः का मातुष्पुत्रः होता है ।

(११) इदुपधश्चवाप्रत्ययस्य—तकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने
से ह्रस्व इ या उ के परस्थित विसर्ग का प् होता है । यथा,
अर्चिः + त्यम् = अर्चिष्ट्यम्, चतुः + तयम् = चतुष्टयम् ।

(१२) नमस्वरसोर्गस्थोः—कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः और
तिरः के विसर्ग का स् होता है । यथा, नमः + कारः=नमस्कारः,
पुरः + कारः = पुरस्कारः, तिरः + कारः = तिरस्कारः ।

(१३) अतःकृकमिर्दंतकुम्भपात्रकुशाकर्णोश्चनव्ययस्य—कर, कार, कांत,
काम, कुम्भ और पात्र शब्द परे रहने से अकार के परस्थित
विसर्ग का स् होता है । यथा, श्रेयः + कारः = श्रेयस्कारः,
पुरः + कारः = पुरस्कारः, भयः + कांतः = भयस्कांतः, मनः +
कामः = मनस्कामः, भयः + कुम्भः = भयस्कुम्भः, पयः
पात्रम् = पयस्पात्रम् ।

(१४) तमः + काण्डः, मेदः + पिण्डः, माः + फरः, भदः

+ फरः, वाचः + पतिः, दिवः + पतिः, मघः + कीलः इत्यादि में विसर्ग का स् होता है । यथा, तमस्काण्डः, मैदस्काण्डः, मास्करः, महस्करः, वाचस्पतिः इत्यादि ।

(१५) स्थ परे रहने से विकल्प से विसर्ग का लोप होता है । यथा, मनः + स्थ = मनस्थः, मनःस्थः, दुः + स्थः = दुस्थः, दुस्थः ।

(१६) अथः विसर्ग परे—पद शब्द परे रहने से अथः और शिरः के विसर्ग का स् होता है । यथा, अधस्पदम्, शिरस्पदम् ।

अतिरिक्त—चिद्स् + जनः = चिद्जनः, पुम् + कीकिलः = पुंस्कीकिलः, पुम् + चकोरः = पुंश्चकोरः, भुवः + लोकः = भुवर्लोकः, अहन् + अहः = अहरहः ।

Exercise—3.

1. Join the following words with rules—वायुः + चलति, हस्तः + लहः, धनुः + टङ्कारः, धामः + इस्तः, प्रथमः + सर्गः, पृथः + रोदिति, विकः + रक्ष, निः + रोगः, गतिः + इयम्, कः + पृषः, नराः + पत्ने, चङ्गः + उदेति, स्वः + गतः, भोः + माधव, तिरः + कारः, हविः + पानम्, सस् + कारः ।

2. Disjoin the following—नद्यास्नीरम्, माझणोऽयम्, देव ऋषिः, नरा लभन्ते, मातर्द्वि, वायुर्वाणि, शिरस्पदम्, धनुस्पदम्, धनुष्करोति, भो जनमेजय, पृथ बालकः, नीरमः ।

3. Correct—पूर्णा चङ्गो उदेति । अमरा पदपदाः भवन्ति । राम अर्थं धावति । देवा स्वो गच्छति । दशरथोवाच । तस्या पुत्रा पठन्ति । निरोधोऽयं बालकः । विलो रक्ष माम् । पृषो वदति । भो पुत्र कुत्र गच्छसि । स नगरात् बहिरुहतः । अशुसुत्र द्वि मम । अतिर्पुत्रं गच्छति ।

षष्ठ्यविधान — Change of न् into ण् ।

(१) एषाम्वा नो णः समानपरं—एक ही शब्द में ऋ ऋ ए या ए के परे न् आये तो न् का ण् होता है । यथा, नृणाम्,

इत्थञ्जे परे रहने से विसर्ग ई विभक्त का व् होता है । यथा, मोर्गीमान ।

(१) मोडादी—क् न् प् क् परे रहने से निः, भाषिः, बर्हिः, दुः, प्रादुः और मद्ः के विसर्ग का व् होता है । यथा, निः + कामः = निःकामः, निः + मेद्ः = निःमेद्ः, निः + वापः = निःवापः, निः + फलः = निःफलः, भाषिः + क्तम् = भाषिक्त्तम्, बर्हिः + क्तम् = बर्हिक्तम्, दुः + कामः = दुःकामः, प्रादुः + क्तम् = प्रादुक्त्तम्, मद्ः + कोणम् = मद्कोणम् ।

(१०) द्युमोः सामर्थ्ये—क् न् प् क् परे रहने से ह्यिः, सर्पिः, बर्हिः, भर्षिः, रोमिः, शोमिः, भायुः, घनुः, मनुः, तनुः और वज्रः इत्यादि के विसर्ग का विफल्य से व् होता है । यथा, ह्यिः + पतति = ह्यिपतति, ह्यिः पतति; मग्निः + विषति = मग्निविषति सर्पिः विषति । पर धातुः + पुत्रः का मातृपुत्रः होता है ।

(११) ह्युपथस्यवाप्रथयस्य—सकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने से ह्यथ इ या उ के परस्थित विसर्ग का व् होता है । यथा, अर्च्यः + त्यम् = अर्च्यत्यम्, चतुः + तयम् = चतुष्टयम् ।

(१२) नमस्वरसोर्गस्थोः—ह्रस्व धातु परे रहने से नमः, पुरः और तिरः के विसर्ग का स् होता है । यथा, नमः + कारः = नमस्कारः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, तिरः + कारः = तिरस्कारः ।

(१३) अतःकृकमिकंतकुम्भपात्रकुशाकर्णधनव्ययस्य—कर, कार, कांत, काम, कुम्भ और पात्र शब्द परे रहने से अकार के परस्थित विसर्ग का स् होता है । यथा, श्रेयः + करः = श्रेयस्करः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, अयः + कांतः = अयस्कांतः, मनः + कामः = मनस्कामः, अयः + कुम्भः = अयस्कुम्भः, पयः पात्रम् = पयस्पात्रम् ।

(१४) समः + काण्डः, मेद्ः + पिण्डः, भाः + करः, अहः

+ फरः, वाचः + पतिः, दिवः + पतिः, अयः + कीलः इत्यादि में विसर्ग का स् होता है । यथा, तमस्काण्डः, मैदस्काण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः इत्यादि ।

(१५) स्थ परे रहने से विकल्प से विसर्ग का लोप होता है । यथा, मनः + स्थ = मनस्थः, मनःस्थः, दुः + स्थः = दुस्थः, दुःस्थः ।

(१६) अधः शिरो परे—एद् शब्द परे रहने से अधः और शिरः के विसर्ग का स् होता है । यथा, अधस्पदम्, शिरस्पदम् ।

अतिरिक्त—विद्वस् + जनः = विद्वज्जनः, पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुम् + चकोरः = पुंश्चकोरः, भुवः + लोकः = भुवर्लोकः, अहन् + अहः = अहरहः ।

Exercise—3

1. Join the following words with rules—वाङ् + चलति, इन्नलः + तर्कः, धनुः + टङ्कारः, वामः + हस्तः, प्रथमः + सर्गः, एषः + शोदिति, पितः + रक्ष, निः + रोगः, गतिः + इयम्, कः + एषः, नराः + एते, चन्द्रः + उदेति, स्वः + गतः, भौः + माधव, तिरः + कारः, हविः + पानम्, सम् + कारः ।

2. Disjoin the following:—नद्यास्तीरम्, साक्ष्योऽयम्, देव ऋषिः, नरा लभन्ते, मातर्देहि, वायुर्वाणि, शिरस्पदम्, चतुष्टयम्, धनुष्करोति, भो जनमेजय, एष बालकः, नीरसः ।

3. Correct:—पूर्णो चन्द्रो उदेति । अमरा पटपदाः भवन्ति । राम अयं धावति । देवा स्वो गच्छति । दशरथोवाच । तस्या पुत्रा पर्दन्ति । निरोलोऽयं बालकः । पितो रक्ष माम् । एषो वदति । भो पुत्र कुत्र गच्छति । स नगरात् बहिस्कृतः । आतुषुत्र हि मम । यतिर्पर्वतं गच्छति ।

णत्यविधान — Change of न् into ण् ।

(१) एषान्ता नो णः समान्तरे—एक ही शब्द में ष्ट् ष्ट् इ या ष् के परे न् भावे तो न् का ण् होता है । यथा, नृणाम्,

तिष्ठणाम्, भ्रातृणाम्, चतुर्णाम्, कृष्णः ।

(२) अट्कुत्वाद् नुस्ववायेऽपि—यदि ऋ ऌ र् या प् और न् के बीच में स्वरघर्ण, कथर्ग, पवर्ग, य् र् घ् ह् और अनुस्वार (इनमें से एक या अनेक) हों तब भी न् का ण् हो जाता है । यथा, करणम्, हरीणाम्, गुरुणा, मृगेण, वृक्षेण, वृंहणम् ।

N. B. इनके अतिरिक्त अन्य कोई घर्ण बीच में आवे तो ण् नहीं होता । यथा, अर्च्यना, मूर्च्छना, अर्जतम्, किरीटेन, मृडेन, दूडेन, आर्सेन, विमर्देन, अर्द्धेन, विरलेन, स्पर्शेन, रसेन ।

(३) पदान्तस्य न—पदान्त न् का ण् नहीं होता । यथा, नरान्, हरीन्, गुरुन्, भ्रातृन् ।

N. B. न्-मिन्न तवर्गयुक्त तथा प् और भ् युक्त न् का ण् नहीं होता । यथा, कुन्तति, ग्रन्थनम्, वृन्दः, रन्धनम्, तृप्नोति, क्षुम्नाति ।

२ यदि एक पद में ऋ ऌ र् या प् हो और दूसरे पद में न् हो तो ण् नहीं होता । यथा, नृपानम्, गिरिगहनम्, शराम्नि, रघुनन्दनः, गिरिनन्दनी, त्रिनेत्रः, धृषवाहनः, सर्व्यनाम ।

३ केने विभागा कथादाकथान्त उपदेशे—यदि अन्य पदस्थित ग् विभक्ति के स्थान में हो या विभक्ति युक्त हो अथवा स्त्रीलिङ्ग के ई प्रत्यय से युक्त हो तो विकल्प से ण् होता है । यथा, विभक्ति-स्थान में प्रभाषेण, प्रभाषेन; परिभाषेण, परिभाषेन; भग्नभाषेण, भग्नभाषेन; विभक्तियुक्त-विषयाविना, विषयाविना । ई-प्रत्यययुक्त-विषयाविनी, विषयाविनी ।

४ पणम् के न् का ण् नहीं होता । यथा, मृगुयानी, क्षत्रियपूना ।

मग्निनी, कामिनी, भामिनी, यामिनी, यूनी इत्यादि के न् का ण् नहीं होता है । यथा, पितृमग्निनी, हरिकामिनी, घोख्यामिनी ।

४ एकानुस्वरपदेणः, कुमति ष— यदि पर पद एक स्वर घाला या कयसो युक्त हो तो न् का नित्य ण् होता है । यथा, प्रभुणा, वृषहणः । कर्त्तव्यं पुक्त— धोकामेण, दुर्गमेण, परिवाकेण; पर पक्व शब्द का नहीं होता । यथा, परिपक्वेण, परिपक्वानि, परिपक्वानाम् ।

५ विभाषीर्षध्वनस्पतिभ्यः— औपधियाचक (पका हुआ शस्य) और घृक्षयाचक शब्दों के परे घन के न का विकल्प नै पण होता है । यथा, औपधियाचक— औहियणम्, औहियनम् ; दूर्वावणम्, दूर्वावनम् ; नीशारवनम्, नीशारघणम् ; आर्द्रकघणम्, आर्द्रकवनम् । लक्षयाचक— लोधघणम्, लोधवनम् ; यदरीघणम्, यदरीवनम् ; शिरीषघणम्, शिरीषवनम् ; जम्बीरघणम्, जम्बीरवनम् ।

दो या तीन स्वर का शब्द नहीं होने से पेशा नहीं होता । यथा, देवदारुवनम्, उदुम्बरवनम्, नागरद्वयनम्, नारिकेलघनम्, बोधिद्रुमघनम्, कोविदारवनम्, राजघृक्षवनम्, सहकारघनम्, कुर्यकघनम्, कर्णिकारवनम्, सिन्धुवारघनम्, नागकेशघनम् ।

प्रनिरक्तः शरैश्चल्लक्ष्णाप्रकार्वलदिरतीकृष्णान्वासंज्ञायाम्— शर, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, खदिर, इन कई शब्दों के परे घन के न का नित्य ण होता है । यथा, शरघणम्, प्लक्षघणम्, आम्रघणम्, ईक्षुघणम्, खदिरवणम् ।

प्र, निरु, अन्तरु, अग्र इत्यादि कई शब्दों के परे घन के न का ण होता है । यथा, प्रघणम्, निरुघणम्, अन्तरुघणम्, अग्रघणम् ।

६ वा भावकरणणेः— दूसरे पद में रहने वाले रू के परे पान

शब्द के न का विकल्प से ण होता है । यथा, शिष्याणम्, शिष्याणाम्, शिष्याणम्, शिष्याणम्, शिष्याणम् ।

७ त्रिबुद्धिः इत्यस्य कर्त्तव्यम् — यत्र त्रिबुद्धिः संज्ञा के त्रि और चतुर् शब्दों के परे शब्द के न का ण होता है । यथा, त्रिबुद्धिः, त्रिबुद्धिणोः, त्रिबुद्धिणोः ।

८ अश्विनः—प्र, पूर्वा, अश्विन इत्यादि शब्दों के परे ण के न का ण होता है । यथा, अश्विनः, अश्विणः, अश्विणः ।

९ अश्विनः—प्र, पार, उत्तर, आन्ध्र और मार शब्दों के परे अश्विन के न का ण होता है । यथा, पाराश्विनम्, पाराश्विनम्, उत्तराश्विनम्, आन्ध्राश्विनम्, माराश्विनः ।

१० अश्विनः—अश्विन और आम शब्दों के परे ण के न का ण होता है । यथा अश्विणीः, आमणीः ।

११ पूर्वशब्दात् संज्ञायाम् । अश्विनः कर्त्तव्यम्—संज्ञा बाध होने से शब्द के परे नय तथा प्र, इ, पर और चार्धों के परे नय के न का ण होता है । यथा, शूर्वाणाम्, प्रणसः, दुग्धम्, चार्धोणसः ।

१२ गिरिनद्यादीनां वा—गिरि नदी इत्यादि के न का विकल्प से ण होता है । यथा, गिरिनदी, गिरिनदी, स्वर्णदी, स्वर्णदी, गिरिनितम्बः, गिरिनितम्बः । ऐसे ही गिरिनद्य, गिरिनद्य, चक्र-नदी, चक्रनितम्ब, तूर्यमान, माघोन, आर्गयन में भी होता है ।

१३ पात् पदान्तात्—पूर्व पद के अन्त में व् होने से उत्तर पद के न का ण नहीं होता । यथा, हविष्पानम्, आयुष्कामेन, सर्पिष्पायिता ।

१४ उपसर्गादसमासेऽपि नोपदेशस्य—प्र, परा, परि, निर्, इन चार उपसर्गों के परे यदि नद्, नम्, नश्, नह, नी, नु, नुद्, अन्, घातु हों तो न का ण होता है । यथा, प्रणदति, प्रणमति,

प्रणमः; परिणमति, परिणामः, प्रणश्यति, प्रणाशः (निष् के श् का ष् हो तो ण् नहीं होता । यथा, प्रनष्टः, परिनष्टः, निर्नष्टः, अन्त-
र्नष्टः), परिणाहः । प्रणयति, प्रणयः, परिणयः, निर्णयः । प्रणयः ।
प्रणोदः । प्राणिति, प्राणः । प्रहृष्यते, प्रहृषणम् (हन् के ह् का ष्
होने से ण् नहीं होता । यथा, प्रहृष्यन्ति, परिहृष्यन्ति, प्राधानि, प्रथ्या-
घानि, शत्रुघ्नः) ।

करोर्वा—यदि हन् धातु का न् म् और ष् युक्त हो तो
विकल्प से ण् होता है । यथा, प्रहृषिम, प्रहृषिमि, प्रहृष्यः, प्रहृष्यः ।

१५ कानिस्निक्षन्दिनाम्—निष्, निक्ष्, निन्द् इन तीन धातुओं
के न् का ष् विकल्प से होता है । यथा, प्रणिक्षितव्यम्, प्रनि-
क्षितव्यम् । प्रणिक्षणम्, प्रतिक्षणम् । प्रणिन्दति, प्रनिन्दति ।

१६ द्विभूना—द्विभू और भूना के न् का ण् होता है । यथा,
प्रद्विभूति, प्रद्विभूतः, प्रद्विष्यन्ति । प्रमीणाति, प्रमीणीतः,
प्रमीणति ।

१७ भानि लोट्—लोट् की भानि चिम्बिकि के न् का ण् होता
है । यथा, प्रभवानि, परिभवानि, प्रवदानि ।

१८ नेर्गदन्दपदपदभुमास्यति इन्ति याति वाति इति प्याति वरति
वहति शाम्यति विनोति देग्धिषु—गद् पत् दा धा हन् नद् पद् दान
दो दे लो धे मा या द्रा प्वा वप् शम् वह वि दिह् धातुओं की
पूर्ववर्त्तों नि उपसर्ग के न् का ण् होता है । यथा, प्रणिगदति,
प्रणिपतति, प्रणिपातः, प्रणिधानम्, प्रणिहन्ति इत्यादि ।

१९ कृत्वचः—धातु के पहले म् परा परि निर् ये चार उपसर्ग
या अन्तर् शब्द हो तो कृत् प्रत्यय के न् का ण् होता है । यथा,
प्रमाणम्, प्रहाणम्, प्रवहमाणः, प्रमाणम्, परिमाणम् ।

हल्धेः सुषवात्—जिन धातुओं के पहले व्यञ्जनवर्ण हो और
अत्यवर्ण के पहले अ वा सिन्ध स्वर हो उन के परे कृन् प्रत्यय

के न् का विकल्प से ण् होता है । यथा, प्रकोपणम्, प्रकोपनम् ; परिगोपणम्, परिगोपनम् ।

लेविभाषा—ण्यन्त धातु के परे कृत् प्रत्यय के न् का विकल्प से ण् होता है । यथा, यापि—प्रयापणम्, प्रयापनम्; प्रयापनीयम्, प्रयापनीयम् । घाहि—प्रवाहणम्, प्रवाहनम् ।

न भाभूपकमिगमिष्याविवेषाम्—भा, भू, पू, कम्, गम्, व्याय्, वेप्, कम्प्, इन धातुओं के ण्यन्त होने पर भी इनके परे कृत् प्रत्यय के न् का ण् नहीं होता । यथा, परिमाणीयम्; परिमापनीयम्, परिभवनीयम्, परिमाचनीयम् ।

कृत् प्रत्यय का न् व्यञ्जनवर्ण से युक्त हो तो ण् नहीं होता । यथा, प्रमन्नः, प्रमन्नः, परिमन्नः ।

२० निम्नलिखित शब्दों का ण् स्वामाधिक है:—

वाणी-तूणीर-वैणी-फणिमणि-लघर्णं कोण-कल्याण-वाणां;
गोणी-घोणी फणाणुर्घण-विपणि-पणं स्थाण-पुण्यं विषाणम् ।
माणिक्यं शोणशाणौ गुण-गण गणिका-घेण-सिहाण-घोणा,
निर्घ्याणो निकरणेण-कण-किण घणिजः कङ्कणं वाणितूर्णौ
विणाकमपि चाणक्यमित्याद्याः स्युः स्वभावतः ।

पत्यविधान Change of स् into प् ।

(१) इणः कोः—अ भा मिनस्वर, क् वा र् के परे प्रत्यय के स् का प् हो जाता है । यथा, मुनिपु, नदीपु, नरेपु, दिष्टु, वतुपु ।

N. B. सात् प्रत्यय के स् का प् नहीं होता । यथा, भ्रमि-सात्, वायुसात्, घात्सात् ।

२ तुप् विभक्त्यन्तैयसाम्बन्धेऽपि—अनुस्वार विसर्ग तथा श्

पूस् का व्यवधान होने पर भी पू होता है। यथा, हर्षोपि, आशीःपु।

कलीबलिग की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन से भिन्न अनुस्वार का व्यवधान हो तो पू नहीं होता। यथा, पुम्सु, पुंसु।

(२) सञ्ज्, सद्, सह्, साध्, सिच्, सिच्, सु, सू, सेव्, सो, स्तम्, स्तु, स्तुम्, स्त्यू, स्था, स्ना, स्निह्, स्नु, स्मि, स्वञ्, स्वद्, स्वप्, स्विद्, श्वादि धातुओं के भव्यस्त करने पर यदि धातु का द्वितीय भाग स् ई, उ, ए, के परे हो तो पू होता है। यथा, सिध्-सिधेध, सिधिधनुः, सिधिधुः। सु-सुगव, सुपुवतुः, सुपुवुः। सू-सुपुवे, सुपुवाते, सुपुविरे। सेव्-सिपेवे, सिपेवाते, सिपेविरे। स्तु-तुष्टाव, तुष्टवतुः, तुष्टवुः। स्निह्-सिष्णेह्, सिष्णिह्तुः, सिष्णिह्नुः। स्मि-सिष्मिये, सिष्मियाते, सिष्मियिरे। स्वप्-सुष्वाप, सुष्पवतुः, सुष्पवुः। स्तुम्-तुष्टुमे, तुष्टमाते, तुष्टमिरे। सो-सेवीयते। सेव्-सेसेव्यते। सू-सोपूयते। स्नु-तोपूयते।

N. B. (१) यङ् प्रत्यय होने से सिच् के स् का पू नहीं होता। यथा, सेसिच्यते।

(२) धातु के परे सन् प्रत्यय का पू हो तो धातु के स् का पू नहीं होता। यथा, सिच् — सिचीसति, सू — सुसूपति, सेव्-सिसेविपते, हिम-सिष्मयिपते, स्तम्-तिस्तमिपति, स्तुम्-तुस्तोमिपते, स्नु-सुसूपति।

केवल स्तु धातु का पू होता है। यथा, तुष्टूपति।

सन् प्रत्यय का स् रहे तो धातु के स् का पू होता है। यथा, स्था-तिष्ठासति, स्वप्-सुपुप्तति, सो-सिथासति, स्ना-सिष्णासति।

पयन्त धातुओं में केवल स्विद्, स्वद् और सह् का पू नहीं होता। यथा, श्विद्-सिस्वेदयिपति, स्वद्-सिस्वाद्यिपति, सह्-

मिमाहपिपति । इगके मनिदिक् मन्म पातुगो' में प् होना है ।
यथा, इग्-सु-पापपिपति, मिम पिपेनपिपति, निग्-मि
पिपति, इग्-सु-पापपिपति, मन्ग्-मिमहत्तपिपति ।

(१) उपागर्ह एतेऽि गार्ह स्वनिपिपिपतिः इत्यनेन ।
पण्यत्तव्याम्--इकारात् (नि, नि, परि, प्रति, मति, मधि-
मपि, भमि,) और उकारात् (सु, अनु,) उपागर्ह के परे सु
सु, सो, स्तु, स्तुम्, स्था, संनि, सिप्, पिप्, मन्त्, मन्त् स्तु
और स्तम् धातुओं के म् का प होना है । यथा, सु-भविषुतोति,
अनुषुतोति (स्तु और स्तु विभक्ति तथा इयत् प्रत्यय परे
रहने से प् नहीं होना । यथा, स्तु-भमिगोप्यति, स्तु-भम्यमो-
प्यत्, इयत्-भमिसोप्यत्) । सु (सुदादि मनांप, -मपिपुडति,
अनुषुपति । सो-भधिष्यति । स्तु-भविष्यति, स्तुम्-वनिष्योमते,
अनुष्योमते । स्था-भधिष्ठाष्यति, अनुष्ठाष्यति, संनि-भमिषेजयति ।
सिष्-प्रतिषेधति, अनुषेधति, (गमनार्थे सिप् धातु का प् नहीं
होता । यथा, गृहं प्रतिषेधति, परिसेधति, भमिसेधति) । सिव्-
निपिञ्चति । सञ्-निपजति, अनुपजति । स्वप्-परिष्यजने ।
सद्-विषीदति, अनुषीदति (प्रति पहले हो तो नहीं होता । यथा,
प्रतिषीदति) । स्तम्-भमिष्मोति, अनुष्मोति (आलम्बन और
सामीप्य अर्थ में अथ पहले होने से भी प् होता है । यथा,
यष्टिमवष्टम्य आस्ते यष्टिमाळ्म्य तिष्ठतीत्यथः । अथष्टया गौ-
गौः समीपे वृत्त ते इत्यथः ।

अट् का व्यवधान होने पर भी प् होता है । यथा, अभ्यपु-
णोत्, अभ्यपेणयत्, न्यपिञ्चत्, अन्वपजन्, व्यपीदत् । परन्तु परि
और नि पूर्वक स्तु और स्वज् धातुओं में विकल्प से प् होना
। यथा, पर्य्यष्टावीत्, पर्य्यस्तावीन्; पर्य्यस्वजत्, पर्य्यस्वजन् ।

(४) परिनिविध्वः सेवसितस्यसिक्नुसहस्रु स्तुस्वजाम्—परि, नि,

वि पूर्वक सेच्, सिष्, सह् धातु के स् का प् होता है । यथा, सेच् परिपेधते, निपेधते, विपेधते; सिष्-परिपीड्यति, निपीड्यति सह्-परिपहने, निपहते, विपहते (सह् का सोढ होने पर प् ना होता । यथा, परिसोढा, निसोढुम्, विसोढः) ।

अट् के व्यञ्जधान होने पर भी सेच् का नित्य और सि तथा सह् का विकल्प से होता है । यथा, सेच्-पर्यपेधते सिच्-पर्यपीड्यत्, पर्यसीड्यत् । सह्-न्यपहत, न्यसहत ।

ण्यन्त करने पर लुङ् में सिच् और सह् के स् का प् न होता । यथा, सिच्-पर्यसीसिचत्, सह्-पर्यसीसहत् ।

(५) आदिपञ्चासेन वाध्यासस्वः—इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के परे सेनि, सिध्, सिच्, सञ्, स्वञ्ज् और संघातुओं के अस्यस्त होने पर दोनों स् का प् होता है । यथा सेनि-अभिपिपेणयिषति । सिध्-निपिपेध, प्रतिपिपेधयिषां अभिपेपिधयते । सिच्-अभिपिपेच, अभिपिपेचयिषति (ट होने से नहीं होता । यथा, अभिसेसिच्यते) । सञ्ज्-अनुपपञ् प्रतिपिपञ्चयिषति, स्वञ्ज्-परिपिष्वञ्चयिषति, सद्-निपिषाद्यिषां विषापद्यते (लिट् में स्वञ्ज् और सद् के द्वितीय स् का प् न होता । यथा, स्वञ्ज्-परिपस्वजे, विपस्वजे । सद्-निपसाद्यिषसाद्) । सेच्-परिपिपेधे, अभिपिपेधयते ।

(६) स्तम्भेः—इकारान्त और उकारान्त उपसर्गों के अस्यस्त स्या और स्तम्भ् घातुओं का त् के व्यञ्जधान होने भी प् होता है । यथा, स्या-अनुत्पृष्टी, अघितपृष्टी, अमितपृष्टं स्तम्भ्-अनुत्पृष्ठम्, अघितपृष्ठम्, अमितपृष्ठम् ।

प्रतिस्तम्भ और निस्तम्भ में प् नहीं होता । ण्यन्त करने लुङ् में स्तम्भ् का प् नहीं होता । यथा, पर्य्यतस्तम्भत् ।

(७) परि पूर्वक स्ह घातु के स् का प् होता है । य

परिष्करोति, परिष्कारः । अद् के अग्रप्रान होने पर विकल्प से प् होता है । यथा, पर्य्यङ्करोन्, पर्य्यङ्करोत्; पर्य्यङ्करोन्, पर्य्यङ्करोत् ।

(८) अनुविपर्य्यभिनिभ्यः—अनु, वि, परि, मन्नि, नि पूर्वक स्यन्दु धातु के स् का विकल्प से प् होता है । यथा, अनुप्यन्दते, अनुस्यन्दते; विप्यन्दते, विस्यन्दते; परिप्यन्दते, परिस्यन्दते; मन्निप्यन्दते, मन्निप्यन्दते; निप्यन्दते, निप्यन्दते ।

प्राणी कर्ता हो तो ऐसा नहीं होता । यथा, मनुस्यन्दते मत्स्यः ।

(९) पठेथ—परि पूर्वक स्कन्धु धातु के स् का विकल्प से प् होता है । यथा, परिष्कन्दति, परिष्कन्दति; परिष्कम्पन्, परिष्कन्तः ।

वेः स्कन्देनिष्ठायाम्—निष्ठा-मिश्र कुन् प्रत्यय परे रहने से वि पूर्वक स्कन्धु धातु के स् का विकल्प से प् होता है । यथा, विष्कन्ता, विष्कन्ता; विष्कन्तुम्, विष्कन्तुम् । निष्ठा प्रत्यय होने से नहीं होता । यथा, विष्कन्तः, विष्कन्तवान् ।

(१०) स्फुरतिस्फुल्लस्योर्निनिभ्यः—निर्, नि, पूर्वक स्फुर और स्फुल् धातु के स् का विकल्प से प् होता है । यथा, स्फुरति, स्फुरति; निस्फुरति, निस्फुरति; विस्फुरति, विस्फुरति; स्फुल्-निष्फुल्लति, निष्फुल्लति; विष्फुल्लति, विष्फुल्लति ।

(११) वेः स्कन्धातेनित्यम्—वि पूर्वक स्कम्भु धातु के स् का प् होता है । यथा, विष्कम्भाति, विष्कम्भितुम्, विष्कम्भि-विष्कम्भः, विष्कम्भकः ।

सुविनिर्दुर्भ्यः सुवि मुति एमाः—सु, वि, निर्, दुर् के सुप् हो तो स् का प् हो जाता है । यथा, सुपुष्पः, निःपुष्पः, दुःपुष्पः, दुःपुष्पुः, दुःपुष्पुः ।

(१३) उपरान्तप्रादुर्भवनिस्त्रियत् परः— एकारान्त और उकारान्त उपसर्ग तथा प्रादुः शब्द के परे भस् धातु के स् का प् होता है । यथा, निपन्ति, प्रतिपन्ति, अधिपन्ति, परिष्यान्, अनुपन्ति, प्रादुःपन्ति, प्रादुःष्यात् । पर त घ म या व के साथ मिले हुए स् का प् नहीं होता । यथा, अधिस्तः, अनुस्तः, प्रादुःस्तः, प्रतिस्थः, भमिस्थः, भधिस्मः, अनुस्मः, प्रादुःस्मः, अनुस्वः, प्रादुःस्वः ।

(१४) शशिवनिपत्तीनाम्—उस् प्रत्यय परे रहने से वस् धातु के स् का प् होता है । यथा, उपितः, उपितवान्, ऊपतुः, ऊपुः ।

(१५) घस् धातु के घ का क् हुआ हो तो स् का प् होता है । यथा, जक्षतुः, जक्षुः ।

(१६) सहे साङ्गः—सद् धातु से घने साद् शब्द का साद् और साद् हुआ हो तो स् का प् होता है । यथा, तुरापाद्, तुरापाद्सु, तुरापाद्भ्यः । साद् रहने से नहीं होता । यथा, तुरासाद्, तुरासाद्, तुरासाद्म् ।

(१७) समामेऽङ्गुलेः सङ्गः—समास होने पर अंगुलि शब्द के परे सङ्ग के स् का प् होता है । अंगुलिसङ्गः ।

(१८) सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परे सम शब्द के स् का प् होता है । यथा, सुपमः, विपमः, दुःपमः ।

(१९) एतिंशायामगात्—नाम समझे जाने से अ आ भिन्न स्वर के परे सेना शब्द के स् का प् होता है । यथा, सुपेणः, हरिपेणः, मधुपेणः । नाम न समझा जाय तो नहीं होता, यथा, कुरुसेना, पदुसेना, कपिसेना ।

(२०) भूमि और दिवि शब्दों के परे स्थ हो तो स् का प् होता है । यथा, भूमिष्ठः, दिविष्ठः ।

(२१) त्वियुधिभ्यां स्थिरः—युधि के परे स्थिर के स् का

जिसके द्वारा विशेष्य का गुण, अवस्था या संख्या जानी जाय उसे विशेषण (Adjective) कहते हैं । विशेष्य में जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन विशेषण में भी होते हैं । यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरं गृहम्, बलवन्तौ सिद्धौ, वेगवत्यः नद्यः इत्यादि । कुछ आवश्यकीय विशेषण निम्नलिखित हैं :—

अलिङ्ग—all, whole; अगाध very deep, अज्ञ ignorant, अटल immovable, अतीत past, अद्भुत extra-ordinary, अधम base, अधीन dependent, अतुरक्त fond of, अन्ध blind, अर्वाचीन new, अलस idle, अल्प-small, अवहित careful, अवैध unlawful, अशरण helpless, अल्प rich, आत्मीय intimate, आदिम first, prior; आधुनिक recent, आध्यात्मिक spriritual, आर्द्र wet, damp; उग्र fierce, उच्च high, उत्तुङ्ग high, उत्सुक fond of, उदार liberal, उद्धत haughty, उन्मत्त mad, उष्ण hot, ऊर्ध्व upper, श्रेष्ठ straight, कटु bitter, कृमि brown, क्लेश lamentable, क्रूर cruel, violent, कर्मल dirty, कान्त one-eyed, कान्त lovely, कुटिल crooked; कुत्सित awkward, कृतज्ञ ungrateful, कृतज्ञ grateful, कृपण miser, mean; केवल only, क्रूर cruel, क्षणिक momentary, लज्जित lame, गभीर deep, गर्ह्य censurable, गुरु long, श्रेष्ठ chief; गोल round, गौण secondary, प्राम्थ vulgar, घन thick, बोर horrible, चञ्चल fickle, चपल fickle, unsteady; चाह beautiful, चिर long, चलन moveable, जटिल mixed with, तनु small, little; तरल liquid, तीक्ष्ण severe, दारुण cruel, दिव्य divine, beautiful; दुर्गम inaccessible; दुर्घर्ष dreadful, दुर्बल weak, दुष्कर difficult, घबल

white, धार्मिक pious, घूमर dirty, धूर्त sly, ध्रुव certain,
 नग्न naked, नव-नवीन new, नम्वर perishable, नितित्त
 whole, नितान्त excessive, नित्य eternal, निगुण clever,
 निरीह indifferent, निविड thick, निशित sharp, निष्क
 cruel, नूतन new. नृशंस cruel, wicked; नैसर्गिक natural,
 न्यून less, पक्व ripe, पट्ट able, clever; पक्व suitable, पक्ष
 harsh, पर्याप्त sufficient, पवित्र pure, पाण्डु pale, पाप
 sinful, पावन pure, पीत yellow, पीन thick, large; पीत
 fat, पुण्य holy, पुराण-पुरातन old, पृथु large, broad;
 पैतृक paternal, प्रखर very hot, प्रगल्भ bold, प्रकुल्ल gay;
 प्रबल strong, प्रभूत plentiful, प्रसिद्ध notable, प्रिय dear,
 बधिर deaf, बहु many, भंगुर brittle, भासुर bright, भीति
 timid, भोषण dreadful, भूरि much, मृश much, मन्मथ
 sweet, मन्हुल beautiful, मनोह-मनोरम beautiful, मन्द
 slow, मलिन foul, मसृण smooth, महत् great, महार्थ dear,
 मानल strong, मूक silent, dumb; मृत dead, मृदु soft,
 रमणीय charming, रम्य beautiful, रिक्त empty, रुग्ण sick,
 रुचिर handsome, रउ angry, लघु light, small; रज
 crooked, रसल affectionate, रदान्य liberal, रान्य wild,
 वाचाक talkative, वार्षिक annual, विकट horrible, विदग्ध
 skilful, विचित्र curious, वितष false, विनोत modest,
 विशाल vast, विश्वस्त faithful, विस्तृत wide, विडुल over-
 whelmed, शान्त gentle, शिथिल loose, शीतल cool, शुक्ल
 white, शुवि pure, शुभ good, शुभ white, शुष्क dry, शून्य
 vacant; श्याम dark, श्वेत white, सकल entire, सङ्कीर्ण
 narrow, सङ्कुल full of, सकल fruitful, समर्थ able, समस्त

अल, समान equal, सत्य sincere, स्वभाव natural, रोगी patient, सर्वत्र universal, श्वेत white, सुगम accessible, सूक्ष्म thin, वृद्ध old, स्थिर immovable, दृढ-स्थिर firm, रूढ़ coarse, bulky; दृश्य visible, स्वाधीन independent, विष ferocious, हर्ष pleased, क्षुद्र short.

सुबन्त-प्रकरण (Declension)

विभक्ति की आकृति ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	:(सु)	भौ	भः (उर)
द्वितीया	मम्	भौ (भौद्)	भः (शम्)
तृतीया	भा (डा)	भ्याम्	भिः (मिस्)
चतुर्थी	व (डे)	भ्याम्	भ्यः (भ्यस्)
पञ्चमी	भः (इस्)	भ्याम्	भ्यः (र्वस्)
षष्ठी	भः (इस्)	भोः (भोस्)	भाम्
सप्तमी	इ (इि)	भोः (भोस्)	सु (सुर्)

इन उपर्युक्त सातों विभक्तियों को सुप् ० कहते हैं । प्रातिपदिक के परे सुप् लगाने से सुबन्त पद बनता है ।

१. प्रत्येक विभक्ति में तीन २ वचन (Number) होते हैं; एकवचन (Singular), द्विवचन (Dual) और बहुवचन (Plural) । शब्द में एकवचन की विभक्ति रहने से एक वस्तु, द्विवचन की विभक्ति रहने से दो वस्तु और बहुवचन की

० विभक्तियों का परलभ भक्षर सु भीर अन्त्य भक्षर व् है, अतएव ल्हे वप् कहते हैं ।

विभक्ति करने से दो ही लिंगिक (लकारों तक) लार्तुं बन जाती है ।

३ चिदा के भाग संज्ञा का जो भावस्थ है उसे क ((क्त) कहते हैं । कारक के भाव में है, कर्ता, कर्त्ता, कर्त्तृ, कर्त्तव्य, कर्त्तव्य, भावस्थ, भाविकरण और भावस्थ, उर्तुं क भागों विभक्ति भागों कारकों की सम्प्रत्यय प्रकृतो है ।

सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति लगती है । लीलाकार के लिंग के भाग भावस्थ न होने में भावस्थ को कारक बन कर संबन्ध बन कहते हैं । इस प्रकार लार्तुं में कारक है ।

३ चिदा शब्द में कित्त विभक्ति के लार्तुं से कर्म बनता है, यह सम्बोधन दिया जाता है । सम्बोधन के लिंग और बहुवचन में प्रथमा के समान ही रूप होता है, के एकवचन में कही २ रूपान्तर होता है । भवन्त सम्बोधन एकवचन का रूप पूणक लिंगा जायगा ।

स्वरान्त-पुंल्लिङ्ग जञ्च ।

अकारान्त-गज (Elephant)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
द्वितीया	गजम्	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्याम्	गजेः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
पञ्चमी	गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानाम्
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु
सम्बोधन	गज		

(१) अजगर a large serpent, अध्यापक superintendent, अन्तराय obstacle, अन्ध year, अमात्य minister, अदग charioteer of the sun, dawn; अर्थ wealth, आकर mine, आचार्य preceptor, आमीर cowherd, आय income, आयुध weapon, उपल stone, भोदन cooked rice, कच्छप-कूर्म tortoise, कट mat, कर्णधार helmsman, कउड spot, कउड strife, कक crow, काम desire, काल time, कुनकुर a dog, कुम्जर an elephant, कुम्भ jar, कोण corner, कोदण्ड bow, कोष treasure, कोस two miles, क्षण moment, क्षुर razor, लम्जन a bird, गुच्छ cluster, ग्रह planet, घातक executioner, चउक sparrow, चर्मकार shoe-maker, चारण bard, चूत mango tree, छाग goat, जम्बुक jackal, जालम rascal, जीमूत cloud, डिम्ब egg, तण्डुल rice, तारकर thief, तण्डव dance of Shiva, ताल palm tree, तूल cotton, ततक adopted son, दम्भ pride, दाशर kinsman, घनिक rich man, ध्वज flag, नकुल mongoose, नक crocodile, नाद sound, पक्ष side, wing; पण wages, price; पथोद cloud, प्यड bedstead, पारावत pigeon, पाल net, पिक cuckoo, उ heap, पुरस्कार reward, पौर citizen, विहाल cat, भक्त devotee, भट soldier, भृत्य servant, भव platform, भट temple, भवडव enclosure, भण्डक frog, भन्मव cupid, धल duck, मस्तिष्क brain, मसक gnat, मानव man, माप kind of pulse, मृग deer, मेल union, यक्ष servant, यकुबर Kuber, यजमान sacrificer, यव barley, यात्रिक pilgrim, यध warrior, रङ्ग stage, रसाल mango tree, लणुड stick, नाड forehead, लुण्ठक hunter, वंश race, family,

bamboo; वयस्य companion, वा boon, वस्त्रिक ant-hill
 वारण elephant, वासर day, विनिमय exchange, वृष boar
 व्यतिकर occurrence, व्याज pretence, शाक vegetable
 शावक young of beasts, श्वापद beast of prey, कण्डू bo
 सङ्कर mixture of castes, सचिव minister, सहाय com
 panion, सूद cook, सैनिक soldier, स्तम्भ pillar, स
 heap, स्तेन thief, स्यन्दन chariot, स्वेद sweat, ह्य hor
 इत्यादि सब अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'गज' के समान होते हैं
 पर अजगर, अव्यश इत्यादि में 'णस्व निधान' के अनुसार तृतीया एकवचन
 और पद्यो-बहुवचन में न् का ण् हो जाता है ।

(२) अल्प little, प्रथम first, चरम last, अर्द्ध half
 कतिपय some, द्वय pair, त्रय three, द्वितय couple
 त्रितय third, चतुष्टय four इत्यादि के प्रथमा-बहुवचन में
 अल्पे अल्पाः इत्यादि दो २ रूप होते हैं ।

(३) द्वितीय और तृतीय के चतुर्थो पञ्चमी और सप्तमी के
 एकवचन में द्वितीयाय-द्वितीयस्मै, द्वितीयात्-द्वितीयस्मात्
 द्वितीये-द्वितीयस्मिन् इत्यादि दो रूप होते हैं ।

(४) द्वितीया-बहुवचन तथा इससे आगे की विभक्तियों में
 पाद (foot) के स्थान में पद्, दन्त (tooth) के स्थान में दन्
 मास (month) के स्थान में मास् और यूप (broth) के स्थान
 में यूपन् भी हो जाता है । पद् का रूप सुहृद् के समान, दन् का
 भूमन् के समान और मास् का वेवस् के समान (भ्रं पते
 होने से स् का लोप होता है) होता है । पश्चान्तर में इनका
 रूप 'गज' के समान होता है । यथा, पाद्-३ या-पादेन-पदा,
 पादाभ्याम्-पद्भ्याम्, पादेः-पद्भिः । दन्त-दता, ददुभ्याम्, दद्विः ।
 मास-मासा, माभ्याम् माभिः । यूप-यूष्णा, यूपभ्याम्, यूपभिः

सुबन्त-प्रकरण ।

(५) भजर, निजर, निर्जर (god) इत्यादि के रूप स्वर (जिसके आदि में स्वर हो) विभक्तियों में 'वेधस्' के समान होते हैं । यथा, १मा-भजरः भजरी-भजरसी, भजरसः । २-भजरम्-भजरसम्, भजरी-भजरसी ।

(६) सायाह, व्यह तथा संख्यावाचक अह (द्यह, अह इत्यादि) शब्दों के सप्तमी-एकवचन में सायाहि, सायाहा, सायाहे, व्यहि, व्यहनि, व्यहे; इत्यादि तीन २ रूप होते हैं और अन्य विभक्तियों में 'गज' के समान रूप होते हैं । मध्याहे, अपराहे, पूर्व्याहे, के एक ही रूप होते हैं ।

आकारान्त-विश्वपा (God, Sun, Moon)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	५. विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
२. विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपाः	६. "	विश्वपोः	विश्वपौ
३. विश्वपा विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः		७. विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपाम्
४. विश्वपे विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	सं० विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपौ	विश्वपाः

(१) गोपा cowherd, सीरपा one who drinks Soma juice, धूमपा one who inhales smoke, शक्तिदा strength-giver, शंखपा conch-shell blower इत्यादि शब्दों से बने हुए सब आकारान्त शब्दों के रूप 'विश्वपा' के समान होते हैं ।

(२) घातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों में सर्वत्र नियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं । यथा, हाहा—

१. हाहाः	हाहौ	हाहाः	२. हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
२. हाहाम्	हाहौ	हाहाः	६. "	हाहौः	हाहाम्
३. हाहा हाहाभ्याम्	हाहाभिः		७. हाहे	"	हाहाम्
४. हाहौ	"	हाहाभ्यः	सं० हाहाः	हाहौ	हाहाः

(५) भजर, निजर, निर्जर (god) इत्यादि के रूप स्वरादि (जिसके भादि में स्वर हो) विभक्तियों में 'घेघस्' के समान भी होते हैं । यथा, १मा-भजट भजरो-भजरसो, भजराः, भजरसः । २-भजरम्-भजरसम्, भजरी-भजरसो ।

(६) सायाह, व्यह तथा संख्यावाचक अह (द्यह, त्र्यह इत्यादि) शब्दों के सप्तमी-एकवचन में सायाहि, सायाहानि, सायाहो, व्यहि, व्यहनि, व्यहो; इत्यादि तीन २ रूप होते हैं और अन्य विभक्तियों में 'गज' के समान रूप होते हैं । पर मध्याह्ने, अपराह्ने, पूर्व्याह्ने, के एक ही रूप होते हैं ।

आकारान्त-विश्वपा (God, Sun, Moon)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	५. विश्वपाः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
२. विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपाः	६. " विश्वपौः	विश्वपाम्	
३. विश्वपा विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः		७. विश्वपि विश्वपौः	विश्वपासु	
४. विश्वपे विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः	सं० विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः	

(१) गौपा cowherd, सोमपा one who drinks the Soma juice, घूसा one who inhales smoke, बलश strength-giver, शंखपा conch-shell blower इत्यादि धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों के रूप 'विश्वपा' के समान होते हैं ।

(२) धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों में सन्धिनियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं । यथा, हाहा—

१. हाहाः	हाहौ	हाहाः	५. हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
२. हाहाम्	हाहौ	हाहाः	६. " हाहौः	हाहाम्	
३. हाहा हाहाभ्याम्	हाहाभिः		७. हाहे	हाहासु	
४. हाहै	" हाहाभ्यः	सं० हाहाः	हाहौ	हाहाः	

Exercise — 5

1. Translate into Hindi or English :— भद्रः पुरय । अग्नी सेवकी । आप्यारिमकेन वज्रेण । अपन्नो बालकी घावते । प्रामत्य लोक आगच्छन्ति । वृक्षान् बालोऽपतन् । शिष्यानुपदिशति शिक्षकः । मुर्गका बालका लोकानां पिया भवन्ति । धौरा अर्थ खोरयन्ति । विरवामिप्रथ उपदेशेनागती रामलक्ष्मणी । नृपः प्राणैः शत्रुं हन्ति । अश्वेभ्यो लोकेभ्योर्ष ददाति । दशरथस्य पुत्रा प्रामं गच्छन्ति ।

2. Translate into Sanskrit: — (a) दो लड़के । गाँव में आदमी । दशरथ के पुत्रों को । गाँव में बहुत वृक्ष हैं (सन्ति) । सभी लोगों को बुलाता है (आह्वयति) । राजा दरिद्रों को धन देता है (ददाति) । बालक एक पैर का लँगड़ा है (अस्ति) । वह दोनों हाथों से शत्रुओं को मारता है (ताडयति) । राजा के दोनों सैनिक युद्ध करते हैं (युधते) । मानसरोवर से ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है (निर्गच्छति) ।

(b) A good boy. Two sticks of Ram. Warriors of the King. There are (सन्ति) ducks in the pond. The boy takes (गृह्णाति) from the hand. The bull falls (पतति) from the top of the mountain. By the help of his wife Dashaaratha conquered (विरवान्) the enemies. The King gives (ददाति) wealth to the poor. There are many trees in the village. People bear (वहन्ति) burden on their heads. Men eat अद्मिन्ति rice with their right hand. Boys see (पश्यन्ति) the moon in the sky. Gods dwell (वसन्ति) in heaven.

3. Correct:— नरवरः लोकाः । जटिली घरनः । दरिद्रः पुरया आगच्छन्ति । गार्गीरो कृते पतति । रामान् गच्छन्ति सैनिकाः । आधमनेषु अनेको मृगा वरन्ति । रथेण स्वर्गं गच्छन्ति । करेण वरुं गृह्णाति । शठानां वृष्टो भवति । मानुष्याणां समूहः वसति ।

इकारान्त-मुनि (Sage)

प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनी	मुन्यो.	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति और सति शब्दों को छोड़ कर अतिथि guest, भ्रि enemy, अलि bee, असि sword, अहि snake, ऋषि sage, कवि monkey, कवि poet, कुक्षि belly, कृमि worm, गिरि mountain, ग्रन्थि joint, भूर्जटि (शिव), अ्वनि sound, निधि store, पाणि hand, वलि offering, यति ascetic, रवि sun, रश्मि ray, विधि (ब्रह्म) rule, व्याधि sickness, साधि charrioneer इत्यादि सब इकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप 'मुनि' के समान होते हैं ।

पति (Lord, husband)

१. पतिः	पती	पतयः	५.	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
२. पतिम्	पती	पतीन्	६.	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
३. पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	७.	पत्यौ	"	पतिषु
४. पत्ये	"	पतिभ्यः	सम्बो०	पते	पती	पतयः

अन्य शब्दों के साथ समास होने पर पद के अन्त में पति से तो 'मुनि' के समान रूप होते हैं । यथा, नृपति, भूपति,

मदोपनि Kiti, मित्ति विन्ति, मीत्रमिति सु-
इत्यादि ।

मति (Friend)

१. मत्तः मत्तनी	मत्तः	२. मत्तुः मत्तनीम्	मत्तः
२. मत्तम्	मत्तः	३. मत्तुः मत्तनीः	मत्तः
३. मत्तः मत्तनीम्	मत्तः	४. मत्तुः मत्तनीः	मत्तः
४. मत्तुः	मत्तः	५. मत्तुः मत्तनीः	मत्तः

ईकारान्त-सुधी (A wise man)

प्रथमा	सुधीः	सुधिवी	सुधिरः
द्वितीया	सुधिवम्	सुधिवी	सुधिरः
तृतीया	सुधिणा	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधिणाः	सुधियान्
सप्तमी	सुधिवि	सुधिवोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः		

(१) अर्थात् shameless, सुधी-मन्दरी-इत्यर्थे silly, एक
one who buys barley, सुधी of pure intellect, सुधी
beautiful इत्यादि प्रायः सब ईकारान्त शब्दों के रूप (उचित और
स्त्रीलिङ्ग दोनों में) ऐसे ही होते हैं ।

(२) पर सेनानी general, भ्रमणी leader, ग्रामणी
Superintendent इत्यादि कई शब्दों के रूप सन्धि-नियमा-
नुसार चिमकियों को जोड़ देने ही से बन जाते हैं । सप्तमी
के एकवचन में सेनान्याम् इत्यादि होते हैं ।

सुबन्त-प्रकरण ।

(३) यथा the sun, यथा horse और घातप्रमी & sv
intelope के रूप सेनानी की भाँति होते हैं, पर द्विती
एकवचन में घातप्रमीम् और बहुवचन में घातप्रमीन् ।
उप्तमी एकवचन में घातप्रमी इत्यादि होते हैं ।

(४) प्रधी of good intellect का रूप भी सेनानी
भाँति होता है । केवल सप्तमी के एकवचन में प्रधिय होता ।

उकारान्त-साधु (A sage, A saint)

प्रथमा	साधुः	साधू	साधव
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वीः	साधून्
सप्तमी	साधी	साध्वीः	साधून्
सम्बोधन	साधो		

(१) अणु atom, इणु sugarcane, इणु arrow,
straight, ऋणु season, गुरु preceptor, गोमाणु jar
जन्तु animal, तन्तु thread, तद tree, दस्यु robber,
metal, पाणु axe, पशु beast, पाणु dust, प्रभु master
friend, षड् (प्राङ्गण), विन्दु drop, भाणु Sun, मिणु beg
मनु, मृत्यु death, बाहु arm, वायु wind, विभु lord,
बेणु bamboo, बगुणु enemy, शिशु infant, सुतु
सेतु bridge, हेतु cause इत्यादि प्रायः सब उकारान्त पुलिङ्ग
के रूप 'साधु' के समान होते हैं ।

(२) कोण्डु Jackal के रूप प्रथमा और द्वितीया के

वचन में नित्य तथा अन्य स्वरदि विभक्तियों में विभक्त्य के प्रोष्ठु होकर 'दातृ' के समान होते हैं । यथा, १-क्रोष्टा, क्रोष्टारो क्रोष्टारः; ३-क्रोष्ट्रा-क्रोष्टुना, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः ।

उकारान्त शब्द—अग्निभू (कार्तिकेय)

१ अग्निभूः अग्निभुवौ अग्निभुवः ५ अग्निभुवः अग्निभूभ्याम् अग्निभूभ्यः
 २ 'अग्निभुवम्' " " ६ " अग्निभुवोः अग्निभुवनम्
 ३ अग्निभुवा अग्निभूभ्याम् अग्निभूभिः ७ अग्निभुवि अग्निभुवोः अग्निभूवुः
 ४ अग्निभुवे " अग्निभूभ्यः स. अग्निभू अग्निभुवौ अग्निभुवः
 अधिभू lord, जितभू conqueror of the world, प्रतिभू guarantee, मनोभू (कामदेव), स्वभू-स्वयम्भू (ब्रह्मा) इत्यादि के रूप "अग्निभू" के समान होते हैं ।

पर, करभू finger-nail, खलू sweeper, दम्भू thunder bolt, वर्षाभू frog, सुखू good cutter, हृहू a gandharba इत्यादि शब्दों में वच् न हो कर सन्धि-नियमानुसार विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं । पर हृहू इत्यादि कई शब्दों की द्वितीया के एकवचन और षड्वचन में क्रम से हृहून् और हृहून् होते हैं । यथा, खलूः, खल्वौ, खलवः इत्यादि ।

ऋकारान्त-दातृ (giver)

प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातान्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातृणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
अ०	दातः		

(१) अविष्टात् ruler, अर्तु agent, क्रेतु buyer, जेतु conqueror, ज्ञातु one who knows, इष्टु looker, धातु-विधातु creator, नप्तु grandson, धोतु hearer, audience; सवितु n, स्रष्टु creator, हन्तु killer इत्यादि एव तुप् व नृन् प्रायपान्तान्त अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'दातु' के समान होते हैं ।

(२) पर जामातु son-in-law, देष्टु husband-brother, मानु father, सञ्च्येष्टु charioteer इत्यादि प्रकान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'जातु' के समान होते हैं ।

घ्रातु (Bother)

घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातरः	५. घ्रातुः	घ्रातृभ्याम्	घ्रातृभ्यः
घ्रातरम्	"	घ्रातृन्	६. घ्रातुः	घ्रातोः	घ्रातृणाम्
घ्रात्रा	घ्रातृभ्याम्	घ्रातृभिः	७. घ्रातरि	घ्रातोः	घ्रातृषु
घ्रात्रे	"	घ्रातृभ्यः	८. घ्रातः	घ्रातरौ	घ्रातरः

ऐकारान्त-ई (Wealth)

१. राः	रायौ	रायः	५. रायः	राभ्याम्	राभ्यः
२. रायम्	"	"	६. "	रायोः	रायाम्
३. राया	राभ्याम्	राभिः	७. रायि	रायोः	रायु
४. राये	"	राभ्यः	८. राः	रायौ	रायः

ओकारान्त-गो (Cow, earth)

१ गोः	गावौ	गावः	५ गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
२ गाम्	गावौ	गाः	६ गोः	गवोः	गयाम्
३ गवा	गोभ्याम्	गोभिः	७ गवः	गवोः	गोषु
४ गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	८ गोः	गावौ	गावः

3. Correct.—गुरुस्य आदेशः । हरिस्य सृष्टिः । मुनी गिरिं गच्छतः ।
इस्तेषु गृह्णाति । कवीन् आह्वयति । ऋषेभ्योऽर्घं ददाति । नरपति सखे
विरवायो नास्ति । पितारं वदति । गावं मा तादय । भ्रातोः पुत्री पठतः ।

स्त्रीलिंग-शब्द ।

आकारान्त-लता (Creeper)

प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

(१) अर्चना worship, आत्मजा daughter, आज्ञा order,
आशा hope, इच्छा desire, कनिष्ठा little finger, कन्या
daughter, करुणा compassion, कला art, कलिका bud,
कविता poetry, कान्ता wife, कुड्यता unchaste woman,
कृतज्ञता gratitude, कृपा mercy, क्षमा night, क्षमा forgive-
ness, क्षुधा hunger, गङ्गा Ganges, गणिका harlot, गुहा
cave, ग्रीवा neck, घण्टिका small bell, घृणा hate, वित्त
funeral pile, चिन्ता thought, चेष्टा attempt, द्युता light,
दृश्या shade, जङ्घा thigh, जनता crowd, नाया wife, विद्या
business, जीविका livelihood, ज्योत्स्ना moonlight, तन्दा
business, तमिस्रा night, तारा star, राज्या state, दाशा
tape, नासा nose, पण्डा wisdom, पत्रिका letter, पादुच्य shoe,

इत्यादि ।

Exercise—7

1. Translate into Hindi or English:—गङ्गाया भ्रातृमत्ता ।
 दास्यै माला । महिलासु लज्जा वसति । भार्यायाः सेवया तुष्यति जनः ।
 पुरा कन्यायै मालां ददाति । ललनाः शिलायामुपविशन्ति । भार्या शिक्षन्ते
 ललिकाः । ललनाया इत्या कदापि न करणीया । रामस्य पादुकेषु भरतो
 प्रस्थागतः ।

2. Translate into Sanskrit —(a) कन्या की । महिला के लिये ।
 ललना की चेष्टा । गङ्गा के लिये मालाएँ । रात में तारे उगते हैं (उद्यन्ति) ।
 कन्या की इत्या से लोग दुखी हैं । पर्वत की शोभा देखो (पश्य) । स्त्री
 रक्षा करो (रक्ष) । कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध करो (कुरु) । लक-
 र्यों पुतलियों से खेलती हैं (क्रीडन्ति) । स्त्री पति के समाचार से प्रसन्न
 होती है (भवति) ।

(b) For the daughter. Desire of women. Ram gives
 arland to Sita. The monkey falls from the mango-tree.
 The wife follows (अनुसरति) her husband. The woman
 worships (पूजयति) gods. Monkeys live (वसन्ति) on the
 branches of trees. Mother gives dolls to her daughters.

3. Correct:—धनपूर्णाः धरा । शाखात् पतति वाखा । धरास्य रक्षां
 कुरु । मालान् धारयन्ति ललनाः । भार्यायै अर्थं ददाति । मस्तकस्य पीडेन
 विदितः । वृक्षशाखाषु स्वगा निवसन्ति । मृषां प्रजानां रक्षकाः भवन्ति ।

इकारान्त — मति (Intellect)

मतिः	मती	मतयः
मतिम्	मती	मतीः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
मत्यै-मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः-मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः-मतेः	मत्योः	मतोनाम्
मत्याम्-मती	मत्योः	मतिषु
मते		

अङ्गुलि finger, अन्त्येष्टि funeral ceremony, decrease, अन्नति increment, अदि fortune, beauty, कीर्ति fame, कृति action, इति husbandry, amusement, धिति earth, खनि mine, गति movement, यकृति compound interest, पुति fire-place, beauty, जन्म-भूमि mother land, जाति caste, race, किंति date, नुति loss, पुति light, पाणि earth, धूलि dust, patience, नीति politics, पंक्ति line, प्रकृति nature, prosperity, भूमि land, मुक्ति freedom, मूर्ति image, a young lady, रात्रि night, रीति manner, रवि तीबति wick of a lamp, विपत्ति adversity, वृत्ति profession, वृष्टि rain, शक्ति power, शान्ति peace, स्मृति memory, Veda; सृष्टि creation, हानि loss इत्यादि सब इकारान्त स्त्री-शब्दों के रूप 'मति' के समान होते हैं ।

(१) ईकारान्त-नदी (river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्ये	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
	नदि		

finger, अदानी forest, बर्षी earth, कठिनी chalk, obtain, कामिनी woman, काशी-गौरी goddess

सुबन्त प्रकरण ।

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregna woman, गृहिणी house-wife, जननी mother, तटिनी-तरणी river, तज्जनी forefinger, तन्त्री musical instrument, दासी maid servant, धरणी earth, धात्री nurse, नगरी town, नन्दिनी daughter, भारी woman, पत्नी wife, पुस्तो manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sister, मन्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, मणि-मालिनी crowned queen, मही earth, युवती young woman, रजनी night, राज्ञी queen, लेखनी pen, वाणी speech, well, चाडिनी army, विभावरी-शुश्रूषी night, श्रेणी li इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

N. B. पर अवी (राजस्वला स्त्री), उरी boat, तन्त्री goddess of wealth और स्त्री smoke के प्रथमा-वचन में विलोम भी होता है । यथा, अवीः, उरीः इत्यादि शेष रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रियो	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियो	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियः
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

श्री intellect, भी fear, भी ही shame के रूप 'श्री' के समान होते हैं ।

अङ्गुलि finger, अङ्गुलिङ्गुल forest, अङ्गुलिङ्गुल forest, अङ्गुलिङ्गुल forest
 decrease, इङ्गुलिङ्गुल treatment, अङ्गुलिङ्गुल treatment, अङ्गुलिङ्गुल treatment
 beauty, कीर्ति lame, इङ्गुलिङ्गुल action, इङ्गुलिङ्गुल action, इङ्गुलिङ्गुल action
 amusement, इङ्गुलिङ्गुल earth, अङ्गुलिङ्गुल mind, अङ्गुलिङ्गुल mind, अङ्गुलिङ्गुल mind
 अङ्गुलिङ्गुल compound interest, अङ्गुलिङ्गुल interest, अङ्गुलिङ्गुल interest
 beauty, अङ्गुलिङ्गुल mother land, अङ्गुलिङ्गुल mother land, अङ्गुलिङ्गुल mother land
 इङ्गुलिङ्गुल date, अङ्गुलिङ्गुल loss, अङ्गुलिङ्गुल light, अङ्गुलिङ्गुल earth, अङ्गुलिङ्गुल earth
 patience, नीति politics, अङ्गुलिङ्गुल line, अङ्गुलिङ्गुल line, अङ्गुलिङ्गुल line
 prosperity, अङ्गुलिङ्गुल land, अङ्गुलिङ्गुल freedom, अङ्गुलिङ्गुल freedom, अङ्गुलिङ्गुल freedom
 young lady, अङ्गुलिङ्गुल night, अङ्गुलिङ्गुल manner, अङ्गुलिङ्गुल manner, अङ्गुलिङ्गुल manner
 अङ्गुलिङ्गुल wick of a lamp, अङ्गुलिङ्गुल adversity, अङ्गुलिङ्गुल adversity, अङ्गुलिङ्गुल adversity
 अङ्गुलिङ्गुल rain, अङ्गुलिङ्गुल power, अङ्गुलिङ्गुल peace, अङ्गुलिङ्गुल peace, अङ्गुलिङ्गुल peace
 Veds; अङ्गुलिङ्गुल creation, अङ्गुलिङ्गुल loss इत्यादि सब इङ्गुलिङ्गुल इत्यादि सब इङ्गुलिङ्गुल
 : अङ्गुलिङ्गुल के रूप 'अङ्गुलिङ्गुल' के समान होते हैं ।

(१) ईकारान्त-नदी (river)

प्रथमा	नदी	नद्यो	नद्यो
द्वितीया	नदीम्	नद्यो	नदीम्
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभ्याम्
चतुर्थी	नद्ये	नदीभ्याम्	नदीभ्याम्
पञ्चमी	नद्याः	नद्योः	नदीभ्याम्
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीभ्याम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीभ्याम्
सम्बोधन	नदि	नद्योः	नदीभ्याम्

अङ्गुलिङ्गुल finger, अङ्गुलिङ्गुल forest, अङ्गुलिङ्गुल earth, अङ्गुलिङ्गुल earth, अङ्गुलिङ्गुल earth
 अङ्गुलिङ्गुल plantain, अङ्गुलिङ्गुल woman, अङ्गुलिङ्गुल गौरी goddess

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregnant woman, रुईणी house-wife, जननी mother, तटिनी-तरंगिनी river, तज्जनी forefinger, तन्त्री musical instrument, दासी maid servant, धरणी earth, धात्री nurse, नगरी town, नन्दिनी daughter, नारी woman, पत्नी wife, पुरी town, पुस्त्री manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sister, मञ्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, महिषी crowned queen, मही earth, युवती young woman, रजनी night, राज्ञी queen, लेखनी pen, वाणी speech, बापी well, बादिनी army, विभाषरी-शर्वरी night, भेणी line, इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

N. B. पर धवी (राजस्वला स्त्री), तारी boat, तन्त्री lute, लक्ष्मी goddess of wealth और स्तरी smoke के प्रथमा-पुन-वचन में विसर्ग भी होता है । यथा, धवीः, तारीः इत्यादि शेष रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रीषी	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियी	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रिये-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

: श्री intellect, भी fear, भीर ही shame के रूप 'श्री' के समान होते हैं ।

कुमारी Virgin, कौमुदी moon-light, गर्भिणी pregnant woman, गृहिणी house-wife, जन्नी mother, तटिनी-तरंगिनी river, तर्जनी forefinger, तन्त्री musical instrument, दासी maid servant, धरणी earth, घात्री nurse, नगरी town, नन्दिनी daughter, नारी woman, पत्नी wife, पुरी town, पुस्तो manuscript, पृथ्वी earth, भगिनी sister, मञ्जरी blossom, मशहरी mosquito curtain, महिषी crowned queen, मही earth, युवती young woman, रजनी night, राणी queen, लेखनी pen, वाणी speech, बगी well, पाहिनी army, विभात्री-शर्बरी night, धेनी line, इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

N. B. पर अथी (राजस्वला स्त्री), तरो boat, तन्त्री lute, लक्ष्मी goddess of wealth और स्तरी smoke के प्रथमा-पु-वचन में विलग्न भी होता है । यथा, अथीः, तरोः इत्यादि ज्ञेय रूप 'नदी' के समान होते हैं ।

(२) श्री (Beauty)

प्रथमा सम्बो०	श्रीः	श्रियो	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियो	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रिये-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

श्री intellect, भी fear, और ही shame के रूप 'श्री' के समान होते हैं ।

(१) स्त्रीलिङ्ग सुधी, हतधी, शतधी, शुद्धधी इत्यादि शब्दों के रूप 'थ्री' तथा पुल्लिङ्ग 'सुधी' दोनों के समान होते हैं।

(२) स्त्रीलिङ्ग प्रामणी, अप्रणी इत्यादि के रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्री (Woman)

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियाँ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्-स्त्रीम्	स्त्रियाँ	स्त्रियः-स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणां
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

उकारान्त-धेनु (Cow)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै-धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः-धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः-धेनोः	धेन्योः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्याम्-धेनो	धेन्योः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

उट्ट lunar mansion, उट्टु beak, उट्टु body, उट्टु roof, उट्टु dust, उट्टु nerve इत्यादि सब उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'धेनु' के समान होते हैं।

ऊकारान्त-वधू (Wife, bride)

।थमा	वधूः	वध्वी	वध्वः
हेतीया	वधूम्	वध्वी	वधूः
तीया	वध्वा	वधूम्याम्	वधूमिः
तुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूम्यः
।ञ्जिमी	वध्वाः	वधूम्याम्	वधूम्यः
।ष्टी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
।प्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूपु
सम्बोधन	वधु		

कर्मणू jujube tree, वनू army, चञ्चू beak, वणू (काव्य), लू body, पुनर्भू re-born, प्रतू mother, वीरतू mother of hero, स्वधू mother-in-law इत्यादि सब ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'वधू' के समान होते हैं ।

पर भू earth, सुभू woman having beautiful eye-brow शब्दों के रूप 'भू' के समान होते हैं, परन्तु सम्बोधन-एकवचन 'सुभू' का 'सुभू' होता है ।

ञ्रू (Eye-brow)

।थमा-सम्बो.	ञ्रूः	ञ्रुषी	ञ्रुवः
हेतीया	ञ्रुषम्	ञ्रुषी	ञ्रुवः
तीया	ञ्रुषा	ञ्रुष्याम्	ञ्रुषिः
तुर्थी	ञ्रुषे	ञ्रुष्याम्	ञ्रुष्यः
।ञ्जिमी	ञ्रुषाः-ञ्रुषः	ञ्रुष्याम्	ञ्रुष्यः
।ष्टी	ञ्रुषाः-ञ्रुवः	ञ्रुषोः	ञ्रुषाम्-ञ्रुषाम्
।प्तमी	ञ्रुषाम्-ञ्रुषि	ञ्रुषोः	ञ्रुषु

शुकारान्त शब्द ।

स्त्रीलिङ्ग शुकारान्त शब्द केवल तीन हैं, पुत्रिण् *daughter*, सस्यम् *husband's sister*, मातृ *mother*, सस्यम् *husband's brother's wife*, सस्यम् *sister* इनमें से 'सस्यम्' के रूप 'सस्य' के समान और तीन मात्र शब्दों के 'सस्य' के समान होते हैं। पर द्वितीया-बहुवचन में सस्यम्, पुत्रिण्यम्, मातृन्, यातृन्, होते हैं।

ओकारान्त-औकारान्त शब्द ।

स्त्रीलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के रूप पुत्रिण्य के समान ही होते हैं। यथा, सो-*heaven* के रूप 'सो' के समान और नौ-*boat* के रूप 'नौ' के समान होते हैं।

Exercise—8

1. Translate into Hindi or English:—कीर्तिः । ज्ञानेः उन्नतिः । विपत्तौ हृतिः । स्थानीनां रचना । जननी जन्मभूमिश्च । वृद्धेभ्यः भाषाया उन्नति भवति । कृपये भूमिः । कीर्तेर्हानि भवति । कर्पनी मरु शक्तिः । अटस्यां भ्रमामि । तटिनी पर्वतान् निस्परति । नारी पशुः कश्चि प्राप्नोति । कुमारी कठिन्या पत्रं लिखति । दासी नगरी गच्छति । मरिदास्थाः पुत्रं पृच्छति । आम्रवृक्षेषु मञ्जर्यं हरयन्ते ।

2. Translate into Sanskrit:—चन्द्रमा की रोशनी । पञ्चगव्यम् । लड़की के लिये । स्त्री के लिये मराहरी । स्वर्ग से पुत्र पर आता है (आगच्छति) । नगर में स्त्रियों का दख जाता है (गच्छति) । पूल से आकाश पूर्ण है । दरारय को तीन स्त्रियाँ चार पुत्र हैं । कर्तिकेय को ६ मातायें थीं (आमन्) । प्रकृति देखता हूँ (पश्यामि) । सीता राम की सेवा करती है (सेवते) । की स्त्रियाँ पति को देखता समझती हैं (गम्यन्ते) ।

सुबन्त-प्रकरण ।

(b) To the earth. The beauty of women, T
ment of the earth. Images of goddesses. Man
fall (पतन्ति) into the Ganges. Stars shine (प्रकाश
the night. Young women go (गच्छन्ति) to their
There are many wells in the village. The que
money to her maid-servants.

3. Correct:—स्मृतिस्य रचना । देवतास्य भाज्ञा ।
शत्रुञ्ज् जयति । लेखनिना लिखति कन्या । स्वस्रेभ्यो माञ्ज
लक्ष्मी विष्णोः पत्नी । राज्ञस्य भाज्ञा माननीया । कुमारीम
ददाति । स्मृतिषु महवो उपदेशाः सन्ति ।

स्वरान्त-कवीचलिङ्ग शब्द ।

अकारान्त-फल (fruit).

१	फलम्	फले	फलात्
२	"	"	"
३	फलेन	फलाभ्याम्	फलेः
४	फलाय	"	फलेभ्यः
५	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
६	फलस्य	फलयोः	फलान्
७	फले	"	फलेषु
स०	फल	फले	फलात्

अथ sin, अङ्क spot, mark; अङ्ग limb, अङ्ग
yard, अज्ञान ignorance, अप्यात्म knowledge
अन्तर interval, अन्तरीक्ष sky, अपत्य offspring
nectar, अरविन्द lotus, अर्श piles, अधु tear, अहिफे
आलवाल basin for water round the root of
आसन seat, इन्द्रिय an organ of sense, इन्धन fu
upper garment, उत्पल lotus, उदर bell, उद्यान

grammar, व्रण tumour, व्रत penance, शव dead body, वन्य young grass, शस्त्र weapon, वस्त्र corn, शीर्ष head, शील nature, श्राद्ध funeral ceremony, सङ्गीत song, मन्त्र power, सन्तान issue, समीप proximity, साक्ष्य evi-
 ence, साहस्य likeness, साहस boldness, साहित्य literature, हामन throne, सुख happiness, सुवर्ण gold, शोकाण stairs, ईन्दर्व्य beauty, स्वर्ण gold इत्यादि सब अकारान्त क्लोबलिङ्ग शब्दों के रूप 'फल' के समान होते हैं। पर णत्व-विधान के अनुसार ही र न का ण हो जाता है।

पर द्वितीया बहुवचन तथा आने की विभक्तियों में हृदय ण हृत्, उदक का उदन् और आस्य का आसन् भी होता है। शान्तर में इनके रूप 'फल' के समान होते हैं। यथा, श्या—
 श्या-हृदयेन, हृदुम्वाम्-हृदयाभ्याम्, हृद्वि-हृदयैः इत्यादि।

आकारान्त शब्द ।

आकारान्त शब्दों को अकारान्त करके उनका रूप 'फल' के समान बनाया जाता है। यथा, धीपा-धीपम्, धीपे, धीपाणि इत्यादि।

इकारान्त-वारि (Water)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारोणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारोणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिमिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारिणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिणु
सम्बोधन	वारि, वारि		

अक्षि eye, अस्थि bone, दधि curd, सकृधि the
को छोड़ कर इकारान्त फलीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'धा'
समान होते हैं ।

दधि (Curd)

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनो	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिमि
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि-दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	दधे-दधि		

अक्षि, अस्थि और सकृधि के रूप 'दधि' के समान
हैं, परन्तु अक्षि में न् का ण् होता है ।

उकारान्त-मधु (Honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुमिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधुनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु

अम्बु water, अश्रु tear, अङ्ग thigh, अजु lac, जानु knee, शल्लु palate, दाह wood, मरु desert, वशु wealth, वस्तु thing, श्मश्रु beard, सानु tableland इत्यादि सब उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'मधु' के समान होते हैं ।

द्वितीया-बहुवचन तथा आगे की विभक्तियों में सानु (tableland) का स्तु भी होता है ।

उकारान्त शब्दों का उकारान्त कर देते हैं और 'मधु' के समान रूप होते हैं । यथा, सुद्ध-सुलु, सुलुनी, सुलुनि इत्यादि ।

विशेषण ।

विशेषण इकारान्त और उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप भी विशेष्य इकारान्त, उकारान्त के समान ही होते हैं; पर चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी के एकवचन तथा षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन में पुल्लिङ्ग के समान भी रूप होते हैं । यथा, शुचि (pure)—शुचिने-शुचये, शुचिभ्याम्, शुचिभ्यः इत्यादि ।

सुमति-सुबुद्धि good intellect, अनादि eternal, स्वादु sweet इत्यादि के रूप 'शुचि' के समान होते हैं ।

N. B. पर एधी, मुधी, शुद्धधी, मन्दधी, हतधी को इकारान्त कर देते हैं और 'वारि' के समान इनके रूप होते हैं परन्तु द्वितीया से आगे की स्वरादि विभक्तियों में पुल्लिङ्ग 'एधी' के समान भी रूप होते हैं । यथा, (१ या, २ या,) सुधि, सुधिनो, एधीनि । (३ या) सुधिया-सुधिना, सुधिभ्याम्, सुधिभिः इत्यादि ।

ऋकारान्त-धातु (Creator)

प्रथमा	धातु	धातुणो	धातुनि
द्वितीया	धातु	धातुणी	धातुणि
तृतीया	धातुणा-धात्रा	धातुभ्याम्	धातुभिः
चतुर्थी	धातुणे-धात्रे	धातुभ्याम्	धातुभ्यः
पञ्चमी	धातुणः-धातुः	धातुभ्याम्	धातुभ्यः
षष्ठी	धातुणः-धातुः	धातुणोः-धात्रोः	धातुणाम्
सप्तमी	धातुणि-धातरि	धातुणोः-धात्रोः	धातुणु
अष्टम्योपन	धातु-धातः		

कर्तृ doer, author, दातृ giver, ज्ञातृ knower, जेतृ conqueror इत्यादि ऋकारान्त शब्दों के रूप भी ऐसे ही होते हैं ।

ए-ते-ओ-आँकारान्त शब्द ।

ए-पेकारान्त बलीबलिङ्ग शब्दों को इकारान्त तथा ओ-आँकारान्त शब्दों को उकारान्त करके क्रम से 'वारि' तथा 'प्रधु' शब्दों के समान रूप बनाते हैं । यथा, प्ररै (one who has great wealth)—(१-२) प्ररि, प्ररिणी, प्ररणि; (३) प्ररिणा, प्रराम्भ्याम्, प्रराम्भिः (see रै) । प्रधो तथा सुनी के रूप 'प्रधु' के समान बना लो ।

Exercise--9

1. Decline:—नर, हरि, मन्त्रि, पति, नरपति, शम्भु, सैनानी, हाइक, सुधी, सुल, हूह, कर्तृ, नृ, गन्तु, गो, तारा, बुद्धि, जननी, तनु, स्वस्त, मातृ, धी, भौ, कमल, दारु, शुचि, सुधी and कर्तृ ।

2. Decline पति, सुधी, रत्रो, धी, नृ, वारि and प्ररै in 2nd, 6th and 7th cases.

3. Translate into Hindi or English:—मधुराणि फलानि । काष्ठमये भासन्ते । कलत्राय भोजनम् । उद्यानात् पुष्पाणि आनय । दशरथस्य पक्ष अपत्यानि आसन् । कङ्कणाभ्या स्वर्णं क्रीतवान् । करपत्रेण विदार्यमाणं काष्ठद्वयमस्ति । उद्यानात् कतिपयानि आम्नाणि आनय । गङ्गायाः स्वादु चारि पिबामि । वारिणि सुन्दराणि कमलानि शोभन्ते । अमराः पुष्पेभ्यो मधूनि गृह्णन्ति । शौराः प्राह्वणस्य सन्धिनि वस्तूनि चीरयन्ति ।

4. Translate into Sanskrit—(a) लकड़ी के घर में । वन के भीड़े फल । समुद्र का जल खारा होता है । वृक्ष के सूखे पत्ते पृथिवी पर गिरते हैं (पतन्ति) । मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग देता है (त्यजति) । आम के फल भीड़े होते हैं (भवन्ति) । बालक की असफलता का कारण क्या है । रामचन्द्र १४ वर्ष बच में थे (आसीत्) । घर में धन्न की राशि है । रथ ४ पहियों से चलता है (चलति) ।

(b) To the widow. Ghee for the friend. The king gave (दत्तवान्) him poison. Beggars beg (याचन्ते) from door to door. Bees gather (संगृह्णन्ति) honey from flowers. Boys will learn (शिक्षिन्यन्ते) literature from the teacher. All subject are satisfied with the rule of Ram. Shvama is blind of one eye. The heart of Hari is full of joy. Contentment is the source of happiness.

5. Correct:—आम्नस्य फलान् खादन्ति श्लोकाः । प्रकृतेः सौन्दर्येन सन्तुष्टाः श्लोकाः । बहुवी कमलाः शोभन्ते । पद्मो भक्ति सरोवरे । बालिकायाः बक्षिणे पीडा वसति । नद्या चारौ स्नाति बालकः । मधौ मधुरतास्ति ।

व्यञ्जनान्त शब्द ।

व्यञ्जनान्त शब्दों में प्रायः सन्धि-नियमानुसार विभक्तियों के योग करने ही से रूप बन जाते हैं ।

पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ।

व्यञ्जनान्त शब्दों में पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के विचार से विभक्तियों के लगाने में कोई भेद नहीं है ।

क् ष् ग् घ, ट् ढ् ड्, त् थ् द् ध, प् फ् ब् म्—अन-
वाले शब्दों में प्रायः प्रथमा की स् विभक्ति का लोप होकर
शब्द के अन्तिम वर्ण के स्थान में अपने वर्ग का प्रथम वर्ण हो
जाता है। स्वरदि विभक्तियों में कोई परिवर्तन नहीं होता
पर व्यञ्जनादि विभक्तियों में सन्धि-नियमानुसार अपने वर्ग का
प्रथम या तृतीय वर्ण हो जाता है। यथा, सर्वशक्, सर्व-
शकी। सर्वशग्भ्याम् सर्वशक्षु, चित्रलिग्-चित्रलिक् चित्रलिखी
चित्रलिग्भ्याम्, चित्रलिक्षु इत्यादि।

चकारान्त-पुंल्लिङ्ग-जलमुच् (Cloud)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा सम्बोधन	जलमुक्	जलमुर्चौ	जलमुचः
द्वितीया	जलमुचम्	जलमुर्चौ	जलमुचः
तृतीया	जलमुचा	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः
चतुर्थी	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
पञ्चमी	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
षष्ठी	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
सप्तमी	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु

पयोमुच्-याप्मुच् (cloud) इत्यादि सब पुंल्लिङ्ग तथा
स्यच् Skin, वाच् Speech, शुच् Sorrow, इत्यादि सब स्त्री-
लिङ्ग शब्दों के रूप 'जलमुच्' के समान होते हैं।

पर उदच् north, northern; तिर्य्यच् bird, प्रत्यच्
west, western इत्यादि गच्छ् (to go) घातु से बने शब्द
द्वितीया के बहुवचन तथा भागे की स्वरदि विभक्तियों में
प्रथम से उदाच्; तिर्य्य, प्र्याच् इत्यादि हो जाते हैं। फिर
'शाच्' के मद्रश् इनके रूप होते हैं।

प्राक्-(East, eastern)

प्राङ्	प्राञ्ची	प्राञ्चः
प्राञ्चम्	"	प्राचः
प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
प्राचे	"	प्राग्भ्यः
प्राचः	प्राग्भ्याम्	प्राग्भ्यः
"	प्राचोः	प्राचाम्
प्राचि	"	प्राक्षु
प्राङ्	प्राञ्ची	प्राञ्चः

स्त्रीलिङ्ग में प्राच्, उदीच् इत्यादि के रूप प्राची इत्यादि जकारान्त हो कर 'नदी' के समान होते हैं ।

जकारान्त पुंलिङ्ग वणिज्-(Merchant)

सम्योधन वणिक्	वणिजो	वणिजः
वणिजम्	वणिजो	वणिजः
वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु

भृत्विज् family priest; वलिभुज् fire, मिपज्
 ician, भूभुज् king, भृतिभुज् Servant, हुतभुज्
 इत्यादि सव पुंलिङ्ग तथा रुज् disease, घ्नज् garland
 सव स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

(२) पर देवराज् Indra, पश्चिाज् mendic
धिराज् splendour, विश्वसृज् creator of the universe
इत्यादि 'सम्राज्' के समान होते हैं; पर विश्वसृज् के
'वणिज्' के समान भी होते हैं ।

सम्राज् (Emperor)

प्रथमा, सम्बोध०	सम्राट्	सम्राज्ञी	सम्राज्ञः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राज्ञी	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्म्याम्	सम्राड्मिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्म्याम्	सम्राड्म्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्म्याम्	सम्राड्म्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु

तकारान्त-पुं लिङ्ग-भूभृत् (King, mountain)

प्रथमा, सम्बोध०	भूभृत्	भूभृती	भूभृतः
द्वितीया	भूमृतम्	भूभृती	भूमृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृदुम्याम्	भूभृदुमिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृदुम्याम्	भूभृदुम्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृदुम्याम्	भूभृदुम्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु

भृत् (शृत्), स्वृत् (व्यृत्), मृत् (मृत्), वृत् (वृत्) त
सवृत् (सवृत्) प्रत्ययान्त भौर मरुत् को छोड़कर इन्द्रिन् conquer
of Indra, चर्मण् workman, गरुत् wing, तमूलात् लि

पापइत् one who has committed sin, बड् large, मरुत् air, महीशित् king, महीभृत् mountain, विपश्चित् learned, दिवजित् conquering all, वसभृत् mood, हरित् green, इत्यादि सब पुंलिङ्ग तथा छुत् sneezing, कश्चित् lightning, पृत् army, योषित् woman, विद्युत् lightning, सरित् river इत्यादि सब स्त्रीलिङ्ग तकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

(१) अत् व स्पत् प्रत्ययान्त ।

अत् प्रत्ययान्त-धावत्-running.

१ धावत् धावन्तो धावन्तः	४ धावते धावद्भ्याम् धावद्भ्यः
सम्बो " " "	५ धावतः " "
२ धावन्तम् " धावतः	६ " धावतोः धावताम्
३ धावता धावद्भ्याम् धावद्भिः	७ धावति " धावतु

इच्छत् wishing, कुर्वत् doing, गच्छत् going, गायत् singing, ग्रहत् taking, तिष्ठत् standing, द्विषत् hating, ध्यायत् meditating, नृत्यत् dancing, पश्यत् seeing, पिबत् drinking, ब्रूवत् speaking, भवत् being, इत्यादि शब् प्रत्ययान्त तथा करिष्यत् about to do, गमिष्यत् about to go, दास्यत् about to give, यास्यत् about to go, स्थास्यत् about to stand इत्यादि स्तत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'धावत्' के समान होते हैं ।

पर जाग्रत् being awake, शासत् governing, ददत् giving, दधत् holding, विभूत् possessing इत्यादि के रूप 'भूभृत्' के समान होते हैं ।

(२) मन, यत्, तयत् प्रत्ययान्त ।

मत् प्रत्ययान्त—श्रीमत् Prosperous,

१ श्रीमान्	श्रीमन्तो	श्रीमन्तः	४ श्रीमने	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमन्तु
५ श्रीमन्	"	"	५ श्रीमनः	"	"
२ श्रीमन्नाम्	"	श्रीमनः	६ " श्रीमनोः	"	श्रीमन्तु
३ श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः	७ श्रीमति	"	श्रीमन्तु

अंशुमत् sun, आयुष्मत् long-lived, ज्योतिष्मत् sun, वैश्विष्मत् possessed of majestic lustre, धनुमत् archer, धीमन् wise, मानुमत् luminous, मतिमन्-शुद्धिमन् wise, मूर्ध्निमन् having form, मानुमत् mountain, हनुमत् (हनुमान्) इत्यदि मत् प्रत्ययान्तः इयत् this much, एतावत् so much, कितवत् how much, ज्ञानवत्-प्रज्ञावत् wise, तावत् as much, ममस्वत् air, भगवत् adorable, भवत् (तुष्मदर्भ) thou, मास्वत् shining, यावत् as much, लजावत् bashful, बलवत् strong, विद्यावत् learned, विवस्वत् sun, इत्यादि वत् प्रत्ययान्त तथा उच्यते said, कृतवत् done, गतवत् gone, जितवत् conquered, ज्ञानवत् known, रक्षवत् seen, भ्रुवत् beard, स्थितवत् stayed इत्यादि तवत्-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'श्रीमत्' के समान होते हैं ।

महत्-Great.

१. महान्	महान्तो	महान्तः	२. महान्तम्	महान्तौ	महतः
श्री० महन्	"	"	शेष रूप 'श्रीमत्' के समान ।		

स्त्रीलिङ्ग—में धत्, स्यत्, मत्, घत्, तवत् प्रत्ययान्त शब्दों के परे ई जोड़कर (स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय में देखो) 'नदी' के समान रूप बनाये जाते हैं ।

दकारान्त-पुंल्लिङ्ग-सुहृद्-Friend.

सुहृद्	सुहृदो	सुहृदः	४. सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
"	"	"	५. सुहृदः	"	"
सुहृद्	"	"	६. " सुहृदोः	सुहृदाम्	
सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः	सुहृदि	"	सुहृत्सु

सुहृद् sprouting, गोत्रभिद् Indra, दिविवद् god, निरापद् generous, पद् foot, मन्त्रभिद् sage, सभासद् member of assembly इत्यादि पुंल्लिङ्ग तथा आपद् danger, ह्यद् stone, सभसद् assembly, विपद् danger, शरद् autumn, संवद् probably, सम्पद् prosperity इत्यादि स्त्रीलिङ्ग दकारान्त शब्दों 'सुहृद्' के समान होते हैं ।

धकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-वीरुष्-Creeper.

वीरुष्	वीरुषी	वीरुषाः	४ वीरुषे	वीरुष्भ्याम्	वीरुष्भ्यः
"	"	"	५ वीरुषः	"	"
वीरुष्	"	"	६ " वीरुषोः	वीरुषाम्	
वीरुषा	वीरुष्भ्याम्	वीरुषिभिः	७ वीरुषि	"	वीरुषसु

वीरुष् knowing the law, वीरुषुष् fighting well, वीरुष्लिङ्ग तथा वीरुष् hunger, वीरुष् war, समिष् fuel, स्त्रीलिङ्ग धकारान्त शब्दों के रूप 'वीरुष्' के समान ।

Exercise--10.

Translate into Hindi or English:- पयोमुचः । आप्याम् ।
 वि आपुष्यमसि । त्वया काहे कृतानि । इन्द्रजितं हनन्तम्
 पुष्कला शक्येन पीडिता देवाः । विपश्चितो बुद्धिमत्तं जानति ।
 देव विजसति । अर्हभूय सरितः मिरमसि । विषमवतो भवामा-

गच्छति । विद्यायन्तो ज्ञानवत आदरं कुर्वन्ति । बालकः नृप्यन् गृहं प्रविशति । कार्यं करिष्यन् ग्रामं गमिष्यामि । परिपदि दिविपद्ः घर्त्तन्ते । शरदि काम निग्मलं भवति । विपदि महाविदोऽपि दुःखिता भवन्ति ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) वचन से । राजा का । ईश्वर । देवताओं का राजा है । राजा को मासला देता है । वणिक् व्यापार करता है । मेव में विजला चमकती है (प्रकाशते) । नदियों में गहवा धोए है । मार्ग गाते हुए आता है । ईश्वर का ध्यान करते हुए बोला (भवद्) । उ सूर्य निकलता है (उदेति) तब अन्धेरा दूर हो जाता है (नश्यति) । काम ने कहा था (अकथयत्) । राजा ने शत्रुओं को जीता । राजा ने अनेक युद्धों को मारा (हत्वान्) । लड़के ने एक बाघ देखा (अपश्यत्) । सभा में शशिष्ठ लोग आये हुए हैं (आगताः) ।

(b) In the east, Vashishtha was the priest of Raghu family. Servants serve (सेवन्ते) their king and the king protects (रक्षति) them. The girl made (प्रयितयती) a garden land and gave (दत्तयती) it to her younger brother. Garuda has large wings. There are many green leaves on the tree. Women made (प्रयितवत्यः) garlands of flowers. An intelligent boy learns (शिष्यते) his lesson. The sun gives us heat and light. News is heard (श्रूयते) by every one in the assembly. One should have (अवलम्बनीयं) patience in danger.

3. Correct:— भूभृतस्य आज्ञा मामनीया । सम्राजः प्रजापतिं राजानुं राज्ये समन्ति । सम्राजस्य परिचरे मे बहवो सुहृदाः सन्ति । बहवो ह्यनुभवे पूर्णं प्रक्षिपन्ति । शत्रुन् शिष्या भाग्यशून्यं सेनापतिं लोकाः खलु भूषयन्ति । ज्ञानवता अपि भगवतस्य आज्ञां न खंडन्ते । सम्पदे विपदे च धर्म्यदुषाः धर्मं न त्यजन्ति । दिविचक्षुषां परिचरे गोत्रभिर्दुः कथन्ति ।

नकारान्त शब्द ।

(१) इन् भागान्त-पुं विलङ्ग—गुणिन् (Qualified)

१. गुवी	गुविनौ	गुविनः	४. गुविने	गुविभ्याम्	गुविभ्यः
सम्बो. गुविन्	"	"	५. गुविनः	"	"
२. गुविनम्	"	"	६. " गुविनोः	गुविनाम्	
३. गुविना	गुविभ्याम्	गुविभिः	७. गुविनि	"	गुविषु

पथिन्, मथिन्, कथुथिन् को दोषकर अर्थिन् one who asks anything, आत्मघातिन् one who commits suicide, एकाकिन् alone, कञ्चुकिन् chamberlain, क्वरिन् elephant, कुटुम्बिन् house holder, कुशलिन् happy, कैशरिन् hon, गृहिन् householder, चक्रवर्तिन् sovereign ruler, ज्ञामिन् wise, तपस्विन् ascetic, तेजस्विन् strong, दूरदर्शिन् prophet, देहिन् one who has a body, द्वैकिन् enemy, धनिन् rich man, धन्विन् an archer, पथिन् bird, प्राणिन् animal, शक्तिन् strong, मनीषिन् wise man, मन्त्रोद्धारिन् pleasing, मन्त्रिन् minister, मेधाविन् intelligent, रोगिन् sickly, वाग्मिन् eloquent speaker, वाजिन् horse, विषयिन् sensualist, वैरिन् enemy, सिद्धिन् peacock, साक्षिन् witness, स्वामिन् lord इत्यादि इन् भागान्त शब्दों के रूप 'गुणिन्' के समान होते हैं ।

पथिन् (Path, way)

१. पथ्याः	पथ्यानी	पथ्यान्	४. पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
सम्बो " "	"	"	"	"	"
२. पथ्यान्	"	पथः			पथ्याम्
३. पथा	पथिभ्याम्				पथिषु

मग्निन् churning stick शब्द का रूप 'पयिन्' के समान होता है । प्रमुग्निन् Indra के रूप प्रथमा में प्रमुग्ना- प्रमुग्नाणां, प्रमुग्नाणः, द्वितीया में प्रमुग्नाणम्, प्रमुग्नाणां तथा शेष रूप 'पयिन्' के समान होते हैं । पयिन् शब्द समान होने पर भकारान्त होता है । यथा, सुपथः, सुपथी, सुपथाः । पथ शब्द भकारान्त भी होता है । स्त्रीलिङ्ग में इन् भागान्त शब्दों के परे ई लगा कर 'नदी' के समान रूप बनाये जाते हैं ।

(२) अन् भागान्त पुं लिङ्ग-लघिमन् (Lightness)

प्रथमा	लघिमा	लघिमानो	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानो	लघिमन्
तृतीया	लघिमिना	लघिमिम्याम्	लघिमिभिः
चतुर्थी	लघिमिन्	लघिमिम्याम्	लघिमिम्यः
पञ्चमी	लघिमिन्	लघिमिम्याम्	लघिमिम्यः
षष्ठी	लघिमिन्	लघिमिनोः	लघिमिनाम्
सप्तमी	लघिमिन्, लघिमिनि	लघिमिनोः	लघिमिसु
सम्बोधन	लघिमिन्	लघिमिमानो	लघिमिमानः

(क) अणिमन् subtility, अत्यमन् the sun, गतिमन् heaviness, तक्षन् carpenter, द्रुदिमन् hardness, प्रथिमन् greatness, प्रेमन् affection, मज्जन् marrow, मूर्धन् head, सुनामन् auspicious-named इत्यादि पुं लिङ्ग तथा पामन् scab, सीमन् boundary इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लघिमन्' के समान होते हैं ।

आत्मन् Soul

१ आत्मा	आत्मानो	आत्मानः	४ आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मन्
स० आत्मन्	"	"	५ आत्मनः	"	"
२ आत्मानम्	"	आत्मनः	६ "	आत्मनोः	आत्मनसु
३ आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	७ आत्मनि	"	आत्मसु

(ख) पुंलिङ्ग अर्ध्वन् horse, अश्मन् stone, कृष्णधर्मन् fire, द्विजन्मन् twice-born, यज्वन् sacrificer, यश्मन् consumption, महान् Brahma, सुशर्मन् इत्यादि जिन शब्दों के अन् का अकार म् या घ् संयुक्त वर्ण से मिला हो उनके रूप 'आत्मन्' के समान होते हैं ।

	राजन्-king			युवन्-young		
१	राजा	राजानौ	राजानः	युवा	युवानौ	युवानः
स०	राजन्	"	"	युवन्	"	"
२	राजानम्	"	राज्ञः	युवानम्	"	यूनः
३	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४	राज्ञे	"	राजभ्यः	यूने	"	युवभ्यः
५	राज्ञः	"	"	यूनः	"	"
६	"	राज्ञोः	राज्ञाम्	"	यूनोः	यूनाम्
७	राजनि-राशि	"	राजसु	यूनि	"	युवसु

	मघवन् Indra			श्वन् dog		
१	मघवा	मघवानौ	मघवानः	श्व	श्वानौ	श्वानः
स०	मघवन्	मघवानौ	मघवानः	श्वन्	श्वानौ	श्वानः
२	मघवानम्	"	मघोनः	श्वानम्	"	शुनः
३	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४	मघोने	"	मघवभ्यः	शुने	"	श्वभ्यः
५	मघोनः	"	"	शुनः	"	"
६	"	मघोनोः	मघोनाम्	"	शुनोः	शुनाम्
७	मघोनि	"	मघवसु	शुनि	"	श्वसु

(३) हन् भागान्त-पुंल्लिङ्ग-वृत्रहन्—Indra

१ वृत्रहा वृत्रहणौ	वृत्रहणः	४ वृत्रने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहम्ब
स० वृत्रहन्	"	५ वृत्रजः	"	"
२ वृत्रहणम्	"	वृत्रजः	६ "	वृत्रजोः वृत्रजम्
३ वृत्रजा वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः	७ वृत्रनि-वृत्रहनि	"	वृत्रहत्

पूषन्, अर्ष्यमन् और शशु हन् आदि सय हन् भागान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं, केवल पूषन् के सप्तमी-एकवचन में पूषिण, पूषणि, और पूषि तीन रूप होते हैं।

पकारान्त स्त्रीलिंग-अप् water नित्य बहुवचनान्त ।

आपः अपः अद्भिः अदुभ्यः अदुभ्यः अपाम् अप्तु

पकारान्त शब्द बहुत कम हैं। अप् शब्द समासान्त होने पर अकारान्त होता है; यथा; विमलार्प सरः ।

अकारान्त-स्त्रीलिंग—ककुम् Direction

१ ककुम्	ककुमौ	ककुमः	४ ककुमे	ककुम्भ्याम्	ककुम्ब
स० "	"	"	५ ककुमः	"	"
२ ककुमम्	"	"	६ "	ककुमोः	ककुमम्
३ ककुमा ककुम्भ्याम्	ककुम्भिः	७ ककुभि	"	"	ककुत्

स्त्रीलिङ्ग-अनुष्टुम्, त्रिष्टुम् forms of metre इत्यादि तथा पुंल्लिङ्ग अकारान्त शब्दों के रूप 'ककुम्' के समान होते हैं। पर अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द बहुत कम हैं।

प्रशाम्-Tranquil.

व्यग्रवादि विमलिक्यों में प्र काम हो जाता है। यथा, प्रशाम्, प्रशामी, प्रशामः, प्रशामभ्याम्, प्रशाम्तु ।

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग-गिर् Speech.

गिरी	गिरः	४ गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
"	"	५ गिरः	"	"
गिरी	गिरः	६ गिरी	गिरात्	गिराम्
गीर्भ्याम्	गीर्भिः	७ गिरि	"	गीर्भु

-स्त्रीलिङ्ग ध्रु the forepart of a carriage, ध्रुवादि के रूप ऐसे ही होते हैं, पर व्यञ्जनादि विभक्तियों का होता है। यथा, ध्रुः, ध्रुवी, ध्रुवः, ध्रुवम्, ध्रुविः, ध्रुवलिङ्ग शब्द बहुत कम हैं।

द्वार door में विभक्तियों के जोड़ देने से रूप बनते हैं, द्वाः, द्वारी, द्वाभ्याम्, द्वार्यु।

वकारान्त स्त्रीलिङ्ग-दिव्-Heaven.

दिवी	दिवः	४ दिवे	दिव्याम्	दिव्यः
"	"	५ दिवः	"	"
दिवी	दिवः	६ दिवि	दिवोः	दिवाम्
दिव्याम्	दिविः	७ दिवि	"	दिवु

शकारान्त पुल्लिङ्ग-विश्व्-Vaishya.

विश्वी	विश्वः	४ विश्वे	विश्व्याम्	विश्व्यः
"	"	५ विश्वः	"	"
"	"	६ विश्वे	विश्वोः	विश्वाम्
विश्व्याम्	विश्विः	७ विश्वि	"	विश्वु

विश्व, विश्वाश् name
रूपों के रूप ऐसे ही

३ स्त्रीलिङ्ग

दिश्-direction.

१ दिक्	दिशी	दिशः	४ दिशे	दिश्याम्	दिशन्
स० "	"	"	५ दिशः	"	"
२ दिशम्	"	"	६ "	दिशोः	दिशन्
३ दिशा	दिश्याम्	दिशिमः	७ दिशि	"	दिशु

दृश् looker, स्पृश् who touches, तथा इन से बने हुए ईदृश् such, एतादृश् such, कीदृश् what like, तादृश् such like, भवादृश् like you, मर्मदृश् Sharp इत्यादि पुल्लिङ्ग तथा सुदृश् pretty woman, मृगदृश् deer-eyed woman इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'दिश्' के समान होते हैं।

पुरोडाश् Sacrificial food

१ पुरोडाः	पुरोडाशौ	पुरोडाशः	४ पुरोडाशे	पुरोडाश्याम्	पुरोडाशन्
स० "	"	"	५ पुरोडाशः	"	"
२ पुरोडाशम्	"	"	६ "	पुरोडाशोः	पुरोडाशान्
३ पुरोडाशा	पुरोडाश्याम्	पुरोडाशिः	७ पुरोडाशि	"	पुरोडाशु

पकारान्त शब्द ।

अतिरुप् Very angry, द्विप् enemy, धर्मद्विप् wicked, विद्विप् enemy, इत्यादि पुल्लिङ्ग तथा तिप् light, splendour, तृप् thirst, रुप् anger, विपुप् drop of water, विप् Virgin, ordure इत्यादि स्त्रीलिङ्ग पकारान्त शब्दों के रूप 'विश्' के समान होते हैं। यथा, द्विप्-द्विद्वि, त्रिप्, द्विभ्याम्, द्विदु इत्यादि।

सकारान्त-पुंल्लिङ्ग-वेधस् Creator.

१. वेधाः	वेधसौ	वेधसः	४ वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
स० वेधः	"	"	५ वेधसः	"	"
२. वेधसम्	"	"	६ "	वेधसोः	वेधसाम्
३. वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः	७ वेधसि	"	वेधसु

दोस्, विद्वस्, लघीयस्, अग्निवस्, आशिस्, पुमस् इत्यादि कई शब्दों को छोड़कर चन्द्रमस् moon, दिवोकस् god, दुर्मनस् ill-minded प्रचेतम् (बदल), विमनस् ill-minded, विहायस् sky इत्यादि प्रायः सब पुंल्लिङ्ग तथा भक्तसस् nymph, सुमनस् flower इत्यादि प्रायः सब स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'वेधस्' के समान होते हैं । पर उशनस् (शुभाचार्य) का प्रथमा व सम्बोधन के एकवचन में उशन, उशनन्, उशनः तीन रूप होते हैं ।

पुंल्लिङ्ग-दोस् Arm

१मा सम्बो, दोः	दोषी	दोषः		
२या	दोषम्	दोषो	दोषः, दोष्यः	
३या	दोषा, दोष्या	दोष्याम्, दोष्याम्	दोभिः, दोषभिः	
४थी	दोषे, दोष्ये	"	"	दोभ्यः, दोष्यः
५मी	दोषः, दोष्यः	"	"	"
६ठी	"	दोषी, दोष्योः	दोषाम् दोष्याम्	
७मी	दोषि, दोष्यि	"	"	दोषु दोष्यु

पुंल्लिङ्ग — विद्वस्- Learned man.

१ विद्वान्	विद्वसौ	विद्वसः	४ विद्वे	विद्वन्वाम्	विद्वन्भ्यः
स० विद्वन्	"	"	५ विद्वयः	"	"
२ विद्वसम्	"	विद्वकः	६ "	विद्वतेः	विद्वान्
३ विद्वता	विद्वन्वाम्	विद्वभिः	७ विद्वि	"	विद्वन्

स्त्रीलिङ्ग में 'विद्वयी' होकर नदी के समान रूप होता है ।

पुंल्लिङ्ग-कमीपम् Lighter

१ कमीपान्	कमीपान्	कमीपान्	४ कमीपानो	कमीपानाम्	कमीपान्
स० कमीपन्	"	"	५ कमीपानः	"	"
२ कमीपानम्	"	कमीपानाः	६ " कमीपानोः	कमीपान्	
३ कमीपाना	कमीपानेष्वाम्	कमीपानि	७ कमीपानि	"	कमीपान्

कमीपम् younger, कमीपम् heavier, कमीपम् elder, कमीपम् lighter, कमीपम् clearer, कमीपम् younger, कमीपम् larger, कमीपम् better, कमीपम् more firm इत्यादि यस् प्रत्ययान्त सद्य पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'कमीपम्' के समान होते हैं। 'कमीपम्' में 'कमीपान्' होकर कमी के समान रूप होते हैं।

पुंल्लिङ्ग-जमिवम् One who has gone

१ जमिवान्	जमिवान्	जमिवान्	४ जमिवानो	जमिवानाम्	जमिवान्
स० जमिवन्	"	"	५ जमिवानः	"	"
२ जमिवानम्	"	जमिवानाः	६ " जमिवानोः	जमिवान्	
३ जमिवाना	जमिवानेष्वाम्	जमिवानि	७ जमिवानि	"	जमिवान्

जमिवान् staying, निपेदिवान् sitting, क्वचित् cook ing, इत्यादि यस् प्रत्ययान्त सद्य पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप देहे ही होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग-आशिस, Blessing

१ आशीः	आशीषी	आशीषः	४ आशीषे	आशीष्याम्	आशीष्ये
स० " " "	"	"	५ आशीषः	"	"
२ आशीषम्	"	"	६ " आशीषोः	आशीषान्	
३ आशीषा	आशीष्याम्	आशीषिः	७ आशीषि	"	आशीषु

पुंलिङ्ग-पुमस्-**Man, Male.**

१ पुमान्	पुमांलौ	पुमांसः	४ पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
सं० पुमन्	"	"	५ पुंसः	"	"
२ पुंसम्	"	पुंसः	६ "	पुंसोः	पुंसाम्
३ पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः	७ पुंसि	"	पुंसु

स्त्रीलिङ्ग-भास् **Light.**

१ भाः	भासौ	भासः	५ भासः	भाभ्याम्	भाभ्यः
२ भासम्	"	"	६ "	भाभ्योः	भासाम्
३ भासा	भाभ्याम्	भाभिः	७ भासि	"	भासु
४ भासे	"	भाभ्यः	स. भाः	भासौ	भासः

दकारान्त-पुंलिङ्ग-मधुलिङ्ग-**Honey-bee.**

१ मधुलिङ्ग	मधुलिङ्गौ	मधुलिङ्गः	४ मधुलिङ्गे	मधुलिङ्ग्याम्	मधुलिङ्गभ्यः
सं० "	"	"	५ मधुलिङ्गः	"	"
२ मधुलिङ्गम्	"	"	६ "	मधुलिङ्गोः	मधुलिङ्गाम्
३ मधुलिङ्गाम्	मधुलिङ्ग्याम्	मधुलिङ्गभिः	७ मधुलिङ्गि	मधुलिङ्गोः	मधुलिङ्गसु

उपानद्, अमडुह् इत्यादि कई शब्दों को छोड़कर तुरासाद्-
 Indra इत्यादि सब पुंलिङ्ग य स्त्रीलिङ्ग दकारान्त शब्दों के
 रूप 'मधुलिङ्ग' के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग उपानद् **Shoe**

१ उपानद्	उपानद्दौ	उपानद्दः	४ उपानद्दे	उपानद्द्व्याम्	उपानद्द्व्यः
सं० "	"	"	५ उपानद्दः	"	"
२ उपानद्दम्	"	"	६ "	उपानद्दोः	उपानद्दाम्
३ उपानद्दा	उपानद्द्व्याम्	उपानद्दभिः	७ उपानद्दि	"	उपानद्दसु

पुंलिंग अनडुह् Bull

- १ अनड्वान् अनड्वाहौ अनड्वाहः २ अनडुहः अनडुद्भ्याम् अनडुद्भ्यः
 ३ अनड्वाहम् अनड्वाहौ अनडुहः ४ " अनडुहोः अनडुहम्
 ५ अनडुहा अनडुद्भ्याम् अनडुद्भिः ६ अनडुहि " अनडुहोः अनडुहो
 ७ अनडुहे अनडुद्भ्याम् अनडुद्भ्यः सं० अनड्वान् अनड्वाहौ अनड्वाहः

विश्ववाह्

- १ विश्ववाह् विश्ववाहौ विश्ववाहः २ विश्वोहः विश्ववाद्भ्याम् विश्ववाद्भ्यः
 ३ विश्ववाहम् विश्ववाहौ विश्वोहः ४ विश्वोहः विश्वोहोः विश्वोहम्
 ५ विश्वोहा विश्ववाद्भ्याम् विश्ववाद्भिः ६ विश्वोहे विश्वोहोः विश्ववाद्भ्यः
 ७ विश्वोहे विश्ववाद्भ्याम् विश्ववाद्भ्यः सं० विश्ववाह् विश्ववाहौ विश्ववाहः

दुह्

१ दुहन्	दुहो	दुहः	२ दुहः	दुह्याम्	दुह्यः
३ दुहम्	दुहो	दुहः	४ दुहः	दुहोः	दुहम्
५ दुहा	दुह्याम्	दुह्यभिः	६ दुहि	दुहोः	दुह्यु
७ दुहे	दुह्याम्	दुह्यः	सं० दुहन्	दुहो	दुहः

Exercise 11

1. Decline जामिन्, स्वामिन्, मथिन्, राजन्, आरन्, मरन्, मगधन्, रथन्, विग्, ईरग्, मर्मरग्, धाम्देग्, चन्द्रमग्, उताग्, मथिचग्, मधुसिद्, and भाशिग् ।

2. Decline तेजसेन्, सुतामन्, पुत्रन्, पृथग्, कृष्न्

प्रशाम्, गिर, धुर्, दिव्, पुरोडाश, लघीयस्, जग्मिवस्, पुमस्, भास्, उपानह् and अनहुह् in 3rd to 7th cases & सम्बोधन ।

3. Translate into Hindi or English:— गुणी गुणिनां गुणं वेत्ति । लोके घनाय धनिमां भाद्रो भवति । मनीषिणः सर्वत्र सर्व्वः आद्रिघन्ते । राजा मेघाविनो मन्त्रिणः सहायेन वैरिणं हतवान् । पथि आत्मनः पुत्रं पर्ययति । युवा पुरुषः वैरिणां विनाशाय मघोनः पूजां करोति । दिवि दिवौकसः पुरोडाशां मुञ्चन्ति । प्रचेतसः आशिषां पुंसां सृष्टिं भवति । मधुलिहः पुण्येभ्यो मधु आनयन्ति । उपानद्भिः शरीरिणां पादानां रक्षा भवति । भारतवर्षेऽनहुहः प्रतिष्ठा पूजा च क्रियते ।

4. Translate the following into Sanskrit:— (a) माता पिता से भी ध्येष्ट है । स्वामी की आज्ञा से घोड़े पर चढ़ता है (आरोहति) । कूर्पे पर मोर नाचते हैं (नृत्यन्ति) । शिव के मस्तक पर चन्द्रमा की कला शोभती है (शोभते) । कुत्ते घर की रक्षा करते हैं (संरक्षन्ति) । नगर में राजा की आज्ञा का पालन होता है । अपने राजा की आज्ञा से सेवक सब दिशाओं में गये (भगवन्) । शुक्राचार्य राक्षसों के गुरु हैं । छोटे भाई को फल देता है । ग्रन्था की सृष्टि में पेरस विद्वान् नहीं है । वैश्य घन से देश की सहायता करते हैं (साहाय्यं कुर्वन्ति) । चौर रात में अकेले भी चोरी करते हैं (चोरयन्ति) ।

(b) The lion kills (हन्ति) elephants. In the town there is a good garden of mango trees. Two ascetics are going (गच्छतः) to the mountain. Gods and demons churned (अमघनन्) the sea with a churning stick. Palaces are made (निर्मितानि) with stones. Boys heard (श्रुतवन्तः) such instruction from the wise man. Brahma has made (असृजन्) the creation. The elder brother loves (स्निहति) his younger. Gods descended (अवातरन्) from the heaven to the earth.

5. Correct:— मेघावीनां घनम् । साक्षिनस्य गिरेण । राजास्य मूर्धे मुहुटं भस्ति । पथे युवनः सन्ति । हृद्यहणा इतः । मघवानः अयं । इक्षति । इवनै इक्षते । दिवे दिवौकसः सन्ति । देशाय विशस्य घनं ।

विभक्त्या च न दत्तम् । कर्मणश्च धानं शास्त्रम् । मृषिता पुंनि
उपासनेन कदापि भवति ।

ह्रीयलिङ्ग ।

व्यग्रनाम्न ह्रीयलिङ्ग शब्दों के रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं, पर प्रथमा और द्वितीया में अन्तर पड़ता है। अन्तर केवल प्रथमा और द्वितीया ही में रूप दिखाये जाते हैं। ए जहाँ पुंलिङ्ग के साथ कुछ भी भेद नहीं है वहाँ सब लिङ्गों के रूप दिखाये जायेंगे ।

चकारान्त-ग्रन्-Eastern, prior.

प्रथमा, सम्बोधन	प्राक्	प्राची	प्राञ्चि
द्वितीया	प्राप्	प्राञ्ची	प्राञ्चि

शेष विभक्तियों में 'अन्मुच्' के समान रूप होते हैं। प्रत्यच्, तिर्य्यच् और उद्च् को छोड़ कर सब चकारान्त ह्रीयलिङ्ग शब्दों के रूप 'प्राच्' के समान होते हैं ।

प्रत्यच्-Western.

प्रथमा, सम्बोधन	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
द्वितीया	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि

तिर्य्यच्-An irrational animal.

प्रथमा, सम्बोधन	तिर्य्यक्	तिरिची	तिर्य्यञ्चि
द्वितीया	तिर्य्यक्	तिरिची	तिर्य्यञ्चि

उद्च्-Northern.

सम्बोधन	उद्क्	उदीची	उद्ञि
	उद्क्	उदीची	उद्ञि

जकारान्त-असृज्-Blood.

प्रथमा, सम्बोधन	असृक्	असृजी	असृञ्चि
द्वितीया	असृक्	असृजी	असृञ्चि

शेष रूप 'अणिज्' के समान होते हैं। सब जकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

N. B. द्वितीया बहुवचन तथा भागे की विभक्तियों में असृज् का असृन्' भी हो जाता है। यथा, असृन्ति । ३—असृन्, असृभ्याम्, असृभिः । ४ असृन्ते, असृभ्याम्, असृभ्यः । २ असृन्तः, असृभ्याम्, असृभ्यः । १—असृन्तः, असृन्तोः, असृन्ताम् । ७—असृन्ति, असृन्ति; असृन्तोः, असृन्सु ।

तकारान्त-जगत्-World.

प्रथमा, सम्बोधन	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति

शेष रूप 'धावत्' के समान होते हैं। महत् और अत्—प्रत्ययान्त कुछ शब्दों को छोड़ कर सब तकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं; पर स्वत्-प्रत्ययान्त शब्दों की प्रथमा च द्वितीया के द्विवचन में ती के स्थान में विकल्प से ण्ती होता है। यथा, मविष्यन्ती, मविष्यती ।

महत्-Great.

प्रथमा, सम्बोधन	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति

अत् प्रत्ययान्त(?)—गच्छत् Going

प्रथमा, सम्बोधन	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति

भ्यादि और दिवादि गणीय धातुओं से बने अत् (शत्) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'गच्छत्' के समान होते हैं ।

२-इच्छन् - Wishing.

प्रथमा, सम्बोधन इच्छन्	इच्छन्ती, इच्छन्ती	इच्छन्ति
द्वितीया	इच्छन्	इच्छन्ते, इच्छन्ते

सुदादि और इच्छिन्ना मिलन आकारान्त भवति कर्त्तुं धानुओं से बने भन् (शब्) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'इच्छन्' के समान होते हैं । इच्छन् का रूप 'इच्छन्' के समान होता है ।

३-ददन् - Giving

प्रथमा, सम्बोधन ददन्	ददन्ती	ददन्ति, ददन्ति
द्वितीया	ददन्	ददन्ते, ददन्ते

अभ्यस्त (जिन का द्विच्य होता है) धानुओं से बने प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'ददन्' के समान होते हैं ।

४ इनके भक्तिरिक्त अन्-प्रत्ययान्त सब शब्दों के 'जगत्' के समान होते हैं ।

N. B. द्वितीया-बहुवचन तथा भागे की विभक्तियों में बहन् का 'यक्' भी हो जाता है और 'अभ्यन्' के समान रूप होते हैं ।

दकारान्त-हृद्-Heart

प्रथमा, सम्बोधन हृद्	हृदी	हृदी
द्वितीया	हृद्	हृदी

शेष रूप 'सुहृद्' के समान होते हैं । सब दकारान्त हृद् लिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

नकारान्त ।

नकारान्त शब्द दो प्रकार के होते हैं, अन्-भागान्त, इन

(१) नामन्-Name

प्रथमा	नाम	नाम्नो, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
सम्बोधन	नाम, नामन्	नाम्नो, नामनी	नामानि

कर्मन् इत्यादि और अहन् शब्दों को छोड़कर क्लोमन् the bladder, दामन् happiness, धामन् house, lastre; श्रेमन् affection, लोमन् hair, लौमन् loom, व्योमन् sky, सामन् Sama-veda हेमन् इत्यादि सब अन्-भाषान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

कर्मन्-Action.

प्रथमा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
सम्बोधन	कर्म, कर्मन्	कर्मणी	कर्माणि

चर्मन् skin, छधन् disguise, जन्मन् birth, नर्मन् jest, joke; पर्वन् festival, भस्मन् ashes, मर्मन् organ, लक्ष्मन् mark, spot; वस्मन् road, manner; वस्मन् armour; वेष्मन् house, शर्मन् pleasure, सधन् house इत्यादि शब्दों के रूप, जिन के अन्त अकार म् वा घ् संयुक्तवर्ण से मिले हैं, 'कर्मन्' के समान होते हैं।

अहन् Day.

प्रथमा सम्बो०	अह.	अहो, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अहा	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अहे	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अहः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अहः	अहोः	अहाम्
सप्तमी	अहि, अहनि	अहोः	अहःसु

अदन् शब्द लघुत्वा और कर्मवाच्य समाग में अकारान्त रूप है और 'गत्र' के समान रूप होता है ।

(२) स्थायिन Permanent.

प्रथमा	स्थायि	स्थायिनी	स्थायिनी
द्वितीया	स्थायि	स्थायिनी	स्थायिनी
सम्बोधन	स्थायिन्	स्थायिनी	स्थायिनी

एन्-भागान्त सभ स्त्रीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

सकारान्त ।

सकारान्त शब्द तीन प्रकार के हैं; अस्-भागान्त, इस्-भागान्त, उस्-भागान्त ।

अस्-भागान्त-पयस्-Milk, water.

प्रथमा सम्बोधन	पयः	पयसी	पयसी
द्वितीया	पयः	पयसी	पयसी

शेष विभक्तियों में पुंलिङ्ग 'विधस्' के समान रूप होते हैं
 अम्मस् water, अयस् iron, आगस् sin, उरस् breast
 औषस् udder, एनस् sin, ओकस् house, ओजस् light, के
 mind, एन्द्रस् metre, desire; तपस् religious-austerity
 तमस् darkness, तेजस् light, नमस् sky, मनस् mind, क
 fame, यज्ञस् an evil spirit, रजस् dust, रहस् secret
 रोषस् bank, वक्षस् breast, वयस् age, वर्चस् light, वस्
 cloth, शिरस् head, धेयस् bliss, सदस् assembly, झ
 pond, water इत्यादि अस्-भागान्त स्त्रीबलिङ्ग शब्दों के रूप 'पयः'
 के समान होते हैं ।

1. बहुव्रीहि समास में पयस्, मनस्, चेतस् आदि अस्-भागान्त शब्दों के रूप पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में 'येधस्' के समान होते हैं । यथा, उदारं चेतो यस्य सः उदारचेताः ।

2. तस्थिवस् का प्रथमा, सम्बोधन और द्वितीया में तस्थिवत्, तस्थुषी, तस्थिवांसि रूप होते हैं ।

(२) इस्-भागान्त-हविस्-Ghee.

प्रथमा, सम्बोधन	हविः	हविषी	हवीषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवीषि
तृतीया	हविषा	हविर्म्याम्	हविर्मिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्म्याम्	हविर्म्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्म्याम्	हविर्म्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःसु

अर्हिस् ray of light, ज्योतिस् light, रोचिस् light, यर्हिस् light, शीचिस् light, सर्पिस् ghee इत्यादि सब इस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

(३) उस्-भागान्त-धनुस्-Bow.

प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूँषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूँषि

शेष रूप हविस् के समान होते हैं । अरुस् sore, आयुस् age, चक्षुस् eye, यजुस् yajur veda, पपुस् body इत्यादि उस् भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं ।

Exercise— 12

1. Decline धावत्, मरयत्, सिञ्चत्, कथयत्, ददत्, वात्, धामन्, ज्योमन्, भस्मन्, कृण्वत्, उरस्, परास्, सरस्, ज्योतिष्, आयुष् and चक्षुष् ।

सर्व्व ।

सर्व्व-पुंल्लिङ्ग ।

सर्व्व-स्त्रीलिङ्ग ।

सर्व्वी	सर्व्वे	सर्व्वी	सर्व्वे	सर्व्वः
"	"	सर्व्वे	"	"
"	सर्व्वीत्	सर्व्वीम्	"	"
सर्व्वीभ्याम्	सर्व्वैः	सर्व्वीया	सर्व्वीभ्याम्	सर्व्वीभिः
"	सर्व्वीभ्यः	सर्व्वीस्यै	"	सर्व्वीभ्यः
सर्व्वी	"	सर्व्वीस्याः	"	"
सर्व्वीयोः	सर्व्वीयाम्	"	सर्व्वीयोः	सर्व्वीसाम्
सर्व्वी	सर्व्वीषु	सर्व्वीस्याम्	"	सर्व्वीषु

सर्व्व-कलीवल्लिङ्ग ।

सर्व्वे सर्व्वानि शेषरूप पुल्लिङ्ग के समान ।

3. सर्व्व और विभ्व शब्द केवल 'सकल वा समस्त' अर्थ में होते हैं, अन्य अर्थ में 'गज' के समान रूप होते हैं । यथा, (जाय) क्षितिगूर्त्तये नमः । यही सर्व्वस्मि नही होगा । विरवे ३ में देखा जाता है । यथा, विरवे देवाः । जगत् अर्थ में । होता । यथा, विप्रवात् अभिन्नो विरवेश्वरः ।

(२) अन्यादि ।

other, अन्यतर either, इतर other, कतर which
 तम which of many, और एकतम one of
 अन्यादि शब्दों के रूप भी 'सर्व्वीदि' के समान
 ल कलीवल्लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एक्यवचन
 अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत्
 हैं ।

? Translate into Hindi or English — सख्यं
 महत् गृहं तिष्ठति । स्वोमनि कृष्णानि प्रकाशानि ।
 भवति । मर्मणि इतः मेनापनिः । मित्रस्य कृष्णोमिनिः ।
 उरमि मर्मस्य पादनिष्ठ मणिः । समया भावयुता सति ।
 मरामि मणिः । मरमि वाह्यपुत्रा प्रयोक्तनीया ।

3. Translate into Sanskrit—(a) बाय से बहू न
 है (जायने) । मादण के दर घन मही है । गारे भादण से नि
 गिरने हैं । मादण घुनों के द्वारा ईरवर की मृति करा है (म
 मादण के लड़के घनुर्वेद पढ़ने हैं । कौण गिर से मार लेते हैं । ए
 कमल के पूज है । इन्द्र की भाजा से मेर जब देता है । वीरों
 में ईरवर बघने हैं (वमन्ति) । गौर के गुरु ही ताजाव है ।

(b) The house of the brother. Ashes are seen
 body of Shiva. The son of Ram is going (गच्छति) to
 bly. Men see (पर्यन्ति) with eyes. Boys wear (परिच्छिन्ति)
 Good men enter (प्रविशन्ति) the heart of men. Ar
 (हतवान्) the enemies with a bow. There is pain in the
 the friend. There is great darkness in the night
 broke (वमज्ज) the great bow of Shiva at the

4. Correct:—महान् धनुः । मधुरं पयसि । स्वोमे कृष्ण
 काष्ठेन सद्यो निर्मायते । वाससेन रक्षा भवति । नमस्यार
 शिरै भारं वहति । ग्रामे बहवो सराः सन्ति । घनुषाणा
 कम्पन्ते । सूर्यः उदीचे उदेति प्रतीचे निमज्जति च ।

सर्वनाम (Pronoun)

रूप की सुविधा के लिये सर्वनाम पाँच भागों
 हैं, सर्व्यादि, अन्यादि, पूर्व्यादि, इदमादि, यद्वादि ।

(१) सर्व्यादि ।

सर्व्य All, विश्व all, उभय both, एक one,
 one of two, इन सर्व्यादि शब्दों के रूप 'सर्व्य' है
 होते हैं ।

सर्व्व ।

सर्व्व-पुंल्लिङ्ग ।

सर्व्व-स्त्रील्लिङ्ग ।

सर्व्वः	सर्व्वी	सर्व्वे	सर्व्वी	सर्व्वे	सर्व्वः
सर्व्व	"	"	सर्व्वे	"	"
सर्व्वम्	"	सर्व्वीन्	सर्व्वीम्	"	"
सर्व्वेण	सर्व्वीभ्याम्	सर्व्वैः	सर्व्वया	सर्व्वीभ्याम्	सर्व्वीभिः
सर्व्वैर्मै	"	सर्व्वैभ्यः	सर्व्वस्मै	"	सर्व्वीभ्यः
सर्व्वस्मात्	"	"	सर्व्वस्याः	"	"
सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेभ्याम्	"	सर्व्वयोः	सर्व्वीसाम्
सर्व्वदिमन्	"	सर्व्वेषु	सर्व्वस्याम्	"	सर्व्वीसु

सर्व्व-कलीवल्लिङ्ग ।

सर्व्वम् सर्व्वे सर्व्वीणि शेषरूप पुंल्लिङ्ग के समान ।

" " " N. B. सर्व्व और विभ्व शब्द केवल 'सकल वा समस्त' अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, अन्य अर्थ में 'गज' के समान रूप होते हैं । यथा, सर्व्वस्य (विवाह्य) क्षितिमूर्त्तये नमः । यह! सर्व्वस्ये नहीं होगा । विध्वयप्रयोग वेद में देया जाता है । यथा, विध्वये देवाः । अयत् अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता । यथा, विध्वयात् अभिन्नो विरवेश्वरः ।

(२) अन्यादि ।

अन्य other, अन्यतर either, इतर other, कतर which of two, कतम which of many, और एकतम one of many, इन अन्यादि शब्दों के रूप भी 'सर्व्वीदि' के समान होते हैं; केवल कलीवल्लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एक्यचन अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत् होते हैं ।

(३) पूर्व्यादि ।

पूर्व prior, east, पर after, अपर other, अग्र anterior, west; अधर inferior, west; दक्षिण south, right; उत्तर north, स्व own, इन के रूप 'पूर्व' के समान होते हैं ।

पूर्व्य-पुंल्लिङ्ग ।

प्रथमा	पूर्व्यः	पूर्व्यो	पूर्व्ये, पूर्व्यः
द्वितीया	पूर्व्यम्	पूर्व्या	पूर्व्यान्
तृतीया	पूर्व्येण	पूर्व्याभ्याम्	पूर्व्येः
चतुर्थी	पूर्व्यस्मै	पूर्व्याभ्याम्	पूर्व्यभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्यस्मात्-पूर्व्यात्	पूर्व्याभ्याम्	पूर्व्यभ्यः
षष्ठी	पूर्व्यस्य	पूर्व्ययोः	पूर्व्येषाम्
सप्तमी	पूर्व्यस्मिन्-पूर्व्ये	"	पूर्व्येषु

कलीबलिङ्ग ।

प्रथमा	पूर्व्यम्	पूर्व्ये	पूर्व्याणि
द्वितीया	पूर्व्यम्	पूर्व्ये	पूर्व्याणि

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं । स्त्रीलिङ्ग में 'सर्व' के समान रूप होते हैं ।

N. B. 1. पूर्व से उत्तर तक सात शब्द दिक्, देश और काल-वाचक अर्थ में ही सर्वनाम होते हैं, अन्य अर्थों में पुंल्लिङ्ग में 'पूर्व', कलीबलिङ्ग में 'कल' और स्त्रीलिङ्ग में 'सत्ता' के समान रूप होते हैं ।

2. 'स्व' शब्द कुटुम्ब और धन अर्थ में 'गज' के समान होता है और 'अपना' अर्थ में सर्वनाम होता है ।

(४) इदमादि ।

अस्मद्, युष्मद्, इदम् और अदस् के रूप मिला २ होते हैं ।

अस्मद्-पुं-कलीव-स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	अहम्	आधाम्	वयम्
द्वितीया	माम्-मा	आधाम्-नौ	अस्मान्-नः
तृतीया	मया	आधाभ्याम्	अस्मामिः
चतुर्थी	मह्यम्-मे	आधाभ्याम्-नौ	अस्मभ्यम्-नः
पञ्चमी	मत्	आधाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम्-मे	आवयोः-नौ	अहमाकम्-नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्-पुं-कलीव-स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	त्वम्	युषाम्	यूषम्
द्वितीया	त्वाम् त्वा	युषाम्-वाम्	युष्मान्-वः
तृतीया	त्वया	युषाभ्याम्	युष्मामिः
चतुर्थी	तुभ्यम्-ते	युषाभ्याम्-वाम्	युष्मभ्यम्-वः
पञ्चमी	त्वत्	युषाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव-तै	युषयोः-वाम्	युष्माकम्-वः
सप्तमी	त्वयि	युषयोः	युष्मासु

N. B. 1. अस्मद् और युष्मद् के छोटे रूप (Short forms) मे, नौ, नः तथा त्वा, ते, वाम्, वः, वाक्य के वा श्लोक के वाच्य के रूप में अथवा च, एव, वा, हा आ इ, अद् के पूर्व में प्रयोग नहीं किये जाते । तथा, मम मित्रम्, इत् पुस्तकं ममैव; तव कर्म; इत् इत् तवैव; इ मे या ते का प्रयोग नहीं होगा । यदि मा, मे इत्यादि को च वा इत्यादि अर्थ न हो तो एक साथ प्रयोग होता है; तथा, रामो स्वयमथ मे पुत्रौ ।

2. ये छोटे रूप अन्वारेण में अथवा और अन्यत्र विद्यन्ते में प्रयोग किये जाते हैं । एक बार कहा गया है, तगडे चिर चरने को 'अन्वारेण' कहते हैं । तथा, तस्मै ते वामा (त्रिसक्ता वर्जन हो युष्मद्) । शतकं ते अन्वोऽस्ति; शतकः तव अन्वोऽस्ति ।

३. गणकोश के ठीक परे या, मे इत्यादि छोटे रूप का प्रयोग नहीं होगा । यथा, पुत्र । मम (मे नहीं होगा) मित्रमेवम् । देव ! मां (म नहीं) पाहि ।

४. वे छोटे रूप एक ही क्रिया के साथ प्रयोग किये जाते हैं । स्व. शालीना ते ओदनं दारुणम् । पर, ओदनं पच गृह मतिष्यति ।

इदम् ।

इदम्-this-पुंल्लिङ्ग ।

१ अयम्	इमौ	इमे
२ इमम्	"	इमान्
३ अनेन	आभ्याम्	एभिः
४ अस्मै	"	एभ्यः
५ अस्मात्	"	"
६ अस्य	अनयोः	एयाम्
७ अस्मिन्	"	एषु

इदम्-this-स्त्रीलिङ्ग ।

इयम्	इमे	इमाः
इमाम्	"	"
अनया	आभ्याम्	आभिः
आभ्यै	"	आभ्यः
अस्याः	"	"
"	अनयोः	अनाम्
अस्याम्	"	असु

इदम्-ह्रीवर्लिङ्ग ।

१ इदम्

इमे

इमानि

२ " " " शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

अन्यादेश अर्थ में इदम् और एतद् के स्थान में द्वितीया के तीनों घचन में (एनं, एनौ, एनान्), तृतीया के एकघचन में (एनेन) तथा पष्ठी और सप्तमी के द्विघचन में (एनयोः) 'ए' आदेश हो जाता है । यथा, अनेन व्वाकरणमधीतम्, एनं छन्दोध्यापय । अनयोः पवित्रं कुलं, एनयोः प्रभूतं यलम् ।

अदस् ।

अदस्-*this, that*-पुंल्लिंग ।

अदस्-स्त्रीलिंग ।

१ असौ	अव	असौ
२ अमुम्	"	अमुन्
३ अमुना	अनुभ्याम्	अमीभिः
४ अमुस्मै	"	अमोभ्यः
५ अमुष्मात्	"	"
६ अमुष्य	अमुषोः	अमीषाम्
७ अमुषिन्	"	अमीषु

असौ	अमु	अमुः
अमूम्	"	"
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अमुष्यै	"	अमूभ्यः
अमुस्वाः	"	"
"	अमुषोः	अमूषाम्
अमुष्वाम्	"	अमूषु

अदस्-क्रीवल्लिंग ।

१ अदः	अमू	अमूनि
२ "	"	"

शेष रूप पुंल्लिंग के समान ।

(५) यदादि ।

यद् *who, which, what*; तद् *he, she, it, that*;
 एतद् *this, एतद्, किम् who, what*, ये यदादि में है ।

यद्-*who, which, what*; पुंल्लिंग ।

यद्-स्त्रीलिंग ।

यः	यी	ये
यम्	"	यान्
येन	याम्भ्याम्	ही
यस्मै	"	येभ्यः
यस्मात्	"	"
यस्य	यसोः	येसम्
यसिम्	"	येसु

या	ये	याः
याम्	ये	"
यदा	याम्भ्याम्	यामि-
यस्यै	"	याम्यः
यस्याः	"	"
"	यसोः	यासाम्
यस्याम्	"	यासु

किम्-who, what-पुंलिङ्ग ।

किम्-स्त्रीलिङ्ग ।

१ कः	कौ	के	का	के	काः
२ कम्	"	कान्	काम्	"	"
३ केन	काभ्याम्	कैः	क्या	काभ्याम्	कामिः
४ कस्मै	"	केभ्यः	कस्यै	"	काभ्या
५ कस्मात्	"	"	कस्याः	"	"
६ कस्य	कस्योः	केषाम्	"	कस्योः	कासाम्
७ कस्मिन्	"	केषु	कस्याम्	"	कासु

किम्-स्त्रीलिङ्ग ।

१ किम् के कानि शेष रूप पुंलिङ्ग के समान ।

२ " " " " " "

ऐसे ही त्यद् का 'त्य' होकर 'यद्' के समान रूप होगा ।

विशेष द्रष्टव्य ।

सर्व्व, विश्व, उम (two), उभय, उत्तर, इतम, कतर, कतम प्रत्ययान्त, अन्य, अन्यतर, इतर, त्यत् (other), त्य (other), नैम (half), सम (all), सिम (whole); पूर्व्व, पर, अधर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर; स्व, अन्तर (outer), त्यद्, सद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि (two), युष्मद्, अष्मद्, भवत् (you), किम्, ये ३५ सर्व्वनाम; हैं, इनके अतिरिक्त और सर्व्वनाम नहीं हैं ।

(१) उम और द्वि द्विवचनान्त होते हैं । पर उभय शब्द द्विवचनान्त नहीं होता; यह एकवचनान्त या बहुवचनान्त होता है । यथा, उमौ (दो) बालकौ भागतौ । एतदुभयं विचार्य्य पश्य ।

(२) एक शब्द एकत्व अर्थ में एकवचनान्त और बहुत्व अर्थ में बहुवचनान्त होता है । यथा, एको जनो वदति । एके

प्रयुक्ति (Some say) ।

(३) सर्व्यादि शब्द विशेष्य और विशेष्यण दोनों होते हैं । यथा, सर्व्याभ्यागता गुरुः (भक्तिवि सव का गुरु है) । सर्वं लोका मन्थ्यन्ति (सर्व मनुष्य मरेंगे) । एवं सर्व्यभ्य भाधयः (तुम सब के भाधय हो) । एवं सर्वान् लोकान् विजयान् (तुम ने सब लोकों को जीता) ।

(४) अन्यतर सर्व्यनाम है, पर अन्यतम सर्व्यनाम नहीं है । यथा, अन्यतरम् । पर अन्यतमाथ ।

(५) सम 'सकल' भय में सर्व्यनाम है, पर 'समान' भय में सर्व्यनाम नहीं है । यथा, समाः (equals) ।

(६) अन्तरं बहिर्योगोपसंख्यानयोः—बहिर्योग (बाहर) और उपसंख्यान (यत्र पढने) के अर्थ में अन्तर शब्द सर्व्यनाम होता है । 'पुरि' का विशेषण हो तो सर्व्यनाम नहीं हो । यथा, अन्तरायां पुरि ।

(७) पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराभराणि व्यवस्थायामर्थायान्,—पर अवर दक्षिण उत्तर अवर अवर, ये अपनी २ व्यव अर्थात् दिक् देश काल समझे जाने पर सर्व्यनाम होते अन्यत्र नहीं होते, संज्ञा समझे जाने पर भी सर्व्यनाम होते । यथा, उत्तराः कुंरवः, दक्षिणाः गायकाः । पश्चिम, स नाम नहीं है । यथा, पश्चिमायां दिशि । तृतीया समास उसके अर्थ में भी पूर्व्यादि सर्व्यनाम नहीं होते । य मासपूर्व्याय, मासेन पूर्व्याय ।

(८) स्वमहातिधनाख्यायाम्,—स्व शब्द आत्मा और आत्म अर्थ में सर्व्यनाम होता है, पर हाति और धन अर्थ में स नाम नहीं होता । यथा, बन्धनमोचनकर्ता तु स्वस्मादन्यो (बन्धन से मुक्त करने वाला अपने से भिन्न कोई)

है); ते स्वेषां पुत्राणां मङ्गलमिच्छन्ति । तस्य शब्दं श्रुत्वा सर्वे
स्वाः (स्नातयः) विरोतु मारब्धाः; सर्वे जनाः स्वाय (धनाय)
यतिष्यन्ते ।

२—यदि निकटवर्ती कोई व्यक्ति या वस्तु समझी जाय
तो 'इदम्' शब्द, अधिक निकटवर्ती व्यक्ति या वस्तु समझी
जाय तो 'एतद्' शब्द, दूरवर्ती कोई व्यक्ति या वस्तु समझी
जाय तो 'अदस्' शब्द तथा अनुपस्थित कोई व्यक्ति या वस्तु
का बोध हो तो 'तद्' शब्द, का प्रयोग किया जाता है ।

इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम् ।

अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥

२. प्रश्नसूचक वाक्य में 'किम्' शब्द का प्रयोग वाक्य के
आरम्भ में होता है । यथा, किं त्वं श्रुतवानेतत् ? कति—how
(much) many; तति—so (much) many; ये बहुवच-
नान्त हैं । यथा, कति बालकाः, पर ये सर्व्यनाम नहीं हैं ।

३. संशोपसर्जनीभूतास्तु न सर्वादिभ्यः । तृतीया समासे । इन्द्रोष—यदि
सर्व्यनाम समास का अप्रधान शब्द हो या तृतीया तत्पुरुष के
अन्त में या तृतीया समास के अर्थ में हो अथवा इन्द्र या यद्-
योहि समास के अन्त में हो तो उसका रूप सर्व्यनाम की भाँति
नहीं होता । यथा, अतिक्रान्तः सर्व्यं अतिसर्व्यः, तस्मै अति-
सर्व्याय (not सर्वस्मै) । मासपूर्व्याय or मासेन पूर्व्याय
(not मासपूर्वस्मै) । वर्षार्धमेतराणाम्, पूर्व्यदक्षिणोत्तरा-
णाम् । पर इन्द्र समास में प्रथमा के बहुवचन में विकल्प से
सर्व्यनाम होता है । यथा, वर्षार्धमेतरे, वर्षार्धमेतराः; पूर्व्य
दक्षिणोत्तरे, पूर्व्यदक्षिणोत्तराः । जितं सर्व्यं, येन स जितसर्व्यः-
जितसर्व्याय, जितसर्व्यात्, जितसर्व्ये ।

सर्व्यनाम से उत्पन्न क्रियाविशेषण ।

तद्, इदम्, एतद्, यद्, किम्, सर्व्य, पूर्व्य, पर इत्यादि सर्व्यनाम के परे पञ्चमी और सप्तमी के अर्थ में तस्, त्, इ, यश्च इत्यादि; कालसूचक अर्थ में दा, दानीम्, हिं इत्यादि; काल स्थान और दिग्वाचक अर्थ में ताम्, दिक्सूचक अर्थ में आ, आत्, आदि इत्यादि तथा प्रकार अर्थ में चा, च इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं । यथा,

तद्—तदा then, तदानीम् at that time, तर्हि ther-
therefore; तथा so, तत्र there, ततः thence, thereupon,
therefore, etc.

इदम्—इदानीम् now, इत्थम् thus, अत्र here, अतः
therefore, इतः from this, hence; अधुना now, इ
here.

एतद्—एतर्हि now, इत्थम् thus, अतः hence,
fore; अत्र here.

यद्—यर्हि when, यदा when, यथा as, यत्र
यतः whence, since, because.

किम्—कर्हि when, कदा when, कथम् how, कुत्र
कत्र where, कुतः where, whence, कुड् whence, ह

सर्व्य—सर्व्यदा always, सदा always, सर्वतः
where, on all sides; सर्वत्र everywhere, in all p

पर—परतः further on. beyond etc.

तः, !

अतः—अधः, अधस्तात् or अधस्तात्, अधतरः, below, downwards.

अतः—पश्चात् from behinds, afterward, behind etc.

दक्षिण—दक्षिणा, दक्षिणात्, दक्षिणादि to or in the south, on the right side.

उत्तर—उत्तरा, उत्तरात्, उत्तरादि to or in the north.

Exercise--13

1. Decline उत्तर, दक्ष, पश्च, पूर्व, उत्तर, उत्तर, उत्तर and उत्तर in all genders.

2. Translate the following into Hindi or English.
 एक राजकुमार पिता वरु ? उत्तरायण पुत्रो रामोऽसि
 इति । कस्य पत्रिका दृश्यते ? ईरानः अस्माकं सर्वेषां विज्ञा
 र्हेषु जीवेषु दृष्यां सुखीति । राज्ञः पुत्रोऽयम् । कस्य वाजिकेयम्
 त्वया बहवो दवापदाः सन्ति । अतो राजा प्रजायां कथं कर्तव्यं
 । गृहं गमिष्यसि । तदा तस्य हृदये दया संजाता । अयुक्त
 मेष्वसि । सुखं पश्येत्तम् इति । सुप्तासु सदैवं अद्या वसन्ति
 एते अस्मिन्नेका देहि । कदा तस्य गृहं गमिष्यसि ।

3. Translate into Sanskrit—(1a) सच भाग का ब्रह्म
 करते हैं (आदिपत्ते) । सूर्य की दिनों सच जगद जाती है । मैं
 आप लोगों के स्वागत के लिये आया हूँ (आगतोऽस्मि) । सूर्य पूर्व में
 उगता है और पश्चिम में डूबता है (निमाजति) । आम के वृक्ष भारत में
 सर्वत्र पाये जाते हैं (प्राप्यन्ते) । उनमें से एक पटना जायगा (गति-
 त्यति) । आप की बातों में मगुरता है । तुम्हारे दर्यान के लिये बहुत से
 लोग भाये हुए हैं । सब लोग अपने देश को प्यार करते हैं । एक दिन
 भारत संसार में श्रेष्ठ था । मैं रामायण और महाभारत का भादर करता
 हूँ (आदिपते) । ईश्वर हम लोगों की सदा रक्षा करता है । ईश्वर से
 उनका विजय हुआ (अभवत्) । मेरा सबका तुम्हारे लड़के के सब
 व्याकरण पढ़ता है । राम या श्याम घर जायगा ।

(b) I will just now go (गमिष्यामि) to your house.
 He has given (दत्तवान्) him hundred rupees. Who will
 get (प्राप्स्यसि) it from me to-morrow. Who will give
 (दास्यति) it to you ? He fell (अपतत्) to the earth from
 the top of the mountain. He gives a garland to his girl.
 In what country do you live (वससि) ? Where are your
 sons going early in the morning ? This is the creation of
 Brahma. I am going (गच्छामि) to the northern direction

संख्यावाचक (Numerals)

एक	२०	विंशतिः
द्वि	२१	एकविंशतिः
त्रि	२२	द्वाविंशतिः
चतुर्	३०	त्रिंशत्
पञ्च	४०	चत्वारिंशत्
षट्	४२	द्वाचत्वारिंशत्
सप्त		द्विचत्वारिंशत्
अष्ट	४३	त्रयश्चत्वारिंशत्
नव		त्रिचत्वारिंशत्
दश	४८	अष्टाचत्वारिंशत्
एकादश		अष्टचत्वारिंशत्
द्वादश	५०	पञ्चाशत्
त्रयोदश	६०	षष्टिः
चतुर्दश	७०	सप्ततिः
पञ्चदश	८०	अशीतिः
षोडश	९०	नवतिः
सप्तदश	१००	शतम्
अष्टादश	१०१	एकाधिकं शतम्
नवदश		एकाधिकशतम्
एकान्विंशतिः	१०२	द्वयधिकं शतम्
उत्तविंशतिः		द्वयधिकशतम्
एकान्विंशतिः		

१०३ १०४ १०५

त्रि	चतुर	पञ्च	षट्	अष्ट
३- पुं. स्त्री.	पुं. स्त्री.	पुं. स्त्री. पुं. स्त्री.	षट्	अष्ट
१ मा त्रयः	त्रयो.	पञ्च	षट्-इ	अष्ट-अष्टौ
२ या त्रीन्	त्रयः	"	"	"
३ या त्रिभिः	त्रिभ्यः	पञ्चभिः	षट्भिः	अष्टभिः-अष्टाभिः
४, ५ मी त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	पञ्चभ्यः	षट्भ्यः	अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः
६ ष्टी त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	पञ्चानाम्	षट्णाम्	अष्टानाम्
७ मी त्रिणु	त्रिणु	पञ्चसु	षट्सु	अष्टसु-अष्टासु

(१) चि और मरु के रूप कृत्विङ्ग की जाति द्वितीया में मम की चीति और मर्याति होने हैं। ऐति पुंलिङ्ग के समान होने हैं।

(२) चि की मर्यादाय् मर्यादा संख्यायाम् रूप व कृत् मरु मरुमनाय् होने हैं। मरु की संख्यायें एकत्र ही एकत्रमनाय् होती हैं और इनके जिङ्ग, मयत्र, तिरोप के मरु नहीं होने। मरु, चानि कृत्वाणि । निरतिपुं पर चिगती = 1081.

(३) चिरति, चरित्, मञ्जति, मर्याति, मरति और कृत् रूप चर्याङ्गि 'मति' के समान होते हैं। चिरत् इत्यादि इत्यन्त शब्दों के रूप चर्याङ्गि मकारान्त शब्दों के समान होने हैं। मरु, सहाय इत्यादि के रूप 'कृत्' के समान और मरु इत्यादि के रूप पुंलिङ्ग शब्दों के समान होते हैं।

अनेक (Many) बहुवचनान् ।

तीनों लिङ्गों में 'सर्व्य' के समान रूप होते हैं।

कति (How many) बहुवचनान् ।

कति कति कतिभिः कतिभ्यः कतिभ्यः कर्तानाम्

तीनों लिङ्गों में ऐसे ही रूप होंगे। तति So many यति as many के रूप 'कति' के समान होंगे।

संख्यावाचक क्रियाविशेषण ।

पूरणवाचक Ordinal

स्थान	Ordinal	पुंल्लिङ्ग	स्त्रील्लिङ्ग	स्त्रील्लिङ्ग
क	First	प्रथमः	प्रथमम्	प्रथमा
इ	Second	द्वितीयः	द्वितीयम्	द्वितीया
उ	Third	तृतीयः	तृतीयम्	तृतीया
नुर	Fourth	चतुर्थः	चतुर्थम्	चतुर्थी
अशु	Fifth	पञ्चमः	पञ्चमम्	पञ्चमी
षु	Sixth	षष्ठः	षष्ठम्	षष्ठी
एकादशन्	Eleventh	एकादशः	एकादशम्	एकादश
विंशति	Twentieth	विंशः	विंशम्	विंशी
		विंशतितमः	विंशतितमम्	विंशति
षष्टि	Sixtieth	षष्टितम	षष्टितमम्	षष्टिता
एकषष्टि	Sixtfirst	एकषष्ठः	एकषष्ठम्	एकषष्ठी
		एकषष्टितमः	एकषष्टितमम्	एकषष्टि

सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् के पूरणवाचक 'पञ्चन्' के सद्वादशन् से नवदशन् तक के 'एकादशन्' के समान, और विंशति से उत्तपष्टि तक के "विंशति" के समान होते हैं। सप्तति, अशीति, नवति, शत, सदस्य के पूरणवाचक 'षष्टि' के समान होते हैं, परन्तु षष्टि इत्यादि के पूर्व में अन्य संख्यावाचक शब्द हों तो 'एकषष्टि' के समान होते हैं।

N. B. पूरणवाचक शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में 'गर्', स्त्रील्लिङ्ग में 'वती' और स्त्रील्लिङ्ग में 'नी' शब्द के समान होते हैं।

संख्यावाचक क्रियाविशेषण ।

(१) एकवार once महन्, दो बार twice द्विः, तीस बार thrice त्रिः, चारवार four times चतुः, पांचवार five

पञ्चदशः, छःवार six times पद्दशः, ऐसे ही अग्रे ही संख्याओं में 'दश' जोड़ कर संख्यावाचक क्रियाविशेष (Numeral adverbs) बनाये जाते हैं ।

(२) प्रकार्य—एक प्रकार से in one way एकैक्यम्; ऐसे ही द्विधा, त्रिधा, द्वैधम्; त्रिधा, त्रैधा, त्रैधम्; चतुर्धा, पञ्चधा, षोडश-पद्दधा, सप्तधा, अष्टधा इत्यादि जोड़ कर बनाये जाते हैं ।

(३) एक २ करके one by one एकशः, ऐसे ही द्विशः, त्रिशः, चिंशः, शतशः, सहस्रशः इत्यादि ।

अतिरिक्त—जोड़ा a pair द्वयम्-द्वितयम्, consisting of three parts त्रयम्, त्रितयम्, ऐसे ही चतुष्टयम्, पञ्चतयम् इत्यादि तय जोड़ कर बनाते हैं । स्त्रीलिंग में ई जोड़ देते हैं ।

(४) पञ्चकः bought for five (Rs. etc.) त्रिंशत्कः bought for thirty, वैशतिकः bought for twenty; जिनके अन्त में ति और शत् हो उनके परे क जोड़ने से बनते हैं ।

(५) क और अत् जोड़ने से षट्कः a collection of six, पञ्चत् a collection of five, दशत् इत्यादि ।

Exercise—14

1. Translate into Hindi:—पञ्च विप्रवः । चत्वारि मित्रानि । किलो मास्यैः । अत्र पञ्चदश पुस्तकानि सन्ति । श्यामोऽष्टादश पुराणानि कृतान् । चत्वारो देवः षट् शास्त्रानि च सन्ति । अनेके देवाः तत्र गतवन्तः । इति बाह्यका अग्निम् वर्णे सन्ति । चतुः तत्र गृह मागलः, परन्तु त्वा नापरयत् । न मयं हर्षं मुत्रा चारयति । सहस्रं सैभिका अग्निम् युद्धे निहताः । ईरवात्त नकिर्भवाया क्रियते । बाह्यकात् चतुष्टयमत्र वर्णते । पञ्चाशत्कः कृतोर्व दूधम् । कश्चित्तमं बाह्यकं मन्मतीर्षं प्रपद्य । परीक्षायां पञ्चविंशतिर्वाक्या

2. Translate into Sanskrit—(a) दोनों लड़के । पहला भादमी । तीसरे मनुष्य की भेजी (प्रेषय) । तीनों मित्रों से कहा (भक्षयन्) । मुझे तीन फल मिले (प्राप्तवान्) । वर्ष में ६ ऋतु और १२ महीने होते हैं (भवन्ति) । इस स्कूल में १२ वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग में ३० लड़के हैं । स्कूल में कुल कितने लड़के हैं ? मैं पाँच लड़कों के साथ वहाँ जाऊँगा (गमिष्यामि) । उस छात्रा में हजार भादमी थे । कहीं मनुष्य धुषा से पीड़ित हैं । जरासन्ध युद्ध में १७ बार हार गया (पराजितः) । दो स्त्रियाँ माला बना रही हैं (धर्तव्यः) । कृपा कर मुझे ८० रुपये दीजिये । इस बागीचे में ३६ आम के और २० जामुन के वृक्ष हैं । ६ रुपये में पुस्तक खरीदी है (क्रीतवान्) । एक जोड़ा कपड़ा भेजिये । एक २ करके सब लड़के चले गये (गताः) ।

(b) Three friends. Two creepers. Eleven boys. Seventeen horses. Ninety nine men are coming from Calcutta. Please send the first boy to me. Three thousand soldiers are fighting (युध्यन्ते) in the battle field. I will go to you on the 15th day. The king went to the forest with three hundred men. There are (भवन्ति) 30 days in a month and 52 weeks in a year. He has 28 elephants and 65 horses.

3. Correct:—प्राणि बाह्यः । श्वारः मित्रः । द्वी पुष्पाणि । अष्टादशानि पुत्राणि । एकादशः रत्नः । विशतयो (२०) पुर्याः । एतः बाह्यः । कृतयः पुर्याः मदिन् । विशलीश्रवा वर्णस्ते । शता शिखा भागवन्ति ।

Degree of Comparison.

१. दो में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो शब्द के परे 'र' और अनेक में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो 'तम' रूप लगाने हैं ।

(क) तृतीया-भ्याम् के पूर्व्य शब्दों में जो कार्य्य होता है वही तर और तम के पूर्व्य भी होता है । यथा, अयमेतेषोरतिशयेन गुरुः गुरुतरः; अयमेतेषामतिशयेन गुरुः गुरुतमः । एवं ही लघु लघुतर, लघुतम; विद्वस् विद्वत्तर, विद्वत्तम; वलितर, वलितम; महत्-महत्तर, महत्तम; उत्-उत्तर, उत्तम इत्यादि ।

(ख) तर और तम के आने से ई और ऊ का विवक्षित ह्रस्व होता है । यथा, श्रौतरा-श्रितरा, श्रौतमा-श्रितमा ।

(ग) क्रिया और क्रियाविशेषण अद्यय के परे तर और तम के स्थान में क्रम से तराम् और तमाम् हो जाता है । यथा, प्रयान्तुतराम्, प्रयान्तुतमाम्; नितराम्, नितमाम्; उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम् । पर विशेषण-उच्चैस्तरः, उच्चैस्तमः ।

२. गुणवाचक विशेषण के परे तर और तम के स्थान में क्रम से ईयस् और इष्ट हो जाता है । यथा, पाप-पापीयस्, पापिष्ट; लघु-लघोयस्, लघिष्ट; महत्-महोयस्, महिष्ट । ए पाचकतर, पाचकतम ।

(क) ईयस् और इष्ट प्रत्ययों के लगने से मत्, यत्, यिन्, इन् और त् प्रत्ययान्त विशेषणों के इन प्रत्ययों का लो हो जाता है । यथा, चलान्-चलीयस्, चलिष्ट; मतिमान्-मतीयम्, मतिष्ट; मेघायिन्-मेघीयम्, मेघिष्ट; धनिन्-धनीयस्, धनिष्ट; स्त्रीयन्-स्त्रीयस्, स्त्रीयिष्ट ।

(ख) इयस् और इष्ट प्रत्यय के आने पर व्यञ्जन के पार्ष्णिकों पर का र् हो जाता है । यथा, कृश-कशीयस्; मतिष्ट ^{strong-दृशोयम्, दृशिष्ट}; शृ (स्थूल) -श्रीयस्, श्रिष्ट; ^{nuch-श्रीयस्, श्रिष्ट}; शृ (शुभ्र) -श्रीयस्, श्रिष्ट ।

(ग) नियम विरुद्धः—

अन्तिक near	नेदीयस्	नेदिष्ठ	बहु	भूयस्	भूविष्ठ
अल्प little	अल्पीयस्	अल्पिष्ठ	धाइ well	साधीयस्	साधिष्ठ
	कनीयस्	कनिष्ठ	युवम् (युवा)	यधीयस्	यधिष्ठ
उह (विशाल)	वरीयस्	वरिष्ठ		कनीयस्	कनिष्ठ
क्षिप्र (शीघ्र)	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ	विपुल (बहुल)	उपायस्	उपेष्ठ
क्षुद्र (नीच)	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ	बृह	वर्षीयस्	वर्षिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ		उपायस्	उपेष्ठ
दीर्घ	द्रापीयस्	द्राधिष्ठ	रिधर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
दूर	दूषीयस्	दूषिष्ठ	रयूल (बड़ा)	रथवीयस्	रथविष्ठ
प्रशस्त	धेयस्	धेष्ठ	स्फिर (बहुत)	स्फेयस्	स्फेष्ठ
Praiseworthy	उपायस्	उपेष्ठ	इस्व	इसीयस्	इसिष्ठ
मिथ	प्रेयस्	प्रेष्ठ			

(ग) अर्थ की अधिकता प्रकट करने के लिये कहीं २ ईयस् और इष्ठ के परे भी तर और तम लगाये जाते हैं । यथा, धेष्ठतर, धेष्ठतम, पापीयस्तर, पापीयस्तम ।

Exercise 15

1. Translate into Hindi—स्योर्ध्वधरः । सुप्रानु धेष्ठतमः । विद्वानं पुरपमेकं प्रेक्ष्य । स उत्तमं पुरस्कारं प्राप्स्यति । पशुना दीर्घतमो हस्ती । पशुषु सिंहो बलिष्ठः । जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरिष्यती । राजा उपेष्ठपुरं राज्यभारं दृष्ट्वा तपोवने गतः । स कनिष्ठमात्रे कलं ददाति ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) दोनों में बड़ा । सब में खनी । राम चारों भाइयों में उपेष्ठ थे । राजा दशरथ के बहूनों में राज्य सबसे छोटे थे । राजा का सबसे बड़ा बहूका राज्यधिकारी होता है । हम सब में राम सबसे बुद्धिमान् है । दोनों में गोपाल अधिक बड़ा है । यह बहूका सबसे बुद्धिमान् है । यह अपने छोटे भाई को प्यार करता है ।

(क) कृत्-प्रत्यय के पूर्व अन्वो से जो कर्त्तृ-
 मर्यादा और लय के पूर्व भी होता है । यथा,
 कृत्-प्रत्यय-सम्बन्ध-सम्बन्ध-सम्बन्ध-सम्बन्ध-सम्बन्ध-
 ही लघु-सम्बन्ध, सम्बन्ध, विभक्त, विभक्त, विभक्त,
 मन्त्रित, मन्त्रित, मन्त्र-मन्त्रित, मन्त्रित, मन्त्रित,
 इत्यादि ।

(ख) मर मरि मर के आगे भी ई मरि ऊ का विभक्त
 रूप होता है । यथा, मरि-मरि, मरि-मरि, मरि-मरि-मरि ।

(ग) विभा मरि विभाविद्योग-प्रत्यय के परे-
 लय के अन्त में कर्म से तन्नाम् भीर तन्नाम् से उत्पन्न
 यथा, मन्त्राम्बुजाम्, मन्त्राम्बुजाम्, विनाम्, विनाम्,
 उद्यो-मन्त्राम्, उद्यो-मन्त्राम् । पर विद्योग-उद्यो-मन्त्राम् ।

२. गुणवाचक विद्योग के परे तर और तन के ल
 मर से ईदम भीर इष्ट हो जाता है । यथा, यथा-
 पापिष्ठ, मधु-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ, मन्त्र-मन्त्राम्, मन्त्रि-
 पापिष्ठ, पापिष्ठम ।

(क) ईदम् भीर इष्ट प्रत्ययों के आगे से म
 यिन्, इन् भीर त् प्रत्ययान्त विद्योगों के इन प्रत्ययों का
 हो जाता है । यथा, मन्त्राम्-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ; मन्त्रि-
 मन्त्रिष्ठ; मन्त्राम्-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ; यन्त्रि-मन्त्राम्,
 स्तोत्र-मन्त्राम्, स्तविष्ठ ।

(ख) इयस् भीर इष्ट प्रत्यय के आगे पर अन्त से
 यत्तों अर्थात् र् हो जाता है । यथा, मन्त्राम्-मन्त्राम्,
 इष्ट strong-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ; मन्त्रिष्ठ (मन्त्रिष्ठ)-मन्त्राम्,
 मन्त्राम् much-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ; मन्त्राम्-मन्त्राम्, मन्त्रिष्ठ ।

(ग) नियम विरुद्धः—

अनिक near	नेदीयस्	नेदिष्ठ	बहु	भयस्	भविष्ठ
अल्प little	अल्पीयस्	अल्पिष्ठ	वाद् well	साधीयस्	साधिष्ठ
	कनीयस्	कनिष्ठ	युवन् (युवा)	यवीयस्	यविष्ठ
उह (विशाल)	वरीयस्	वरिष्ठ		कनीयस्	कनिष्ठ
क्षिप्र (शीघ्र)	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ	विपुल (बहुत)	ज्यायस्	ज्येष्ठ
क्षुद्र (नीच)	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ	वृद्ध	वर्षीयस्	वर्षिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ		ज्यायस्	ज्येष्ठ
दीर्घ	द्रापीयस्	द्रापिष्ठ	स्थिर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
दूर	दृषीयस्	दृषिष्ठ	स्पृल (बड़ा)	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
प्रशस्य	धेयस्	धेष्ठ	स्फूर् (बहुत)	स्थेयस्	स्थेष्ठ
Praise-worthy	उपायस्	उपेष्ठ	ह्रस्व	हसीयस्	हसिष्ठ
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ			

(ग) धर्म की अधिकता प्रकट करने के लिये कहीं २ ईयस् और इष्ठ के परे भी तर और तम लगाये जाते हैं । यथा, धेष्टतर, धेष्टतम; पापीयस्तर, पापीयस्तम ।

Exercise 15

1. Translate into Hindi—तयोर्बलवत्तरः । पुण्यासु धेष्टतमः । विद्वत्तमं पुरपतेकं श्रेयस । स उत्तमं पुरस्कारं प्राप्स्यति । पशूनां दीर्घतमो हस्ती । पशुषु हिंदो बलिष्ठ । जमनी जन्मभूमिषु स्वर्गाद्वि सर्ग्यमी । राजा ज्येष्ठपुत्रं राज्यभारं दत्त्वा तपोवनं गतः । स कनिष्ठमात्रे कर्म दत्तानि ।

2. Translate into Sanskrit—(a) दोनों में बड़ा । सब में धर्मी । राम चारों भाइयों में ज्येष्ठ थे । राजा दशरथ के अर्द्धों में शत्रुघ्न सबसे छोटे थे । राजा का सबसे बड़ा अर्द्धका राजवाधिकारी होता है । हम गाँव में राम सबसे बुद्धिमान् हैं । दोनों में गोपाल अधिक बड़ा है । वह अर्द्धका सबसे दुबला है । वह अपने छोटे भाई को प्यार करता है ।

निराकरणम्, निर्भरः, निर्णयः, निर्घनः, निर्घणम् ।

दुम् (दुर्) — Bad, hard to be done, difficult etc.
 दुराचारः bad conduct, दुष्करः hard to be done,
 सहः difficult to be borne, दुर्जनः, दुर्देशः, दुर्भिक्षः,
 दुष्कृतिः ।

वि — Apart, separate from, certainly, reverse
 to etc. विश्लिष्यति separates, विकारः, विहृतिः, विकारः,
 विक्रमः, विक्रयः, विप्रहः, विघ्नः, विजयः, विज्ञानम्, विज्ञानम्,
 विदेशः, विनयः, विनाशः, विप्लवः, विभवः, विघ्नः, विद्योः,
 विरागः, विरामः, विरोधः, विलासः, विवाहः, विवेकः, विधानः,
 विवादः, विस्तारः, विस्मयः ।

आ — Up to, towards, all round, a little etc.
 आगच्छति comes, आरोहति grows to, ascends, आकट,
 आकारः, आक्रोशः abuse, आक्षेपः, आख्यानम्, आशु
 आगमः, आघातः, आचारः, आज्ञा, आतपः, आधारः, भाषु
 आकम्पः shaking a little, आहुतिः ।

नि — In, within, on, upon, opposed to, down
 etc. निरीदति sits down, निकरः heap, निक्षयः touch-
 stone, निप्रहः, निदानम्, निदेशः, निशातः, निमन्त्रणम् ।
 निवमः, निवोगः order, निसर्गः nature.

अधि — Over, above, upon, on etc. अधिगच्छति
 goes over, knows, gets, अधिकारः, अधिष्ठानम्,
 अधिवासः ।

अधि — Beyond, over, too much, very much,

exceedingly, अतिप्राम्यनि goes over, अतिसारः
sentry, अतिपानम्, अत्ययः ।

सु—Well, thoroughly, सुहृत् done well, सुशासनम्
well governed, सुगमः, सुचरितम्, सुजनः, सुम
सुपुत्रिः ।

उत्—Up, above, superior etc. उत्पत्ति falls
उद्गच्छति rises, उद्गातः, उद्गच्छता, उद्गच्छः, उ
उत्थानम्, उत्पत्तिः, उत्थानः, उत्सर्गः, उत्सवः, उत्
उद्यः, उद्गमः, उद्भवः, उद्यमः ।

अभि—To, towards, upon, bear to etc. अभिग
goes to, goes near to, अभिगमः going to
अभिज्ञानम्, अभिधानम्, अभिनयः, अभिमनः de
अभिमानः, अभियोगः, अभिदधिः, अभिज्ञापः, अभिधा
अभिज्ञापः, अभिदेकः ।

प्रति—In return, back, towards, in oppos
to etc. प्रतिभाषणे speaks in return, प्रतिभाषः rem
प्रतिक्रिया, प्रतिप्रदः, प्रतिभवति, प्रतिनिधिः, प्रतिशब्दः, प्र
प्रतिरोधः, प्रतिद्वेषः ।

परि—All round, about etc परिष्ठा to plac
round, परिष्ठा ditch, परिष्ठावः, परिष्ठातः, परिष्ठातिः
परिष्ठावः marriage, परिष्ठावः, परिष्ठावः, परिष्ठावः, परि
परिष्ठावः, परिष्ठावः, परिष्ठावः, परिष्ठावः, परिष्ठावः
परिष्ठा ।

सम्—Near, less, next to etc सम्पत्ति approaches
सम्पत्तिः, सम्पत्तिः disease, सम्पत्तिः excess, सम्पत्तिः
सम्पत्तिः, सम्पत्तिः conjuncture, सम्पत्तिः, सम्पत्तिः, सम्पत्तिः

अ } again	ईप्त् little
त् } besides	उच्चैस् loudly
त्र elsewhere	उत्तरम् then
त्या otherwise	उपरि above
ततः near	उपांशु in private
एव moreover	उभयतस् from both sides
निश्वणम् frequently	उभयद्यस् } on both
ः quickly	उभयेद्युस् } days
त्र in the next world	उपा at dawn
म् quickly	श्रुतम् } truthfully
तक् before	श्रुधक् }
म् enough	श्रुते without
त् without	एकत्र together
अकृन् repeatedly	एकदा once
संप्रति } improperly	एकपदे suddenly
संप्रतम् }	एतद्दि now
हाय instantly	एव just
त्यात् near	एवम् thus
विस् openly	ओम् so be it
एततस् here and there	कश्चिन् } I trust,
ति so	कश्चन } I hope
परम् again	कथञ्चन } with great
परेद्युः the other day	कथञ्चिन् } effort
तिद् thus	कदाचिन् once upon a time
दा truly	न कदाचिन् never
ह here	कदाचिन् at any time

रोचः to-morrow
 स्यात्सु sufficiently
 शान् behind
 पुनः again
 पुनः पुनः again and again
 पुनः
 पुनः } before,
 पुनः } in front
 पुनः in former times
 पुनः before
 पुनः yesterday
 पुनः apart from
 पुनः in the morning
 पुनः extensively
 पुनः } being
 पुनः } exhausted
 पुनः every day
 पुनः on the other hand
 पुनः forcibly
 पुनः before
 पुनः in the morning
 पुनः mostly
 पुनः in the evening
 पुनः after death
 पुनः } lost five
 पुनः } per cent

वदित् out
 मूयः exceedingly
 भूयम् greatly
 मनाक् a little
 मा not
 माहित् except
 माहित् without delay
 मिथः }
 मिथो } to each other
 मिथ्या wrongly
 मुषा in vain
 मुहु often
 मूषा in vain
 वन् since
 वतः for which reason
 वत् where
 यथा कथा as much as
 यथाकामम् in due order
 यथागतम् just as received
 यावत् as much as
 युगपत् at once
 वत् like
 विना except
 शिखरा high upon
 the sky

अव्यय ।

(४) कारणवाचक— हि, तत्, तेन इत्यादि ।

(५) प्रश्नवाचक— आहो, आहोस्वित्, उत, किं, इति, कुत, ननु, नया, नु इत्यादि ।

(६) कालवाचक— यावत् तावत्, वदा तदा इत्यादि ।

(७) विधिविनिर्वाचक— अह्, अथ, किम्, माम्, भद्रा इत्यादि ।
N. B. अथ कार्यारम्भ का और इति कार्यान्त का सूचक है ।

२- च और वा का प्रयोग— दो या अनेक पद एकत्र रहने से अन्तिम पद के अन्त में रहते हैं या प्रत्येक पद के अन्त में रहते हैं। च द्वारा दो एकवचनान्त कर्तृपद संयुक्त हों तो क्रिया द्विवचन होती है और अथवा बहुवचनान्त होती है। परन्तु वा, अथवा, न वचन होने पर क्रिया अन्तिम कर्तृपद के अनुसार होती है। कर्तृपदों के हों तो उत्तम पुरुष क्रिया के निकट रहता है और क्रिया मध्यम पुरुष होती है। मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष के कर्तृपदों का मध्यम पुरुष होती है। यथा, रामो लक्ष्मणश्च गच्छताम्, लक्ष्मणश्च, गच्छतः । रामो लक्ष्मणो वा गच्छति । स, त्वं, अहम् च पुरुषों का अङ्गच्छ ।

विस्मयादिव्योधक (Interjection)

निम्नलिखित अव्यय मन के भावों को प्रकट करते हैं।

(१) आ, इ, उ, ए, ऐ, ओ, अह, अहह, अहो, वत, हा इत्यादि आश्चर्य और शोक इत्यादि प्रकट करते हैं।

(२) किम्, धिक् इत्यादि अस्वप्ना प्रकट करते हैं।

(३) हा, हाहा, वत, वन्त इत्यादि शोक और स्नेह प्रकट करते हैं।

(४) हन्त इत्यादि दर्प प्रकट करते हैं।

(५) धीयद् , धीयद् और गयद् , देयता या विदुता हो वलि देने के समय बोलें जाते हैं । यथा, देयताय्यो वद, इत्यादि ।

(६) स्वाहा और स्वधा नाम से देयता या विदुता हो वलि देने के समय बोलें जाते हैं । यथा, मानये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा ।

(७) सम्बोधन में— (१) अद्, अयि, अये, महो, वद, ड, ए, ओ, प्याद् , मो, मोः, हदो, हे, हे, हो, इत्यादि आदि अर्थ में आते हैं । (२) अद्, अरे, अये, रे, रे रे, ओरे, इत्यादि अथवा अर्थ में आते हैं ।

अतिरिक्त अव्यय Particles.

Particles पादपूरण या निश्चय अर्थ में आते हैं । इनमें से ये हैं; किल, खलु, च, तु, नु, घै, हि इत्यादि ।

कुछ अव्यय दूसरे शब्दों के साथ प्रयोग किये जाते हैं ।

(१) अद्— अद्भुतं a wonder.

(२) का-कापुरुषः a bad man, कोष्णम् luke warm.

(३) कु— कुकृत्याम् a bad deed.

(४) चन, चित्—किञ्चित्, कश्चित्, किञ्चन, कश्चन इत्यादि ।

(५) न—स्वरादि शब्द के पूर्व न का अन् और अङ्नादि शब्द के पूर्व अ हो जाता है । यथा, अनीश्वरः, अनश्नः, अमाह्विणः, अज्ञानम्, अकालः, अनीतिः, असुरः इत्यादि ।

(६) स्म—भूतकाल के अर्थ में वर्तमान के लट् के साथ स्म आता है । यथा, भवति स्म = अभवत् । मा पहले रहने से

अर्थ की अधिकता का बोध होता है । यथा; मा स्म प्रजापीडने मनः रुधाः ।

(७) स्थित्—किं या दूसरे अव्ययों के साथ जोड़ा जाता है और प्रश्न या सन्देह करना अर्थ प्रकाश करता है । यथा, किंस्थित्, अहोस्वित् इत्यादि ।

(८) स्वी—स्वीकार अर्थ में कृ धातु या कृ धातु से निष्पन्न शब्दों के पूर्व में आता है । यथा, स्वीकारः, स्वीकृतम् इत्यादि ।

Exercise—16.

1. Translate into Hindi:—भीमोऽर्जुनश्च । हरिश्च हरश्च । देवराक्षसाश्च । कृष्णो हरिर्वा । बालकः कुत्र गच्छति । क्व गतः स दुष्टात्मा । राक्षसो बलात् सीता मयाहरत् । पूर्वेषुः तेऽप्रागताः । मिथ्या मा वद् । ग्रामाद्बहिः तिष्ठति सः । अक्षता दिवा निद्रां यान्ति । स द्राक् तान् प्रबुद्धान् करिष्यति । उच्चैः ते विरोलुमारब्धाः । अपि कुशली खम् ? धिक् मां कृष्णाभक्तम् । रामः खलु सीद्मणुद्भिः । यतो धर्मस्ततो जयः । भोः ! कुत आगरक्षति भवान् ? महान् धर्मात्मा हि स नृपतिः । राजा नाम साक्षाद्विष्णोरवतारः । मृत्युरेव प्राणिनां ध्रुवम् ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) भाई और बहन । पुत्र या पुत्री । अरे, गीत की मधुरता । इसमें इनका दोष नहीं है । यह भाषा है या मतिधम है । हे तात ! अब बिलम्ब क्या । तुम्हारा मित्र कहीं है । अरे, यह बड़ा पाप है । मैं परसों घर जाऊँगा । आज मेरा जन्म सफल हुआ । इसका फल क्या है ? घातः काल का घूमना अच्छा है । तब सारे की पत्नी आयी । सज्जनों का दर्शन बड़ा दुर्लभ है । उसमें मेरी बड़ी प्रीति है । हितकर और मनोहर बचन दुर्लभ है । आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला भारी शत्रु है ।

(b) Father and mother. The king and the minister. Men or women. Send them here. Where do you live? Where are

they going ? Don't tell a lie. Moreover you are my enemy. The youthful age and this handsome body, Bring the things in the presence of the king. Who is then the second ? I have no fear from death. Ram went (अगच्छत्) to the forest with Sita and Lakshmana. Ram, you and I will go home. He and you will come to my village.

3. Correct:—सुषोषः सुरालयागतः । रामो लक्ष्मणो वा वरते । तं स्वप्नं परयसि । दिवायां निद्रा याति । मिथ्यां मा वद । स हास् भागनिपतिः । स्वप्नागतः ते । स नष्टे दिवायां च स्वपिति । मुदया तत्र गताः ते ।

व्याकरण-कौमुदी

द्वितीय भाग ।



तिङन्त (Conjugation of Verbs).

धादयो धातवः—भू, स्था, गम्, इश, रुड्, इस् इत्यादि
विभक्त शब्दों (प्रकृति) को 'धातु' कहते हैं । धातु के परे
भक्तियाँ होती हैं उन्हें 'तिङ्' और तिङ् युक्त पद को
'पद' कहते हैं ।

धातु के परे दश विभक्तियाँ होती हैं; लट्-Present,
लृट्-Imperative, लङ्-Imperfect, विधिलिङ्-Poten-
tial, लृङ्-Periphrastic Future, लृट्-Future, लृङ्-
Conditional, आशीर्षिङ्-Benedictive, लिट्-Perfect,
लृट्-Pluperfect.

B. रूप बनाने की सुविधा के लिये इन १० विभक्तियों को दो
विभक्त करते हैं । प्रथम भाग (Special tenses and
moods) में लृट्, लृङ्, लृट् और विधिलिङ् हैं, द्वितीयभाग (General
tenses and moods) में शेष सभी विभक्तियाँ हैं ।

विभक्तियों में तीन पुरुष
प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष ।

सुप्तात्—भस्मद् और युष्मद् को छोड़कर सब शब्द
सुप्तात् हैं ।

३. तान्त्रिकाचनद्विनयनचतुर्वनाम्भेकाः — प्रत्येक पुरुष में द्वे
यचन है; एकयचन, द्वियचन, चतुयचन ।

सब विभक्तियाँ दो भागों में विभक्त हैं; परस्मैपद, आत्मने
पद। प्रत्येक विभक्ति के अठारह रूप होते हैं, परस्मैपद में
नय, आत्मनेपद में नय । अतएव परस्मैपद में नय और
आत्मनेपद में नय रूप होते हैं । इनमें से प्रत्येक को दो
विभक्ति ही कहते हैं । इस प्रकार कुल १८० विभक्तियाँ हैं ।

४. धातुविभाग—संस्कृत के सब धातु १० श्रेणियों में विभक्त
हैं । प्रत्येक श्रेणी को गण कहते हैं । भ्वादि (First
conjugation), अदादि (2nd conj), हादि (3rd conj),
दिवादि (4th conj), स्वादि (5th conj), तुदादि (6th
conj), रुधादि (7th conj), तनादि (8th conj), ऋधादि
(9th conj), चुरादि (10th conj), ये १० गण हैं ।

N. B. रूप बनाने की सुविधा के लिये इन १० गणों को दो भागों
में विभक्त करते हैं । प्रथम भाग (Group I) में भ्वादि, दिवादि, तुदादि
और चुरादि हैं तथा शेष गण द्वितीय भाग (Group II) में हैं ।

विभक्ति की आकृति ।

लट्, लोट्, लृट् और विधिलिङ् (special tenses
and moods) में प्रथमभाग (Group I) और द्वितीय भाग
(Group II) की विभक्तियों की आकृति में कहीं २ कुछ भेद
पड़ता है । जहाँ दोनों में भेद पड़ता है वहाँ प्रथम भाग की
विभक्ति के सामने ही द्वितीय भाग की विभक्तियाँ भी
ऐसा () धन्वनी में दी जाती है ।

३।

लट् ।

परस्मैपद

आत्मनेपद

प्र. ए. व.	द्वि. व.	तृ. व.	ए. व.	द्वि. व.	तृ. व.
प्र. पु. ति	तः	अन्ति	ते	इते (आते)	अन्तं (अंते)
म. पु. सि	थः	थ	से	इथे (आथे)	ध्वे
उ. पु. मि	वः	मः	इ (ए)	वहे	महे

लोट् ।

प्र. पु. त्	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम् (आताम्)	अन्ताम् (अताम्)
म. पु. ङ(हि)तन्	त	स्व	दधाम् (आधाम्)		ध्वम्
उ. पु. आनि आव	धाम	ये	आवहे		आमहे

लङ् ।

प्र. पु. त्	ताम्	अन्	त	इताम् (आताम्)	अन्त (अन)
म. पु. ः	तम्	त	थाः	इधाम् (आधाम्)	ध्वम्
उ. पु. अम्	व	म	इ	वहि	महि

विधिलिङ् ।

प्र. पु. ईत् (यात्)	ईताम् (याताम्)	ईयुः (युः)	ईत्	ईयाताम्	ईन्
म. पु. ईः (याः)	ईतम् (यातम्)	ईत् (यात्)	ईयाः	ईयाधाम्	ईध्वम्
उ. पु. ईयम् (याम्)	ईव (याव)	ईम (याम)	ईय	ईवहि	ईमहि

लृट् ।

प्र. पु	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म. पु	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
तृ. पु	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृङ् ।

प्र. पु.	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
म. पु.	स्यः	स्यतम्	स्यत	स्यथाः	स्येधाम्	स्यध्वम्
तृ. पु.	स्यम्	स्याव	स्याम	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

लुट् ।

प्र. पु.	ता	तारी	तारः	ता	तारी	तारः
म. पु.	तामि	तारुयः	तारथ	तामे	तारुये	तारुये
उ. पु.	तामि	तारुयः	तारुमः	ताहे	तारुहे	तारुहे

आशीलिङ् ।

प्र. पु.	यात्	याम्ताम्	यायुः	गीष्ट	सीयास्ताम्	सीय
म. पु.	याः	याम्ताम्	यास्त	सीष्टाः	सीयास्थाम्	सीय
उ. पु.	यायम्	याय्व	यायम	सीय	सीयदि	सीय

लिट् ।

प्र. पु.	अ	अतुः	उः	ए	आते	ते
म. पु.	थ	अथुः	अ	से	आथे	थे
उ. पु.	अ	व	म	ए	वहे	वहे

लुङ् ।

प्र. पु.	त्	ताम्	अन्	त	आताम्	अन्
म. पु.	ः	तम्	त	याः	आथाम्	अन्
उ. पु.	अम्	व	म	इ	वदि	अन्

N. B. (१) लृट्-वर्तमान काल में, लोट्-आज्ञा, निमन्त्रण, प्रार्थना, अनुरोध, आशीर्वाद इत्यादि अर्थ में, लृष्-लिट्-लृष्-भूतकाल में, विधिलिङ् औचित्य (विधि) और आज्ञा इत्यादि अर्थ में, लृट्-लृट्-भविष्यदर्श में, आशीलिङ्-आशीर्वाद अर्थ में, लृष्-दो क्रियाओं के कार्थ्य कारण का भ्रम बोध होने से क्रिया के फल की अपाप्ति का अर्थबोध होने पर आता है । (लकारार्थ निर्णय में सविस्तर देखो) ।

*प्र. पु.	तिप्	तत्	कि	त	आताम्	अन्
म. पु.	तिप्	थत्	थ	थात्	आथाम्	अन्
उ. पु.	तिप्	वम्	मम	इत्	वदि	अन्

(३) यदि क्रिया का फल कर्मा ही के निमित्त हो तो क्रिया के अन्त्योत्तर की विभक्ति लगनी है, पर क्रिया का फल किसी दूसरे के निमित्त हो तो परादेश की विभक्ति लगनी है । यथा, बिजो यजने (सःपुत्र आनन्दे यज्ज करवा है), बिजो यजति (विर यजमान के बिने यज्ज करवा है) पर आज्ञा कल प्रयोग में ऐसा नहीं है ।

Special tenses and moods

(लृट् , लोट् , लृट् , विधिलिङ्)

प्रथम भाग (Group I.)

साधारण नियम ।

१. अतो गुण—विभक्ति के अकार पर रहने से पूर्ववर्त अकार का लोप होता है । यथा, पन् + म + अन्ति = पतन्ति ।

२. अतो दीर्घो वधि—विभक्ति के थ और म पर रहने से पूर्ववर्ती अकार का आकार होता है । यथा, पन् + अ + यः = पनाथः; पन् + अ + मः = पनामः ।

३. लृट् लृट् लृट् इडङानः—लृट्, लृट् और लृट् विभक्तियों में धातु के आदि में 'अ' होता है । यथा, अमयत्, अमयन्ति, अमयिष्यत् । परन्तु मा और मास्म शब्दों के योग में अ नष्ट होता । यथा, मा-मयत्, मास्म भूत् ।

४. आट्वादीनाम् । आट्वा—लृट्, लृट् और लृट् विभक्तियों में, 'अ' के साथ धातु के आदिस्थित इ ई का ये, उ ऊ का ओ ऋ का धार हो जाता है । यथा, अ + ईश् + अ + त = ऐश्वर्यत् (इच्छ्)-ऐश्वर्यत्; अच्छ्-आच्छत्; ऐश्वर्यत्, ऐश्वर्यत् इत्यादि ।

५. वाच्यत्वे—वदन्त वर्गीय वर्णों के स्थान में विकल्प के निमित्त वर्णों का प्रथम वर्ण होता है ।

कर्तृवाच्य (Active voice.)

कर्तृवाच्य में धातु तीन प्रकार के हैं; परस्मैपदी, मल्लनेपदी, उभयपदी । परस्मैपदी धातु के परे परस्मैत् विभक्ति, मल्लनेपदी धातु के परे मल्लनेभ्द की विभक्ति और उभयपदी धातु के परे दोनों पदों की विभक्तियाँ होती हैं।

कर्तृवाच्य के कर्ता में जो पुरुष और जो यजन होते हैं क्रिया में भी वही पुरुष और वही यजन होते हैं अर्थात् कर्ता उत्तम पुरुष हो तो क्रिया उत्तम पुरुष की होगी, कर्ता मध्यम पुरुष हो तो क्रिया मध्यम पुरुष की होगी, कर्ता प्रथम पुरुष हो तो क्रिया प्रथम पुरुष की होगी, कर्ता एकवचन हो तो क्रिया एकवचन की, कर्ता द्विवचन हो तो क्रिया द्विवचन की और कर्ता बहुवचन हो तो क्रिया बहुवचन की होगी। वयं गच्छामि; स गच्छति; आयां गच्छावः; वयं गच्छन् इत्यादि ।

तुदादि (6th conjugation)

१. तुदादिभ्यः सः—लट्, लोट्, लृट् और विधिलिट्, इन चार विभक्तियों में तुदादिगणोय धातु के परे तथा विभक्ति के पूर्व 'अ' जोड़ दिया जाता है। यथा, स्पर्श् + अ + ति = स्पर्शति।

स्पर्श् (to touch) परस्मैपद ।

लट् ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	स्पर्शति	स्पर्शतः	स्पर्शन्ति
मध्यमपुरुष	स्पर्शसि	स्पर्शथः	स्पर्शथ
उत्तमपुरुष	स्पर्शामि	स्पर्शाथः	स्पर्शामः



प्रथमपुरुष मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष	स्पृशतु स्पृशा स्पृशानि	लोट् ।	स्पृशताम् स्पृशतम् स्पृशाथ	स्पृशन्तु स्पृशत स्पृशाम
प्रथमपुरुष मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष	अस्पृशत् अस्पृशाः अस्पृशाम्	लृट् ।	अस्पृशताम् अस्पृशतम् अस्पृशाथ	अस्पृशन् अस्पृशत अस्पृशाम
प्रथमपुरुष मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष	स्पृशेत् स्पृशेः स्पृशेयम्	विधिलिङ् ।	स्पृशेताम् स्पृशेतम् स्पृशेथ	स्पृशेयुः स्पृशेत स्पृशेम

परस्मैपदी धातु ।

उञ्च् to avoid, to abandon, उञ्च् to glean, बुद् to cut, शृश् to touch, to shake, लिच् to write, विष् to enter, with नि to sit down, with परि to place before, with सम् and नि to be near, with सम् and आ to introduce, सृच् to create, with हन् or नि to leave, with सम् to unite, स्पृश् with उप to tread upon, एद् to open, एद् to throb, इन धातुओं के रूप 'स्पृश्' के समान होंगे ।

विज् to fear, to tremble आत्मनेपदी ।

प्रथमपुरुष मध्यमपुरुष उत्तमपुरुष	विजते विजसे विजे	लृट् ।	विजते विजेथे विजाथहे	विजन्ते विजध्वे विजामहे
--	------------------------	--------	----------------------------	-------------------------------

लोट् ।

प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष

विजताम्
विजस्य
विजे

विजेताम्
विजेथाम्
विजावद्

विजन्त
विजन्त
विजन्त

लङ् ।

प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष

अविजत
अविजथाः
अविजे

अविजेताम्
अविजेथाम्
अविजावद्

अविजन्त
अविजन्त
अविजन्त

विधिलिङ् ।

प्रथमपुरुष
मध्यमपुरुष
उत्तमपुरुष

विजेत
विजेथाः
विजेथ

विजेयाताम्
विजेयाथाम्
विजेवद्

विजेन्त
विजेन्त
विजेन्त

विज् with उत् to shake उद्विजते ।

उभयपदी ।

कृप् to plough, क्षिप् to throw, दृष्टि to give pain
दृश् to grant, with आ to order, with उत् to proclaim
with वय to advise, with निप् to speak about
with वि & निप् to declare, with सम् to communi-
cate, कृप् to throw, to send, to put, to incite, कृप्
प्र to direct, with अय to remove, with निप् to
confess, with वि to be happy, मिप् to join, कृप्
मिप् और विप् दोनों के समान होंगे ।

शृकारान्त धातु ।

१ निप् शर्कण्डिलु—लृट् इत्यादि चार विभक्तियों में लृट्
के अन्तर्गत शृ का रिप् हो जाता है ।

म् to die आत्मनेपद्री ।

लट्

लोट्

- | | | | | | | |
|-------|---------|-----------|-----------|-----------|------------|-------------|
| ३. पु | त्रियते | त्रियेते | त्रियन्ते | त्रियताम् | त्रियेताम् | त्रियन्ताम् |
| १. पु | त्रियसे | त्रियेथे | त्रियध्वे | त्रियस्य | त्रियेथाम् | त्रियध्वम् |
| १. पु | त्रिये | त्रियावहे | त्रियामहे | त्रिये | त्रियावहै | त्रियामहै |

लङ्, विधिलिङ् में भी ऐसे ही विभक्तियाँ जोड़ दो ।

आत्मनेपद्री—ट् with भा to worship, to regard, कृ with धि and भा to be busy, इनके रूप 'म्' के समान होंगे ।

शृकारान्त धातु ।

३ शृत् इत्थतोः—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में धातु के धन्तस्थित शृत् का इट् हो जाता है । यथा, कृ to scatter, to pour out—किरति, किरतः, किरन्ति । गृ to devour, to swallow—गिरति, गिरतः, गिरन्ति । ऐसे ही विभक्तियों को जोड़ने से सब रूप बन जायेंगे ।

इकारान्त, उकारान्त धातु ।

४ लट् इत्यादि चार विभक्तियों में धातु के धन्तस्थित इत्थ या हीर्ष इ, उ के स्थान में यथाक्रम इत्, उत् हो जाते हैं । यथा, गि to go, to move—रियति, रियतः, रियन्ति इत्यादि । धृ to shake—धुषति, धुषतः, धुषन्ति इत्यादि शि to dwell—शियति ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

५- निम्नलिखित धातुओं में कुछ परिवर्त्तन होता है । लट् के प्रथमा—एकपद्यत का रूप दिया जाता है । लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ऐसे ही विभक्तियों को जोड़ने से सब रूप

वन जायते । सद्यः राज्ञी वै जी परिपूर्णनीय धानुर्मां के मर
तेषां ही कर्मा आदिगे ।

इत् to wash इच्छति	मृज् to bathe मज्जति
कृत् to cut कृत्तति	मुञ्च् to release मुञ्चति
हृत् with उप or प्रति उप.	लिप् to anoint लिप्ति
स्फिकरति or प्रतिस्फिकरति	लुप् to break लुम्पति
गिद् to suffer pain गिन्दति	पिद् to obtain पिन्दति
गृत् to swallow गिरति, गिलति,	व्यच् to deceive व्यञ्चति
with उत् to vomit, with	मृज् to cut मृज्जति
सम् and उत् to throw up.	रम्ज् to go रज्जति
भुद् to cut भुटयति, भुटति	सिच् to sprinkle सिञ्चति
प्रच्छ् to ask पृच्छति	पिश् to form पिशति
ध्रस्ज् to fry ध्रज्जति-ते	

Exercise — 17

1. Translate into Hindi— स पुत्रस्य गात्रं सृष्टुं
मयादुद्धिजते तस्य हृदयम् । ते क्षेत्रेषु धान्यानि उच्छ्रुत् । सेन
राज्ञोवा सैनिका नगरं प्राविशन्* । यज्ञा सृष्टिमिमां असृजन् । तव
क्षेत्रं कृषेत् । नपतेरादेशेन सैनिका बाणान् अक्षिपन् । तस्य पुत्रो
मामनुदताम् । पितरौ मामादिशत । आवां प्रभोः क्षेत्राणि अस्मिन्
स्वामिन् ! अस्मात् नरकात् मुञ्च माम् । अस्मिन् सरोवरे बालका मज्जन्
युवं गुहं बहूनि प्रदानानि पृच्छथ ।

2. Translate into Sanskrit— (a) राजा ने चोरों को छोड़ दिया
उसके लड़के कल की इच्छा करते हैं । अपनी माता से पूछो । आज उ
मुझे छग दिया । ईश्वर की कृपा से वह धन पावे । सुसुलोक के उ
मरते हैं । कल उसका बड़ा लड़का मर गया । अपने पिता के पास एक

* किसी गण के धानु के पृथक् उपसर्ग हो तो धानु का रूप बना कर वह
पहले उपसर्ग छोड़ दिया जाता है । यथा, म-विश्र+म+मविशन् = मविशन्



लिखा । किसी को दुःख मत दो । हवा से वृक्ष के पत्ते झिजते हैं । सब लोग स्वर्ग में जाते हैं । उसके दोनों छद्मके पत्र लिखें । ब्रह्मा सृष्टि को बनावे । मैं देशभक्तों का हृदय से आदर करता हूँ । तुम्हारे दोनों छद्मों ने सब रुपये छितरा दिये । उसने छुरी से अपनी भंगुली काट दी है । उसने प्रेमाश्रु से पुत्र का शरीर सींच डाला ।

(b) Yamaraj asked Yudhishtir many questions. You should enter the assembly. Soldiers got order of their general. The cloud sprinkled the earth yesterday. We two wish your welfare. Let us plough our fields for corns. I am writing a book of Sanskrit grammar. Ask this of your parents. Touch the right hand of your friend. Warriors should throw arrows on their enemies. Kings too have regards for wise men.

3. Correct:—आर्षा स्वा एरामि । सर्वे स्वा आदियन्ति । सौ सं आदियति । यूयं गुणं वृषद् । मरा चियन्ति । पुस्तकं लेखामि । स्तेना तस्य सर्वस्वं अमुचन् । सः फलमेकं पेयन् । ते धनं विन्दस्व । स परतं अयुच्यन् स्म ।

भ्वादि (1st Conjugation).

१. कर्त्तरिष्णु-सट् इत्यादि चार विभक्तियों में भ्वादि गणीय धातु के परे 'म' जोड़ा जाता है । यथा, पठ्+भ+ति = पठति ।

धेदु to speak परस्मैपदी ।

सट् ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	धेदति	धेदतः	धेदन्ति
मध्यमपुरुष	धेदसि	धेदथः	धेदथ
उत्तमपुरुष	धेदामि	धेदावः	धेदामः

लोट् ।

प्रथमपुरुष	घदतु	घदताम्	घदन्तु
मध्यमपुरुष	घद	घदतम्	घदत
उत्तमपुरुष	घदानि	घदाव	घदाम

लङ् ।

प्रथमपुरुष	अघदत्	अघदताम्	अघदन्तु
मध्यमपुरुष	अघदः	अघदतम्	अघदत
उत्तमपुरुष	अघदम्	अघदाव	अघदाम

विधिलिङ् ।

प्रथमपुरुष	वदेत्	वदेताम्
मध्यमपुरुष	वदेः	वदेतम्
उत्तमपुरुष	वदेयम्	वदेव

परस्मैपदी घातु ।

अक् to go, अश् to pervade, अष् to go, to beg worship, अद् to ramble, to wander, अत् to go, to worship, अर्त् to earn, अर्द् to worship, to serve, अष् to protect, ईर्ष् to envy, अन् to burn, to sound, कश् to wish, to desire, कृद् to coc hum, कुष् to be blunded, कृद् to cry, क्रीद् to प श् to flow, शक् to wash, खाद् to eat, गद् to say, ' to roar, गी to sing, ग्ळी to be weary, च् to च with अति & आ to transgress, with अभि to bet with अनु to attend, with आ to practise & do with अर् to worship, with परि to serve, with नि अभि to go astray, with एम् to ride upon, with & आ to perform, चर्च् to discuss, चर्न् to read

chew, चल् to walk, to move, चुम् to kiss, व्य् to mutter, कल्प् to rumour, जीव् to live, ज्वल् to be hot with fever, ज्वल् to burn, to glow, झल् to be confused, कश्च् to cut, to wound, शच् to shine, with अनु to repent, with परि or सम् to beat or inflict pain, तर्ष् to threaten, त्यज् to abandon, त्रस् to trouble, दह् to burst open, बद् to burn, to pain, श् to suck, ध्वै to think, ध्वन् to sound, नद् to dance, to act, नद् to sound, मन्द् to be pleased, with अभि to wish for, with आ to be happy, with प्रति to be thankful, नम् to salute, नद् to sound, निन्द् to censure, पद् to read, पम् to praise, पद् to fall, with अति prefixed to excel, with अभि or अव् to descend, with आ to come, with उद् to ascend, with नि to get or fall down, with वि to turn back, with सम् & उद् to fly, फल् to result, फुल् to open, to blow, मग् to speak, मूर् to adorn, घम् to walk, to roam, मङ् to decorate, मप् to churn, मोल् to close, to twinkle, मुग् to shave, to grind, मूर्च्छ् to faint, म्भै to grow weary, रक्ष् to protect, शच् to talk, with अनु to talk like, with अन्व to deny, with आ to address, with प्र to talk in coherently, with वि to lament, with सम् to converse, कश्च् to shine, लुण्ठ् to rob, to plunder, बद् with अनु to speak similarly, with आ to reprove, with परि to speak against, with उत्ति to reply, वम् to vomit, वद् to dwell, with भवि to occupy, with उप् to fast,

with नि to dwell, with प्र to dwell abroad, इष् to wish, to desire, ग् to go, संग् to praise, with प्र praise, रण् to fall down, सन् to sound, इष् to be
इन धातुओं के रूप लट् इत्यादि धातु विभक्तियों में 'बट्' के स्थान में

संय् to serve आत्मनेपदी ।

लट् ।

प्रथमपुरुष	संयते	सेयेते	संयन्ते
मध्यमपुरुष	सेयसे	सेयेधे	सेयन्त्रे
उत्तमपुरुष	सेये	सेयाथहे	सेयाम्हा

लोट् ।

प्रथमपुरुष	सेयताम्	सेयेताम्	सेयन्ताम्
मध्यमपुरुष	सेयस्य	सेयेधाम्	सेयध्वम्
उत्तमपुरुष	सेवै	सेयाथहे	सेयाम्हा

लङ् ।

प्रथमपुरुष	असेयत	असेयेताम्	असेयन्त
मध्यमपुरुष	असेयथाः	असेयेधाम्	असेयध्वम्
उत्तमपुरुष	असेवे	असेयाथहि	असेयामहि

विधिलिङ् ।

प्रथमपुरुष	सेयेत	सेयेयाताम्	सेयेरन्
मध्यमपुरुष	सेयेथाः	सेयेयाधाम्	सेयेध्वम्
उत्तमपुरुष	सेयेथ	सेयेथहि	सेयेमहि

आत्मनेपदी धातु ।

अय् to go, with प्रति to believe, with प्र or वा to fly, ईश् to see, with अय् to expect, with अयि to

gaze at, with अङ् to inspect, with निङ् to see, with
 परि to examine, with प्रति to expect, with प्र to see,
 with लृङ् to compare, to select, with लृङ् to look
 at, with उङ् to abandon, to neglect, ईङ् to aim at,
 एङ् to shake, एङ् to grow, to prosper, कङ् to shake,
 to tremble; कङ् to shine, अङ् to bear, to endure;
 कङ् to bathe, कङ् to be crooked, कङ् to swallow,
 कङ् to happen, कङ् with उङ् to transgress, कङ् to
 strive, to try, कङ् to yawn, कङ् to go, with कङ्
 to approach, कङ् with उङ् or वि to warm, कङ् to be
 ashamed, कङ् to protect, कङ् to hurry, कङ् to give,
 कङ् to hold, कङ् to pity, to protect, कङ् to dedicate
 oneself to, कङ् to perish, to fall down; कङ् to
 grow, to swell, कङ् to become famous, कङ् to oppress,
 कङ् to torment, कङ् to speak, with परि to explain,
 with कङ् to converse, with कङ् to censure, कङ् to
 shine, कङ् to beg, कङ् to fall down, कङ् to shine,
 कङ् to shine, कङ् to shine, कङ् to attempt, कङ् to
 begin, with कङ् to begin, कङ् to play, with कङ् or
 वि to rest, with कङ् to stop, कङ् to perceive, कङ् to
 get, to gain, कङ् to hang down, with कङ् to hold,
 with कङ् to delay, कङ् to see, with कङ् to see, कङ् to
 see, to discuss, कङ् with वि to dispute, कङ् to
 salute, कङ् to tremble, कङ् to surround, कङ् to be
 sorry, कङ् to doubt, to be afraid, कङ् with कङ् to
 hope, कङ् to learn, कङ् to praise, कङ् to bear, to

परस्मैपदी धातु ।

क्षि to waste away, कृ to cross, with अच् to descend, with आ to cross by a boat, with उच् to cross over, with दुर् to cross with difficulty, with निर् to obtain salvation, with वि to give away, with सम् to swim over, मृ to melt, to rush, नी with अनु to entreat, with अर् to take away, with अग्नि to indicate by signs, with आ to bring, with उत् to raise up, with निश् to ascertain, with परि to marry, with वि to be humble, with प्र to write, with वि and अर् to remove, with सम् and आ to assemble, with उप to invest with sacred thread, वि to swell, to increase; कृ to move, with अनु to follow, with अर् to go back, with अग्नि to attend, with उप to approach, with निश् to go forth, with प्र to proceed; कृ to flow, to go, इ with अनु to imitate, with अर् to remove, with अग्नि and आ to reason, with उन् and आ to say, to illustrate, with उप to bring to, with उप and सम् to withhold, with निर् and अर् to fast, with परि to leave, with प्र to strike, with प्रति (प्रती) to keep watch, with वि to sport, with वि and अर् to say, with वि and अर् to transact business, with सम् to kill, with उन् and आ to collect इन धातुओं के रूप उद् रूपों के लिये विशेषों में वि, कृ आ कृ के समान होंगे ।

भारमनेपदी धातु—ङी to fly, with उङ् to fly, उङ् to go, to jump; स्मि to smile. इनमें भी अन्त्य स्वर का गुण एवं भारमनेपद् की विभक्ति लगाने से चारों विभक्तियों में रूप बन जायेंगे ।

उभयपदी धातु—पृ to hold, to bear, नी to ले to nourish, to carry; धि to serve, to go; उ take away. इन धातुओं में भी गुण करके पासपद् और अन्त्य दोनों विभक्तियों के जोड़ने से रूप बन जायेंगे ।

३ युगन्तस्य लघूपधस्य च—लुट् इत्यादि चार विभक्तियों भ्यादिगणीय धातु की उपधा ० के लघु स्वर का गुण हो है । यथा, शुच् + अ + ति = शोच् + अ + ति = शोचति ।

सिघ् to go प. लट्	शुच् to mourn प. लट्
प्र. पु. सेधति सेधतः सेधन्ति	शोचति शोचतः शोचन्ति
म. पु. सेधसि सेधयः सेधथ	शोचसि शोचथः शोचथ
उ. पु. सेधामि सेधावःसेधामः	शोचामि शोचावः शोचाम

वृत् to exist आ. लट् ।

प्र. पु. वर्त्तते वर्त्तते वर्त्तन्ते
म. पु. वर्त्तसे वर्त्तथे वर्त्तध्वे
उ. पु. वर्त्तं वर्त्तावहे वर्त्तामहे

} लोट् लङ्, विधित्तिश्
मी ऐसे ही विभक्तियों
जोड़ने से सिघ्, शुच्, वृत्
के रूप बन जायेंगे ।

० मलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा— शब्द के अन्त्य वर्ण के पूर्व (अन्त्य) वर्ण की उपधा कहते हैं । यथा, शुच् = श् + उ + च्, इसमें उ उपधा है ।

† तुषादि च दिषादि गणीय धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपाय के लघु स्वर का गुण नहीं होता ।

परस्मैपदी धातु ।

उष् to burn, हृष् to plough, to draw, with अष् to draw down, with अष् to draw out, with आष् to attract, with उष् to raise, with सम् to draw together, with हष् & निष् to bring near, कृष् to cry, to lament, with आष् to censure, with उपष् to reproach, with इष् to cry aloud, वृष् to proclaim, to sound, लृष् to rob, चिष् to understand, दृष् to drop down, पुष् to nourish, स्प् to bear, to sprinkle; वृष् to rain, गष् to go, to creed. इनके रूप 'तिष् या वृष्' के समान होंगे ।

आत्मनेपदी धातु ।

शृष् to go, acquire, क्षुष् to disturb, वृष् to shine, मृष् to fry, to parch; हृष् to be glad, to rejoice; लृष् to be pleased, वृष् to grow, शुष् to shine, एष् to split open. इनके रूप 'वृष्' के समान होंगे ।

उभयपदी धातु—उष् to know के रूप वृष् और इष् दोनों के समान होंगे ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

गृष् to go गृच्छति	ध्राष् to shine ध्राश्यते
गुष् to protect गोषायति	स्रम् to roam स्रम्यति,
धूष् to heat धूषायति	स्राम्यति
विष्ट् to go विष्ठावति	व्रम् to walk व्रामति,
पण् to praise पणायति, to transact business पणते	व्राम्यति
गुष् to conceal गुह्यति-ते	लृष् to desire लृष्यति-ते
	धिष् to please धिनोति

कम् to wish कामयते
 ष्टिच् to spit ष्टीयति
 चम् with आ to sip
 आचामति
 गम् to go गच्छति
 यम् to restrain यच्छति
 पी to drink पियति
 घ्रा to smell जिघ्रति
 ध्मा to blow धमति
 स्था to stand तिष्ठति
 म्ना to think मनति
 दा to give दच्छति
 दृश् to see दृश्यति
 शद् to perish शीयते
 सद् to perish सीदति
 दश् to bite दशति
 सञ्च् to adhere सजति
 स्थञ्च् to embrace स्वजते
 रञ्च् to dye रजति-ते
 मृञ्च् to be clean मार्जति
 जम् to yawn जम्भते
 कृप् to be edequate कल्पते
 लृञ्च् to blush लज्जते
 मृञ्च् to be ready सज्जति
 क्तिन् to treat as a pati-
 ent चिकित्सति-ते

कृष्च् to kill, hurt कृमाति
 अक्ष् to pervade अक्ष्यति
 तक्ष् to cut तक्ष्यति
 मृन् to reproach मूर्नायते
 गुप् to censure जुगुप्सते
 तिञ्च् to bear तित्तिष्ठते
 चष्च् to be disgusted चाः
 धीमत्सने
 दान् to make straight
 दीदांसति-ते
 मान् to think मीमांसते
 शान् to sharpen शीशांसति-ते
 कित् to desire केतति, to
 dwell केतयति
 दान् to cut दानयति ते
 मिद् to cut मिन्दति
 अह् to go अहते ;
 पिङ्च् to roll into a ball,
 पिण्डते
 शुद् to purify, to go शुङ्ङति
 दद् to be firm ददति-दुङ्ङति
 छुच्-भ्रुच् to go छोचयति,
 भ्रुञ्चति; भ्रुञ्चयति, भ्रुञ्चति
 लुच् to pluck लोचति, लुञ्चति
 गुञ्च् to hum गोजने, गुञ्चते
 गृञ्च् to roar गर्जति, गृञ्चति

Exercise—18

1. Translate into Hindi— पिता पुत्रमवदत् । सर्वे नरा पुत्रं
 इदं नित एत । मम सेवका भवन्तं सेवताम् । प्राक्ष्यन् । धृष्ट्या पितरं
 सेवस्व । तस्य पुत्राः पटनाय विद्यालय मगरदन् । राजानः सैन्यबलेन शत्रुन्
 जयन्ति । वानराणां साहाय्येन रामो रावण मजयत् । प्राणभयेऽपि मिथ्या
 ना वद । सदा सत्यं वदेत् । पुत्रा सुसामुर्योर्महायुद्धमभवत् । कीर्तिर्परम
 न जीवति । तौ मृगस्य वासभूमि मगच्छताम् । पिता कन्यायै पुत्रलिका
 मपच्छत् । स पादाभ्या चलति । आर्वा बालकैः सह तत्र क्रीडात्रः । ययं
 प्राणाय कार्शी गच्छन् । वीराः तेषां सर्वस्व मपाहरन् । नारदः स्वर्गात्
 पृथिवी मवतरति । वीरा नृपते रादेशायात्र वर्तन्ते ।

2. Translate into Sanskrit— (a) मैं सामने भय देख रहा
 हूँ । घर जाओ और पुस्तक लाओ । वह सेना के साथ वन में
 गमता है । इस समय दोनों कहीं से आते हों ? चारों माक्षण पढ़ने के
 लिये कार्शी गये । शिव हम लोगों की रक्षा करें । आम की टाढ़ी पर
 कोयल बोलती है । राम प्रातःकाल में शय्या से उठता है । वह अपना हाथ
 पुत्र धोता है । लड़कों की मिठाई अच्छी लगती है । इन दोनों ने सभा में
 रामायण गान किया । इस वन में रातदिन सिंह व व्याघ्र गरजते रहते
 हैं । सोमरा ऋषि के पुत्र के श्राप से राजा परीक्षित मर गये । दुष्टों का
 श्राप छोड़ो, भलों के साथ रहो । इस कुत्ते ने कई भादमियों को काटा है ।
 राजा माक्षणों को घन देता है ।

(b) Boys see tigers in the forest. Sages always
 think about God. Every man and woman salute him
 respectfully. They two fell down from the top of the
 mountain. She adorns her body with ornaments. Gods
 and demons churned the sea with a mountain. The sage
 ascended the high peak of the Himalayas. In ancient
 times kings went to the forest in their old age.

3. Correct— वर्षा भवति । तेऽयं तिष्ठति । सर्वं पुत्रान् स्मरन्ति ।
 सूर्यः दिवायां प्रकाशति । अहं भवाम् कम्पते । ते मयुरं मापन्ति ।
 वासुकाम मोदकानि रोचन्ते । स घने जलस्य । त्वमोदनं पचेत् । माक्षण
 वाचन्तु । ते वासुकाम् हृषेयम् ।

त्रिधात्रि (4th Conjugation.)

१ रिश्रिभ्यः मद्-एद् इत्यादि कार्त्तृत्विकीषो वै रिश्रिभ्यः मदीयं धातु के परे य जोड़ा जाता है । मया, मद् + एद्
मि = मद्यमि ।

नृत् to dance परस्मैपदी ।

मद् ।

	एकवचन	द्विगमन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मृत्स्यमि	मृत्स्यतः	मृत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	मृत्स्यमि	मृत्स्यथः	मृत्स्यथ
उत्तम पुरुष	मृत्स्यामि	मृत्स्याथः	मृत्स्यामः

लोट् ।

	एकवचन	द्विगमन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मृत्स्यन्तु	मृत्स्यताम्	मृत्स्यन्तु
मध्यम पुरुष	मृत्स्य	मृत्स्यतम्	मृत्स्यत
उत्तम पुरुष	मृत्स्यानि	मृत्स्याथ	मृत्स्याम

लृट् ।

	एकवचन	द्विगमन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमृत्स्यत्	अमृत्स्यताम्	अमृत्स्यन्तु
मध्यम पुरुष	अमृत्स्यः	अमृत्स्यतम्	अमृत्स्यत
उत्तम पुरुष	अमृत्स्यम्	अमृत्स्याथ	अमृत्स्याम

विधिलिङ् ।

	एकवचन	द्विगमन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मृत्स्येत्	मृत्स्येताम्	मृत्स्येयुः
मध्यम पुरुष	मृत्स्येः	मृत्स्येतम्	मृत्स्येत
उत्तम पुरुष	मृत्स्येयम्	मृत्स्येथ	मृत्स्येम

परस्मैपदी धातु ।

अत्- to throw, with मि to deposit, with नि to
-expel, with अत् to abandon, with परि and अत्

sit around, with प्र to reject, with वि to divide, with सम् and नि to abandon the world, with सम् to collect, इष् to go, with श्नु to search after, ऋष् to prosper, to please; क्रुष् to be angry, कृष् to be angry, श् to become thin, सिष् to throw, छुष् to be angry, भृष् to be agitated, तृष् to be pleased, वृष् to become satisfied, शृष् to be thirsty, अष् to be afraid, ऋट् to ut, क्रुष् to impure, कृष् to be proud, कृड् to bear malice, नष् to be lost, to perish, पुष् to nourish, पुष् to open, to blow, मुष् to faint, सष् to be favourable, अष् to be angry, क्षुष् to covet, शुष् to be pure, शुष् to be dried, सिष् to embrace, सिष् to succeed, to accomplish, सिद् to have affection for, सिद् to perspire, इष् to be delighted इनके रूप चारो विभक्तियों में 'वृष्' के समान होंगे ।

विद् to be, to exist आत्मनेपदी ।

एट् ।

प्रथम पुरुष	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
मध्यम पुरुष	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उत्तम पुरुष	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लोट् ।

प्रथम पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
मध्यम पुरुष	विद्यस्य	विद्येथाम्	विद्यध्वाम्
उत्तम पुरुष	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लङ् ।

प्रथम पुरुष	अविद्यत	अविद्यताम्	अविद्यन्त
मध्यम पुरुष	अविद्यथाः	अविद्यथाम्	अविद्यन्थुः
उत्तम पुरुष	अविद्ये	अविद्याद्यहि	अविद्यामहि

विधिलिङ् ।

प्रथम पुरुष	विद्येत्	विद्येयाताम्	विद्येरन्
मध्यम पुरुष	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येथन्
उत्तम पुरुष	विद्येय	विद्येयहि	विद्येमहि

आत्मनेपदी धातु ।

अन् to breathe, to live; क्लिप् to be afflicted, वि to suffer pain, वी to fly, तप् to be powerful, त्रि to trouble, with अद् to repent, with परि or सम् to be sorrowful (see भ्वादि), दीप् to shine, दृ to suffer pain, पद् to go, to attain, with अस्मि to understand, with अनु to follow, with भ्वा to happen, with उद् to be born, with प्र to gain, with उप or प्रति to gain, with वि to suffer misfortune, with वि and उद् to discriminate, to analyze, with सम् to increase, कृप् to execute, with सम् and भ्वा to finish, पू to fill, कृप् to satisfy, वी to feel affection, बुद् to know, with स् to look for, with वि to wake, मद् to think, कृप् to know, with अनु to assent, with अस्मि to desire, with अन् to disrespect, with सम् to concur, मा to measure, कृप् to kill, बुद् to concentrate the mind, with कृप् to take, to eat, with वि to order, to join, with कृप्

to be fit, with वि to separate, with सम् to unite, युष् to fight, ली to lie on, to stick, प्र to produce, सृ to create. इनके रूप चारो विभक्तियों में 'विद्' के समान होंगे ।

उभयपदी धातु ।

बद्ध to bind, सृष् to suffer, to pardon, सृष् to wish, सक् to be able, सप् to curse, शुष् to be afflicted, इनके रूप वृत् और विद् दोनों के समान होंगे ।

ऋकारान्त धातु ।

कृत इद्रातोः । इति च—लट् इत्यादि चारो विभक्तियों में प्रदकारान्त धातु के प्रद का ईर् हो जाता है । यथा, जृ to grow old—जीर् + घ + ति = जीर्ष्यति, जीर्ष्यतः, जीर्ष्यन्ति; वृ to tear दीर्ष्यति, दीर्ष्यतः, दीर्ष्यन्ति इत्यादि ।

ओकारान्त धातु ।

१. ओतः स्यति—लट् इत्यादि चारो विभक्तियों में ओकारान्त धातु के ओ का लोप होता है । यथा, सो to destroy स्यति, स्यतः, स्यन्ति इत्यादि । छो to cut; दो to cut, शो to sharpen के रूप ऐसे ही होंगे ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

गम् to go काम्यति	गम् to walk साम्यति
तम् to endure क्षाम्यति	घृश to fall घृश्यति
ष्म् to endure क्लाम्यति, क्लामति	घृस् to fall घृस्यति
ज् to be born जायते	मद् to be mad मायति
य् to desire साम्यति	रज् to colour रज्यति-ते
वृ to be tamed दाम्यति	व्यष् to hurt विध्यति
ष् to play, to shine दीव्यति	शम् to be calm शाम्यति
	धम् to be wearied धाम्यति
	सिष् to sew सीष्यति

Exercise—17

1. Translate into Hindi: सुवाम्य सुवाम्य । सर्वं सर्वं
 वदतः वदित्वा वर्तन्ते । सुविहरी सुविहरेण नर इन्द्र इन्द्र ।
 पद्माङ्गुल्य शनं पुत्राः भ्रातावप्य । नृणाः शत्रुषु वाम्यन् वाम्यन् ।
 मयि कर्षं कल्पयि त्वम् । दिना सुवाम्य कनकलोत्रं सुवामि । सर्वं
 विश्वशब्दाः शिषेव ममदवन् । सुवाम्य कोषेऽयं श्रावेन् । इत्येते
 भयुत्पन्न ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) मुनि ने राजा को धारा दिए
 थे अपने कर्णेश्व से प्रसन्न हो गये । जाहाना में तारे चमकते हैं । सेनाओं में
 भाजा से सेना एक नगर से दूसरे नगर में जाती है । शीतों कल्पवृक्ष
 मार्चें । वानर कर्णों से मग्न हो गये हैं । पत्नी भाकरा में उड़ते हैं । मेरे स्वर
 धुम्र अथि जनमने भीर मरने रहने हैं । कोष से सुन्न उन्नत होता ।

(b) Mothers have affection for their children. He is
 grown old and his son is now young. The arrow
 the enemy pierced him in the battlefield. Owing to
 fear of punishment he became calm. You should not
 be agitated in vain. He closely embraced his son. Owing
 to the want of water lotuses dried up.

3. Correct:—स फलैः तोष्यति । कन्या मन्त्र्यन् । ताता ही
 सरस्य जलं शोषति । शालको नृत्यति । पिता कुप्यते । पुत्री उ
 तस्य हृदयं धुम्पन्तु । पुत्रं शिलाप्यते ।

चुरादि (10th Conjugation)

1. सत्यापराशरूपी गावःश्लोकतेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो
 लृट् इत्यादि-चार विभक्तियों में चुरादिगणनीय-घातु के
 (स्वार्थ-में णिच् होता है अर्थात्) 'अथ' जोड़ा जाता
 चुरादिगणनीय घातु प्रायः उभयपदी होते हैं । यथा, भक्ष् ।
 अथ ति = भक्षयति ते ।

तिङन्त प्रकरण ।

परस्मैपदी-लट्

आत्मनेपदी-लट्

१. पु. भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
२. पु. भक्षयसि	भक्षयस्यः	भक्षयथ	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयथसे
३. पु. भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

लोट्, लृट् विधिलिङ् में भी ऐसी ही विभक्तियाँ जोड़

अङ् to distribute, अघ् to commit sin, अङ्क to count, to mark, अघ् to worship, अर्ध् to earn, अर्ध् to kill, अर्ध् to worship, अम्भ् to blind, अवधोर् to hate, आन्दोर् to rock, अघ् to tell, अघ् to pierce, अङ् to sound, to count, कुपद् to cover, अङ् to send, to direct, अघद् to break, गण् to count, अङ् to sound, गर्द् to sound, गर्द् to blame, to condemn, गुण् to multiply, अङ् to string together, वच् to study, चिद् to paint, चिन्द् to think, to consider, अर्ध् to crush, अङ् to cover, अङ् to bore, अङ् to kill, अङ् to weigh, to examine, अङ् to punish, to give pain, अङ् to sound, अङ् to protect, अङ् to give pain, अङ् to worship, अङ् to fill, to fill, अङ् to publish, अङ् to adorn, अङ् to adorn, अङ् to honour, अङ् to respect, अङ् to seek for, to desire, अङ् to mix, अङ् to plant, अङ् to restrain, अङ् to adorn, to write, अङ् to form, to find out, अङ् to see, to look at, अङ् to paint, अङ् to speak, to speak, अङ् to divide, अङ् to explain, अङ् to sound, अङ् to appease, अङ् to trace out, अङ् to

मात्मनेपदी धातु— अर्णो to beg, दुष्ण to atone, तं to blame, दंस to bite, मर्णो to threaten, मण्ण to scold, मृण to seek, मत्त to notice, to desire, चो cheat. इनके कर्त्तृ इत्यादि चारों विभक्तियों में 'अण्' के स्थान में 'म' से रथ अकारान्त धातु हैं, पर इनके 'अ' का लोप ही अकार है।

२- 'अय' के पहले गुरादिगणनीय धातुओं के प्रत्यय तथा उपधा के 'अ' की वृद्धि ० होती है। यथा, वि (to gather) + अय + ति = वै + अय + ति = व्राय् + अय + ति = व्राययति। तद् + अय + ति = ताद् + अय + ति = ताडयतः, ताडयन्ति इत्यादि चारों विभक्तियों में ऐसे ही हैं।

अकारोपधधातु— धल् to wash, म्ण् to eat, च्छ् collect together, प्रश् to hold, to oppose, च्छ् shine, to fall तथा परस्मैपदी धातु— गल् to pour or to filter, मद् to please, इनके रूप 'तद्' के समान होंगे। अण्, कण् इत्यादि उपर्युक्त धातुओं की उपधा का दोष नहीं होता।

३ 'अय' के पहले धातु की उपधा के लघु स्वर (इ उ ए) का गुण होता है। यथा, चुर (to steal) + अय + ति = चौर्यति, चौरयतः, चौरयन्ति इत्यादि।

धुष् to proclaim, तिञ् to sharpen, तुल् to weigh, to examine, वृद् to tear (परस्मैपदी) इनके रूप 'वृ' के समान होंगे। पर स्पृद् to desire, शृण् to seek, हृण् pity, सुख् to make happy, एद् to become manifest इत्यादि के उपधा-लघुस्वर का गुण नहीं होता। यथा, स्पृहयति।

* अ की वृद्धि आ, इ ई की ऐ, उ ऊ की औ, और क्त् की आर् होती है।

परिवर्त्तनीय धातु ।

हृन् to celebrate	कीर्त्तयति	प्री to please	प्रीणयति
धू to shake	धूनयति	गण्-गणापयति	
अर्ष to beg	अर्षापयति	वषट्-वषट्पापयति	
हज्ज् to be ashamed	हज्जापयति		

Exercise—20

1. Translate into Hindi :—गोपालस्य पुत्री धन मर्जयतः । स तस्मै कथामिमा मकथयत् । तस्य दुष्टस्य सन्धिं वृत्तान्तं राज्ञे कथय । तौ गुरोः पादौ जलेनाक्षालयताम् । कोशे कलि मुद्रा वर्त्तन्ति इति कोशाध्यक्षः मुद्रा गणयति । नृपस्याज्ञां घोषयतु भवान् । धनार्थं वृथा न चिन्तयेत् बालकः । मिथुका राजान मर्षयन्ते । इहसि नृपतिः मन्त्रिभिर् मर्षयेत् ।

2. Translate into Sanskrit :— (a) तुम दोनों घोड़े को क्यों मारते हो । शिक्षक ने कल लड़कों को दण्ड दिया । राम ने प्रजा को पुत्र के समान बाला । साधु लोग कमी किसी को दुस्त्र नहीं देते । यह माता पिता को ईश्वर के समान पूजता है । उसने इस वर्ष कई पुस्तकें प्रकाशित कीं । गहने से लड़के का शरीर आभूषित कीजिये । मीठी बात से लोगों को सम्बलना देनी चाहिये । सब शुभाल जोर से बोलने लगे ।

(b) The mother protects her children. Tell me where your father is now. An idle man always thinks of sin. A learned man should think of success as well as of failure. One day the boy cheated his class-fellows and his teacher. He stole every thing of his.

3. Correct :—धन मर्जयामि । शत्रुन् ताडयन्ति । इदम् ब्रूयन् । सुखं मर्षयन्ति जनाः । स धनमर्षयति । भार्वा भूषणाभिः शरीरान् भूषयामः । राजास्याज्ञा घोषयन्ति मन्त्री ।

द्वितीय भाग (Group II)

इस भाग (group) की १८० विभक्तियाँ दो भागों में

विभक्त है; सबल (strong terminations) और अल (weak terminations)

सबल विभक्ति — मैं लट्-ति, ति, मि; लङ्-त्, ङ्, ङ्. लोट्-नु, आनि, आंच, आम, ये, भाषहे, आमहे; ये १३ विकृतियाँ हैं।

अबल विभक्ति—में शेष १६७ विभक्तियाँ हैं।

स्वादि, तनादि (5th, 8th Conj.)

१. स्वादिभ्यः श्चु । तनादिभ्यश्च उः—लट् इत्यादि चार विकृतियों में स्वादि और तनादि षष्ठीय धातुओं के परे अक्षर से और उ जोड़ दिये जाते हैं।

२. सबल विभक्तियों में दोनों के 'उ' का 'भो' हो जाता

३. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण न हो तो फिर के.प और म के भाने से 'उ' का विकल्प से लोप होता है। यथा, सु-सुनुयः, सुम्बः, सुनुमः, सुम्बः; तन्-तनुयः, तन् पर शक् शक्नुयः, शक्नुमः।

४. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण हो तो श्च अथवा विभक्तियों के भाने से 'उ' का 'उच्' हो जाता। यथा, शक् शक्नुयश्चि । पर सु.सुम्बश्चि ।

५. यदि नु या उ के पहले संयुक्त वर्ण न हो तो लोट् का लोप होता है। यथा, सुनु । पर शक्नुदि ।

स्वादि-सु to bathe उभयपदी

लट्-गाम्भीर्यम् ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स्वादि-सु	सुनोति	सुनुत	सुनुयन्ति
स्वादि-सु	सुनोमि	सुनुय	सुनुय
स्वादि-सु	सुनोमि	सुनुत-सुम्बः	सुनुमः-सुम्बः



आत्मनेपद ।

सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुष्ये
सुन्वै	सुनुवहे-सुन्वहे	सुनुमहे-सुन्महे

लोट्-परस्मैपद ।

सुनोतु-सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
सुनु-सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
सुनवानि	सुनवाथ	सुनवाम

आत्मनेपद ।

सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
सुनुष्य	सुन्वाथाम्	सुनुष्वम्
सुनवै	सुनवाथहै	सुनवामहै

लङ्-परस्मैपद ।

असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
असुनवम्	असुनुथ-असुन्व	असुनुम-असुन्म

आत्मनेपद ।

असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
असुनुयाः	असुन्वाथाम्	असुनुष्वम्
असुन्वि	असुनुवहि-असुन्वहि	असुनुमहि-असुन्महि

विधिलिङ्-परस्मैपद ।

सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
सुनुयाम्	सुनुयाथ	सुनुयाम

आत्मनेपद् ।

प्र. पु.	सुर्गीत	सुर्गीयाताम्	सुर्गीत्
म. पु.	सुर्गीथाः	सुर्गीयाथाम्	सुर्गीष्वद्
उ. पु.	सुर्गीय	सुर्गीवहि	सुर्गीमहि

परस्मैपदी धातु—क्षि to destroy, दु to give pain, ह्य to be satisfied, हि to send forth, to go तथा—

उभयपक्षी धातु—चि to collect, धु to shake, धृ to shake, मि to throw, to scatter, घृ- to choose, बन्ध् to bind, to tie, स्त् to spread, इनके रूप 'सु' के लाने होते हैं ।

धाप् to get परस्मैपद्

वश् to spread आत्मनेपद्

लट् ।

प्र. पु.	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	अरनुने	अरनुवाते	अरनुवते
म. पु.	आप्नोषि	आप्नुयः	आप्नुयः	अरनुषे	अरनुवाथे	अरनुवथे
उ. पु.	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	अरनुवे	अरनुवहे	अरनुवहे

लोट् ।

प्र. पु.	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	अरनुताम्	अरनुवाताम्	अरनुवताम्
म. पु.	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	अरनुष्व	अरनुवाथाम्	अरनुवष्व
उ. पु.	आप्नुवामि	आप्नुवाव	आप्नुवाम	अरनुवै	अरनुवावहे	अरनुवामि

लृट् ।

प्र. पु.	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	आरनुत	आरनुवाताम्	आरनुवन्
म. पु.	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	आरनुषाः	आरनुवाथाम्	आरनुवन्
उ. पु.	आप्नुवाम्	आप्नुव	आप्नुम	आरनुषि	आरनुवहि	आरनुमहि

विधिलिङ् ।

प्र. पु.	आप्नुयान्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	अरनुवीत	अरनुवीयाताम्	अरनुवीयुः
म. पु.	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	अरनुवीथाः	अरनुवीयाथाम्	अरनुवीयुः
उ. पु.	आप्नुवाम्	आप्नुवाव	आप्नुवाम	अरनुवीय	अरनुवीवहि	अरनुवीयुः

परस्मैपदो धातु—भाप् with वि to pervade, with उप, सम् & वि to arrive at or enter, तप् to cut to wound, शक् to be able, to endure, राप् to kill, to accomplish, साप् to finish. इनके रूप 'भाप्' के समान होंगे ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

श्रु to hear शृणोति, with प्रति or सम् to promise, with वि to be famous, धिष् to please धिनोति ।

Exercise—21

1. Translate into Hindi:—श्वश्रुकुमारस्याज्ञया सवीं राजान-मतश्नोत् । स मुञ्जफलेन द्विविपदासपि साहाय्यं साप्नोति । स दरिद्रपुरुषाणां वचनं श्रेयांसा शृणोति । परिधमस्य फलं स प्राप्नुयान् । रामस्योद्याने भाग्यकलाणि विभु ।

2. Translate into Sanskrit:— (a) वह भवने दोनों पंखों को फैलाता है । इन पंखों से सम्पुष्ट होश्री । उसने बागीचे में बहुत फल पाये । उनका धार्मिक व्याख्यान सुनना चाहिये । राजा के दण्डमय से चोर का सर्वाङ्ग कोपता है ।

(b) I gather fruits and flowers every day in the garden. He got much wealth here in the earth. I heard a great noise in the night.

3. Correct:— बालकाः तस्य वचनं न शृणोति । तौ बहुनि कलाणि प्राप्नुवः । बर्यं पुष्पाणि विचिन्ति । पत्राणि धुनन्ति ।

तनादि-नन् to spread उभयपदी ।

परस्मैपदी रुट् आत्मनेपदी

१. पु. तनोति तनुः तन्वन्ति तनुते तन्वते तन्वते

२. पु. तनोति तनुषः तनुष तनुषे तन्वाषे तनुषे

३. पु. तनोमि तनुः तनुः तनुः-तन्वाः तन्वे तनुषहे तन्वे तनुषहे-तन्वे

छोट् ।

प्र. पु. तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वन्तु
म. पु. तनु	तनुतम्	तनुत	तनुध्व	तन्वायाम्	तनुध्वन्
उ. पु. तनवानि	तनवाव	तनवाम	तनवै	तनवावद्	तनवन्

लङ् ।

प्र. पु. अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वन्
म. पु. अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वायाम्	अतनुध्वन्
उ. पु. अतनवम्	अतनुव } अतन्व }	अतनुम अतन्म	अतन्वि अतन्वद्	अतनुवद्दि अतन्वद्दि	अतनुन् अतन्न्

विधिलिङ् ।

प्र. पु. तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीत
म. पु. तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	तन्वीथाः	तन्वीयायाम्	तन्वीध्वन्
उ. पु. तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	तन्वीय	तन्वीवद्दि	तन्वीवन्

कृ to do उभयपदौ ।

१. सपञ्च विभक्तियों के आने से 'कृ' का 'कर' और अष्ट विभक्तियों के आने से 'कुरु' हो जाता है ।

२. विभक्ति के क, म, य पर रहने से कृ के परस्मैपद उभयपद हो जाता है ।

परस्मैपद

लृट्

आत्मनेपद

प्र. पु. करोति	कुरुतः	कुरुन्ति	कुरुते	कुरुमि	कुरुमि
म. पु. करोषि	कुरुष्व	कुरुष्व	कुरुष्वे	कुरुष्वि	कुरुष्वे
उ. पु. केलि	कुरुवः	कुरुवः	कुरुवै	कुरुवद्दि	कुरुवै



लोड् ।

करोतु कुरुताम् कुर्वन्तु	कुरुताम् कुरुवाताम् कुरुवन्ताम्
कुरु कुरुताम् कुरुत	कुरुष्व कुरुव्याथाम् कुरुष्वाम्
करवाणि करवाव करवाम	करवै करवावहे करवामहे

लोट् ।

अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन्	अकुरुत अकुरुवाताम् अकुर्वन्त
अकरोः अकुरुताम् अकुरुत	अकुरुथाः अकुरुव्याथाम् अकुरुष्वाम्
अकरवाम् अकुर्वन् अकुर्वन्	अकुर्वन् अकुर्वन् अकुर्वन्

विधिलिङ् ।

कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः	कुर्यात् कुर्याताम् कुर्यान्
कुर्याः कुर्यात् कुर्यात्	कुर्यायाः कुर्यायाथाम् कुर्यायाम्
कुर्यामि कुर्याव कुर्यामि	कुर्याय कुर्यावहि कुर्यामहि

with अति to exceed, with अधि to overcome, old right, with अनु to copy, with अप to wrong, jure, with आ to call, with उप to be friend, तिर् & आ to expel, with पर & आ to act well, प्र to begin, with प्रति to counteract, with वि ter, with वि & आ to explain, with सन् to n, with परि to polish.

Exercise—22

Translate into Hindi—अहमेतत्कार्यं मकरवम् । स स्वबाहु-
भ्रान् नृपान् अधिकरोति । महता माचरणं सर्वेऽनुकुर्वन्ति ।
ते स्वकीर्तिं तनोति । त्यज दुर्जनसंसर्गं कुरु साधुमार्गाम् ।
उत्तरे यत्नं कुर्यात् ।

Translate into Sanskrit—(a) राम अपना काम करता
राम नहीं करता । उसने तेरी भलाई की । दूसरों की बुराई
की चाहिये । यदि लोग सबों की कीर्ति फैलावे हैं । सदा

मित्र की भलाई करो । युधिष्ठिर ने राजमूय यज्ञ किया ।

(b) Do your duty. You should do this work by all means. The goat imitates the action of the goat. Ram spread his fame in the whole world.

3. Correct:—ते एतदकार्यं करोति । घर्मं कुर्यात् स्वम् । वा पूजा करोमि । तौ गानं कुर्वन्ति । भावां तस्य कीर्तिं अनुवाच ।

क्यादि (9th Conj.)

१ क्यादिभ्यः आ—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में क्यादि गणनीय घातुर्भों के परे सबल विभक्ति में ना, स्वरादि अव्यय विभक्ति में न् और व्यञ्जनादि अव्यय विभक्ति में नी जोड़ दिया जाता है ।

२ व्यञ्जानन्त घातुर्भों में लोट् के 'दि' का 'भान' होता है और ना का लोप होता है । यथा, मुप्-मुपाण । भश्-भशात्, पुप्-पुपाण इत्यादि ।

की to buy उभयपद्री

परस्मैपद्री

लट्

आत्मनेपद्री

प्र. पु. कीणाति	कीणोतः	कीणन्ति	कीणीते	कीणाते	कीणते
म. पु. कीणासि	कीणीथः	कीणीथ	कीणीथे	कीणाथे	कीणीथे
उ. पु. कीणामि	कीणीवः	कीणीमः	कीणीवो	कीणीवहे	कीणीमहे

लोट् ।

प्र. पु. कीणान्	कीणीणाम्	कीणन्तु	कीणीणाम्	कीणाणाम्	कीणन्तु
म. पु. कीणांसि	कीणीणाम्	कीणीण	कीणीण्य	कीणाणाम्	कीणीण्य
उ. पु. कीणामि	कीणीव	कीणीम	कीणी	कीणावहे	कीणीमहे

लृट् ।

प्र. पु. अकीणान्	अकीणीणाम्	अकीणन्	अकीणीण	अकीणाणाम्	अकीणन्तु
म. पु. अकीणांसि	अकीणीणाम्	अकीणीण	अकीणीण्य	अकीणाणाम्	अकीणीण्य
उ. पु. अकीणामि	अकीणीव	अकीणीम	अकीणी	अकीणावहे	अकीणीमहे



विधिलिङ् ।

क्रीणीयात् क्रीणीयाताम् क्रीणीयुः क्रीणीत क्रीणीयाताम् क्रीणीरन्
 क्रीणीयाः क्रीणीयातम् क्रीणीयात क्रीणीयाः क्रीणीयायाम् क्रीणीष्वम्
 क्रीणीयाम् क्रीणीयाव क्रीणीयाम क्रीणीय क्रीणीवद्दि क्रीणीमद्दि

परस्मैपदी धातु—अश् to eat, ह्रिश् to torment, क्षुम् to disturb, पुष् to nourish, मुष् to steal, मृद् to press, to kill; आत्मनेपदी धातु—ष्टृ to cherish; उभयपदी धातु—प्री to take delight in, मी to kill इनके रूप उपर्युक्त नियमानुसार होंगे, पर क्षुम् में ना के न् का ण् नहीं होता । यथा, क्षुम्नाति ।

परिवर्त्तनीय धातु ।

३. लट् इत्यादि चार विभक्तियों में प्रह् का गृह्, उया to become old का जि और ज्ञा का जा होता है । प्रह् to take गृह्णाति, गृह्णीते, with अनु to favour, with नि to punish, with परि to lay hold of, with प्रति to accept, with वि to quarrel, with सम् to collect, ज्ञा to know जानाति, जानीते, with अप to conceal, with अनु to acknowledge, with अब् to despise, with परि to ascertain, with प्रति and अभि to recognise, with सम् to recollect.

४. लट् इत्यादि चार विभक्तियों में परस्मैपदी—री to go, ली to melt, वली to select, to go, गृह् to go, कृ to kill, शृ to speak, जृ to wear out, नृ to carry, पृ to fill, भृ to fry, to support, मृ to kill, शृ to kill, तथा उभयपदी—षू to shake, पू to purify, छू to cut off, चू to choose, स्तृ to spread, इन धातुओं के दीर्घ स्वर का

हम्य हो जाता है। मया, विनाति, निनाति । पर लक्षणे
 मृ - सी to kill, सी to bear, to protect. सी to
 choose के दीर्घ स्वर का विकल्प ही हम्य होता है। वय-
 धीनाति, धिनाति ।

५. मद् इत्यादि गाह विभक्तियों में उपधा नकार का प्रयोग
 होता है। मया, मय् to tie मय्याति, मय् to choose
 मय्याति, मय् to land मय्याति, मय् with मनु to be
 attached to, with मय् to connect, with नि to to
 unite, with मा to loosen.

Exercise—23

1. Translate into Hindi:—अथ प्रातरि पञ्च पुस्तान् अर्जनम् ।
 कृपया पुस्तकमिदं क्षणं गृह्णाण । स इदं रथ्या तुगायां भारं बध्नाति ।
 देवामुता मन्त्रेण समुद्रं समप्लव् । मीप्यः क्षणेनैव पुत्रे अयुधानां दंत्यां
 मस्तकं भस्मुनात् ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) वह लकड़े के लिये पुस्तक
 खरीदता है। चोरों ने उनका सर्वस्व अपहरण कर लिया। राजा ने
 आनन्दपूर्वक प्रतीकार का उपहार स्वीकार किया। तुम उसकी कथा जानो
 हो। उसने अपने आचरण से अपना वंश पवित्र किया। दुर्योधन ने उरु
 की गति रोक दी।

(b) He fills the jar with water. Let them tie the burden-
 daughter of Virat, for his son. He purifies his nation by his
 good actions.

3. Correct:—वयं पुस्तकं गृह्णामि । सी इदं ध्यानाति । स अलाशयं
 मय्याति । पुत्रं पुण्यादि । भार्या पुस्तकं कीनाथः ।

रुधादि, अदादि, हादि ।

१. सन्धि के विशेष नियम ।

(१) दादेर्धातोर्धः—अन्तःस्थ तथा ङ् झ् ण् न् म् को अन्य व्यञ्जन वर्ण परे रहने से दकारादि धातु के हकार पकार होता है ।

(२) एकाव्ययान् भवन्तस्य स्त्रोः—पदान्त में या स्त्री के परे होने से दह्, घुष् इत्यादि धातु के आदिस्थित स्त्री के स्थान में चतुर्थवर्ण होता है । यथा, दुह् + सि = घोसि ।

बाहु इमुह्मुञ्जिहाम् हो कः । दो डे लोपः । दूलोपे पूर्वस्थ दीर्घः । त थ ध परे रहने से हकार सहित दोनों का ग् घ होता है । हकार का लोप होता है और त थ ध का ढ हो जात लुप्त हकार के पूर्वस्थित हस्य स्वर का दीर्घ होता है । मुद्-मुग्धः, मूढः । गुह् + तः = गूढः; लिह् + तः = लीढः ।

(३) होकः—अन्तःस्थ तथा ङ् झ् ण् न् म् को छोड़ व्यञ्जन वर्ण परे रहने से धातु के अन्तस्थित 'ह' का ङ् हो जाता है । यदि धातु के प्रारम्भ में 'इ' हो तो इस अवस्था में 'ह' का घ् हो जाता है ।

(४) किसी वर्ण के चतुर्थ वर्ण से परे विभक्ति के अन्तस्थित स्त्री और घ् का घ् हो जाता है । (६ वाँ देखो)

(५) स् परे रहने से ह् या प् का क् हो जाता है ।

(६) यदि धातु में एकाधिक स्वर हों तो स्वरादि विभक्ति के आने से धातु के अन्तस्थित हस्य या दस्य (जिसके पहले कोई संयुक्त वर्ण न हो) का घ् हो जाता है । यथा, दीर्घा + ईत = दीर्घीत ।

(७) लृत् भाने से धातु के अन्तस्थित स्त्री का

घर्ण के बीच में न जोड़ दिया जाता है और अबल विभक्ति के आने पर न जोड़ा जाता है । यथा, रुध्-रुणद्धि, रुध्वः ।

२. घातुस्थित सानुनासिक घर्ण का लोप होता है । यथा, अङ्ग-अनङ्गिम् ।

३. वृणद् इम्—व्यङ्जनादि सबल विभक्ति के आने से वृद्ध घातु में उपयुक्त न का ने हो जाता है ।

N. B. यहाँ सन्धि के विशेष नियम के ३, ४, ९, १०, ११, पर विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

रुध् to obstruct उभयपदी ।

परस्मैपदी ।

लट् ।

आत्मनेपदी ।

म. पु. रुणद्धि रुद्धः (रुध्वः) रुध्वन्ति रुध्वे रुध्वान्ते रुध्वान्
म. पु. रुणद्धि रुध्वः रुध्व रुध्वसे रुध्वधे रुध्वान्ते रुध्वान्ते
उ. पु. रुणद्धि रुध्वः रुध्वः रुध्वः रुध्वे रुध्वधे रुध्वान्ते रुध्वान्ते

लोट् ।

म. पु. रुणद्धि रुध्वाम् रुध्वन्तु रुध्वाम् रुध्वान्ताम् रुध्वानाम्
म. पु. रुध्वि रुध्वम् रुध्व रुध्वस्व रुध्वायाम् रुध्वानाम्
उ. पु. रुणद्धि रुध्वान् रुध्वान् रुध्वान् रुध्वै रुध्वान्ताम् रुध्वानाम्

लृट् ।

म. पु. अरुणत् अरुणाम् अरुणन् अरुणन्त अरुणन्ताम् अरुणन्तम्
म. पु. अरुणत् अरुणम् अरुणन् अरुणन्त अरुणन्ताम् अरुणन्तम्
उ. पु. अरुणत् अरुणन् अरुणन् अरुणन्त अरुणन्तम् अरुणन्तम्

विधिलिट् ।

उ. रुण्वात् रुण्वाताम् रुण्वुः रुण्वीत् रुण्वीपाताम् रुण्वीन्
उ. रुण्वाः रुण्वाताम् रुण्वात् रुण्वीयाः रुण्वीयायाम् रुण्वीयम्
उ. रुण्वाम् रुण्वात् रुण्वाम् रुण्वीव रुण्वीवद् रुण्वीमद्

रघ् with भय to guard, with उघ् to blockade
with प्रति or वि to oppose, with सम् and नि to
shut up.

भुज् to protect परस्मैपदी लट् भुज् to eat आत्मनेपदी
प्र. पु. भुजन्ति मुहन्तः भुजन्ति मुहन्ते मुहन्ते - मुहन्ते
म. पु. भुजन्ति मुहन्तः मुहन्तः मुहन्ते मुहन्ते मुहन्ते
उ. पु. भुजन्ति मुहन्तः मुहन्तः मुहन्ते मुहन्ते मुहन्ते

हिस् to kill प.

लट्

वृह् to kill प.

प्र. पु. हिनस्ति हिस्तः हिनन्ति वृणीति वृषटः वृंस्ति

म. पु. हिनस्ति हिस्तः हिस्तः वृणेशि वृषः वृषः

उ. पु. हिनस्ति हिस्तः हिस्तः वृणेशि वृषः वृषः

परस्मैपदी धातु ।

अञ् to anoint अनक्ति

धिज् to shake, to fear

उन्हु to wet उनक्ति

विनक्ति

पिप् to grind, to hurt

शृज् to avoid, to shun

पिनष्टि

शृणक्ति

भञ् to disappoint भनक्ति

शिष् to distinguish शिनष्टि

आत्मनेपदी धातु ।

इन्ध् to kindle इन्धे

विद् to know विन्ते

खिद् to suffer pain खिन्धे

उभयपदी धातु ।

धुद् to pound धुणन्ति, धुन्ते

युज् to unite युनक्ति, युह्क

छिद् to cut छिनन्ति, छिन्ते

रिच् to empty रिनक्ति,

वृद् to split वृणन्ति, वृन्ते

रिह्क

मिद् to separate मिनन्ति,

पिच् to separate पिनक्ति,

मिन्ते

पिह्क



Exercise—24.

1. Translate into Hindi:—मेवाः सूर्यस्य किरणानि रण्डन्ति । मन्त्रानि भुञ्जन्ते । शस्त्राण्यपि आरमानं न विन्दन्ति । भट्टं कानि भयुञ्जि । भरिषन् संतारे लोका बहुनि दुःखानि मुञ्चन्ति । जीवान् हिंसन्ति ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) सायु लोग राय् को भी मने । देवताओं ने स्वर्ग का द्वार बन्द कर दिया । छोटे जीवों ने मारना नहीं चाहिये । घर का दरवाजा बन्द कर लो । बहू । शासकों को काट ले । बड़े हजारों दुःख भोगने हैं ।

(b) They two fear from the serpent. You should kill an animal. Let Ram kill Rawan, the king of demonyam broke the bow of Shiva with a great ease. Many people die here today.

3. Correct:—स द्वारं रण्डति । ती राय्न् हिंसतः । वय मन्त्राण्यमहे । इण्डे भञ्जेन् । ते गात्राणि विन्दन्ति ।

भदादि (2nd Conj.)

१. भदादि गणीय धातुओं के परे विभक्तियाँ सीधे होती जाती हैं ।

अद् to eat परस्मैपदी ।

	लट्	लोट्			
३. पु.	अति भवाः अदन्ति	अधु	अणान्	अदन्तु	
५. पु.	अति अरुषः अरुष	अदि	अणम्	अरुष	
६. पु.	अति अदः अद	अदन्ति	अदन्	अदन्तु	

१. भदः ल्योटम्—अद् के परे लट् लु और : के स्थान पर से अन् और अः हो जाता है ।

लट्

विधिलिट्

प्र. पु.	आणन्	आणाम्	आणन्	आणन्	आणन्	आणन्
म. पु.	आणः	आणन्	आण	आण	आणन्	आण
उ. पु.	आणम्	आण	आण	आणम्	आण	आण

आम् to sit आत्मनेपदी।

इ परे रहने से आम् के ल् का लोप होता है।

लट्

लोट्

प्र. पु.	आप्ते	आपाने	आपाने	आपानम्	आपानाम्	आपान
म. पु.	आप्ते	आपापे	आप्ते	आपन्व	आपापाम्	आपान
उ. पु.	आपे	आपपे	आपपे	आपे	आपापे	आपाने

लट्

विधिलिट्

प्र. पु.	आस्त	आस्ताम्	आस्त	आसीत्	आसीयानाम्	आसीत्
म. पु.	आस्ताः	आस्तापाम्	आप्यम्	आसीथाः	आसीयापाम्	आसीथ
उ. पु.	आसि	आस्वहि	आस्महि	आसीथ	आसीवहि	आसीथी

षस् to dress with आ के रूप 'आस्' के समान होते

आकारान्त धातु

४. आकारान्त धातु के परे लट् अन् का विकल्प से ऊँ होता है। उस् होने से आकार का लोप होता है।

या to go परस्मैपदी

लट्

लोट्

प्र. पु.	याति	यातः	यान्ति	यानु	याताम्	यानु
म. पु.	यासि	याथः	याथ	याहि	यातम्	यात
उ. पु.	यामि	यावः	यामः	यानि	याव	याम



लङ्

विधिलिङ्

प्र. पु. अयात् अयाताम् अयुः अयान्	यायात्	यायाताम्	यायुः
म. पु. अयाः अयातम् अयात	यायाः	यायातम्	यायात
उ. पु. अयाम् अयाव अयाम	यायाम्	यायाव	यायाम

या with अनु to follow, with अभि to approach, with आ to come, with उप to yield, with निर् to go out, with प्रति to go towards, with सम् and आ to arrive.

परस्मैपदी धातु—क्या to tell, दा to cut, द्रा to fly, पा to protect, मा to fill, मा to shine, मा to measure, रा to give, ला to give or take, वा to blow, व्सा to eat, धा to cook, स्ना to bathe इनके रूप 'या' के समान होंगे ।

k पुगन्तस्य लृप्यस्य च—सबल विभक्ति आने से अदादि-गणीय धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघुस्वर का गुण होता है ।

द्विप्, to hate, to envy परस्मैपदी ।

लङ्

लोट् ।

प्र. पु. द्वेषि द्विष्ट द्विषन्ति द्वेषु द्विषाम् द्विषन्तु
म. पु. द्वेषि द्विष्ट द्विष्ट द्विष्टि द्विष्म द्विष्ट
उ. पु. द्वेषि द्विष्वः द्विष्वः द्वेषामि द्वेषाव द्वेषाम

६. द्विप् के परे लङ् के भन् का विकल्प से उस् होता है ।

लङ् ।

विधिलिङ् ।

प्र. पु. अद्वेष्ट-ङ् अद्विष्टाम् अद्विष्टुः अद्विषन्	} द्विष्यात् द्विष्याताम् द्विष्युः
म. पु. अद्वेष्ट-ङ् अद्विष्टम् अद्विष्ट अद्विष्ट	
उ. पु. अद्वेषम् अद्विष्व अद्विष्व	

५. रुदादिभ्यः सार्वधातुके—लट्, लोट्, लङ् के व्यञ्जनविभक्तियों के परे रहने से रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, अन्, अन् धातुओं के परे 'इ' का आगम होता है ।

रुद् to cry परस्मैपदी ।

लट् ।

लोट् ।

प्र. पु.	रोदति	रुदितः	रुदन्ति	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्
म. पु.	रोदसि	रुदिस्यः	रुदिस्य	रुदिसि	रुदितम्	रुदिस
उ. पु.	रोदमि	रुदिवः	रुदिमः	रोदानि	रोदान	रोदन्

N. B. रुद् इत्यादि धातुओं के लङ् के स् के स्थान में इन् और अत् तथा (ः) के स्थान में इः और अः होता है ।

लङ् ।

विधिलिङ् ।

प्र. पु.	अरोशीत् अरोदत्	}	अरुदिताम्	अरुदन्	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुदन्
म. पु.	अरोशीः अरोदः		अरुदितम्	अरुदित	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्या

उ. पु. अरोदम् अरुदिव अरुदिम रुद्याम् रुद्याव रुदन्
मन् to breathe, स्वप् to sleep, श्वस् to breath
इनके रूप घेमे ही होते ।

८ जक्षिस्वार्थः षट्—लट् इत्यादि चार विभक्तियों में ज जाण्, दरिद्रा, चकास्, शास्, इन धातुओं के परे भन्ति, भ और भन् का प्रथम से भति, भतु और उत् हो जाता है ।

जक्ष् to eat परस्मैपदी ।

लट् ।

लोट् ।

प्र. पु.	जक्षति	जक्षितः	जक्षन्ति	जक्षितु	जक्षिताम्	जक्षन्
म. पु.	जक्षसि	जक्षिस्यः	जक्षिस्य	जक्षसि	जक्षितम्	जक्षस
उ. पु.	जक्षमि	जक्षिवः	जक्षिमः	जक्षानि	जक्षान	जक्षन्



शकास् to shine परस्मैपदी ।

	लट्		लोट्		
शकाति	शकाता	शकाति	शकान्तु	शकातन्	शकन्तु
शकाति	शकाता	शकात्	शकादिति	शकात्	शकन्तु
शकाति	शकाताः	शकातः	शकाति	शकाता	शकन्तु
	लृट्		विधिलिङ्		
अशकात्	अशकाताम्	अशकान्तुः	अशकात्	अशकातन्	अशकन्तु
अशकाः	अशकाताम्	अशकात्	अशकात्	अशकात्	अशकन्तु
अशकात्	अशकात्	अशकात्	अशकात्	अशकात्	अशकन्तु

शास् to govern, to teach परस्मैपदी ।

११. साम इत् लोः । शा ही—अपल भ्यत्रनादि विभक्ति माने से शास् का शिप् और हि माने से शा हो जाता है ।
 चकास् घातु ये लो ।

	लट्		लोट्		
म. पु. शासति	शासति	शासति	शासन्तु	शासन्तु	शासन्तु
म. पु. शासि	शासि	शासि	शासि	शासि	शासि
उ. पु. शासि	शासि	शासि	शासति	शासाव	शासन्तु
	लृट्		विधिलिङ्		
म. पु. अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
म. पु. अशात्	अशाः	अशिष्टम्	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात्
उ. पु. अशासम्	अशिष्व	अशिष्व	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्यान्

शी to sleep आत्मनेपदी ।

१२. शीः सार्वधातुके शुभः । शीशोर्— लृट् इत्यादि चारी विभक्तियों में शी का शी तथा अते, आनाम् और मत में शेर हो जाता है ।



1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

इ to go परस्मैपदी।

१४ इणी यन्—अन्ति और अन्तु में इ का य् हो जाता है।

लट्

लोट्

प्र. पु. एति	इतः	यन्ति	एतु	एताम्	रि
म. पु. एषि	इथः	इथ	इदि	इतम्	रि
उ. पु. एमि	इवः	इमः	अयानि	अवाव	रि

लङ्

विधिलिङ्

प्र. पु. ऐन्	ऐताम्	आयत्	इयात्	इयाताम्	रि
म. पु. ऐः	ऐतम्	ऐत्	इयाः	इयातम्	रि
उ. पु. आयम्	ऐव	ऐम	इयाम्	इयाव	रि

इ with उत् to rise or ascend, with अग्नि to prosper, with अनु to go after, with अग्नि to obtain, with अप to go away; to perish, with अग्नि and उप to arrive, with उप to receive, with प्र to trust, with वि to expend, with सम् and उ to obtain.

इ (with अधि) to study आत्मनेपदी।

लट्

लोट्

अधीने	अधीयाने	अधीयने	अधीनाम्	अधीयानाम्	अधीयन्त
अधीये	अधीयाथे	अधीयन्ते	अधीय्व	अधीयाथाम्	अधीयन्व
अधीये	अधीयधे	अधीयन्ते	अधीय्व	अधीयाथाम्	अधीयन्व

१५. लङ् की स्वरदि विभक्ति में ऐकार के परे य् होता है।

लङ्

विघिलिङ्

प्र. पु. भङ्न्	भङ्ताम्	भङ्न्	हन्वात्	हन्वाताम्	हन्व
म. पु. भङ्न्	भङ्ताम्	भङ्त	हन्वाः	हन्वाताम्	हन्वत
उ. पु. भङ्न्	भङ्न्व	भङ्न्म	हन्वाम्	हन्वाव	हन्वन्

हन् with अग्नि to sound a musical instrument
with नि or परि to destroy entirely, with वि and
आ to obstruct.

विद् to know परस्मैपदी ।

लट् ।

वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	वेद	विदतुः	विदुः
वेरिष	वित्थः	वित्थ	वेथ	विदथुः	विथ
वेद्मि	विद्मः	विद्मः	विद्	विद्	विद्

लोट्

प्र. पु. वेत्	वित्ताम्	विदन्तु	विदाङ्करोतु	विदाङ्कुरताम्	विदाङ्कुरन्तु
म. पु. विद्मि	वित्तम्	वित्त	विदाङ्कुरु	विदाङ्कुरुम	विदाङ्कुरुन्
उ. पु. वेदानि	वेदाथ	वेदाम	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवन्
प्र. पु. भवेन् द्	भवित्ताम्	भविदुः भविदन्	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म. पु. भवेः भवेन् द्	भवित्तम्	भवित्त			
उ. पु. भवेदम्	भविद्म	भविद्य	विद्याम्	विद्याव	विद्यन्

उकारान्त घातु ।

१७- इतोऽङिर्दुकि इङि—व्यञ्जनानि सपल विभक्तियों में
घातु के अन्त्य उ की वृद्धि होती है ।



जैसे ही मोंड, मडू और विधिलिङ् में विभक्तियों को दो। मू ३० शतक और ४० शतक। इनमें भी देवे के परम्परेक विभक्तियाँ जोड़ दी।

घृ to speak उभयवचनी ।

१। घृ व डेड् - धृज्जतादि सवय विभक्तियों के प्राते से घृ घातु फी ई का भागम होता है ।

	परमैवरी	लृट्	आरमनेवरी		
मधीनि भाइ	मृनः-भाइनुः	मृवणित् भाहुः	मृने	मृवनि	मृनी
मधीनि भावय	मृपः-भाइनुः	मृप	मृपे	मृवये	मृपी
मधीमि	मृवः	मृम	मृवे	मृवडे	मृमी

लोट् ।

प्र. पु. मवने	मताम्	म्वान्तु	मताम्	मृवाताम्	मृवान्
म. पु. महि	मृतम्	मृत	मृप्व	मृवायाम्	मृव्वर
उ. पु. मवाणि	मवाय	मवाम	मवे	मृवावहे	मृवमै

लृङ् ।

प्र. पु. अग्रवीत्	अग्रताम्	अग्रवन्	अग्रत	अग्रवाताम्	अग्रवन्
म. पु. अग्रवीः	अग्रतम्	अग्रत	अग्रपाः	अग्रवायाम्	अग्रवम
उ. पु. अग्रवम्	अग्रव	अग्रम	अग्रवि	अग्रवहि	अग्रमदि

विधिलिङ् ।

प्र. पु. मृयाव	मृयाताम्	मृयुः	मृवीत्	मृवीयाताम्	मृवीवन्
म. पु. मृयाः	मृयातम्	मृयात	मृवीयाः	मृवीयायाम्	मृवीवम
उ. पु. मृयाम्	मृयाव	मृयाम	मृवीय	मृवीवहि	मृवीमदि



दुह् to milk उभयपदी ।

परस्मैपदी लट् भाटमनेपदी

पु. दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	दुग्धे	दुदाते	दुक्ते
पु. धोग्धि	दुग्धः	दुग्ध	धुक्ते	दुदाधे	धुग्ध्वे
पु. दोग्धि	दुग्धः	दुग्मः	दुहै	दुदहै	दुग्महै

लोट् ।

पु. दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	दुग्धाम्	दुदाताम्	दुक्ताम्
पु. धुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	धुक्व	दुदाधाम्	धुग्ध्वम्
पु. दोग्धानि	दुग्धानि	दुग्धाम	दुहै	दुदाधवहै	दुग्धामहै

लङ् ।

पु. अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्	अदुग्ध	अदुदाताम्	अदुक्ते
पु. अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध	अदुग्धाः	अदुदाधाम्	अधुग्ध्वम्
पु. अदोहम्	अदुह	अदुह्य	अदुहि	अदुह्यहि	अदुह्यहि

विधिलिङ् ।

पु. दुग्धात्	दुग्धाताम्	दुग्धः	दुग्धीत	दुग्हीयाताम्	दुग्हीरन्
पु. दुग्धाः	दुग्धातम्	दुग्धात्	दुग्हीयाः	दुग्हीयापाम्	दुग्हीष्वम्
पु. दुग्धाम्	दुग्धाव	दुग्धाम	दुग्हीय	दुग्हीयहि	दुग्हीमहि

दिह् to anoint, to polute के देग्धि, दिग्धे इत्यादि
वेसे ही होंगे ।

लिह् to lick, to taste उभयपदी ।

परस्मैपदी लट् भाटमनेपदी

प्र. पु. लेधि	लीङः	लिहन्ति	लीङे	लिराने
म. पु. लेधि	लीङः	लीङ	लिङी	
उ. पु. लेधि	लिङः	लिङः		

लोट् ।

प्र. पु.	लेटु	लीडाम्	लिङ्न्तु	लीटाम्	लिङ्गताम्	लिङ्
म. पु.	लीडि	लीडम्	लीड	लिङ्	लिङ्गयाम्	लीङ्
उ. पु.	लेडानि	लेडाव	लेडाम	ली	लेडावहि	लेङ्

लङ् ।

प्र. पु.	अलेट्-ङ्	अलीडाम्	अलोङ्न्	अलीड	अलिङ्गताम्	अलिङ्
म. पु.	अलेट्-ङ्	अलीडम्	अलीड	अलोङ्	अलिङ्गयाम्	अलोङ्
उ. पु.	अलेङ्	अलीङ्	अलीङ्	अलिङ्	अलिङ्गहि	अलिङ्

विधिलिङ् ।

प्र. पु.	लिङ्ग्यात्	लिङ्ग्याताम्	लिङ्ग्युः	लिङ्गीत	लिङ्गीयाताम्	लिङ्गीत
म. पु.	लिङ्गाः	लिङ्गातम्	लिङ्गात्	लिङ्गीयाः	लिङ्गीयायाम्	लिङ्गीयात्
उ. पु.	लिङ्ग्याम्	लिङ्गाव	लिङ्ग्याम्	लिङ्गीय	लिङ्गीयहि	लिङ्गीय

ईश् to command, to rule आत्मनेपदी ।

२०. ईशः से । इङ्जनोच्चं च—लट्, लोट्, लङ् के लु भाँट धादि वाले प्रत्यय परे होने से 'ईश्' धातु को इ का भागम होता है

	लट्			लोट्		
म. पु.	ईष्टे	ईशाते	ईशने	ईष्टाम्	ईशाताम्	ईशन्
म. पु.	ईशिये	ईशाथे	ईशिये	ईशियम्	ईशाथाम्	ईशिय
उ. पु.	ईशे	ईशथे	ईशथे	ईशे	ईशथहि	ईशथे
	लङ्			विधिलिङ्		
म. पु.	ऐष्ट	ऐशाताम्	ऐशत	ईशीत	ईशीयाताम्	ईशीत
म. पु.	ऐश्याः	ऐशाथाम्	ऐशियाम्	ईशीयाः	ईशीयायाम्	ईशीयात्
उ. पु.	ऐशित	ऐशथहि	ऐशमहि	ईशीय	ईशीयहि	ईशीय

ईश् to praise ईष्ट, ईशाते, ईशने इत्यादि ईश् के लु भाँट

वश् to wish परस्मैपदी ।

२१. अव्यय विभक्तियों में वश् के व का ड होता है ।

लट्

लोट्

म. पु. वष्टि	उष्ट	उशन्ति	वष्ट	उष्टाम्	उशन्तु
म. पु. वक्षि	उष्ट	उष्ट	उष्टि	उष्टम्	उष्ट
उ. पु. वरिम	उरवः	उरम	वशानि	वशाव	वशाम

लङ्

विधिलिङ्

म. पु. भवद्	भौष्टाम्	भौशन्	उरपात्	उरपाताम्	उरयुः
म. पु. भवद्	भौष्टम्	भौष्ट	उरवा	उरपातम्	उरयान
उ. पु. भवशम्	भौरव	भौरम	उरयाम्	उरवाव	उरयाम

वक्ष् to speak आत्मनेपदी ।

२२. स्त्रीः संयोगाद्योक्ते व—त्, ष, ध, ल परे रहने से वक्ष् घातु का वप् होता है ।

लट्

लोट्

म. पु. वष्टे	वक्षते	वक्षते	वष्टाम्	वक्षताम्	वक्षताम्
म. पु. वक्षे	वक्षथे	वक्षथे	वष्टव	वक्षथाम्	वक्षथम्
उ. पु. वक्षे	वक्षथे	वक्षथे	वक्षे	वक्षथथे	वक्षथथे

लङ्

विधिलिङ्

म. पु. अवष्ट	अवक्षताम्	अवक्षत	वक्षीत	वक्षीयाताम्	वक्षीरन्
म. पु. अवष्टाः	अवक्षयाम्	अवक्षयम्	वक्षीषा	वक्षीषायाम्	वक्षीष्यम्
उ. पु. अवक्षि	अवक्षथि	अवक्षथि	वक्षीय	वक्षीयथि	वक्षीमहि

अतिरिक्त ।

वी—10 ङो वेति, वीतः, विपन्ति; भवेन्, भवीताम्, भविष्यन् ।

१२—10 ङो व्ते, व्रताते, व्रते; वेने, वेराताम्, वेरत ।

वश्—10 ङो वष्टे, वक्षते, वक्षते; अवष्ट, अवक्षताम् ।

निज्—to purify निङ्क्ते, निङ्जाते, निङ्जते; मनिङ्क्ते, मनिङ्जाते, मनिङ्जते; निङ्जीते ।

ऊर्ण्—to cover त् और : को छोड़ अन्य सबल व्यञ्जनादि विभक्तियों में उ की विकल्प से वृद्धि होती है। वृणोति, ऊर्णोति ।

मृज्—to cleanse के ऋ का सबल विभक्तियों में मञ्ज और मञ्जल श्वादि विभक्तियों में विकल्प से वृद्धि होती है। यथा, मार्ष्टि, मृष्टः, मार्जन्ति-मृजन्ति, ममार्ष्टि-ई; मृज्यात् ।

वष्—to speak का छट् के प्रथमपुरुष-बहुवचन में वृ नहीं होता। यथा; वक्षि, वक्षि, वक्षि, वक्षत, वक्षि, वक्षन्ति, वक्षन्तु; उच्यन्ते ।

हृ—to take away हृते, हृवाते, हृयते, अहृत् ।

Exercise— 25

1. Translate into Hindi :—अथ बहुव्री लोका राशौ आप्तवन्तौ भगवन् । भगवन् हृत्प्राप्तमिदमास्वताम् । भारतेन सह सर्वे राज्ञो वरं वयुः । इमे बालकाः क्षुधया रदन्ति । चौरा निशायां आप्ति, विभो निद्रां याति । आकाशे बहूनि तारकाणि चकासति । रामः प्रजां पुत्रान् भवाम् ।

2. Translate into Sanskrit:— (a) हम लोग राम को राक्षस पर सेने हैं। यहाँ माकण वेद पाने हैं। उस समा में बहुत से विद्वान् के राम के लक्षण को बाल से मारा। माण के संकट में पड़ने पर भी अपने नहीं बोलना चाहिये। रबीचों के द्वारा ईश्वर की स्तुति करो। राम की राशों को दृष्टा है।

(b) I read the book. He told him the whole story. You should always speak the truth. Lotusess shine in the pool. I do not believe in your words. Why do you envy me? Because is a sacred place for Hindus.

3. Correct — सोऽभङ्गमदति । अत्र बाङ्गकौ भासताम् । पद्मानि
गति सरोवरे । स स्वाद्यमहनम् । पुत्रमचक्षत । बालकाः शय्यायां शयन्ते ।
हं वेदं वेत्ति । पुत्रो रौदितः ।

हाद्रि (3rd Conj.)

१. लुङोत्यादिभ्यः णुः । श्लौ—लृट् इत्यादि चार विभक्तियों में
हाद्रि गणीय धातुर्भों का अभ्यस्त होता है ।

अभ्यस्त (reduplication) के नियमः —

(क) अपने पूर्ववर्ती व्यञ्जनवर्ण (यदि हो) सहित
भाद्रि स्वर का अभ्यस्त (द्वित्व) होता है । यथा, पन्-पपत्,
मुष्-मुष्त् ।

(ख) धातु के भाद्रि में संयुक्त वर्ण हो तो प्रथम अक्षर
सहित भाद्रि स्वर का अभ्यस्त होता है । यथा, प्रच्छ-पपच्छ ।

N. B. यदि संयोग का प्रथम अक्षर व्यन्वर्ण (श्, ष्, स्) हो
और द्वितीय अक्षर किसी वर्ण का प्रथम या द्वितीय वर्ण हो तो गणीय
वर्ण का अभ्यस्त होता है । यथा, स्पर्ध्-पस्पर्ध् । सन्-ससन्त् ।

(ग) धातु के भाद्रि में वर्ण का द्वितीय या सन्वयवर्ण हो
तो अभ्यस्त में उसका प्रथम से प्रथम या तृतीय वर्ण हो जाता
है । यथा, छिद्-चिच्छिद् । मुञ्-मुमुञ् ।

(घ) अभ्यस्त में कवर्ण का सवर्ण और ह का ज् होता है ।
यथा, कम्-ककम्-चकम् । रन्-घसन् । हल्-जहल् ।

(ङ) अभ्यस्त में दीर्घ स्वर का ह्रस्व और ष का भ होता
है । यथा, पा-पपा, भी-निनी, कृ-चकृ ।

(छ) अभ्यस्त में उपधा ए वा ऐ और औ वा भौ का प्रथम
से ह और उ हो जाता है । यथा, सेष्-सिषेष्-ढीक्-डुढीक् ।

२. हाद्रि गणीय धातुर्भों के परे भान्त और भन्तु के ज् का
सोप होता है ।

३. लट् के अन् का डस् हो जाता है । उस् के पहले ध के आ का लोप तथा ह्रस्व या दीर्घ इ, उ और ऋ का गुण होता है ।

४. सबल विभक्ति के आने से धातु के अन्त्य स्वर लोप तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है ।

हु to sacrifice परस्मैपदी ।

५. अन्ति और अन्तु में हु धातु के उ का ष् होता है ।

लट्

प्र. पु.	सुहोति	सुहुतः	सुहति
म. पु.	सुहोषि	सुहुषः	सुहुष
उ. पु.	सुहोमि	सुहुवः	सुहुमः

लोट्

सुहोतु	सुहुताम्	सुहुत
सुहुषि	सुहुषम्	सुहुष
सुहवन्ति	सुहवाव	सुहवाम

लङ्

असुहोत्	असुहुताम्	असुहुवुः
असुहोः	असुहुतम्	असुहुत
असुहवम्	असुहुव	असुहुम

विधिलिङ् ।

सुहुयात्	सुहुयाताम्	सुहुयिः
सुहुयाः	सुहुयातम्	सुहुयात
सुहुयाम्	सुहुयाव	सुहुयाम

ही to be ashamed परस्मैपदी

लट्

प्र. पु.	त्रिदेलि	त्रिदीतः	त्रिदिषति
म. पु.	त्रिदेषि	त्रिदीषः	त्रिदीष
उ. पु.	त्रिदेषि	त्रिदीषः	त्रिदीमः

लोट्

त्रिदेलु	त्रिदीताम्	त्रिदिष
त्रिदीहि	त्रिदीताम्	त्रिदिष
त्रिदेषन्ति	त्रिदीषाव	त्रिदीषाम

लङ्

अत्रिदेलु	अत्रिदीताम्	अत्रिदेषुः
अत्रिदेलुः	अत्रिदीताम्	अत्रिदीष
अत्रिदेषम्	अत्रिदीष	अत्रिदीम

विधिलिङ् ।

त्रिदीषाम्	त्रिदीषाताम्	त्रिदीषिः
त्रिदीषाः	त्रिदीषाताम्	त्रिदीषात
त्रिदीषाम्	त्रिदीषाव	त्रिदीषाम

भी to fear परस्मैपदी ।

१. निबोडन्त्यतरस्याम्—मषल व्यञ्जनादि विभक्तियों में भी धातु का विकल्प से ह्रस्व होता है ।

लट्

लोट्

प्र. पु. विभेति	विभीतः	विभ्यति	निभेतु	विभीताम्	विभ्यतु
	विभितः			विभिताम्	
म. पु. विभेहि	विभीयः	विभीष	विभीहि	विभीतम्	विभीत
	विभियः	विभिष	विभिहि	विभितम्	विभित
उ. पु. विभेमि	विभीवः	विभीमः	विमयानि	विमयाव	विमयाम
	विभिवः	विभिमः			

लङ्

विधिलिङ्

अविभेद्	अविभीताम्	अविभयुः	विभीयान्	विभीयाताम्	विभीयुः
	अविभिताम्		विभियात्	विभियाताम्	विभियुः
अविभेः	अविभीतम्	अविभीत	विभीयाः	विभीयातम्	विभीयात
	अविभितम्	अविभित	विभियाः	विभियातम्	विभियात
अविभयम्	अविभीव	अविभीम	विभीयाम्	विभीयाव	विभीयाम
	अविभिष	अविभिम	विभियाम्	विभियाव	विभियाम

भृ to maintain.

२. भृजामि—भा, हा to go. भृ, पू or पू to fill और ऋ के स्वर का अन्त्यस्त में इ होता है । यथा, मिमा, जिहा, विभृ ।

परस्मैपदी

लट्

आत्मनेपदी

पु. विभति	विभृतः	विभ्रति	विभृते	विभ्राते	विभ्रते
पु. विभसि	विभृयः	विभृथ	विभृथे	विभ्राथे	विभृथे
पु. विभमि	विभृवः	विभृमः	विभ्रे	विभृवहे	विभृमहे

ऐसे ही लोट्, लङ् विधिलिङ् को विभक्तियाँ जोड़ दो । . .

भा १०) आद्यकार, हा १०) एण आद्यनेपदी ।
 ६ वा भीट हा का अन्त्यस्य एतादि विभक्तिषु स्य
 चिन् चोः सिद् मया एतन्नादि विभक्तिषु चिन् चोः सि
 होगा है ।

हा १०) एण

	लट्			लोट्	
प्र. पु	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वाम्	जिह्वाम्
म. पु	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वाम्	जिह्वे
व. पु	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वे	जिह्वे

लृप्—अर्द्धित, अर्द्धितम् अर्द्धितः अर्द्धिताः अर्द्धिः ।
 लृप्, लृप्ति, लृप्तिनाम् लृप्तिम्, लृप्तिः, लृप्तिः ।

हा to abandon परस्मैपदी ।

५ जहलौष—हा to abandon का भव्यस्व लट्, लोट्
 लृप् के व्यञ्जनादि भव्यस्व विभक्तिषु में जह्वा जहा हा
 स्यरादि भोर विधिलिङ् का विभक्तिषु में जह्वा हा जाता है ।
 लोट् के दि में जहादि, जहदि, जहोदि लान रूप होते हैं ।

	लट्			लोट्	
प्र. पु	जहाति	जहीतः	जहति	जहानु	जहोताम्
		जहितः			जहितान्
म. पु	जहासि	जहोषः	जहोष	जहादि	जहोषम्
		जहितः	जहित	जहदि, जहोदि	जहितम्
व. पु	जहामि	जहोवः	जहोमाः	जहामि	जहाव
		जहितः	जहितः		

दा और धा धातु ।

१०. अथल विभक्तियों में दा और धा के धम्यस्त दद् दप् होते हैं । स्, ध्य, त और थ वरे रहने से दध् का घन जाता है । लोट् के हि में कम से देहि और धेहि रूप होते

दा to give उभयपदी ।

	परस्मैपदी	लट्	आत्मनेपदी ।
प्र. पु. ददाति	ददाः	ददति	दधे
म. पु. ददासि	ददाथः	ददाथ	दधसे
व. पु. ददामि	ददाः	ददाथः	दधे

लोट् ।

प्र. पु. ददातु	ददाम्	ददातु	ददाताम्	ददाताम्	ददातु
म. पु. देहि	दधम्	ददा	ददस्व	ददाधाम्	ददध्व
व. पु. ददानि	ददान	ददाम	ददी	ददावदी	ददाम

लङ् ।

अददात्	अददाम्	अददुः	अदत	अददाताम्	अदद
अददाः	अददाम्	अददथ	अददथाः	अददधाम्	अददध्व
अददाम्	अदद	अददथ	अददि	अददधि	अददध्व

विधिलिङ् ।

दधात्	दधाताम्	दधुः	दधीत	दधीषाताम्	दधीष्व
दधातः	दधातम्	दधात	दधीथाः	दधीषाथाम्	दधीष्व
दधाम्	दधात	दधाम	दधीथ	दधीषधि	दधीष्व

धा to hold उभयपदी ।

परस्मैपदी लट् आत्मनेपदी

प्र. पु. दधाति	धत्तः	दधति	धत्ते	दधाते	दधे
म. पु. दधासि	धत्स्यः	धत्स्य	धत्से	दधासे	दधसे
उ. पु. दधामि	दध्वः	दध्मः	दधे	दध्वहे	दध्वे

लोट्—दधातु, धत्तः, दधतु; धेहि; दधानि; धत्ताम्; धत्स्व; दधे ।

लृट्—अदधात्, अदधाः, अदधाम्; अपच, अधत्वा; अधति ।

विधिलिङ्-दध्यात्, दध्याः, दध्याम्, दधीत, दधीयाः, दधीय ।

निज्, विज्, विप्, धातु ।

११. निज् श्रयाणां गुणः स्त्री—लट् इत्यादि चारो लकारों में निज्, विज्, विप् के अभ्यस्त के पूर्व भाग के इ का गुण होता है। पर स्वरादि सचल विभक्तियों के परभाग में गुण नहीं होता ।

निज् to wash उभयपदी ।

परस्मैपदी लट् आत्मनेपदी

नेनेक्ति	नेनेक्तः	नेनेजति	नेनेक्ते	नेनेजाते	नेनेजे
नेनेक्षि	नेनेक्ष्यः	नेनेक्ष्य	नेनेक्षे	नेनेजाथे	नेनेक्षे
नेनेजिम्	नेनेज्वः	नेनेज्मः	नेनेजे	नेनेज्वहे	नेनेजे

विज् to distinguish धेवेक्ति, धेवेक्तः, धेवेजति, धेवेक्ते ।

विप् to spread धेवेष्टि, धेवेष्टः, धेवेष्टति, धेवेष्टे, धेवेष्टते ।

Exercise—26

1. Translate into Hindi— विद्या विनये ददाति । राजा द्रविश्रेण्यो घनमदरात् । सुधिष्टिरः कदापि सत्यं भाजहात् । सर्पात् सर्वे श्लोका विभ्यति । श्लोका जयानि शत्रूनि परिदधति । स्वकर्माणा जिद्वि



Translate into Sanskrit:—(a) मेघ जल से संसार का पावन है । इस दीन को खाने को दो । मैं तुम से डरता हूँ । दशरथ ने सत्य कहा । उसने दृष्टिों को बस दिये । उसने इस नगर को परित्याग पा । कृपया मुझे यह पुस्तक दीजिये ।

b) The teacher gives knowledge to the student. took his dress and went there. The Brahman offers into the fire. A pious man does not give up his religion.

Correct :—ते धर्म इदन्ति । स मह्यं पुस्तकं देहि । सर्पात् लोकात् । नर्यं वस्त्राणि परिदधामि ।

General tenses and moods.

इस भाग (लृट्, लुट्, लृङ्, भाशीर्लिङ्, लिट् और) में गणभेद से रूप में कोई अन्तर नहीं होता । भतपव क विभक्ति में सब गणों के रूप दिखाये जायेंगे ।

इस भाग में कई धातुर्भों में कुछ विशेषता हैं उनमें प्रधान दे दिये जाते हैं ।

(१) इस भाग में भस् और घ्रू का क्रम से भू और घच् जाता है ।

(२) गुप्, धूप, विच्छ्, पण्, पन्, कम् और प्रश्न् के रूप से गोपाय्, धूपाय् इत्यादि (जो प्रथम भाग में विभक्तियों के पहले होते हैं) भी होते हैं । वधा, गोपिता, गोपाय, धूपिता, धूपायिता ।

(३) जिन धातुर्भों के भस्त में ए, ऐ और ओ हों वे इस भाग में (इन लकारों में) आकारान्त समझे जाते हैं । ३ U to throw, ३ U to kill, ३ A to fish, ३ U, ३ A to adhere का विकल्प से आकारान्त हो जाता है ।

(५) घृषादि मन्वीय धातुओं के गुरे इस भाग में आ लगता है। यथा, कम् कश्चिन्ता, कश्चिन्तयति इत्यादि।

(६) इस भाग में सृष्ट् का स्रात् और मर्त् तथा स्र् और इग् के अ का र् हो जाता है। यथा, स्र्या, इया।

इ (इट्) विधान।

इस भाग के अकारों के तथा तज्य, त, तज्, तुम्, क इत्यादि प्रत्ययान्त कृत्तय पदों के रूप बनाने में य मिन्त की गादि विभक्तियों के पूर्व इट् (इ) का आगम होता है। जिन धातुओं में इ लगता है उन्हें सेट्, जिन धातुओं में अ लगता उन्हें अनिट्, तथा जिन में विकल्प से लगता है उन्हें षिट् कहते हैं।

सेट् धातु—(१) एक से अधिक स्वर वाले, घृषादि मन्वीय तथा णिजन्त, सनन्त, नामधातु इत्यादि दूसरे धातु या संज्ञ से बने हुए धातु सेट् होते हैं।

(२) उद्दन्तैर्वीति रुक्ष्युरीप्सुनुक्षरिवडीइधिमिः।

वृड् वृष्ण्या घ विनेकाचोऽजन्तेषु निहताः स्मृताः॥

ऊकारान्त और प्ररकारान्त धातु, यु, रु, ह्यु, शी, स्तु, डु, क्षु, शिव, डी, धि, वृ 9 A और वृ 5 U धातु सेट् हैं।

(३) एक स्वर वाले व्यञ्जनान्त (१०२ अनिट् धातुओं को छोड़ कर) सभी धातु सेट् हैं।

अनिट् धातु—(१) उपयुक्त कारिकाभिन्न एक स्वर वाले सभी स्वरान्त धातु अनिट् हैं।

(२) एक स्वर वाले व्यञ्जनान्त धातुओं में निम्नलिखित १०२ धातु अनिट् हैं :—

शुक्, पस्, मुचि रिच् षच् यिच् । सिच् प्रच्छित्यज् निजिर्मज्

मञ्ज् भुञ्ज् स्रञ्ज् मृञ्ज् वञ्ज् युञ्ज् दञ्ज् । रञ्ज् विञ्जिर् इत्यञ्जि
सञ्ज्जसृञ्जः ।

अद् ह्रद् खिद् छिद् तुदि मुदः । पद्यमिद् विद्यतिर्विनद् ।
शद् सदीस्यद्यतिः स्कन्दि । ह्रदी ऋष् स्रुधि युष्यती ॥
यन्धिमुं धिरुषो राधिः । श्वध् शुधः साधिसिष्यती ।
मन्यद्दन्नाप् क्षिप् लुपितप् । तिपस्तृप्यतिदृष्यती ॥
लिप् लृप् षप् शप् स्वप् ख्वि यम् । रम् लम् गम् नम् यमो रमिः ।
भु शिर्दशिदिशी दृश् मृश् । रिश् क्श लिश् धिश् स्पृशः कृषिः ॥
लिप् लुप् द्विप् इप् पुष्य पिप् पिप् । शिप् शुप् दिज्ज्यतपो घसिः ।
पसति दद् दिदि दुदो नद् मिद् गद् लिद् घदिस्तथा ॥

अनुदात्ता हलन्तेषु धातवो द्वयधिकं शतम् ।

चेर् धातु— निम्नलिखित धातु चेर् द्वे ।

स्वरतिः सृषते सृने पश्यते नयते च धुञ् ।

तनक्तिर्भ्रतिभास्तापनक्तिश्च तनक्तिनः ॥ १ ॥

माष्टि मार्जति जाग्नेषु क्षान्तौ त्रिष्यति स्वन्दते ।

रष्यतिः रोषतिर्धास्तां पान्ताः षष्चेव कल्पते ॥ २ ॥

गोषापतिस्फुष्यतिश्च ऋषते दृष्यतिम्नथा ।

माग्तौ शाम्यति क्षमतेऽस्तुते त्रिभ्रति नदपति ॥ ३ ॥

शान्तात्त्वयोधाशतिश्च निष्कुष्यातिश्च लक्षति ।

त्यशतिश्च यकावागता ह्यद्य हास्ताश्च गादने ॥ ४ ॥

पदश्ये गृहतिश्च ऋकातोषाम्पगर्हते ।

वृदति वृदति ॥ हतयो वृदति मुदति ॥ ५ ॥

वृहति भ्रिद्यति स्तुगस्येते चेर्वा हि धातवः ।

अत्रगतामी मु षष्चेव चेर् इयाद्वपश् सार्थदा ॥ ६ ॥

अतिरिक्तः ।

(१) इ, धृ, छृ, शृ, ह, धृ, गृ, कृ, मिय अदिर् धातुषो

के लिट् में इ होता है ।

N. B. १ ह्रस्व ऋकारान्त धातु के परे य रहने से इ नहीं होता पर ऋ, ऊ, धातु में नित्य होता है ।

२ धातु के अन्त में स्वर तथा उपधा में अ हो तो य के पहले विकल्प से इट् होता है ।

(२) वृश्, सृज्, स्वरान्त और अकारयुक्त अनिट् धातुओं के लिट् के य में विकल्प से इ होता है ।

N. B. व्ये और अद् धातु के परे नित्य इ होता है ।

(३) लृट् और लृङ् में परस्मैपदी गम्, हन् और ऋकारान्त अनिट् धातुओं के परे इ होता है ।

(४) लुङ् के परस्मैपद में स् परे होने से लु, लु और लु धातुओं के परे इ होता है ।

(५) लृङ् और आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में संयोगान्ति ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के परे विकल्प से इ होता है ।

लृट्, लृट्, लृङ् ।

१—पुगन्तलघुपथस्य च—लृट्, लृट् और लृङ् विभक्ति में धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है ।

भू to be परस्मैपदी ।

लृट् ।

प्र. पु.	भविता	भवितारौ	भवितारः
म. पु.	भवितासि	भवितारथः	भवितारथ
उ. पु.	भवितास्मि	भवितारथ्यः	भवितारथ्यः

लृट् ।

प्र. पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ. पु.	भविष्यामि	भविष्याथः	भविष्याथः

लृट् ।

प्र. पु.	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म. पु.	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ. पु.	अभविष्यम्	अभविष्याथ	अभविष्याम

शी to sleep आत्मनेपदी ।

लृट् ।

प्र. पु.	शयिता	शयितारौ	शयितारः
म. पु.	शयितासे	शयितासाधे	शयिताष्ये
उ. पु.	शयिताहे	शयितारूपहे	शयितास्यहे

लृट् ।

प्र. पु.	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म. पु.	शयिष्यसे	शयिष्येधे	शयिष्यध्वे
उ. पु.	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लृट् ।

प्र. पु.	अशविष्यत	अशविष्येतान्	अशविष्यन्त
म. पु.	अशविष्यथाः	अशविष्येषाम्	अशविष्यध्वम्
उ. पु.	अशविष्ये	अशविष्यावहि	अशविष्यामहि

१. षोडशित् शीर्षे :— लृट्, लृट्, और लृट्, में षट् के परे इ (इट्) का शीर्ष होता है । यथा, अशीता; अशीष्यति, अशशीष्यन् ।

२. कृती वा—लृट्, लृट् और लृट् में वृ तथा कृकारान्त धातु के परे इ (इट्) का विकल्प से शीर्ष होता है । यथा, लृ 10 कृत्वा परस्मैपदी-अशिता अशीता, अशिष्यति-अशीष्यति, अशविष्यन्-अशविष्यन् ।

४ लृट्, लृट्, लृट् में इ (इट्) परे इत्ते से इतिश के आ का शीर्ष होता है । यथा, इतिशिता, इतिशिष्यति, अइतिशिष्यन् ।

२. लृट्, लृट्, लृट् में इग् भौर गृत् धातु के लृट् का होता है । यथा, इग्-द्रवा, इक्षयति, अक्षयन् । गृत् का अक्षयति, अक्षयन् । पर कृत्, गृत्, इग्, गृत्, लृट् लृट् के लृट् का विकल्प में लृट् होता है । यथा, कृत्, कृत्, कृत् ।

३. लृट् में भवि पूर्णक इ to read का विकल्प में लृट् होता है भौर गी की ई का गुण नहीं होता । यथा, अक्षयन्-प्यत्, अक्षयन्-प्यत् ।

०. लृट् भौर लृट् में कृत्, घृत्, छृत्, गृत् भौर गृत् धातुओं में विकल्प से लृट् होता है । यथा, कृत्-कतिष्यति, अकतिष्यन्, अकतिष्यत् ।

प्रथम पुण्य के एक्यवचन में कुछ धातुओं के रूप ।

धातु	लृट्	लृट्	लृट्
चल्	चलिता	चलिष्यति	अचलिष्यत्
पश्	पक्ता	पक्ष्यति	अपक्ष्यन्
मुच्	मोक्ता	मोक्ष्यति	अमोक्ष्यत्
सिच्	सेक्ता	सेक्ष्यति	असेक्ष्यत्
भञ्ज्	भङ्क्ता	भङ्क्ष्यति	अभङ्क्ष्यत्
भुञ्	भोक्ता	भोक्ष्यति	अभोक्ष्यत्
घ्रस्ज्	घ्रष्टा	घ्रक्ष्यति	अघ्रक्ष्यत्
	भर्षा	भर्ष्यति	अभर्ष्यत्
अद्	अत्ता	अत्स्यति	आत्स्यत्
पद्	पक्ता	पत्स्यते	अपत्स्यत्
मन्	मन्ता	मंस्यते	अमंस्यत्
सृप्	सृपिता	सृपिष्यति	असृपिष्यत्
	सर्ता-श्रता	सर्ष्यति-श्रष्यति	असर्ष्यत्-अश्रष्यत्
गम्	गन्ता	गमिष्यति	अगमिष्यत्



का घन कायगा । मैं कम जान में मिलूँगा । विनि में मैं तुम्हारी बात
करूँगा । कम कामकाज राता हूँगे ।

(b) I will see you tomorrow. Who will go to school
me? If I were there I would save you. You shall hear from
your father. They will learn grammar with you from
teacher. He will conquer the enemy at last.

3. Correct—तुम्हें तुम्हें कृपित्वादि । ते घनं कृपित्वादि ।
गृह्णित्वादि । नो तत्र गमिष्यति । कालकं परिष्यति । कालकं काल
शेष्यते । तत्र कथनं प्रदिष्यामि ।

आशीर्लिङ् ।

परस्मैपदा धातु ।

भू to bo परस्मैपदा ।

प्र. पु.	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म. पु.	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ. पु.	भूयासम्	भूयास्य	भूयास्य

१ आशीर्लिङ् में परस्मैपदा दा, पा, मा, गा (गै), ला
(सो), हा धातुओं के आ का ए हो जाता है । यथा, देयात्,
देयास्ताम्, देयासुः, पेयात्, पेयास्ताम्, पेयासुः ।

N. B. पर स्था-भिन्न संयुक्तधादि धातु के आ का विकल्प में
होता है । यथा, आ-स्नेयात्, आयात्; आ-धेयात्, आयात् । स्था स्वेयात् ।

२. परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित इ उ का दीर्घ होता
है । यथा, जि-जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासुः । धृ-ध्रूयात् ।

३. परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित ऋ का रि होता है ।
यथा, कृ-क्रियात् । भृ to hold क्रियात् ।

N. B. संयोगादि ऋकारान्त और ऋ धातु का भर् होता है ।
यथा, सृ-सृष्ट्यात् । ऋ to go-गम्यात् ।

४. धातु के भन्तस्वित अद् का ईर् होता है, पर पवर्ग के परे अद् हो तो ऊर् होता है । यथा, तृ-तोर्ष्यात् । पृ to blow पूर्ष्यात् ।

५. भातोलिङ् में प्रह् का गृह्, प्रच्छ् का पूच्छ्, व्यध् का विध् और यज् का इज् होता है । यथा, प्रह्-गृह्यात्; प्रच्छ्-पूच्छ्यात्; व्यध् to pierce विध्यात्; यज्-इज्यात् ।

६. वच, वद, वप्, वस्, वह्, स्वप् धातुओं के व का उ होता है । यथा, वच् उचयात् । वस् उप्यात् इत्यादि ।

७. हे to call का ह् होता है । यथा, ह्यात्, ह्यास्ताम्, ह्यासुः ।

८. धातु के उपधा-नकार का लोप होता है । यथा, मन्थ् to churn मथ्यान्, मथ्यास्ताम्, मथ्यासुः इत्यादि ।

९. शास् to govern का शिप् होता है । यथा, शिष्यात् ।

आत्मनेपदी धातु ।

सेव् to serve.

प्र. पु. सेविषीष्ट सेविषीयास्ताम् सेविषीरन्
म. पु. सेविषीष्ठाः सेविषीयास्थाम् सेविषीद्ध्यम् सेविषीध्यम्०
उ. पु. सेविषीष सेविषीषहि सेविषीमहि

१. भातोलिङ् में आत्मनेपदी धातु के भन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है । यथा, शी to sleep-शशिषीष्ट; घृत् to shine घोतिषीष्ट इत्यादि ।

*म का भिन्न स्वर तथा च्, र्, ज् या ह् के परे भातोलिङ् विद् और लुट् के अन्त्य, व्यध् और ज्वे के भ् का ह् होता है, इर् के परे विष्ण से ह् होता है ।

२. धात्मनेपदी में प्रह् घातु के परे इ (इट्) का होता है । यथा, प्रहीपीष्ट ।

३. अनिट् घातु के अन्तस्थित श्च का गुण नहीं होता यथा, कृ-कृपीष्ट । मृ-मृपीष्ट ।

४. अनिट् घातु की उपधा के लघु स्वर का गुण होता है । यथा; मुञ् to eat मुञ्शीष्ट ।

प्रथम पुरुष के एकवचन में कुछ घातुओं के रूप ।

भिद्	भियात्	बुव्	बुधात्-बुत्सीष्ट	वद्	वप्
गम्	गम्यात्	स्पृश्	स्पृश्यात्	सृत्	सृप्
मा	मेयात्	मुच्	मुच्यात्-मुञ्शीष्ट	षु	षीप्
गा	गेयात्	मुद्	मुद्यात्		सीप्
सा	सेयात्	श्व्	श्व्यात्-श्व्शीष्ट	व	वप्
दा	हेयात्	दंश्	दश्यात्		सीप्

Exercise—23.

1. Translate into Hindi:—कुशलं ते भूयात् । राजा विजयीयते । मुद्रिकादर्शनेन तत्र पतिः स्मर्यति । अनया सेनया शत्रुं जित्वा भवान् । त्वं धार्मिको दानशीलश्च भूयाः ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) तुम्हारा पुत्र शीघ्र ही होवे । तुम आज मकरमन्थ होओ । तुम लोग सब प्रसन्न हो । ईश्वर राजा की रक्षा करे । तुम्हें एक पुत्र होवे । उसका नाम हमारे देश के लोग तुम्हारा भी धनवान् होवे ।

(b) May you have a son. Do you happy with your family members. God save the king. Lord bless our emperor.

Correct:—ते कुशलं भूयाः । भवान् विजयीयते । त्वं धार्मिकः । त्वं दानशीलः । त्वं धनवान् ।

लिट् ।

इट् दो प्रकार के होते हैं; उन्हें Reduplicative स्त) और Periphrastic कहते हैं ।

१) एक स्वर वाले व्यञ्जनादि धातुओं (दध्, कास् को कर) तथा स्वरादि धातुओं में जिनके आदि में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अस् को छोड़कर) के रूप Reduplicative (अभ्यस्त) से बनते हैं ।

२) शेष धातुओं (कर्णुं और अर्चुं को छोड़ कर) के Periphrastic की रीति से बनते हैं ।

N. B. क्, विद्, क्श्, क्श्, ज्ञ, मी, इ, इ, हु और इतिवा अ दोनों रीति से बनते हैं ।

Reduplicative (अभ्यस्त)

१ अभ्यस्त (reduplicative) के निम्न ह्रादिगण में पाये हैं ।

२ वाक्यपदी में—(१) प्रथम पुरुष के एकवचन में अवश्य उत्तम पुरुष के एकवचन में विकल्प से धातु की उपधा और अन्त्य स्वर की वृद्धि होती है (उत्तम पुरुष के एकवचन में धातु के अन्त्य स्वर की वृद्धि और गुण दोनों होते हैं) (२) प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन में उपधा के अन्त्य स्वर का गुण होता है । (३) मध्यम पुरुष के एकवचन धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के लघु स्वर का गुण होता है ।

N. B. लिट् के रूप में इट् का अतिरिक्त देखो ।

नि to lead, to carry उभयपदी ।

प्र. पु.	निनाय	निन्वयुः	नियुः	निन्वे	निन्वते	निन्ते
म. पु.	निनेष-निनयिष	निन्वयुः	निन्व	निन्विते	निन्वते	निन्ते
उ. पु.	निनाय-निनय	निन्विष	निन्विम	निन्वे	निन्विषे	निन्ते

शश् to jump प. विद् to know प.

प्र. पु.	शशाश	शशाशतुः	शशाशु	विवेद	विविदुः	विविद
म. पु.	शशाशिव	शशाशयुः	शशाथ	विवेदिष	विविदुः	विविद
उ. पु.	शशाश-शशाश	शशाशिव	शशाशिम	विवेद	विविदि	विविद

शश् के समान—खद्-चखाद, गद्-जगाद, कम्-चकाम, चक्षाम, क्षर्-चक्षार, स्वञ्ज् सस्वञ्जे, म्पश्-पस्पर्श, साष्-सव्यश्, श्वस्-शश्वास, शास्-शशास, शंस्-शशांसे-शशांस, इत्यादि ।

विद् के समान—खिद्-विखेद, चित्, निज् (उ), मिल् (उ), रिच्, दिष्, दिश् (उ), लिष्, लिप् (उ), शिष्, शिष्प-शिष्लेप, सिच्, सिष्, कुप्-चुकोष, चुकोश, क्षुद्-चुक्षोद, क्षुष्-चुक्षोध, क्षुम्-चुक्षोम, कुष्-चुक्षु, च्युत्-चुच्योत्, नुष्, तुड् (उ), हुद्, भुज् (उ), रुष् (उ), मुच्, मुप्, शुच्, शुष् । नृत्-ननर्त्-ननृत्, कृत्, कृप्, कृष्, वृत्, वृष्, इप्, धृप्, घृत्, घृष् इत्यादि ।



कृ to do उभयपदी ।

१. पु. चकार	चक्रुः	चक्रुः	चक्रे	चक्रते	चक्रिरे
२. पु. चकथे	चक्रुः	चक्रुः	चक्रे	चक्रथे	चक्रुथे
३. पु. चकार-चकर	चकृत	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

ऐसे ही—भृ-भमार, वृ-ववार, सृ-समार, लृ-लसार, धृ-धार, हृ-जहार । पर वृ + थ = वर्धाप्य ।

कृ to scatter

स्मृ to remember

१. पु. चकार	चक्रुः	चक्रुः	सस्मार	सस्मारतुः	सस्मरुः
२. पु. चकरिथ	चक्रुः	चक्रुः	सस्मथे	सस्मरथुः	सस्मर
३. पु. चकार-चकर	चक्रित	चक्रिम	सस्मार-सस्मर	सस्मरिथ	सस्मरिम

कृ के समान—गृ-जगार, जृ-जजार इत्यादि ।

३. आकारान्त धातु—यै परस्मैपद के प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष के एकवचन में आकारान्त धातुओं के भा के परे भी होता है । अन्यत्र धातु के भा का लोप होता है, पर इट् भिन्न प के पूर्व आ का लोप नहीं होता ।

या to go

१. पु. ययौ	ययुः	ययुः	} ऐसे ही या-पयी, वा-ववी, धा-दधी, स्था-लस्थी, हा- जही, भा-बभौ, घ्रा-जघ्री, शा-जशी, स्था-चस्थी ।
२. पु. ययिथ ययाथ	ययुः	यय	
३. पु. ययौ	ययिथ	ययिम	

* परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन भिन्न स्वरादि अन्य लिट् विभक्ति के पूर्व आकारान्त धातु के च कार् होता है । पर आकारान्त, संदीपादि आकारान्त और अ, अरुद्ध तथा आद्य धातु के च का लोप होता है । परन्तु धृ, दृ, पृ के च का विकल्प से अर् होता है ।

स्मा.सम्भो, दा.द्री, सा.सभ्रो, ध्मा.सभ्रो, ते.उलो.
 जालो, प्रै.तचे, धी.वध्या, ध्मे.मालो, दा.द्री, दरे, दाले इ.

४- जिन धातुओं के आदि और मध्य में इमंयुक्त म
 धर्ज और मध्य में भ हो उनका अभ्यस्त नहीं होता, क
 का प हो जाता है (पर आदि का मध्य बदला हुआ
 ऐसा नहीं होता), परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पु
 एकयजन तथा इट् मिन्न य विभक्ति में ऐसा नहीं
 शक्-शोकिव-शशक्थ ।

N. B. बच्चादि धातु तथा शक् और दृ में दा जिन को

चल्-प.

पच्-आ.

प्र. पु. चचाल	चेल्लुः	चेत्तुः	चेचे	चेकते	चेति
म. पु. चेलिष	चेल्लुः	चेत्तुः	चेचिषे	चेचिषे	चेचिषे
उ. पु. चचाल-चचल	चेल्लिष	चेत्तिष	चेचे	चेचिषे	चेचिषे

परस्मैपदी—चम्, चर्, जप्, तन् (उ), तप् (उ)
 दम्, नद्, पच्, फल्, भज्, यम्, पद्, पत्, म्
 आत्मनेपदी-तप्, पद्, रम्, सद्, रम्, इत्यादि
 ऐसे ही होंगे ।

ऐसे ही तृ का तेर् और अर्प् का अ्रेप् होता है ।
 तृ-ततार, तेरतः, तेरुः । अर्प्-अ्रेपे, अ्रेपाते, अ्रेपिरे ।

५- परस्मैपद के प्रथम और उत्तम पुरुष के
 मिन्न अन्य लिट् विभक्तियों में स्रम्, राज् और वम्
 का विकल्प से यथाक्रम ध्रम्, रेज्, वेम् होता है । यथा,
 वभ्राम, वभ्रमनुः-स्रेमनुः, वभ्रमुः-स्रेमुः इत्यादि ।

६- भू का अभ्यस्त में बभूव होता है । यथा, बभूव,
 घतुः, यभूयुः; यभूविष, यभूयधुः, यभूय; यभूय,
 यभूविम ।

७ अभ्यस्त के परभाग में जि को नि, हि को धि और चि ने विकल्प से कि होता है। यथा, जि-जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः; जिगयिध-जिगीध । हि-हिघाय, हिष्यतुः; हिषयिध-हिषेध । चि-चिकाय, चिकयतुः-चिष्यतुः; चिकयिध-चेकेध-चिचयिध-चिचेध; चिस्त्रिय, चिच्यिध । चिषये, चिच्ये ।

८ परस्मैपद के एक्यचन-मिन्त् लिट् विभक्तियों में धातु के उपधा-नकार का विकल्प से लोप होता है ।

दन्श् धातु ।

प्र. पु. ददंश	ददंशतुः-ददशतुः	ददंशुः-ददशुः
म. पु. ददंष्ट ददंशिय	ददंशतुः-ददशतुः	ददंश-ददश
व. पु. ददंश	ददंशिय-ददशिय	ददंशिम-ददशिम

ऐसे ही सन्श्—सगन्श्, सगन्श्तुः, ससगन्श्, सगन्श्तुः-ससगन्श् । सगन्श्चिय-सगंश्चिय, सगन्श्चतुः-सगन्श्चतुः, ससगन्श्-ससगन्श् । ससगन्श्, ससगन्श्चिय-सगन्श्चिय, ससगन्श्चिय-ससगन्श्चिय ।

९ अश्, हस्य ऋकारादि और संयोगान्त भकारादि धातुओं के पूर्वे भाग के स्थान में आन् होता है ।

अश्-आत्मनेपदी ।

प्र. पु. आनदी	आनशाते	आनशिरे
म. पु. आनशिषे-आनदी	आनशाषे	आनशिष्ये
व. पु. आनदी	आनशिष्ये-आनशष्ये	आनशिम्ये-आनशम्ये

धात्-परस्मैपदी

अन्श्-परस्मैपदी

प्र. पु. आनदी	आनतुः	आनतुः	आनर्षं	आनर्षंतुः	आनर्षुः
म. पु. आनदिष	आनतुः	आनतु	आनर्षेध	आनर्षंतुः	आनर्षं
व. पु. आनदी	आनदिष	आनर्षिम	आनर्षं	आनर्षिष	आनर्षंष

१६ लिट् में मृत् का कूर्णे प्राप्ति होता है । कर्त्तृ-
 दिवृ-काने, दिवृ-निरे, दिवृ-निरे दिवृ-काने, दिवृ-निरे ।

१७ लिट् में सम्भारणों व धातु का भा होता है । क
 मचित्ताने, मचित्ताने, मचित्तानिरे, मचित्तानिरे, मचित्ताने ।

१८ लिट् में मृत्, मृत्, मृत्, मृत्, मृत् की र धातु के
 भाग के अकार का भाग होता है, पर मृत्-मृत् के अकार
 ही नहीं होता । र धातु के अकार के ह के अकार
 होता है ।

मम्-परमेश्री

जन्-आत्मनेश्री

जगत्	जगत्	जगत्	जगत्	जगत्	जगत्
जगन्निध-जगत्	जगन्निध	जगन्निध	जगन्निध	जगन्निध	जगन्निध
जगत्-जगत्	जगत्	जगत्	जगत्	जगत्	जगत्

मान्-उभयश्री ।

मान	मानः	मानः	मानः	मानः	मानः
माननिध	माननिधः	माननिध	माननिधः	माननिधः	माननिधः
मान	मानः	मानः	मानः	मानः	मानः

घस्-जघान, जघतुः, जघनिध, जघन्तुः, जघनिध, जघन्तुः

हन्-जघान, जघतुः, जघनिध-जघन्तुः, जघन्तुः, जघनिध ।

१३ लिट् के घ परे रहने से हर्त् मीट् मृत् धातु के अकार
 के श्च का र् होता है । इट् होने से नहीं होता ।

हर्त्-ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः, ददर्शिध-ददृशुः, ददृशिध ।

सृज्-ससृजे, ससृजतुः, ससृजुः, ससृजिध, ससृजुः, ससृजिध ।

१४ लिट् में व्यध् धातु के पृथ्व्य भाग का वि होता है ।
 व्यधा, विव्यधे, विव्यधाते, विव्यधिरे, विव्यधिरे, विव्यधिरे ।

१५. लिट् में ग्रह का गृह् होता है; पर परस्मैपद के एक घञ में ऐसा नहीं होता । यथा--

ग्रह् to take उभयपदी ।

जमाह	जगृहतुः	जगृहः	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जग्रहिष	जगृहसुः	जगृह	जगृहिषे	जगृहाषे	जगृहिष्वे-इवे
जमाह	जगृहिव	जगृहिम	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

१६. अभ्यस्तस्य घ—लिट् में हे घातु का हु होता है । यथा,

जुहाव	जुहुवतुः*	जुहुवुः	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
जुहुविष-जुहोष	जुहुवसुः	जुहुव	जुहुविषे	जुहुवाषे	जुहुविष्वे-इवे
जुहाव	जुहुविष	जुहुविम	जुहुवे	जुहुविषहे	जुहुविमहे

१७. परस्मैपद के एक घञ में सिद्ध धन्य लिट् विभक्तियों में घञ्, यद्, यस्, वह्, स्यप्, यञ् इत्यादि घातुओं के घ का उ भौर घ का इ होता है ।

घञ्-परस्मैपदी

स्यप्-परस्मैपदी

उवाच	ऊवतुः	ऊवुः	उवाच	उवाचतुः	उवाचः
उवचिष-उवक्ष	उवसुः	ऊव	उवचिष	उवक्ष	उवासुः
उवाच-उवच	उविव	ऊविम	उवाच-उवच	उविव	उविविम

यञ्-उभयपदी ।

इवाच	ईवतुः	ईवुः	इवे	इवाते	इविरे
इवचिष-इवक्ष	इवसुः	ईव	इविषे	इवाषे	इविष्वे
इवाच इवच	इविव	ईविम	इवे	इविवहे	इविमहे

* परस्मैपद के एक घञ में सिद्ध धन्य लिट् विभक्तियों के अन्ते से इस्व का हो घं ड का इप् भौर इ का इप् का इ होता है । यथा, विवो + इव = विविविष, विषि + इव = विषिविष ।

कुछ धातुओं का लिट् ।

	प्रथम पुरुष	ईयुः	मध्यम पुरुष	
इ	इयाय	ईयतुः	ईयुः	इययिथ-इयेथ
क्षि	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः	चिक्षयिथ-चिक्षेथ
ऐसे ही क्री-चिक्राय, प्री-पित्राय				
शी	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे	शिश्यिथे
थ्रि	शिश्राय	शिश्रियतुः	शिश्रियुः	शिश्रयिथ
श्वि	शिश्वाय	शिश्वियतुः	शिश्वियुः	शिश्वयिथ
सि	सिषाय	सिष्यतुः	सिष्युः	सिषयिथ
स्मि	सिष्मिथे	सिष्मियाते	सिष्मिथिरे	सिष्मिथिथे
डु	दुदाय	दुदुवतुः	दुदुडुः	दुदविथ-दुदोथ
डु	दुदाय	दुद वतुः	दुदु धुः	दुदोथ
धु	दुधाय	दुधुवतुः	दुधुडुः	दुधविथ-दुधोथ
यु	युयाय	युयुवतुः	युयुडुः	युयविथ
रु	रराय	ररवतुः	ररुडुः	ररविथ
प्लु	पुप्लुवे	पुप्लुवाते	पुप्लुथिरे	पुप्लुथिथे
सु	सुपुवे	सुपुवाते	सुपुथिरे	सुपुथिथे
क्षु	चुक्षाय	चुक्षुवतुः	चुक्षुडुः	चुक्षविथ
क्षु	चुक्षनाय	चुक्षुवतुः	चुक्षुडुः	चुक्षनुविथ
च्यु	चुच्युये	चुच्युवाते	चुच्युथिरे	चुच्युथिथे
दृ	ददार	ददरतुः	ददरुः	ददरिथ
स्तृ	तस्तार	तस्तरतुः	तस्तरुः	तस्तरथ
कृञ्	चुकृञ्	चुकृञ्जतुः	चुकृञ्जुः	चुकृञ्जिथ
कृन्द्	चकृन्द्	चकृन्द्तुः	चकृन्द्दुः	चकृन्द्दिथ
कृम्	चकृाम	चकृामतुः	चकृामुः	चकृामिथ

नेह	विबोद्	विबोदुः	विबोदुः	विबोदिय
नेह	विक्रुद	विक्रुदुः	विक्रुदुः	विक्रुदिय-विक्रुदेष
नेह	विक्रुश	विक्रुशुः	विक्रुशुः	विक्रुशिय-विक्रुशेष
नम्	वक्षाम	वक्षामुः	वक्षामुः	वक्षामिय-वक्षाम्य
	वक्षामे	वक्षामते	वक्षामिरे	वक्षामिये-वक्षामिरे
नम्	वक्षार	वक्षारुः	वक्षारुः	वक्षारिय
नेह	विशेष(विशेषे), विशिष्युः	विशेषुः	विशेषुः	विशेषिय
नम्	वषाद्	वषादुः	वषादुः	वषादिय
नेह	विषेज	विषेजुः	विषेजुः	विषेजिय
नम्	जगहे	जगहते	जगहिरे	जगहिये
नम्	जगाल	जगालुः	जगालुः	जगालिय
नम्	जगाहे	जगाहते	जगाहिरे	जगाहिये-जगाहिरे
नुप्	जुगोष	जुगुषुः	जुगुषुः	जुगुषिय-जुगुष्य
नम्	जगह	जगहम्	जगहः	जगहिय-जगहे

३ माय् के पूर्व वात् के अन्त्य स्वर तथा वाया के अन्त्य स्वर का गूण हो जाता है । यथा, जायु जागराम्भूय, म्, भाषाम्भूय । पर जिह्वाम्भूय, जिह्वाम्भूय, जिह्वाम्भूय ।

जागृ to be awake परमैतरी ।

प्र. पु. जागराम्भूयकार	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागराम्भूय	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागरामास	जागरामासः	जागराम्भूयः
म. पु. जागराम्भूयकार	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागराम्भूयविभ	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागरामास	जागरामासः	जागराम्भूयः
उ. पु. जागराम्भूयकार. गकर	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागराम्भूय	जागराम्भूयः	जागराम्भूयः
जागरामास	जागरामासः	जागराम्भूयः

N. B. छिद्र-भेद में देखो कि किन किन धातुओं का रूप इन क्रम से होगा ।

- दय्-दयाम्भूय, दयाञ्चक्रे, दयामास ।
- भास्-भासाम्भूय, भासाञ्चक्रे, भासामास ।
- ईह्-ईहाम्भूय, ईहाञ्चक्रे, ईहामास ।
- ईन्दु-ईन्दाम्भूय, ईन्दाञ्चकार, ईन्दामास ।

३ भाम् के पूर्व हु, मी, ही और भृ का अन्त्यस्त मी होता है । यथा, हु-जुहवाम्भूय, मी-विभवाम्भूय, ही-जिहवाम्भूय, भृ-विभराम्भूय ।

- दरिद्रा-दरिद्राम्भूय, दरिद्राञ्चकार, दरिद्रामास ।
- काश्-काशाम्भूय, काशाञ्चक्रे, काशामास ।

1 42-
7 21-
1 2 of -
1 1 :
1 1 1 .
1 1 1 .

1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .

1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .
1 1 1 .



विभक्तियाँ केवल जोड़ दी जाती हैं । पर अन् विभक्ति का उल्‍ हो जाता है ।

२. इस प्रकार इ, स्‍था, दा, घा (दा, घा के सङ्ग घाले घातु), पा to drink और मू घातु के रूप होते हैं ।

दा

स्था

प्र. पु. अदात्	अदाताम्	अदुः	अस्थात्	अस्थाताम्	अदुः
म. पु. अदाः	अदातम्	अदात्	अस्थाः	अस्थातम्	अदुः
उ. पु. अदाम्	अदाव	अदाम	अस्थाम्	अथाव	अदाम

N. B. लुङ् में इ का गा होता है । यथा अगात् , अगाताम् , गतुः ।
with अधि अप्यगात् , अप्यगाताम् , अप्यगुः ।

२. मू में उल्‍ का अन् और स्वरादि विभक्ति में मू के उं का उल्‍ हो जाता है । यथा, अभूत् , अभूताम् , अभूवन् , अभूः , अभूतम् , अभूवम् , अभूव , अभूम ।

३. घ्रा, घ्रे, छा, शो और सो के रूप प्रथम और चतुर्थ दोनों प्रकार से बनते हैं । घ्रे के रूप तृतीय प्रकार से भी बनते हैं । यथा, अघ्रात् , अघ्राताम् , अघ्रुः ।

N. B. भाग्यनेपथ—में स्‍था, दा, घा, के रूप यह प्रकार से, मू के रूप ७ म प्रकार से, और इ with अधि के रूप यह प्रकार से बनते हैं ।

२ य प्रकार (2nd form)

४ इसमें विभक्ति के पूर्व्य घातुओं में 'अ' जोड़ा जाता है ।

N. B. इत् के इ तथा घातु के अन्तस्थित इ को ह्येव वा स्त स्वतो का गुण या वृद्धि नहीं होती ।

५ इसमें परस्मैपदी त्प् लुप् द्विप् आप् गम् घस् नल् पल् मुच् क्षिप् शब् लुद् स्विद् शष्प् सिष् रूप् खप् वम् गुप् श्र् भृष् तुप् विष् विद् लुप् (त्शदि) शक् कुप् सिप् हुद् कृप् ल्प् लिद् अद् शृप् शृष् शात् शृप् हृष् कृप् घृत् धम् राम् इत्

रुच् ध्वन्स् लृप् लम् घम् क्षम् मद् रुप् कृष् अस् (दिवादि)
इ गुप् लुम् क्षुम् शुम् घ्वन्स् घ्वन्श् स्कन्ध् छन्म् और क्व्
ादि धातु हैं ।

पुप् परस्मैपदी ।

गम् परस्मैपदी ।

३. अपुक्त्	अपुक्ताम्	अपुक्न्	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
३. अपुक्ः	अपुक्ताम्	अपुक्त्	अगमः	अगमतम्	अगमत्
३. अपुक्म्	अपुक्त्वा	अपुक्वाम	अगमम्	अगमाव	अगमाव

६ मस्, कृष्, पत्, घच् or घू, शास्, शिश् और ह् के का
र से अस्, क्व, पत्, घच्, शिप्, श्व और ह् हो जाता है ।

घच्

पत्

३. अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	अपसत्	अपसताम्	अपसन्
३. अवोचः	अवोचताम्	अवोचत्	अपसः	अपसतम्	अपसत्
३. अवोचम्	अवोचत्वा	अवोचवाम	अपसम्	अपसाव	अपसाव

N. B. कश् का विकल्प से केश् होता है । यथा, अनश्त् अनेश्त्
नेशताम् अनेशन् ।

७ धातु के उपधा-सानुनासिक वर्ण का लोप होता है ।
या, घ्वन्श्-अघ्वशत्, अघ्वशताम्, अघ्वशन् इत्यादि ।

८ लिप्, सिच् और ह् के रूप परस्मैपद् में मध्यश् और
गर्हनेपद् में विकल्प से द्वितीय प्रकार के अनुसार होते हैं ।
गर्हनेपद् में इष्ट प्रकार से रूप बनता है । यथा, मसिचत्,
मसिचताम्, मसिचन् ; मसिचत् मसिचेताम्, मसिचन्त ।

श्च with सम् तथा उपसर्ग सहित कृष् घच् और मस्
o throw के रूप भार्गवनेपदी होने पर भी इसी प्रकार से
बनते हैं । यथा, श्च with सम् to go समारत्त, समारत्ताम्,
समारन्त; समारथाः, समारथ्याम्, समारथ्याम्, समारे समारा-
शदि, समाराशदि ।

N. B. अ परे रहने पर ष, स तथा ह्य का क्रम से अ, तथा दर्श हो जाता है। यथा, अमरत्, अमरताम्, अमर्त्, अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्।

६ मिद् छिद् रिच् विच् निज् विज् घृच् ग्लुच् शुच् स्फुट् चुत् च्युत् ज्युत् क्षुद् वुद् रुद् वुष् रुष् घुष् य् दुद् वृद् इष् इष् तृप् सृद् छद् भिज् प्रुच् ग्लुच् ग्लुच् श्च्युत् स्कन्दु स्तम्भ और शिल्प् के रूप विकल्प से प्रकार के होते हैं। पक्षान्तर में दृष्ट या ७ म प्रकार से रूप हैं। यथा, मिद्-अभिदत्, अभिदताम्, अभिदन्। अरुघत्, अरुघताम्, अरुघन्।

१० रुच् घुट् रुट् लुट् लुट् घुत् घृत् शिवन् स्विन् स्विन् स्वन्दु स्विद् वृध् शृध् क्लृप् क्षुम् तुम् नुम् शुम् स्रम् ध्वंस् भ्रंस् और छंस्, इन २५ आत्मनेपदी धातुओं के रूप प्रकार में परस्मैपदी धातुओं के समान होते हैं। आत्मनेपदी में दृष्ट या ७ म प्रकार से रूप बनते हैं। यथा, रुच्-प्रवत् अरुचताम्, अरुचन्।

३ य प्रकार (3rd form)

११. इस प्रकार से चुरादिगणनीय, निजन्त तथा धि, क्स् और कम् इत्यादि धातुओं के रूप बनते हैं। ये और नि के रूप विकल्प से इस प्रकार से बनते हैं (see 1st. 2nd forms)।

१२. इसमें धातुओं को मध्यस्त होता है और मध्यस्त के बाद अ जोड़ा जाता है।

पदान्त ओ का लोप तथा इ उ का क्रम से इप् उप् होता है।

१३. चुरादि तथा निजन्त धातु :-

(क) निजन्त तथा चुरादिगणनीय धातुओं के अय का अंश

यथा ए दे का इ, और ओ औं का उं हो जाता है । यथा,
मोचय (मुच्) परस्मैपदो ।

प्रथमपुरुष	अमूमुचन्	अमूमुचताम्	अमूमुचन्
द्वितीयपुरुष	अमूमुचः	अमूमुचतम्	अमूमुचत
तृतीयपुरुष	अमूमुचन्	अमूमुचाय	अमूमुचाम

आत्मनेपदी ।

प्रथमपुरुष	अमूमुचत	अमूमुचेताम्	अमूमुचन्त
द्वितीयपुरुष	अमूमुचयाः	अमूमुचेयाम्	अमूमुचध्वम्
तृतीयपुरुष	अमूमुचे	अमूमुचावहि	अमूमुचामहि

N. B. अभ्यस्त में अभ्यास (जिसका द्वित्व होता है) के अ का इ होता है । संयुक्ताक्षर या दीर्घ स्वर परे न रहे तो इस इ का ई हो जाता है । यथा, मावय (भू से)-माव्-वामव्-विमव्-बीमव्-अधीमवत्-त । चेतय (चित् से)-अचीविचत् । स्वल्-अविस्वल्-त । स्पन्द-अपस्पन्दत्-त ।

२. धातु की वृत्तियों में ह्रस्व या दीर्घ ऋ रं तो विकल्प से ओं का रहता है, पर दीर्घ ऋ का ह्रस्व हो जाता है, यथा, वर्तय (हृत् से)-अववर्तत्-त, इत्-अवीकृतत् । कीर्तय (कृत् से)-कीत्-अचिकीर्तत्-त, अचीकृतत्-त ।

(निजन्त में लुट् का विवरण देखो)

१४ यहाँ अभ्यस्त के नियम अन्यत्र से कुछ भिन्न और हैं । अतएव कुछ धातुओं के रूप प्रथमपुरुष के एकवचन दिये जाते हैं ।

अद्-आटिटत्, आप्-आपिपत्, नु-अनूतवत्-त, इ-अनूदवत्, ए-अनूवत्-त, वि-अविस्ववत्-अमुयवत्, अ-असिधवत्-अनुभवत्, इ-अदि-अनूदवत्, स्मू-असामरत्, प्रप्-अप्रयम्, स्वप्-अतुषुपत्, पप्-अपत्, इ with अधि-अध्यावित्-अध्यवसायत्, गप्-अग्रयत्,

अजोगन्तु, घा-अजिघ्रयत्-अजिघ्रियत्, स्वा-अतिष्ठित्-त् ।

४ र्थ प्रकार (4th form)

१५ इस प्रकार से आकारान्त धातु (१म, २म प्रयोगों को छोड़ कर), यम्, रम् (P with वि, आ, परि) नम् के रूप बनते हैं । यम् with उप or उद् A और नम् के रूप पष्ठ प्रकार से बनते हैं ।

इसमें केवल परस्मैपद को विभक्तियाँ लगती हैं ।

N. B. त् और स् विभक्तियों के पूर्व सी और अन्य विभक्ति के पूर्व सिप् जोड़ दिये जाते हैं । यथा, यम्-अधंसीत्, अयंविद्यम्

आ-परस्मैपदी

नम्-परस्मैपदी

अजासीत्	अजासिष्टम्	अजासिषुः	अनंसीत्	अनंसिष्टम्	अनंसिषुः
अजासीः	अजासिष्टम्	अजासिष्ट	अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
अजासिषम्	अजासिष्व	अजासिष्व	अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्व

विरम् ध्वरंसीत्, प्रा-अघ्रासीत्, छी-अच्छासीत्, अजासीत् इत्यादि ।

५ म प्रकार (5 th. form)

१६. जिन अनिट् धातुओं के अन्त में श्, य्, स् और और उपधा में इ उ ऋ वा लृ हो उनके रूप इस प्रकार से बनते हैं । मृत्, धृत् और हृत् के रूप विकल्प से इस प्रकार से बनते हैं । पर इत् के रूप ई छ प्रकार से बनते हैं ।

N. B. परस्मैपद तथा भात्मनेपद को विभक्तियों के पूर्व सिप् जोड़ा जाता है । ५म, ६म और ७म प्रकार में भात्मनेपद के रूपों में विभक्तियों के स्थान में म् से आत्ताम् और आत्ताम् होते हैं ।

१९. वद्—अधाक्षीत्, अधोक्षाम्, अधोक्षुः; अधोद्, अधधाताम् ।

अनियमित धातु ।

१६. आत्मनेपद् में दा, धा और स्था इत्यादि के आ का र हो जाता है और इस इ का गुण नहीं होता । यथा, अदित, अदिषाताम्, अदिषत; अदिधाः; अदिषि ।

२०. विभक्ति आने पर हन् (with आ A) के न् का लोप होता है ; यथा, आहत, आहसाताम्, आहसत, आहधाः ।

२१. गम् औ. यम् (with उप to marry) के म् का आत्मनेपद् में विकल्प से लोप होता है । यथा, यम् to give out के म् का अवश्य लोप होता है । पर गम् with सम्-समागंस्त-समागत । यम् with उप-उपायंस्त-उपायत ।

७म प्रकार (7th. form)

२२. सेट् धातुओं के रूप । जिनके रूप उपर्युक्त ६ प्रकारों से नहीं बनते) इस प्रकार से बनते हैं ।

N. B. त् और ष् विभक्तियों के पूर्व इ, षम् के पूर्व इ और अन्य विभक्तियों के पूर्व इप् जोड़ दिये जाते हैं । यथा, षम्-अकमीत्, अकमिषाम्, अकमिषुः, अकमीः; अकमिषम्, अकमिषः, अकमिषम्, अकमिषम्, अकमिषम् ।

२३. परस्मैपद् में हान्त, मान्त, यान्त, क्षण्, इवस्, जाण्, रिष, मध्, हस् इत्यादि तथा एकार इत् मित्र धातुओं के लपधा-अकार का विकल्प से आकार होता है । यथा, गद्—

अगादीत्	अगादिष्याम्	अगादिषुः	अगादीत्	अगादिष्याम्	अगादिषुः
अगादीः	अगादिष्यम्	अगादिष्य	अगादीः	अगादिष्यम्	अगादिष्य
अगादिष्यम्	अगादिष्य	अगादिष्य	अगादिष्यम्	अगादिष्य	अगादिष्य

२४. परस्मैपद में घात के अन्त्य स्वर तथा षु, र या ल् अन्त वाले धातुओं के उपधा अ की वृद्धि होती

वद्—अवादीत्, अवादिष्टाम्, अवादिषुः; अवादीः
 च्—अचारीत्, अचारिष्टाम्, अचारिषुः; अचारीः
 चल्—अचालीत्, अचालिष्टाम्, अचालिषुः; अचालीः
 म्ज्—अमाजीत्, अमाजिष्टाम्, अमाजिषुः; अमाजीः
 बु—अनाधीत्, अनाविष्टाम्, अनाविषुः; अनाधीः
 सु—अध्नाधीत्, अध्नाविष्टाम्, अध्नाविषुः; अध्नाधीः
 वृ—अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः; अवारीः
 त्—अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः; अतारीः

२५ परस्मैपद में धातु के उपधा-लघु स्वर का गुण है। यथा, रुद्-अरोदीत्, अरोदिष्टाम्, अरोदिषुः; अरोदिष्टम्, अरोदिष्ट, अरोदिषम्, अरोदिष्व, अरोदिष्व।

२६ आत्मनेपद में धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा अ स्वर का गुण होता है।

शी-आत्मनेपदी

द्युत्-आत्मनेपदी

अशुषिष्ट अशुषिषाताम् अशुषिषत अशुषितिष्ट अशुषितियाम् अशुषितिः
 अशुषिष्टाः अशुषिषाथाम् अशुषिष्वम् अशुषितिष्टाः अशुषितिषाथाम् अशुषितिषः
 अशुषिषि अशुषिष्वहि अशुषिष्वहि अशुषितिषि अशुषितिष्वहि अशुषितिषिः
 अतिरिक्त—सु-अस्तायीत्, धू-अधायीत्, अचयिष्ट, अचयिषुः
 अस्तायीत्, स्त-अस्तारिष्ट, अस्तारीत्; यु (यु) अशुषिष्ट, अशुषिषुः
 अशुषीत्, अशुषिष्ट; शिव-अशुषीत्, जागृ-अजागरीत्, अशुषिष्ट, अशुषिषुः
 आशुषीत्, मण्-अमाणीत्, मद्-अमहीत्, अमहीष्ट; गुण-अगुणीत्, अगुणीष्ट, अगुणीषुः
 पायीत्, मतोपीत्; गृण्-अगर्णीत्, लम्-अक्षमिष्ट, अक्षमिषुः, अक्षमिः

* इत् का अर् हो जाता है।

त्, अव्ययिष्ट; क्षर्-अक्षारीत्, गाद् अगाहिष्ट, शुद् अगृहीत्, गृहिष्ट ।

अनियमित धातु ।

२७ प्रथमपुरुष के एकवचन में आत्मनेपदी दीप् जन् पूर्य् और प्याय् धातुओं के परे इष्ट के स्थान में विकल्प से इता है । यथा, दीप्-अदीपि, अदीपिष्ट; जन्-अजनि, अजनिष्ट, ए-अपूरि, अपूरिष्ट, ताय्-अताधि, अतायिष्ट; प्याय् अप्यायि, प्यायिष्ट ।

२८ णकारान्त या नकारान्त तनादि गणीय धातुओं के ऐ आत्मनेपदो इष्ट और इष्ठाः के स्थान में विकल्प से यथाक्रम और याः हो जाता है । यथा, ऋष्-आर्णिष्ट-आर्त्त, आर्णिष्ठाः-आर्त्ताः । क्षिष्-अक्षिणिष्ट-अक्षित, अक्षेणिष्ठाः-अक्षिष्ठाः । घृष्-अर्णिष्ट-अचृत, अर्णिष्ठाः-अचृष्ठाः । तुष्-अर्णिष्ट-अतृत्, अर्णिष्ठाः अतृष्ठाः । तन्-अतनिष्ट-अतत, अतनिष्ठाः अतष्ठाः । ल्-अमनिष्ट-अमत, अमनिष्ठाः, अमष्ठाः । घन्-अघनिष्ट-अघत, अघनिष्ठाः अघष्ठाः । सन्-असनिष्ट-असात्, असनिष्ठाः-असाष्ठाः ।

Exercise—30.

1. Translate into Hindi:—श्रेतायुगे 'रामरावणयो युद्धमभूत् । सिद्धो राम मवोचत् । कोशलाधिपतिर् दशरथ एव मवधीत् । स तस्मै हृदि धनान्यदात् । इन्द्रस्य आज्ञया मेवा भूमि मसिषन् । नृपतेरादेशेन शिव् सोऽमुचत् । पर्वतात् शिला पृथिवी मचिस्तस्यत् । अत्र गोपा या सुभन् । स वृषभद्वयेन क्षेत्रमकार्षीत् । प्रभो राजया एतस्कार्यमकार्षुः । अनार्या साहाय्येन रामो रावणं व्यजेष्ट ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) राजा ने प्रजाओं से कर लिया । मन्त्रा ने सृष्टि बनायी । रात दिन घंटे का शब्द सुनता था । जानरों ने सेना में समुद्र बाँचा । मैं स्कूल से अपने घर गया । आज रात मैं उसको

बुद्ध काटका हुआ। बन्धक और भी जाग। राजकुमार ने स्वयं से बुद्ध का
मारा। मोरन ने सुनारी गुणक की। जब राजा ने उगरी का बुद्ध
पर बहुत बरगल हुआ।

(b) Ram gave him the book. One day he
came here and sat on. Yesterday I went to
and saw him. He learnt Sanskrit in six months. He studied
dramatics. He drank milk with his brother. They drink in
evening. I lived for the town in the childhood.

3. Correct:—पूर्व भोडस्वन् । ते सर्वत्र अनदिह । वाक्को भार्गव
अत्र बद्धो राजा भूत् । वयमेव् कार्ण मङ्गलिनम् । वरं तस्मै वन मु
नी जल मगन् । ने गृह मगमन । इन्द्रो वर्धनान् अनेद् ।

जिजन्त-प्रकरण ।

१ तत्प्रयोजको हेतुष । हेतुमति च---जब कोई किसी को किसी
कार्य के करने के लिये प्रेरण करता है, तो उस मर्त्य में धातु के
परे जिच् प्रत्यय लगता है। जिच् का इ रहता है। जिजन्त
धातु उभयपदो होता है। प्रत्येक धातु से जिजन्त बना सको
है।

२ घुरादि गणीय धातुओं के समान जिच् होने पर घातु
के अन्त्य स्वर तथा उपधा भकार की वृद्धि और उपधा उडु-
स्वर का गुण होता है। यथा, -धु + इ = धावि, -प्लु + इ =
प्लावि, कृ कारि, ह-हारि, चल-चालि, दह-दादि, पच्-पादि
घह-घादि इत्यादि। (२) लिप् + इ = लेवि, सिच् + इ = सेदि
मुच्-मोचि, दुह्-दोहि, दृश्-दृशि, मृप्-मपि इत्यादि।

N. B. धातु के परे जिच् प्रत्यय लगाने से जो जिजन्त धातु बन
है, वह स्वतंत्र धातु होता है। यथा, "धु + इ = धावि" यह 'धु' धातु
'धावि' धातु कहलाता है। इसमें धातु के सभी कार्य होते हैं।

१०. णिच् के र को निकाल कर चुरादि गणोय धातुओं के सदृश णिङन्त धातुओं के रूप बनाये जाते हैं । यथा, आवयति-ते ।

आचि to cause to hear

	लट्	लोट्
आवयति	आवयतः आवयन्ति	आवयतु आवयताम् आवयन्तु
आवयसि	आवयथः आवयथ	आवय आवयतम् आवयत
आवयामि	आवयावः आवयामः	आवयानि आवयाव आवयाम

	लङ्	चिधिलिङ्
अआवयत्	अआवयताम् अआवयन्	आवयेत् आवयेताम् आवयेयुः
अआवयथः	अआवयतम् अआवयत	आवयेः आवयेतम् आवयेत
अआवयाम्	अआवयाव अआवयाम	आवयेयम् आवयेव आवयेम

११. ३ मित्वा ह्रस्वः - णिच् होने पर अमन्त (अम + अन्त) लघा घटादि धातुओं के अन्त्य स्वर तथा उपधा-अकार की वृद्धि नहीं होती । यथा, अमन्त - गम्-गमयति, दम-दमयति, नम्-नमयति, रम्-रमयति, शम्-शमयति । घटादि - घट्-घटयति, ध्वय्-ध्वययति, जन्-जनयति, त्वर्-त्वरयति, हृप्-हृपयति, ज्वल्-ज्वलयति ।

१२. घटादि धातु - घट्, ध्वष्, प्रप्, स्वर, नर्, क्वर्, एष्ट, ए, अ, शा, कल्, मद्, प्यन्, मन्द्, रम्, जन और रम् । पर इल्, स्तल्, शर् तथा उपसर्गहीन जल्, स्तै, वन्, वम् और स्ता धातु विद्यन् से घटादि हैं ।

१३. ष णिच् होने पर जृ और जाणु धातुओं के अन्त्य स्वर का गुण होता है । यथा, जृ जरयति, जाणु-जागरयति ।

१४. इनस्रोडन्विक्रमोः दोषो यौ - णिच् होने पर इन का घाल और हुप् का दूप् होता है । यथा, हन्-धातयति, हुप्-दूषयति ।

विण की भ्रम्यप्रता के धर्मों में वृत् का विकल्प से पुत्रों दे । यथा, शोषः विणं वृत्तपति शोषयति वा ।

६ शरीरगतिः कः— निच् होने पर श्नु का श्नु और गुरु, गुरु होता है । यथा, शानपति । गुरुपति ।

७ स्व. शोध्यवगमम्, विष्णुशोधी— निच् होने पर विण से श्नु के इ का वृ और श्नु के उ का वा होता है । यथा, श्नु-शोषयति, शोषयति, श्नु-स्वप्नयति, श्नु-शोषयति ।

८ प्रोक्षोक्तुं क्तम्— निच् होने पर प्री और प्री के विकल्प से न होता है । यथा, प्री-प्रीणयति, प्राययति, धूनयति, धाययति ।

९ अग्निहोत्री कर्त्तव्याप्यता पुत्रो — निच् होने पर ह तथा भाकारान्त घातुधर्मों के परे व होता है और घातुधर्म गुण होता है । यथा, अ-अपेयति, ही-होपयति, स्वा-स्वापयति, व्या-व्यापयति, भा-भापयति ।

१० शोष्जीर्ण शो— निच् होने पर शो, अधि-इ और जि धातु भाकारान्त होते हैं, और उनके परे ए का आगम होता है । यथा शो-शोषयति, अधि-इ-अध्यापयति, जि-जापयति ।

१० पातेर्णो ह्यवन्त्यः— निच् होने पर पानार्थ पा घातु के परे ष और रक्षार्थ पा घातु के परे ल् होता है । यथा, पानार्थ पापयति, रक्षार्थ पालयति ।

११ निच् होने पर छो, शो, सो, पे, व्ये और हो के परे होता है; यथा, छापयति, शाययति, साययति, व्यापयति, ह्यापयति । कम्पनार्थ 'धे' घातु के परे ज् होता है; यथा, धाजयति ।

१२ निच् परे होने पर जम्, रम्, लम् और रष् का जम्, रम्, लम् और रन्ध होता है । यथा, जम्-

यति, रम्भयति, लम्भयति, रन्धयति ।

१३ भियो हेतुभये पुक्, नित्यं स्मयते, मोस्मोहेतुभये—यदि कर्त्ता स्वयं भय उत्पन्न करे तो णिच् होने से भी का भीष् और स्मि का स्माप् तथा आत्मनेपद् होता है । यथा, सर्पः शिशुं भीषयते; पुष्यः सर्पेण शिशुं भाषयति । ऐसे ही विस्मापयते, विस्मायति ।

१४ रजेणौ म्यारमणे नलोरो वक्तव्यः—णिच् होने पर मृगया अर्थ में रज्ज् के न् का लोप होता है । यथा, रज्जयति मृगान् व्याधः ।

पर मृगया (पशुवध) अर्थ छोड़ कर अन्य अर्थों में न् का लोप नहीं होता । यथा, रज्जयति मृगान् सृणदानेन; रज्जयति पक्षिणो व्याधः ।

१५ णौ गमिस्वोपने—णिच् होने पर इ धातु का गम् हो जाता है, यथा, गमयति । पर हानार्थ में नहीं होता; यथा, प्रति इ-प्रत्यायति ।

धावि-लुट्

धावि-लट्

धावितारः धावितारः धावितारः धावितारः धावितारः धावितारः
धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि
धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि
धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि धावितारि

आशोलिङ् ।

लुङ् ।

आप्त्वात् आप्त्वास्ताम् आप्त्वासुः अभावविष्यत् अभावविष्यताम् अभावविष्यन्
आप्त्वाः आप्त्वास्तम् आप्त्वास्तम् अभावविष्यः अभावविष्यतम् अभावविष्यत
आप्त्वास्तम् आप्त्वास्व आप्त्वास्म अभावविष्यम् अभावविष्य्याव अभावविष्य्याम्

लिट् ।

१० धावनेकाव आम् वक्तव्यः—लिट् में णिजन्त धातु के परे आम् लगा कर भू, कृ और अस् के लिट् का रूप जोड़ दिया जाता है । यथा, धावयाम्भूव, धावयाञ्चकार, धावयामास ।

चित्त की अप्रसन्नता के अर्थ में दुःख का विकल्प से दू-
 है। यथा, क्रोधः चित्तं दूषयति दोषयति वा।

६ शद्वेगती तः—जिच् होने पर सद् के श् और गुह,
 गूह् होता है। यथा, शातयति। गूहयति।

७ र्हः षोऽन्यतरस्याम्, विष्कुरोर्णौ—जिच् होने पर वि
 से र्ह् के ह् का ए और स्फुर के उ का भा होता है। व
 र्ह्-रोषयति; रोहयति; स्फुर-स्फारयति, स्फोरयति।

८ धूष्प्रोष्णोर्णुंश्चत्त्वः—जिच् होने पर प्री और पू के
 विकल्प से न होता है। यथा, प्री-प्रीणयति, प्राययति,
 धूनयति, धाययति।

९ ह् अतिहोन्धीरो वन्शीश्माप्यातां पुष्णौ — जिच् होने पर
 ह तथा भाकारान्त धातुओं के परे व होता है और धातु
 गुण होता है। यथा, मृ-मर्षयति, ही-होषयति, स्था-स्थाप
 ष्या-ष्यापयति, सा-सापयति।

१० कीर्त्तनीनां णौ—जिच् होने पर की, अधि-र और जि
 भाकारान्त होते हैं, और उनके परे ए का आगम होता
 यथा की-कापयति, अधि-र-अध्यापयति, जि-जापयति।

१० पातेर्णौ ह्यन्तायः—जिच् होने पर पानार्थ वा धातु
 परे ए और रक्षार्थ वा धातु के परे ल् होता है। यथा, प
 पापयति, रक्षार्थं तालयति।

११ जिच् होने पर खो, शो, सो, शे, ख्ये और ह्ये के प
 होता है, यथा, छापयति, शाययति, स्थापयति, वापय
 ष्यापयति, हापयति। कामनार्थ 'धि' धातु के परे ज् होता
 यथा, याजयति।

१२ जिच् परे होने पर जम्, रम्, लम् और रप्
 वधाक्रम जम्, रम्, लम् और रप् होता है। यथा, जम्



१८. लुङ् में णिजन्त धातु के परे अ होता है और अ होने से धातु का अभ्यस्त (द्वित्व) होता है तथा अभ्यन्त के सम कार्य्य इसमें होते हैं।

अ परे होने से णिजन्त धातु के पर भाग के अन्तस्थ अकार का लोप तथा पर भाग की उपधा के दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है *।

णिजन्त धातु के पूर्व भाग के लघुस्वर का दीर्घ होता है। यथा, सिच् + इ = सेचि-असीपिचत्, असीपिचनाम्, असीपिचन् । भिद् + इ = भेदि-अधीभिदत्, अधीभिदताम्, अधीभिदन् । मुच् + इ = मोचि-अमूमुचत्, अमूमुचताम्, अमूमुचन् ।

संयुक्ताक्षर परे हो तो पूर्व भाग के लघु स्वर का दीर्घ नहीं होता। यथा, निन्दि-अनिनिन्दत्, अनिनिन्दताम्, अनिनिन्दन्, शिशि-अशिशिक्षत्, अशिशिक्षताम्, अशिशिक्षन् ।

१९ लुङ् में णिजन्त धातु के पूर्वभाग में अकार का लोप होता है। यथा, चल् + इ = अचीचलत्, चाति-अपीपलत्, मज्-अधीमजत्, दासि-अजीदसत् ।

N. B. पर 'दु-पारि' में ई नहीं होता; यथा, अदरत् । लोप स्वरयुक्त धातुओं में विकल्प से होता है। यथा, वडाग् + इ = वडागि-अधीवडागन्, अषवकायन् ।

२ भागों का वर्ण गुण (दीर्घ) स्वरयुक्त हो तो ई नहीं होता। यथा,

* पर शासि, कृत्रि, कासि, क्रीडि, म्यादि, मेसि, वीकि, वाधि काचि, वीचि, शचि, शत्रि, वेति, रकादि और मेदि इत्यादि धातुओं के दीर्घ स्वर का लोप नहीं होता। यथा, शासि अलशासन्, वी के-अद्वीकीन् ।

= शासि-अशशासत्, भक्ष् + इ = भक्षि-अवभक्षत्, रक्ष् + इ = रक्षत्, लष् + इ = लक्षि-अल्लक्षत् ।

लुङ् में णिजन्त धातु के पूर्व भाग के अकार के प-वर्ण हो तो अ का इ होता है। यथा, व्यथ् + इ = विव्यथत्, क्षप् + इ = क्षपि-अजिज्ञपत् ।

स्मृत्वरप्रथमदस्त्वृष्टशाम्—पर स्मृ, स्तु और त्वर् धातुओं में होता है। यथा, स्मृ + इ = स्मारि-असस्मरत्, असस्म-असस्मरन् । स्तु+इ=स्तारि-अतस्तरत्, अतस्तरताम्, त्वर् + इ = त्वारि-अतत्वरत्, अतत्वरताम्, अत-

भाजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम्—णिजन्त भाज्, स्, भाप्, जीव्, मील्, पीड् इत्यादि के परभाग के दीर्घ अक्षर का विकल्प से ह्रस्व होता है। स्याजि-अविज्ञाजन् । दीपि-अदीदिपत्, अदिदीपत् । (3rd from) ।

कारोपध धातु णिजन्त हो तो लुङ् में विकल्प से वृत्त रहता है। यथा, वृत् + इ = वर्ति-अधीवृत्त् अव-लुङ् 3rd form) ।

स्वपि—लुङ् में णिजन्त स्वप् का स्वपि होता है। + इ = स्वपि-असूपुपत् ।

स्तेरित्—लुङ् में णिजन्त स्था के आ का इ होता है। + इ = स्थापि-अतिष्ठिपत् ।

अतिष्ठिपत् का विकल्प से इ होता है; यथा, अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपत् ।

अतिष्ठिपत्—लुङ् में पायि धातु का अभ्यस्त होता है। यथा, अपीप्यत् ।

सुह्-मिकीरिणा, सुह्-मिकीरिण्यति, सुह्-मिकीरिण्यति
 सुह्-मिकीरिणीन्, मागीरिह्-मिकीरिणीन् ।

१२. क्त्, तिक्त्, गुप्, कप् और मान् धातु के अर्थ (उर्मा अर्थ) में मन् होता है तथा कप् और मान् के पूर्णमास के म और भा के स्थान में ई होता है, यच्चिक्त्तनि विनिश्चयने, जुगुप्सने, रीमत्सने, मीमांसने ।

यङ्ग्य प्रकरण ।

१. धातोरुच्चारणे हकारेः क्रिया समन्वितारे षच्—एक स्वर धातु के प्रारम्भ में व्यञ्जन वर्ण हो तो पूर्वपुण्य और अर्थ में यङ् प्रत्यय होता है । यङ् का य रहता है और आत्मनेपदी होता है । यङ् भी स्वतन्त्र धातु कहलाता है लट्, लोट्, लृट् तथा विधिलिट् में भ्यादिगणीय धातु के रूप होता है ।

२. सन्वयोः—यङ् होने से धातु अभ्यस्त होता है अभ्यस्त (reduplication) के सय कार्य होते हैं ।

३. दीर्घोऽङ्कितः—यङ् परे होने से धातु के पूर्व भाग अकार का दीर्घ होता है । यथा, लप्-लालप्यते, सप्-सातप्यते लप्-लालप्यते, कन्दु-चाक्रन्त्यते ।

४. गुणो यङ्लुकाः—यङ् प्रत्ययान्त धातु के पूर्व भाग गुण होता है । यथा, शुच्-शुशुच्यते, रुद्-रुरुच्यते, दीप्-दीप्यते, सिच्-सेसिच्यते, लुप्-लोलुप्यते, मिद्-मेमिच्यते ।

५. जुगतोऽनुनासिकान्तस्य च—यङ् परे होने से नान्त, मान् और लान्त धातु के पूर्व भाग के स्वर वर्ण के परे अनुस्वार होता है । यथा, जन्-जज्जन्त्यते, मन्-मम्मन्त्यते, गम्-जंगम्यते, चक्रन्त्यते, चल-चञ्चल्यते, गल्-जंगल्यते ।

१. शीघ्रपक्ष च—ऋकारोपघ धातु के पूर्व भाग के परे री होता है । यथा, नृत्-नरीनृत्यते, रुप्-सरीसृप्यते, कृप्-चरो-कृष्यते ।

५. शीघ्रतः—ऋकारान्त धातु के ऋ का री होता है । यथा, ह-चेकीयते, सृ-सेखीयते ।

भनिरिक्त—दा-देशीयते, शा-जाशायते, भू-बोभूयते, ह-चेकीयते, मृ-वामउपते, डौक्-डोडौक्यते, धृष्-धेबिच्यते, स्वप्-सोपुष्यते, प्रा-जेप्रीयते, प्पा-पेप्रीयते, कट्-कलीकल्प्यते, क्षि-क्षेक्षीयते, क्षुम्-क्षोक्षुष्यते, जप्-जप्यते, मृस्-मरीमृश्यते, प्रक्ष्-परीपृक्ष्यते, प्रह्-जरीगृह्यते ।

लिट्, लुट्, लृट्, लुङ्, लृङ्, आशीर्लिङ् ।

८ वस्य इत्—लुट् इत्यादि विभक्तियों में व्यञ्जन वर्ण के परे एह् का और स्वरवर्ण के परे य के भ का लोप होता है । यथा, लिट्-शोशुचाम्भभूव, शोशुचामास, शोशुचाश्चक । लुट्-शोशुचिता, लृट्-शोशुचिष्यते, लुङ्-भशोशुचिष्ट, लृङ्-भशोशुचिष्यत, आशीर्लिङ्-शोशुचिषीष्ट । दा—लिट्-देशीयाश्चक, लुट्-देशीयिता, लृट्-देशीयिष्यते, लुङ्-भदेशीयिष्ट, लृङ्-भदेशीयिष्यत, आशीर्लिङ्-देशीयिषीष्ट ।

यङ् लुगन्त ।

१. यङोऽपि च—यङन्त धातु दो प्रकार के होते हैं । एक में ए लगाया जाता है (ऊपर देखो) और हमारे में ए नहीं लगाया जाता, पर और सब कार्य्य होते हैं । दूसरे प्रकार का लुङ् लुगन्त कहते हैं । यह धातु परस्मैपदी होता है । इसका लोप प्रायः षि में होता है । इसका रूप द्वारि गवीण के

ऐसा होता है। लट् के तीनों पुरुष के एकवचन, लृट् के और मध्यमपुरुष के एकवचन और लोट् के प्रथमपुरुष एकवचन में विकल्प से धातु के परे ई का आगम होता है। के आगम होने से उपधा के ह्रस्व स्वर का गुण नहीं होता। यथा, भू- (योमधीति) योमोति, योभूतः, योभुवति।

शुद्धन्त में—चञ्चलः, जङ्गमः, सरीसृपः, लेलिहानः का प्रयोग मिलता है।

नामधातु ।

१ शब्दों के परे कई प्रत्ययों के लगाने से धातु के उनका रूप होता है और उन्हें नामधातु कहते हैं। इनका म्धादिगणीय धातु के ऐसा होता है।

१-२ काम्यच्, क्यच् ।

२ काम्यच्, गुण आत्मनः क्यच्—यदि किसी विषय की आत्मसम्बन्धिनी (केवल अपनी आत्मा के लिये) हो तो विषय के सूचक शब्द के परे काम्यच् और क्यच् प्रत्यय आते हैं। काम्यच् का काम्य और क्यच् का य शेष रहता है। धातु परस्मैपदी होते हैं। यथा, काम्यच्-आत्मनः पुत्रमिच्छति। पुत्रकाम्यति he wishes for a son; आत्मनो धनमिच्छति। धनकाम्यति, आत्मनो यश इच्छति यशःकाम्यति। पुत्रकाम्यन्तु, मपुत्रकाम्यत्, पुत्रकाम्येत्, पुत्रकाम्यिना, पुत्रकाम्यिष्यति, मपुत्रकाम्यिष्यत्, पुत्रकाम्यात्, पुत्रकाम्याम्यन्तु। पुत्रकाम्यामास पुत्रकाम्याशुकार, मपुत्रकाम्यीन् ।

तिङन्त प्रकरण ।

३ क्यच्च, रोद्धुः—(१) क्यच् प्रत्यय परे होने से द्विभन्तस्थित अ का ई, इ उ का दीर्घ, ऋ का रो, ओ का और ओ का भाव् होता है। यथा, पुत्रमिच्छति पुत्री कथि-कथीयति, प्रभू-प्रभूयति। कर्तृ-कर्त्रीयति। गो-गो-गो-नायति।

N. B. अन्यसम्बन्धिनी इच्छा में कान्यच् और क्यच् प्रत्यय होते। यथा, 'पुत्रस्य पुत्रमिच्छति' में ये प्रत्यय नहीं लगेंगे।

(२) अशनायोदन्यधनायात्रुमुशारिषासागद्धु—बुभुक्षा अशने शब्द के परे और विपासा अर्थ में उदक शब्द क्यच् होता है। अशन के अन्य अ का आ तथा उदक उद् हो जाता है। यथा, अशनायति he wishes to eat, उदन्यति।

(३) नमो धरिविधिवः क्यच्—नमस्, तपस् और धरिविधिवः शब्दों के उत्तर 'करना' अर्थ में क्यच् होता है। यथा, करोति, नमस्यति; तपस्यति, धरिविधियति serves.

(४) उपाध्यायकारे—आचरण अर्थ में कर्मवाचक क्यच् के परे क्यच् होता है। यथा, शिष्यं पुत्रमिव आचरति, पुत्रमिव शिष्यम्। मृत्यं सखीयमिव आचरति, सखीयति मृत्यम्। शिष्यमिव आचरति, शिष्यति मित्रम् he treats the friend like an enemy, उपाध्यायं पितरमिव आचरति, पित्रमिव उपाध्यायम्।

३ क्यङ् ।

४ क्यङ् क्यङ् सलोपश्च—आचरण अर्थ में कर्तृवाचक क्यङ् के परे क्यङ् प्रत्यय होता है। क्यङ् का य रहता है और आरामनेपदी होता है।

(१) क्यङ् परे होने में शब्द के अन्तस्थित न् और म् का लोप होता है ।

(२) क्यङ् परे होने में शब्द के अन्तस्थित ह्रस्व न्वा ए दीर्घ होता है और पयम् के म् का विकल्प में लोप होता है । यथा, पुत्र इय आचरति, पुत्रायते, शिष्य इय आचरति शिष्यायते, हंस इय आचरति हंसायते; समा इय आचरति ससायते; पथ इय आचरति पथायते, पथस्यते । अन्तस्थित श् का री होता है । यथा, पित्रेय आचरति पित्रायते ।

(३) शब्दवैकल्यस्य अन्तस्थितेभ्यः करणे— 'करना' अर्थ में ईर, कलङ्, अघ्र, कण्व, मेघ इत्यादि शब्दों के परे क्यङ् होता है । यथा, शब्दं करोति शब्दायते; घैरायते, कलङ्गायते, अघ्रायते, कण्वायते, मेघायते ।

(४) सुखादिभ्यः कर्तृवेदानायाम् — अनुभव अर्थ में ई दुःख और कृच्छ्र शब्दों के परे क्यङ् प्रत्यय होता है । यथा, सुखमनुभवति सुखायते, दुःखायते, कृच्छ्रायते ।

(५) वाष्पोष्मभ्यामुद्गमने, केनाच्चेति वाच्यम् — उद्गमन अर्थ में वाष्प, केन, धूम और उष्मन् शब्दों के परे क्यङ् प्रत्यय होता है । यथा, वाष्पमुद्गमति वाष्पायते, केनायते, धूमायते, उष्मायते ।

(६) कर्मणो रोमन्वत्पोभ्यां वसिन्वरोः— उद्धारपूर्वक वस अर्थ में रोमन्वत् शब्द के परे क्यङ् होता है । यथा, उद्धारो वसिन्वरोः रोमन्वायते ।

(७) मृशादिभ्योभुव्यच्चेलोपरच हलः— भृश, शीघ्र, उपल, मृषण्डित, उत्सुक, सुमनस्, हुर्मनस्, उन्मनस् इत शब्दों के परे अभूततद्वाच (जो नहीं है उसका होता) अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है । यथा, भृशमभूततद्वाच भृशायते, शीघ्रमभूततद्वाच शीघ्रायते, उपलमभूततद्वाच उपलायते, मृषण्डितमभूततद्वाच मृषण्डितायते, उत्सुकमभूततद्वाच उत्सुकायते, सुमनसमभूततद्वाच सुमनसायते, हुर्मनसमभूततद्वाच हुर्मनसायते, उन्मनसमभूततद्वाच उन्मनसायते ।

होता है । यथा, धभृशो भृशो भवति भृशायते । मशीघ्रः शीघ्रो भवति शीघ्रायते । ऐसे ही चपलायते, मन्दायने, पण्डितायते, उत्सुकायते, सुमनायते, दुर्मनायते, उन्मनायते ।

४. क्विप् ।

१. भाचरण अर्थ में कर्तृपाचक उपमान के परे क्विप् प्रत्यय होता है । क्विप् में कुल नहीं रहता और यह परामैवद् होता है । यथा, पुत्र इव भाचरति पुत्रति । शिष्य इव भाचरति शिष्यति ।

नकारान्त शब्दों की उपधा के अकार का दीर्घ तथा शब्दों के अन्तस्थित स्वर का गुण होता है । यथा, राजा इव भाचरति राजानति । सखि-सखा इव भाचरति सखयति । कवि-कवयति, बन्धु-बन्धयति, गुरु-गुरयति, पितृ-पितरति, मातृ-मातरति ।

५. णिच् ।

१. तत्परोति तदाचष्टे—'करना' अर्थ में शब्द के परे णिच् प्रत्यय होता है । णिजन्त के प्रायः सब विधान इसमें होते हैं । यथा, प्रश्नं करोति प्रश्नयति । शब्दं करोति शब्दयति ।

(१) णिच् होने से पूषु, मृदु और दृढ शब्दों के अकार और अन्त्य स्वर का लोप होता है । यथा, पूषुं करोति, प्रश्नयति, स्रद्यति, द्रद्यति ।

(२) णिच् होने से रधुल का रधय्, दूर का दय्, अन्तिक का नेदु और बहुल का बह् होता है । यथा, रधुलं करोति रधययति । दूरं करोति दययति । अन्तिकं करोति नेदयति । बहुलं करोति बहययति ।

Exercise—31.

1. Give one word for :— (a) पानुमिष्यति । दानुमिष्यति ।
रीरितुमिष्यति । दानुमिष्यति । भूमं कर्तुम् । अविशतेन एतं ।
वारं वारं चक्षति । भाष्यन्ती चक्षमिष्यति । शिरमिष्यन्ती ।
पिता इव भाष्यति । कस्यं करोति । दुःखं मनुमवति । एव सुवर्तं ।
अथपन्नः चक्ष्मी मवति । गुरुशिरं भाष्यति । हर्षं करोति ।

(b) He causes to do. He causes to go. He causes to see. He causes to grow. He causes to drink. He wishes to write. He wishes to dance. He wishes to conceal. He gives repeatedly. He wishes for fame for himself. He treats like a friend.

2 Translate into Hindi:— स मां व्याघ्रमेकं मर्दन्वत् ।
बालको कृपस्य जलं पाययति । राज्ञा धर्मोऽपि पृथिवीमपालयत् । स रोगं
कल्याणाय निजसम्बन्धं तस्मै अर्पयति । बालकः पुस्तकं विपठिष्यति ।
गङ्गाया जलं पिपासति । पुत्रस्य चरित्रेण पिता दुःखायते । बर्षानु
जलं फेनायते । स अपि निविष्टे बने तपस्यति । राशौ दीपा देदीप्यते ।

3 Translate into Sanskrit:— (a) पण्डित लोगों को हम
सुनाते हैं । मुझे राजा का दर्शन कराओ । राम श्याम से भाव पत्र
है । दूत राजा को सब बातें जनाता है । माता पुत्र को जगती है । वह
घर जाने की इच्छा करता है । वह रोग के कारण मरने की इच्छा
करता है । रोगी की दवा करता है । वह बार बार घर जाता है । वह बा बा
सेत सींचता है । वह धन की इच्छा करता है ।

(b) Mother fed her children. He makes him drink
water. Let him wish to kill the tiger. He treats
his elder brother as father. He wishes to cause to
know. They behave like friend. They two wish to
take fruits. The good boy reads his book again
and again.

4 Correct:—स जलं पपासति । राजा शूधिर्षी पाययति । सर्पः स्थिरं भाययति । बालकः सुस्वप्सति । स घनामाप्सति । बालका रुहन्ते । बालकं ददयति । हृदयं ददयति । शिष्यो गुरुं पप्रच्छसति । राजा यत्रन् जिजीवति ।

परस्मैपद-विधान ।

१ ध्याच् परिभ्योरमः—यि आ, परि पूर्वक रम् धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, विरमति stop, आरमति rests, रिरमति is pleased.

उगच्छ-उप पूर्वक रम् धातु में विकल्प से परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, उपरमति, उपरमते desists.

२ अनुराभ्यां ह्वक्—अनु परा, पूर्वक ह् (उभयपदी) धातु परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, अनुकरोति imitates पराकरोति rejects.

३ अभिप्रत्ययिभ्यः क्षिप्—अभि, प्रति, अति पूर्वक क्षिप् (उभयपदी) धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, अभिक्षिपति throws on, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति ।

४ प्रादहः—प्र पूर्वक वह् (उभयपदी) धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, प्रवहति flows.

५ भ्रियतेर्ह्वक् लिटोश्च—लिट्, लुट्, लृट्, लृङ् में मृ धातु में परस्मैपद प्रत्यय होता है । यथा, ममार, मर्त्ता, मरिष्यति, मरिष्यत् ।

६ कुपतुभनशक्नेषु हु भ्योणेः—जिजन्त कुप्, युष्, नश्, न्, अध्ययनार्थं इ, मृ, ऋ, और ह् धातुओं में परस्मैपद

प्रत्यय होगा है। यथा, घोषयति, घोषयति, माशयति, जगर्ति, शब्दापयति, प्राषयति covers over, द्राषयति, श्राषयति।

(७) निगरगन्तव्यार्थेभ्यश्च—निजन्त भोजनार्थे और कर्त्तव्यार्थे धातु में परस्मैपद् प्रत्यय होता है। यथा, भोजयति, आशयति, चालयति, कम्पयति।

(८) अगाधकर्मकाचित्तान् कर्त्तव्यान्—अनिजन्त मयव्यां यदि कोई प्राणी (प्राणधारी) कर्त्ता हो तो सकर्मक चित्त धातु में परस्मैपद् प्रत्यय होता है। यथा, पुत्रः शैते; the son sleeps—माता पुत्रं शाययति the mother makes the son sleep; शिशुः जागर्ति—माता शिशुं जागरयति, दत्तं क्रीडति—गोपो वत्सं क्रीडयति।

प्राणी कर्त्ता न हो तो ऐसा नहीं होता। यथा, जलं शुषयति—जलं शुषयति शुषयते वा = the sun makes the water dry up.

आत्मनेपद विधान ।

१. निविशः—नि पूर्वक विश् धातु में आत्मनेपद प्रत्या होता है। यथा, निविशते enters in.

२. परिव्यवेभ्यः क्रियः—परि, वि, मय पूर्वक क्री (उमयवर्षी) धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, परिक्रीणीते, मय क्रीणीते buys, विक्रीणीते sells.

३. विपराभ्यां जेः—वि, परा पूर्वक जि धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, विजयते, पराजयते conquers, defeats.

५. आङो दोहनास्य विहरणे—आङ् पूर्वक दा (उभयपदी)
 ३ में विहरण (taking) अर्थ में आत्मनेपद प्रत्यय होता
 रथा, विद्यामादत्ते, अह्यमादत्ते ।

विस्तार अर्थ में नहीं होता । यथा, नदी फुल्लं ध्याददाति
 :nd's, वैद्यो विस्फोटकं (विस्फोटड़ा) ध्याददाति ।

६. कीडोऽनुसम्परिभ्यश्च—आ, अनु, परि पूर्वक कीड् धातु
 आत्मनेपद प्रत्यय होता है । यथा, आकीडते, अनुकीडते,
 पीडते plays.

मोतुहजने—सम् पूर्वक कीड् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय
 है । यथा, संकीडते plays. पर फुजन (शब्द करना)
 नहीं होता । यथा, संकीडति चक्रं = wheel creaks,
 न्ति विहङ्गमाः = the birds are cooing.

अपस्वित्तुपाच्छतुनिष्वालेक्षणे, सुट्—पक्षी तथा चतुष्पद जन्तु
 ०, तथा हर्षप्रकाश, आहारान्वेषण, वासप्रहजेच्छा अर्थ
 जाय तो अप पूर्वक कृ धातु में आत्मनेपद प्रत्यय
 और धातु के पहले सकार का आगम होता है । यथा,
 रते वृषमः = the ox throws up the earth with
 pleasure अपस्विकरते कुक्कुटः = the cock searches the
 earth in search of food. अपस्विकरते सारमेयः = the
 dog searches the earth to make a place to lie
 down in.

७. आङिनु प्रच्छोः—आ पूर्वक पृच्छ् धातु में आत्मनेपद
 प्रत्यय होता है । यथा, वन्धून् आपृच्छते = asks his friends.

८. समनप्रतिष्ठाः स्यः—सम्, मय, प्र, नि पूर्वक स्या धातु आत्मनेपदी होता है । यथा, सन्तिष्ठने = stays with, अतिष्ठने = waits, प्रतिष्ठने = sets forth, विनिष्ठने = stands apart.

(७) उरोऽनूर्ध्वञ्छ्र्णि—उन् पूर्वक स्या धातु आत्मनेपदी होता है । यथा, उत्तिष्ठने । पर उत्थान अर्थ में नहीं है, यथा, आसनादुत्तिष्ठति = rises from his seat.

(८) सा देवपूजासंगतिकरणमिग्रहरोषविधिषति वाच्यन्—देवपूजा, मिलन, मैत्रीकरण अर्थ में उप पूर्वक स्या धातु में आत्मनेपद् प्रत्यय होता है । यथा, देवपूजा-विष्णुमुपतिष्ठने (worships) कृष्यः । मिलन-यमुना गङ्गामुपतिष्ठने (makes friendship with) साधुः ।

(९) वा लिप्सायाम्—लाभेच्छा अर्थयोध हो तो उप पूर्वक स्या धातु विकल्प से आत्मनेपद् प्रत्यय होता है । यथा, धनितमुपतिष्ठते उपतिष्ठति (धनलाभेच्छया धनिसर्माय गच्छतीत्यर्थः) मिश्रुः ।

(१०) अकर्मकाच्च—उप पूर्वक अकर्मक स्या धातु में आत्मनेपद् प्रत्यय होता है । यथा, भोजनकाल उपतिष्ठते । परन्तु सकर्मक होने पर ऐसा नहीं होता । यथा, शिष्यी गुरुमुपतिष्ठति ।

९. आहो यमहनः—आ पूर्वक अकर्मक हन् और यम् धातु में आत्मनेपद् प्रत्यय होता है । यथा, आहते, आयच्छते । परन्तु सकर्मक में नहीं होता । यथा, आयच्छति कृपात्रगुह्यम् ।

गहन्ति शत्रुम् । आत्म-अवयव कर्म हो तो आत्मनेपद होता । यथा, आघच्छते (strikes) पाणिमात्मीयम् । आहते strikes at) स्वीयं शिरः ।

१०. समौगम्यच्छिभ्याम्—सम् पूर्व्यक अकर्मक गम्, ध्रु और घातु में आत्मनेपद होता है । यथा, सङ्गच्छते, संगृणोति स्वम्, समाच्छेत् मित्रम् । परन्तु सकर्मक में नहीं होता । १, संगच्छति मित्रम्, समाच्छेत् मित्रम् ।

११. स्पर्शवामाह् इति—स्पर्श (challenging) अर्थ में आह् इति धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है । यथा, महामाह् (challenges) मल्लः । स्पर्श रहित अर्थ में नहीं होता । १, विता पुत्रमाह्वयति (calls) ।

१२. वृद्धिर्गतायनेपुत्रमः—वृद्धि, उत्साह और अप्रतिबद्धि अर्थ समझा जाय तो वाम् (उभयपदी) धातु से परे आत्मनेपद प्रत्यय होता है । यथा, सतां धीः व्रमते, यद्वर्तते इत्यर्थः । अघ्यपनाय व्रमते शिष्यः, उत्सदते इत्यर्थः । शास्त्रेषु व्रमते बुद्धिः न प्रतिहन्यते इत्यर्थः ।

परा और उप मित्र अन्य उपसर्ग में नहीं होता ।

(क) चेः पार्विहरणे—पद्-विक्षेप अर्थ में चि पूर्व्यक वाम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है । यथा, साधु विव्रमते (walking)

(घ) काठ उदगमने—ग्रह गहनादि उच्यतेः पदार्थों का पूर्व्यगमन अर्थ समझा जाय तो आ पूर्व्यक वाम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है, यथा, भावव्रमते (rises) सूर्यः ।

अन्य पदार्थों के उदुर्ध्वगमन अर्थ में नहीं होता । यथा, माक्रामति (rises) धूमजालम् ।

(ग) प्रोषाभ्यां समर्थाभ्याम्—आरम्भ अर्थ में प्र और उ पूर्वक क्रम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है । यथा, प्रवर्त्तते (commences) भोक्तुम्, उपक्रमते भोक्तुम् ।

(घ) अनुपसर्गाद्वा—उपसर्गहीन क्रम् धातु में विकल्प से आत्मनेपद होता है । यथा, क्रामति ।

१३ अपक्वे ज्ञः—अपहव (अस्वीकार) अर्थ में ज्ञा धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, शतमपजानीते (denies) ।

(ङ) सम्प्रतिभ्यामनाध्याने—सम्, प्रति पूर्वक ज्ञा धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, शतं संजानीते, प्रतिजानीते (promises) । स्मरण अर्थ में नहीं होता । यथा, पुत्रं संजानीति स्मरतीत्यर्थः ।

(च) अनुपसर्गाद्वा—उपसर्गहीन ज्ञा धातु में विकल्प से आत्मनेपद होता है । यथा, जानीते, जानाति ।

१४ रामः प्रतिज्ञाने—प्रतिज्ञा अर्थ में सम् पूर्वक ज्ञा धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, सङ्गिरते (Promises) ।

१५ उद्वरः सङ्घर्षात्—उत पूर्वक सङ्घर्षक उर् धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, गुरुयजनमुद्वरते (disobey) । अङ्घर्षक में नहीं होता । यथा, उद्वरति (rises) धूमः ।

(ष) गमस्त्वनीवावुचान्—तूर्नीयात् पद के योग से उर् पूर्वक उर् धातु में आत्मनेपद होता है । यथा, गमस्त्वनीवावुचान् ।

१५ वषाद्यमः स्वरणे—विवाह अर्थ हो तो उपपूर्वक यम् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, सीतामुपवच्छते (marries) ।

१७ प्रोषाभ्यां युजेरपक्षपात्रेषु—उपसर्ग पूर्वक युज् धातु आत्मनेपद होता है। यथा, प्रयुङ्क्ते, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते, विनियुङ्क्ते । निर्, डूर्, सम् पूर्वक युज् में नहीं होता। यथा, नियुंनक्ति, डुयुंनक्ति ।

१८ भुजोऽनवने—रक्षाभिन्न अर्थ में भुज् धातु में आत्मनेपद होता है; यथा, अन्नं भुङ्क्ते । रक्षार्थ में—महीं भुनक्ति राजा ।

१९ स्वरितङ्गिः कर्त्रमिप्राये क्रियाफले—यदि कर्त्ता अपने लिये क्या का अनुष्ठान करे तो उभयपदी धातुओं में आत्मनेपद होता है। यथा, यजते sacrifices for his own benefit. यजति sacrifices for the benefit of some other person.

२० शाश्वत्पदार्थां सनः—सनन्त ज्ञा, ध्रु, स्मृ और दृश् धातु में आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यथा, धर्मं जिज्ञासते, गुरुं शुश्रूषते, नष्टं सुस्मृष्यते, चन्द्रं दिदृक्षते ।

(क) नानोर्षः—अनुपूर्वक सनन्त ज्ञा धातु में आत्मनेपद नहीं होता। यथा, अनुजिज्ञासति ।

(ख) प्रत्याष्टभ्यां ध्रुवः—प्रति, आ पूर्वक ध्रु धातु में आत्मनेपद नहीं होता। यथा, प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति ।

२१ उद्भिभ्यां तपः । स्वाङ्गकर्मकाश्च इति वक्तव्यम्—अकर्मक

अथवा स्याद्गुणकर्मक होने पर उन् और वि पूर्वक हा घातु में आत्मनेपद होता है। यथा, उग्नपने (shines hot) स्वर्ण-
वितपने (warms) पाणिम्। अन्यत्र सुवर्णमुत्तपति (beats)।

२२ मागनोपसम्मापसानयत्नविमस्तुगन्धेषु वरु—भामत (proficiency), उपसम्माप (pacifying), भान, यत्न, विन्ति (difference of opinion), उपमन्त्रण (flattering) अर्थ में षड् घातु में आत्मनेपद होता है। यथा, मनुः स्वर्णं वदते (shows brilliance), क्षेत्रे वदते (toils), ब्रह्म विवदन्ते (quarrels), उपवदते मिश्रुकः, युद्धे वदते।

(क) अनोरकर्मकात्—अनु पूर्वक अकर्मक षड् घातु आत्मनेपद होता है। यथा, शिष्यः गुरु मनुवदते (imitates)

(ख) विभाषा विप्रलापे—धादानुवाद् अर्थ में वि और पूर्वक षड् घातु में विकरर से आत्मनेपद होता है। यथा विप्रवदन्ते, विप्रवदन्ति यैधाः।

(ग) षड् घातु के पहले 'उप' उपसर्ग रहने से प्रतीया उपसान्त्वन अर्थ में, 'वि' रहने से विवाद अर्थ में, 'सम् + प्र' रहने से व्यक्तसद्बोक्ति में आत्मनेपद होता है। यथा; गुरुः शिष्यं मुपवदते, परस्परं विवदमानानामपि धर्मशास्त्राणाम्। पते ब्राह्मणा अत्र सम्प्रवदन्ते।

२३. गन्धनाशक्षेपणयेवनसाहसिष्यप्रतियत्रप्रकथनोपयोगेषु कृक—
गन्धन-injury, अशक्षेपण.censure, overcoming; सेवक, साहसिष्य, प्रतियत्र, प्रकथन, उपयोग application, अर्थ में क घातु में आत्मनेपद होता है। यथा, शश्वत्तं कुरुहती—does

injury to, श्येनो वर्तिकां उदाकुरुते censures, हरि मुपकुरुते-
serves, पान्थं प्रकुरुते outrages, इन्धन मग्नस्योपसुकुरुते
prepares, गाथाः प्रकुरुते recites, शतं प्रकुरुते employs.

(क) अघेःशस्त्रे—क्षमा और अग्निभव अर्थ में अधि पूर्वक
कृ घातु में आत्मनेपद होता है । यथा, शत्रु मधिकरोति-
forgives or overpowers.

(ख) वेः शब्दकर्मणः; अकर्मकाच—शब्द उच्चारण अर्थ में
वि पूर्वक कृ घातु में आत्मनेपद होता है । यथा, स्वरान्
विकुरुते produces. अन्यत्र चित्तं विकरोति क्रोधः । अक-
र्मक वि पूर्वक कृ घातु में आत्मनेपद होता है । यथा, छात्रा
विकुर्वन्ते (विकारं लभन्ते) ।

१४ भावकर्मणोः—भावयत्य और कर्मवाच्य में घातुओं
में आत्मनेपद होता है । यथा, बालकेन गरयते, शिशुना धन्त्रो
इयते ।

१५ आशंतेराशंतायाम्—आशा अर्थ में आ पूर्वक शंस् घातु
में आत्मनेपद होता है । यथा, विजयाय आशंसि ।

Exercise—32

1. Form sentences to illustrate the distinction in meaning
between:—आदृष्टे & आदृशति, संकीदते & संकीदति, आह्वयते &
आह्वयति, विक्रमते & विक्रमति, भवजानीते & प्रतिजानीते, संजानाति &
संजानीते, संगच्छते & संगच्छति, उपतिष्ठते & उपतिष्ठति, उत्तिष्ठते & उत्ति-

इति, मुनिः & मुनिः, भीषणे & भाषयति and वरुणे & वरुणि।

2 Translate into Hindi:—श्याम्ययनात् अङ्गो विरमते । य
गुरोर्वाक्येन सन्निहते । यमुना गङ्गामुपतिष्ठते । सा आहते सर्वं हि ।
नृपति पृथिवीमेव केवलं बुभुजे । हितान्न वः संशुभे स किञ्चन । मं
पन्थाः राजपथं मुपतिष्ठते । आकाशमाकाशमनि धूमजालम् । नदी इत्थं मरु
दाति । प्रबलेन वेगेन गङ्गा प्रवहति ।

3. Translate into Sanskrit:—(a) उमने राम को अपने में विरुद्ध
किया । राजा प्रजाओं को पालता है । राम ने बहुत दिन तक पृथिवी जीत
किया । वह अपने मित्रों के साथ खेलता है । यमुना गङ्गा से मिलती है ।
सड़के वन में फल एकत्र करने हैं । उमने शत्रु की राजधानी पर अधिकार
कर लिया । वह चन्द्रमा को देखने की इच्छा करता है ।

(b) He sets out for the forest. He comes at the time of
dinner. The birds are cooing. He defeated his enemies. Po
men suffer hundreds of miseries. My heart is touch
with anxiety. The servant will come back within a week.

4. Correct:— पठनात् विरमते । दानं पराकुस्ते सः । हिमवतो वा
प्रवहते । सर्वे लोका मरिष्यन्ते । माता पुत्रं शाययते । स गृहं निविशति
राजा शत्रून् विजयति । व्याघ्रो मुखं व्याददते । संकटते चक्रम् । आसन
दुषिष्ठते । साधुमुपतिष्ठति साधुः । अरवेन सञ्चरति । शब्दं संगिरति । यु
शुभ्रपति ।

कर्मवाच्य और भाववाच्य ।

१. भावकर्मणोः—कर्मवाच्य और भाववाच्य में धनु

भात्मनेपदी होता है और उसमें केवल भात्मनेपद् प्रत्यय होता है ।

N. B. कर्मवाच्य के कर्मपद में जो पुरुष और जो वचन होते हैं क्रिया में भी वही पुरुष और वही वचन होते हैं अर्थात् कर्मपद में उत्तम पुरुष हो तो क्रिया में भी उत्तम पुरुष होता है; ऐसे ही मध्यम पुरुष हो तो क्रिया में भी मध्यम पुरुष तथा प्रथम पुरुष हो तो क्रिया में भी प्रथम पुरुष होता है । इसी प्रकार कर्मपद में एकवचन हो तो क्रिया में भी एकवचन, द्विवचन हो तो क्रिया में भी द्विवचन तथा बहुवचन हो तो क्रिया में भी बहुवचन होता है ।

२ भाववाच्य की क्रिया में केवल प्रथम पुरुष एकवचन होता है ।

३ इन वाच्यों के कर्मपद में तृतीया और कर्मपद में प्रथमा विभक्ति होती है ।

२ सार्वधातुके यद्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में लट्, लोट्, लृङ् और विधिलिङ् में सब धातुओं के परे य लगाया जाता है । यथा, गम्-गम्यते, मिद्-मिचते, पठ्-पठ्यते, छिद्-छिद्यते, त्यज्-त्यज्यते, शुच्-शुच्यते, स्पृश्-स्पृश्यते, भुम्-भुज्यते, लम्-लभ्यते, खज्-खज्यते, नी-नीयते, स्ना-स्नायते, हन्-हन्यते, सेव्-सेव्यते, क्षा-क्षायते, लुर्-लुप्यते ।

(क) य के भाने से धातु के अन्तस्थित ह्रस्व इ और उ का दीर्घ, ऋ का रि, संयुक्त वर्ण युक्त ऋ तथा ॠ धातु का गुण और ऋ का ईर् वा (पवर्ण से युक्त होने से) ऊर् हो हो जाता है । यथा, जि-जीयते, धु-धूयते, सि-सीयते, स्तु-स्तूपते, धि-धीयते, क्षि-क्षीयते, ह्र-ह्रियते, भृ-भ्रियते, ह्र-ह्रियते, मृ-म्रियते । स्मृ-स्मर्यते, स्तृ-स्तर्यते, ऋ-अर्यते, ऋ-र्यते, कृ-कीर्यते, पू-पूर्यते ।

(ख) य भाने से दा, घा, भा, गा, हा, पा (पानार्थ) और

क्या धातु के भा का ई होता है । यथा, वीयते, वीयते, वीयते, वीयते, वीयते, वीयते, वीयते, वीयते ।

(ग) य भाने से यच्, यञ्, यप्, यस्, यद् और लृच् धातु के य का उ हो जाता है । यथा, उच्यते, उच्यते, उच्यते, उच्यते, उच्यते, उच्यते, उच्यते, उच्यते ।

(घ) य भाने से प्रह् का गृह्, प्रच्छ् का पूच्छ्, व्यष् का विष्, शास् का शिष्, ह्ने का ह्, शी का शष्, जन् का जष् और खन् का खन् या खा हो जाता है । यथा, गृह्यते, पूच्छ्यते, विश्यते, शिष्यते, ह्यते, शष्यते, जायते, खन्यते या खायते ।

(च) धातु के उपधा नकार का लोप होता है । यथा, क्लृ-चक्ष्यते, प्रन्य्-प्रच्यते ।

(छ) य भाने से णिजन्त धातु के इ का लोप होता है । यथा, कारि-कार्यते, स्थापि-स्थाप्यते, दूषि-दूष्यते, दृशि-दृश्यते ।

३ लृच् इत्यादि चार लकारों को छोड़ कर अन्य लकारों य नहीं लगाया जाता । पर परस्मैपद प्रत्यय (यदि हो) चदले आत्मनेपद प्रत्यय लगाते हैं । यथा, सेव्-लिट्-सिने सिपेवाते, सिपेचिरे । लुट्-सेविता, सेवितारौ, सेवितात् लृट्-सेविष्यते, सेविष्येते, सेविष्यन्ते । लृङ्-असेविष्यत्, असेविष्येताम्, असेविष्यन्त । आशीर्लिङ्-सेविषीष्ट, सेविषीषस्ताम्, सेविषीरन् ।

भुञ्-लिट्-बुभुजे । लुट्-भोक्ता । लृट्-भोक्ष्यते । कृञ्-अभोक्ष्यत् । आशीर्लिङ्-भुक्षीष्ट ।

४ लृट्, लृङ्, लृङ्, आशीर्लिङ्, में स्वरान्त, प्रह्, इ और हन् धातुओं के परे विकल्प से इ होता है ।

(क) इ परे रहने से धातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा अक्षर की ह्रास होती है । यथा, भु-लिट्-बुभुजे, लुट्-भोक्ता, भोक्ष्यते, लृट्-भोक्ष्यते

प्राविष्यते; लृच्-अधोष्यत, अधप्राविष्यत; आशीलिङ्-प्रहीषीष्ट, प्राविष्यते
 प्रह्-प्रहि, लृच्-प्रहीता, प्राहिता; लृच्-प्रहीष्यते, प्राविष्यते
 लृच्-अप्रहिष्यत, अप्राहिष्यत; आशीलिङ्-प्रहीषीष्ट, प्राहिषीष्ट ।

(ब) इ परे रहने से उपधा लघुस्वर का गुण होता है । यथा
 दृश्ये, दृष्य-दशिता, दृश्यते-दृशिष्यते, अदृश्यत-अदृशिष्यत, दृशीष्ट-दृशिष्यते

(ग) इ परे रहने से इत् धातु के इ के स्थान में ष होता है
 अने, हन्ता-पानिता, हनिष्यते-पानिष्यते, अहनिष्यत-अपानिष्यत,
 शीष्ट-पानिषीष्ट ।

(घ) इ परे रहने से आकारान्त धातु के परे य होता है । यथा
 दाता-दायिता, दास्यते-दायिष्यते, अदास्यत-अदायिष्यत, दासीष्ट-दायिष्यते

५ कर्मवाच्य और भाववाच्य में लृङ् के त के स्थान
 होता है । इ परे रहने से अन्त्य स्वर और उपधा अकार
 वृद्धि होती है तथा उपधा-लघुस्वर का गुण होता है ।
 पठ्-अधादि, अधादिषाताम्, अधदिषत । सिष्-असेवि,
 विषाताम्, असेविषत । भज्-अमाजि, अमाजाताम्, अम
 मन्-अमानि, अमंसाताम्, अमंसत ।

इ स्वान्त प्रह्, दृश् और हन् धातु में लृङ् के त-
 विभक्ति में लृट् इत्यादि के अनुसार कर्त्तव्य होता है ।
 धु-अधाधि, अधोषाताम्, अधाधिषाताम्, अधोषत, अध
 षत । प्रह्-अप्राहि, अप्रहीषाताम्, अप्राहिषाताम्, अप्रह
 अप्राहिषत । दृश्-अदशि, अदृशाताम्-अदशिषाताम्, अदृ
 अदशिषत । हन्-अवधि, अधानि, अधधिषाताम्, अहंसा
 अधानिषाताम्, अधधिषत, अहंसत, अधानिषत । दा-प्र
 अदिषाताम्, अदायिषाताम्, अदिषत, अदायिषत ।

Exercise — 33

1. Change the voice of:—वाञ्छकी स्वार्थ परपति ।

के 'परे लृट्' (Periphrastic future) और लृट् (future) होता है । यथा, गम्-गन्ता, गमिष्यति । भू-भविता भविष्यति । दृश्-दृष्टा, दृक्ष्यति । स्या-स्याता, स्यास्यात् ।

४ लृट्-स्मे—स्म शब्द के योग में मूर्तकाल में लृट् होता है । यथा, स मदुष्टमागच्छतिस्म (यह मेरे घर आया था), स्याकरण मर्षीते स्म (उसने व्याकरण पढ़ा था) ।

५ माञि लृष्—मा शब्द के योग में सब काल में विकल्प से लृष् होता है । यथा, मा भूत् दुःखम्, मा भवतु दुःखम्, मा भविष्यति दुःखम् ।

६ स्मोत्ते लृष् च—मास्म शब्द के योग में सर्वकाल में लृष् और लृष् होता है । यथा, मास्म भवत् शोकः, मास्म भूत् शोकः ।

७ यावत्पुरानिपातयोर्लृट्—यावत् और पुरा शब्द के योग में भविष्यत्काल में लृट् होता है । यथा, स यावत् आगच्छति तावत् अहं गमिष्यामि (जय वह आवेगा तब मैं जाऊँगा) ।

८ किभाषा कदावशोः—कदा और कर्हि शब्दों के योग में भविष्यत् काल में विकल्प से लृट् होता है । यथा, कदा दशामि (दास्यामि) न जाने (कब हूँगा नहीं जानता) ।

९ किभाषा कथमि लिष् च—कथं शब्द के योग में सब काल में विकल्प से लृट् और विधिलिष् होता है । यथा, कथं गच्छसि, कथं गच्छेः ।

१० यदावशोर्लिष्—यदा और यदि शब्द के योग में भविष्यत् काल में विधिलिष् होता है । यथा, वक्ष्यामि यदा स आगच्छेत्, दास्यामि यदि स आगच्छेत् ।

११ आशीषि लिष् लोटौ—आशीर्वाद (blessing) अर्थ में धातु के उत्तर आशीर्लिष् (Benedictive mood) और लोट्

(imperative) होता है। यथा, भार्यालिङ् त्व सुखं भवतु-
सञ्जनभिरं जीभ्याम् । लोट्-तय सुखं भवतु, सञ्जनभिरं भवतु।

१२ कुशलेऽनन्तकथित्वात्तरणम्—भागीर्वाद् मर्षं मे लोट्
तु भौर हि के स्यात् मे विकल्प सं तान् होता है। यथा, ल
कुशलं भवतात्, तय कुशलं भवतु। ईश मां पाठान्, ईशं
पाहि।

१३ विधिनिसन्त्रणामन्त्रणाधीष्टतन्त्रणप्रार्थनेषु लिङ्—विधि मर्षं मे
घातु के उत्तर विधिलिङ् (Potential mood) होता है।
विधि दो प्रकार की है, प्रवर्त्तना और निवर्त्तना। सत्कर्म
प्रवृत्ति करने को प्रवर्त्तना और असत्कर्म से भ्रमण करने को
निवर्त्तना कहते हैं। यथा, प्रवर्त्तना-सत्यं पदेत्, प्रियं प्रूषत्,
गुरुनम्यर्षयेत्, दाने दयां कुप्यात्, क्षुधिताय अन्नं दत्तु,
निवर्त्तना-नानृतं पदेत्, गुहं न निन्देत्, परस्वं नापरेत्, शोचं
यत्नेन वज्जयेत्, महङ्कारं परिहरेत्, आलस्यं परित्यजेत्।

N. B. अनुज्ञा (command), नियोग (permission),
निमन्त्रण (invitation), अनुरोध (entreaty, request),
प्रार्थना (Prayer) और जिज्ञासा (asking, question) मर्षं
विधिलिङ् और लोट् होता है। यथा, अनुज्ञा-गच्छतु भवान् । नियोग-गच्छ
भवान् । निमन्त्रण-इह भुञ्जीत भवान् । अनुरोध-इह शयीत भवान् । प्रार्थ-
मत्पुत्रमध्यापयेद्भवान् । जिज्ञासा-किं भो व्याकरणमधोयोग उत कारिष्ये।

१४ हेतुहेतुमतोर्लिङ्—दो क्रियाओं का कार्यकारणभाव शेष
हो तो दोनों क्रियाओं के भविष्यत् काल में विधिलिङ् होता
है। यथा, यदि बाल्ये अधीयत यावज्जीवनं सुखं लभेत। यथा
बाल्यकाल का अध्ययन यावज्जीवन सुखलाभ का कारण
होता है। इसलिये दोनों क्रियाओं में विधिलिङ् हुआ है।
ऐसे ही, यदि प्रियं पदेत् सर्व्वेषां प्रियो भवेत्।

तृतीय भाग

मूल-प्रकरण ।

साधारण-नियम ।

१. के परे लक्ष्य, निष्ठा प्रमृति का प्रत्यय होने दि
प्रत्यय कहने हैं । इनके लगाने के ये नियम हैं—

१. प्रत्यय पर होने से चणु के अन्त्य स्वर तथा उपधा के
दुब होगा है । यदि प्रत्यय के अ वा इ का कोष हो तो दुब

२. प्रत्यय के अ वा इ का कोष हो तो चणु के अन्त्य स्वर
अकार भी हरे होती है । अकारान्त चणुओं के परे अ

३. प्रत्यय पर होने से चिच् का कोष होगा है ।

४. प्रत्यय के अ वा कोष हो तो चणु के अन्त्यस्वर अ वा इ,
हरी है ।

५. प्रत्यय के अ वा कोष हो तो पूर्वार्ध द्विर्वा उपसर्गान्त

६. प्रत्यय के अ वा कोष हो तो दुब अकारान्त चणु के परे अ

७. प्रत्यय के अ परे होने से चणु के अन्त्यस्वर अ वा इ,
को हरी है ।

(b) If my father were here, you would not do so. There may not be any trouble to the people. Let me have a book. Let the two books be brought here.

3. Correct:—म प्यात्रं अणश्यनस्म । मवानत्र सि । संस्य
मः । सुमी भवतु त्वम् ।



नीय, यापि-यापनीय, स्थापि-स्थापनीय, रोपि-रोपनीय, यापि-श्यापनीय, शापि-शापनीय, अध्यापि-अध्यापनीय, पालि-लनीय ।

ण्यत् (य)

१. श्दलोर्णन्—कर्मवाच्य और भाषवाच्य में प्रकृशान्त ॥ व्यञ्जनात् धातु के परे ण्यन् प्रत्यय होता है । ण्यन् के , ण् का लोप होता है और य रह जाता है । यथा, श्का-त-क-कार्यं, what is fit to be done. धृ-धार्यं, घृ-र्यं, स्मृ-स्मार्यं, ह-हार्यं । व्यञ्जनात् षच्-वाच्य, सिच्-य, त्यज्-त्याज्य, यज्-याज्य, युज्-योज्य, मज्-भाज्य, भुज्-भाज्य, युष्-बोध्य, छिद्-छेद्य, मिद्-भेद्य, विद्-वेद्य, मन्-मान्य, मस्-मदय, श्वस्-श्यास्य, हस्-हास्य, वद्-वाह्य ।

२. षयोः कु पिद्यतोः—ण्यत् परे हो तो षच्, यज् इत्यादि धातु के ष् का क् और ज् का ग् होता है । यथा, षच्-पाक्य, यज्-रोग्य ।

३. षोऽशब्द संज्ञायाम् ; भोज्यं भक्ष्ये; प्रयोज्यनिवोज्यौ लक्ष्यार्थे—विशेष अर्थ में ण्यन् प्रत्यय परे हो तो षच्, भुज्, युज् इत्यादि धातुओं के ष् का क् और ज् का ग् होता है । यथा, षच् शस्त्रार्थ में वाक्य, भुज्-भोग अर्थ में भोग्य, युज्-मर्द अर्थ में योग्य । नि-पूर्वक युज् कर्तृवाच्य में (प्रभु अर्थ में) नियोग ।

४. अमावस्यादन्वतरस्याम्—अमावस्या शब्द निपातन में लिङ् होता है । यथा, अमा सद वसतोऽस्यां चन्द्रार्थे अमा-स्या ।

१५. वः भुवि क्यप् च—कर्मधाच्य और भावधाच्य में सुयन्त शब्द के परवर्ती वद् धातु के परे क्यप् और वत् हो तथा क्यप् के पश्चान्तर में व का उ होता है । यथा, ब्रह्मोच, ब्रह्मवच expounding the Veda, मृषा के परे हो तो केवल क्यप् होता है; यथा, मृषोच speaking falsely.

१६ भुवो भावे—भावधाच्य में सुयन्त पद के परवर्ती भू धातु के परे क्यप् होता है । यथा, ब्रह्मभूयः identification with Brahma, देवभूयः ।

१७. इन्स्तु च—भावधाच्य में सुयन्त पद के परवर्ती इन् धातु के परे क्यप् होता है तथा न् के स्थान में त् और स्त्रीलिङ्गता है । यथा, स्त्रोइत्या, गोइत्या, पितृइत्या, ब्रह्मइत्या ।

१८. राजसूयसूर्यमृषोचरुच्यकुच्यकृष्टपच्यभ्यध्याः—राजसूय इत्यादि निपातन से निश्च होते हैं । यथा, राजा सूयते अत्र इति राजसूयः, सरति आकाशे इति सूर्यः, मृषोचम् (मृषावद् + क्यप्), रुच्यः, कुच्यः, कृष्टपच्यः, अव्यच्यः ।

केलिम् ।

१९. केलिम् उपसंख्यानम्—कर्म-कसृधाच्य में धातु के परे केलिम् होता है; इसमें क् का लोप होता है और एलिम् रहता है । यथा, मिदु-मिदेलिम् what ought to be filled, वच्-वचेलिम्, लिदु-लिदेलिम् ।

N. B. कृत्प्र प्रायस से बने हुए शब्द क्रिया की भाँति व्यवहृत हों तो असाध्य में प्रीवलिङ्ग की प्रथमा के एकवचनान्त पद होते हैं और कर्म धाच्य में कर्म के विशेषण होते हैं, अतएव कर्म में ओ लिङ्ग, ओ विभक्ति और ओ वचन ही वही उनमें भी हों । यथा, भावधाच्य-मया रघातप्यम्,

यत् (य)

१०. शो यत्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में लान् घातु के परे यत् प्रत्यय होता है। यत् के ल् का मोह होता है और य रहता है। यथा, नि-येव what is fit or ought to be collected, जि-जेय, नी-नेय, धु-धय्य, मू-मय्य।

११. ईद वति—यत् परे होने से घातु के मत्वस्त्व का य् होता है। यथा, दा-देय, गा-गेय, पा-पेय, स्वा-स्वेय, मा-मेय, हा-हेय, घा-धेय।

१२. पोरदुग्धात् षट्तिगहोत्र—कर्मवाच्य और भाववाच्य में शक्, सद् और पयर्गान्त घातु के परे यत् होता है। यत्, शक्-शक्य, सद्-सहा, शप्-शप्य, रम्-रम्य, लम्-लम्य, गन्-गन्म्य, नम्-नम्य, रम्-रम्य।

१३. गदमदचयमघानुसर्गे—कर्मवाच्य और भाववाच्य में उपसर्ग दीन गद्, मद्, यम्, चर् घातु के परे यत् होता है। यथा, गद्-गद्य, मद्-मद्य, यम्-यम्य, चर्-चर्य्य। उपसर्ग पूर्वक होने से ण्यत् होता है। यथा, नि-गद्-निगाद्य, प्र-मद्-प्रमाद्य, नि-यम्-नियाम्य, वि-चर्-विचार्य्य।

क्यप् ।

१४. एतिस्तुशाभृद्भुवः क्यप्, ह्रस्वस्य विति इति इर्-स्त्व-वाच्य और भाववाच्य में इ, इ, भृ, क्, जुप्, शास् तथा ल् घातु के परे क्यप् होता है। क्यप् के क् और ए का मोह होता है और य रहता है। यथा, इ-इत्य what is ought to be approached, इ-इत्य, भृ-भृत्य servant, जुप्-जुप्य कार्य; शिष्यः pupil, scholar.

हृत्-प्रकरण ।

बद्-बद्धत्, बहमान । अदादिगणोप-द्विप्-द्विपत्, द्विपाण;
दिदन्, दिहान; दुद्-दुद्धन्, दुद्धान; स्तु-स्तुवत्, स्तु-
प्र-प्रुषत् प्रुषाण । ह्रादिगणोप-दा-ददत्, ददान; धा-
दधान; भृ-विभ्रत्, विभ्राण । रुधादिगणोप-रुन्-रुन्वत्, रु-
त्नादिगणोप-तन्-तन्वत्, तन्वान; कृ-कुर्व्यत्, कुर्वाण । क-
णोप-की-कीणत्, कीणान; गृह्-गृह्यत्, गृह्णान ।

२६ कर्म वाच्य में धातु के परे वर्त्तमान काल में
होता है ।

२७ कर्मवाच्य में शानच् के स्थान में मान होत
यथा, कृ-क्रियमाण, वच्-उच्यमाण, दा-दीयमाण, पा-पी-
प्रह्-गृह्यमाण, सेव्-सेव्यमाण, बह्-उह्यमाण, इश्-इश्य
कृन्-कृष्यमाण, रृज्-रृज्यमाण, शा-शायमाण ।

N. B. एतु और शानच् प्रत्यय से बने हुए नाम्द विशेषण
इसलिये स्वमें विशेष के लिङ्ग, विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं ।
पयन् पुराण; पयन्तं पुराणं, पयन्ता पुराणेण; गच्छती स्त्री, गच्छन्ती
गच्छन्त्या स्त्रिया; पतत् कल्म, पतवा कलेन, पतत कलश इत्यादि

वसु और कानच् ।

२८ लिट्: कानञ् वा । क्वमुञ्च—भूतकाल में परस्मैपदी
के परे वसु होता है । और वसु का वस् रहता है ।

२९ लिट् के उत्तमपुरुष के द्विवचन में जो कार्य्य हो
वसु होने से इट् मित्र ये सब कार्य्य धातु में होते हैं । धृ-
वस् having heard, विद्-विधिद्वस्, शृद्-श्रुद्वस्, स्तु-
वस्, मू-मभूवस्, कृ-कृत्यवस् ।

३० वसेद्यजाद् वक्षाम्—वसु होने से वस्, एन् भी
कारान् धातु के परे इट् होता है । यथा, वस्-अक्षियवस्
विषवस्, स्या-तस्थिवस्, दा-ददिवस्, पा-पविवस् ।

अदादि-गणोय-अद्-अदत्, रुद्-रुदत्, हन्-भत्, ण्-यत्, यात्, अस्-सत्, स्वप्-स्वपत्, श्वस्-श्वसत्, शान्-शानत्, रु-रुवत् । ह्नादिगणोय-हु-जुहत्, मी-विभ्यत्, हा-अप्, णिजन्त-कारि-कारयत्, स्मारि-स्मारयत्, स्थावि-स्थापयत्, पालि-पालयत्, जनि-जनयत् । सन्न-चिकीर्ष-चिकीर्षयत्, जिघृक्ष-जिघृक्षत् ।

N. B. विदेशतुर्यस्युः—अदादिगणोय विद् घातु के परे शि से शत् का वस् होता है । यथा, विद्स्, विदत् ।

२२ कर्तृ वाच्य में आत्मनेपदीय घातु के परे शान् काल में शानच् होता है और शानच् का मान रहता है ।

२३ घातु के परे शानच् होने से लट् भाते (भन्ते) विदेश के सब कार्य होते हैं ।

२४. आने मुच्—भ्यादि, दिधादि और तुदादि गणोय घातु के परे शानच् के स्थान में मान हो जाता है । यथा, मी गणोय-सेव्-सेवमान, घृत्-वर्त्तमान, घृध्-पदमान, व्यूष्मान, सह्-सहमान । दिव दिगणोय-जन्-जायमान, शि-शियमान, पद्-पद्यमान, युध्-युध्यमान, विहु-विद्यमान । इति गणोय-मृ-घ्नियमाण, ह्-द्रियमाण, धृ-घ्नियमाण । आर्शि-शो-शयान, अधि-इ-अधीयान । त्नादिगणोय मन्-मनय । ह्नादिगणोय-मा-मिमान । क्त्वादिगणोय-मी-मीणान ।

N. B. ईनासः—अदादिगणोय आत् घातु के परे शान् स्थान में ईन होता है । यथा, भासीन ।

२५ कर्तृ वाच्य में उभयपदी घातुओं के परे वर्त्तमान रूप में शन् और शानच् दोनों प्रत्यय होते हैं । यथा, मी-मिधियन्, धि-धयन्, धयमाण, मी-मयत्, मयमान, इ-इयन्, इयमाण, हा-राजन्, राजमान, मज्-मजत्, मजमान, यज्-यजन्, यजमान ।

स्यत्, पा-शास्यत्, दृश्-द्रक्ष्यत्, हन्-हनिष्यत्, मृ-मरिष्यत्, पत्-पतिष्यत्, कारि-कारिष्यत्, दर्शि-दर्शिष्यत्, योजि-योजिष्यत् ।

३७ भविष्यत् काल में आत्मनेपदी धातु के परे कर्तृवाच्य में स्यमान होता है । स्यमान परे रहने से भी लुट् के सभी कार्य होते हैं । यथा, सेव्-सेविष्यमाण, वृत्-वृत्तिष्यमाण, व्यप्-व्यपिष्यमाण, जन्-जनिष्यमाण, पद्-पत्स्यमाण, सद्-सहिष्यमाण ।

३८ भविष्यत् काल में उभयपदी धातु के परे कर्तृवाच्य में स्यत् और स्यमान दोनों प्रत्यय होते हैं । यथा, स्तु-स्तोष्यत्, स्तोष्यमाण, दा-दास्यत्, दास्यमाण; धा-धास्यत्, धास्यमाण; गृह्-गृहीष्यत्, गृहीष्यमाण; कृ-करिष्यत्, करिष्यमाण ।

३९ भविष्यत् काल में धातु के परे कर्मवाच्य में स्यमान होता है । यथा, शा-शापिष्यमाण, शास्यमाण; ध्रु-ध्रापिष्यमाण; ध्रोष्यमाण; कृ-कारिष्यमाण, करिष्यमाण; दृश्-दर्शिष्यमाण, दृश्यमाण; दृश्-धृश्यमाण, धृच्-धृश्यमाण ।

N. B. स्यत् और स्यमान से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, भवएव विशेष के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं । यथा, गमिष्यन्तं पुरुषः, गमिष्यन्तौ पुरुषौ, गमिष्यन्तः पुरुषाः, गमिष्यन्तं पुरुषं, गमिष्यतां पुरुषेण, जनिष्यमाणा कन्या, जनिष्यमाणां कन्याम्, जनिष्यमाणवा कन्या-मा । पतिष्यत् पत्रम्, पतिष्यता पत्रेण, पतिष्यतः पत्रम् । करिष्यमाणं कर्म, करिष्यमाणे कर्मणि, करिष्यमाणानि कर्माणि, करिष्यमाणेन कर्मणा, करिष्यमाणात् कर्मणाः, करिष्यमाणे कर्मणि । वश्यमाणं वचनम्, वश्यमाणेन वचनेन, वश्यमाणात् वचनम्, वश्यमाणस्य वचनस्य, वश्य-माणेषु वचनेषु ।

दातुम्, स्था-स्थातुम्, घ्रा घ्रातुम्, जि-जितुम्, यज्-यज्जुम्, सृज्-
 सृज्जुम्, पद्-पठितुम्, ध्रु थ्रोतुम्, स्तु-स्तवितुम्, स्तोतुम् ;
 सद्-सदितुम्, सोढुम् ; कम्-कमितुम्, कल्-कलितुम्, गम्-
 गन्तुम्, हन्-हन्तुम् तृ त्रितुम्, तरोतुम्, सेव्-सेवितुम्,
 वृत्-वृत्तितुम्, भ्रम् भ्रमितुम् ; विद्-वेदितुम्, रद्-रोदितुम्,
 शास्-शासितुम्, नृत्-नर्तितुम्, कारि-कारयितुम्, याजि-याजि-
 यितुम्, मोचि-मोचयितुम् ।

४२ पर्याप्तवचनेध्वलमर्षेण — समर्थार्थक शब्द के योग में धातु
 के परे तुमन् होता है । यथा; बोद्धुं समर्थः, भोक्तुं पटुः,
 वर्तितुं निपुणः, कारयितुं कुशलः ।

४३ कालसमयवेलासु तुमन् — कालवाचक शब्द के योग में
 धातु के परे तुमन् होता है । यथा, गन्तुं समयोऽयम्, अभ्येतुं
 कालोऽयम्, शयितुं वेलैषम् ।

णमुल् ।

४४ आनीदृश्ये णमुल् च — पीनःपुन्य अर्थ समझा जाय तो
 पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु के परे णमुल् होता है और
 णमुल् का भम् रहता है । यथा, स्मृ-स्मारम्, ध्रु-धावम्, स्तु-
 स्तावम्, नम्-नामम्, प्रद्-प्रादम्, भुज्-भोजम्, भिद्-भेदम्,
 क्षिप्-क्षेपम्, मृश-मर्शम्, स्पृश-स्पर्शम्, हस्-हासम्, गाह्-
 गाहम्, सेव्-सेवम् ।

४५ णमुल् प्रत्यय परे रहने से हन् धातु का घात् होता है ।

१, घातम् ।

४६ णमुल् प्रत्यय से बने शब्द प्रयोगकाल में द्वित्व होते हैं ।

१, स्मारं स्मारम् having repeatedly remembered,

२, प्रादम्, घातं घातम् ।

N. B. अन्वया, एवम्, कथम् और इत्थम् शब्दों के परे कृ घातु में णमुन् होता है । यथा, अन्वयाकारम्, in a different manner, एवम्, इत्थम्, कथम् ।

२ कर्मणि द्विशिचिदोः साकन्त्ये—साकन्त्ये अर्थे सामन्त ज्ञापको कर्मपद के परे हञ् और विद् घातु के उत्तर णमुन् होता है । यथा, दक्षिणदक्षिणं दशति-सर्वान् दक्षिणान् हृष्ट्वा दशतीत्यर्थः, विप्रदक्षिणं विप्रदक्षिणं, सर्वान् विप्रान् हृष्ट्वा हन्तुमिच्छतीत्यर्थः, दक्षिणेदम्, विप्रदेदम् ।

३ यावति चिन्दर्जाघोः—यावत् शब्द के परवर्ती जीव घातु के परे णमुल् होता है । यथा, यावज्जीवमधीते ।

४ चर्मोदरयोः पूरेः—कर्मवाचक उदर शब्द के परे पूरि घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, उदरपूरं भुञ्जते, उदरं पूरयित्वा भुञ्जते इत्यर्थः ।

५ निर्मूल समूलयोः फयः । समूलाहनजीवेषुइन्कृप्रः—अध्याविशेषण वाचक समूल शब्द के परे कृ और हन् घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, समूलकायं कयति । इन् के ह का घ और न् का त होता है । यथा, समूलघातं इन्ति killa totally. जीव शब्द के परे प्रह् घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, जीवप्राईं गृह्णाति captures him alive.

६ हस्ते घृत्तिग्रहोः—करणबोधक हस्तवाचक शब्द के परे प्रह् घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, हस्तप्राईं गृह्णाति, हस्तेन गृह्णातीत्यर्थः । प्राणिपाहम्, करप्राहम् ।

७ स्वेषुपुः—करणबोधक स्ववाचक शब्द के परवर्ती प्रह् घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, स्वपोषं पुष्पाति, स्वेन पुष्पातीत्यर्थः, धनपोषम्, वस्त्रपोषम्, मातृपोषम् ; स्वधनेन, स्वमात्रा पुष्पातीत्यर्थः ।

८ ऊर्ध्वे शुचि पूरोः—कर्तृविशेषण ऊर्ध्वे शब्द के परे णमुल् घातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, ऊर्ध्वशीलं शुच्यति उरु, हर्षूर्ध्वे एव तिष्ठन् शुच्यतीत्यर्थः ।

६ उपमाने कर्मणि च—उपमानवाचक कर्मपद और कर्मपद
 चलती धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, विद्युत्प्रणाशं प्रवष्टः,
 विद्विप क्षणेनैव विनष्ट इत्यर्थः; शलभनाशं नश्यति, शलभ इव अविमृश्य-
 ती पुरुषो नाशतीत्यर्थः; पितृवेदं वेत्ति गुरुम्, गुरुं वितरन्निव जानाती-
 त्; पुत्रदर्शं पश्यति शिष्यम्, शिष्यं पुत्रन्निव सस्नेहं पश्यतीत्यर्थः ।

कृत्वा (कृत्वाच्) ।

४७ समानकर्मकयोः पूर्वकाले—दो क्रियाओं का एक कर्त्ता
 तो पूर्वकालिक क्रिया के उत्तर कृत्वा होता है और कृत्वा
 कृत्वा रहता है । सेट् धातुओं में कृत्वा के पहले इट् लगता है ।
 ज्ञा-ज्ञात्वा Knowig, ध्यै-ध्यात्वा, स्ना-स्नात्वा, पा-पीत्वा,
 स्थि-स्थित्वा, दा-दत्त्वा, धा-हित्वा, चि-चित्वा, जि-जित्वा, ध्रि-
 ध्रिया, की-कीत्वा, ध्रु-ध्रुत्वा, हु-हुत्वा, भू-भूत्वा, कृ-कृत्वा, घृ-
 घृत्वा, स्मृ-स्मृत्वा, मुञ्-मुञ्कृत्वा, सिञ्-सिञ्कृत्वा, त्यज् त्यक्त्वा,
 मुञ्कृत्वा, खृज्-खृज्त्वा, छिद्-छित्वा, मिद्-मित्वा, पुष्-
 पुष्त्वा, क्षिप्-क्षिप्त्वा, लभ्-लभ्त्वा, इष्ट इष्टा, दह्-दग्धा, पाञ्-
 पाञ्त्वा, गज्ज्-गज्जित्वा, पठ्-पठित्वा, क्रीड्-क्रीडित्वा,
 क्रीडित्वा, ध्यय्-ध्ययित्वा, सेव्-सेवित्वा, मिष्-मिशित्वा,
 विदुश्वा, यज्-यज्त्वा, प्रह्-गृहीत्वा, प्रच्छ्-पृष्टया, वस्-उवि-
 त्यप्-सुप्त्या, गम्-गत्या, नम्-नत्वा, मन्-मत्वा, टन्-इत्वा,
 यदुश्वा, स्तम्-स्तभ्या ।

८ प्रत्यय के पहले इट् हो तो धातु के अन्त्य स्वर तथा
 के लघु स्वर का गुण होता है । यथा, की-शयित्वा,
 कर्षयित्वा, कारि-कारयित्वा, स्थापि-स्थापयित्वा, धायि-
 धायित्वा, वृत्-वृत्तित्वा, नृत्-नृत्तित्वा ।

३. B. मृड्मृदं पुषुकुप हिराविशस्तः कृत्वा—मृड्, मृद,

रुद्, विद्, सुप्, और क्लिप् धातुओं में गुण नहीं होता । यथा, रुदित्वा, रुदित्वा, रुदित्वा, रुदित्वा, रुदित्वा ।

२ तृपिमृपिकृशोः काश्यपस्य—मिल्, लिप्, स्तिम्, डुप्, क्षुप्, श्रुद्, घुत्, रुप्, स्फुद्, कृश्, तुप्, और मृप् धातुओं में विकल्प से गुण होता है । यथा, मिल्-मिलित्वा, मेलित्वा; लिप्-लिसित्वा, लेलित्वा; स्तिम्-स्तिमित्वा, स्तेमित्वा; कृप्-कृपित्वा, कोपित्वा; क्षुप्-क्षुपित्वा, ओपित्वा; श्रुद्-श्रुटित्वा, श्रोडित्वा; घुत्-घुतित्वा, घोडित्वा; रुप्-रुचित्वा, रोचित्वा; स्फुद्-स्फुडित्वा, स्फोटित्वा; कृश्-कृशित्वा, कशित्वा; तुप्-तृपित्वा, तपित्वा; मृप्-मृपित्वा, मर्पित्वा ।

४९ नोपधात् यकान्ताद्वा । जान्तनशा विभाषा—कृत्वा प्रत्यय होने से जान्त, धान्त, और फान्त धातु के उपधा नकार का विकल्प से लोप होता है । यथा, भञ्ज्-भक्तवा, भङ्कृत्वा; रङ्ज्-रक्तवा-रङ्कृत्वा; ग्रन्थ्-ग्रन्थित्वा ग्रथित्वा, मन्थ्-मथित्वा, मन्थित्वा, गुम्फ्-गुम्फित्वा, गुम्फित्वा ।

वधिलुञ्च्युतध—धन्च्, लुन्च्, में भी विकल्प से न का लोप होता है । यथा, यञ्च्-यथित्वा, यञ्जित्वा, लुन्च्-लुञ्जित्वा, लुञ्जित्वा ।

N. B. कृत्वा प्रत्यय होने से पू और क्लिप् धातु के वरे विकल्प से रुद् होता है । यथा, पूषित्वा, पूष्या; क्लिप्-क्लिषित्वा, क्लिष्या ।

२ उदिनीया । ममञ्जकित्य—गणगाठ के समय में जो धातु कक्षा-गणगाठ हो उसके वरे कृत्वा प्रत्यय होने से विकल्प से रुद् होता है । यथा, मम्-ममित्वा, ममत्वा; धम्-धमित्वा, धामत्वा; भम्-भमित्वा, भामत्वा; शम्-शमित्वा, शामत्वा; रिप्-रेषित्वा, रेष्या; मिप्-मीषित्वा, मेष्या; स्-समित्वा, सष्या ।

५० जज्ञातेषु क्विप्—कृत्वा प्रत्यय होने से त्यागार्थं हा धातु का हि-होता है । यथा, हित्वा ।

५१ अलंखत्वीः प्रतिषेधयोः प्राचा कृत्वा—निषेध अर्थ समझा जाय तो अलं और खलु शब्दों के योग में घातु के परे कृत्वा होता है । यथा, अलं गत्वा, अलं स्थित्वा, अलं कृष्ट्वा, अलं सृष्ट्वा, अलं ध्रुत्वा, खलु उक्तवा, खलु कृत्वा, खलु भुक्तवा, खलु क्षिप्तवा ।

ल्यप् ।

५२ समासेभ्यस् पूर्वोक्तो ल्यप्—नञ् मिथ अन्त्यय (उपसर्ग) के साथ समास होने पर घातु के परे कृत्वा के बदले ल्यप् होता है और ल्यप् का य रहता है । यथा, आ-घ्रा-भात्राय, आ-दा-आदाय । ऐसे ही विधाय, अपिधाय, प्रस्थाय, विहाय, ध्याख्याय, विहाय, आलिङ्ग्य, सम्-सन्त्यज्य, विमज्य, प्रणि-पत्य, प्राप्य, प्रकम्प्य, आरम्प्य, निशम्प्य, विधम्प्य, आसंष्य, संरक्ष्य, उद्स्य, अम्यस्य, निश्चस्य, विहस्य, विगर्हा ।

५३ ल्यप् प्रत्यय परे होने से घातु के अन्त्य स्वर तथा उपधा लघुस्वर का गुण नहीं होता । यथा, वि-जि विजित्य, सम्-वि-सञ्चित्य, अर्धात्य, प्रेत्य, आश्रित्य, सञ्चित्य, विस्मित्य, आनीय, विनीय, सञ्धृत्य, संस्तुत्य, उत्प्लुत्य, विधूय, सम्भूय, प्रभूय, भाट्ट्य, विभूत्य, भावृत्य, प्रहृत्य, संयृत्य, संभृत्य, प्रहृत्य, द्विधाकृत्य, नानाकृत्य, आलिष्य, उगुच्य, सम्भुज्य, नियुज्य, विरुज्य, आच्छिद्य, विभिय, निरुज्य, संक्षिप्य, प्रकुप्य, विरुप्य, विरुप्य, प्ररुप्य, प्रविश्य, भाकृष्य, निष्पिष्य, विशिष्य, भाश्रिष्य, सन्दिहा, भाश्या, वि-सद्-विपत्य, विगाहा, मद्यगाहा ।

५४ हावस्य विकृतिशुक्—ल्यप् परे होने से हन्, मन्, तन्

इत्यादि धातुओं के ल् का ल् होता है । यथा, आ-इन्-साइव्य, साम्भ्य, विभम्भ ।

५५ वा ५५-ल्यप् परे होने से ल्यप्, ल्य्, ल्य् इत्यादि धातुओं के ल् का विकल्प से ल् होता है । यथा, सम्-यम्-संयव्य, संयम्य, विरम्भ, विरम्भ्य; प्रजम्भ, प्रजम्भ्य, भागम्भ, भागम्भ्य ।

५६ ल्यप् परे होने से सवञ् इत्यादि धातुओं के उपधा-मकार का लोप होता है । यथा, आ-सप्र-आसम्भ्य, प्र-संस्-प्रसम्भ्य, सम्-संस्-सम्भ्य, वि-संस्-विस्म्य, प्र-संस्-प्रसम्भ्य, प्र-मन्थ्-प्रमथ्य ।

५७ ल्यप् परे होने से शी का शय्, प्रच्छ् का पृच्छ् और मद् का गृह् होता है । यथा, अधि-शी-अधिशय्य, मापृच्छ्य संगृह्य, विगृह्य, निगृह्य ।

५८ शियः—ल्यप् परे रहने से हे का ह् और शि का शी होता है । यथा, आहय, प्रशीय ।

५९ ल्यप् परे होने से स्वप्, यस्, यप्, यच् यह और चद् धातु के ष का उ होता है; यथा, सम्-स्वप् संसुष्य, प्र-यच्-प्रोच्य, सम्-यप्-समुष्य, अधि-वस्-अध्युष्य, प्र-वह्-प्रोह्य, अनु-यद्-अनुद्य ।

६० ल्यप् परे होने से धातु के दीर्घ ष्ट का ईर् होता है । यथा, वि-क्-विकीर्ष्य, उन्नीर्ष्य, वितीर्ष्य, विदीर्ष्य, विशीर्ष्य, विस्तीर्ष्य ।

N. B. ल्यप् परे होने से निच् का लोप होता है । यथा, नि-नीलि-निमील्य, वि-चारि-विचार्य्य, सम्-प्र-धारि-सम्प्रधार्य्य, संस्थाप्य, प्रकाष्य, विनाष्य, भाग्वाष्य, उत्साष्य, अध्याप्य, समर्ष्य, विशर्ष्य, आलोच्य, सम्प्रीड्य निष्प्रीड्य, आच्छाद्य, आस्वाद्य, आराध्य ।

२ ल्यपि लघुपूर्व्यात्—णिच् का पूर्ववर्ती स्वर यदि लघु हो तो ल्यप् परे रहने से णिच् का भ्य् होता है । यथा, वि-गजि-विगणय्य, वि-रुचि-विरुचय्य, प्र-नमि-प्रणमय्य, वि-रमि विरमय्य, सम्-षटि संपटय्य, वि-रुद्दि-विरुद्दय्य ।

विभाषापः—ल्यप् परे होने से भाष् धातु के णिच् का भ्य् होता है और पञ्चान्तर में णिच् का लोप होता है । यथा, प्र-आषि-प्रापय्य, प्राप्य; सम्-आषि-समापय्य, समाप्य ।

तुमुन्, णमुल्, त्वा और ल्यप् प्रत्यय से बने हुए शब्द ध्वन्य होने हैं । ये धसमापिका क्रिया हैं ।

Exercise 37.

1. Translate into Hindi:—धर्मं श्रेतुमिहागच्छामि । वनं गन्तुमिच्छामि । सीतास्त्रयम्बरं द्रष्टुं सर्व्वेऽगच्छन् । चत्तान् स्मारं स्मारं गावः गृहं प्रत्यागच्छति । गुरुं ब्रूवा पाठं मारमरु । पुत्रस्य वचनं श्रुत्वा प्रसन्नो बभूव । राज्ञातटमागत्य स तस्थी । सर्व्वेषामपि वर्षं विधाय चर्मं विदार्य्य प्रत्यङ्गं प्रेक्ष्य धर्मं नेष्यामः । समेव निहत्य वनमिदं निरुपम्वं करिष्यामि । राजानं प्रणिपत्य तस्मै सर्व्वं निषेद्यामास ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) क्या बाज लड़के को हर सकता है ? इसे देख कर सब आनन्दित होते हैं । आप को देख कर मेरी सब इच्छा निवृत्त हो गयी । रामचन्द्र को वन से लौटाने के लिये भरत वन गये । राजा दरिद्रों को धन देने की इच्छा करता है । सीता को लेकर रावण लड्डा गया । वह भर पेट खाता है । नीच उद्य पद पाकर स्वामी को मारने की इच्छा करता है ।

(b) I am not able to do it. He wants to go there. Having done this I shall go there. He totally killed his enemies. He goes to the forest to collect some flowers. Please give this to

the poor. I shall go there and bring him to you. Having remembered his parents he went home.

3 Correct. — ज्ञानं धर्मिणु मागत्युनि । न पश्यु मित्युनि । तन् किञ्चन धनं प्रदितु भागनोऽस्मि । इति श्रेयो धनं दत्त्वा कर्त्ति स्वमभ । गुरुं प्रलपत्य निष्ट । शत्रुं विजेय आगत्य । धन मज्जं कुं देशान्तरं गमिष्यामि ।

निष्ठा ।

६१ क-कवत् निष्ठा—भूतकाल में घानु के परे क और कवत् प्रत्यय होते हैं और इनका यथाक्रम त और तवत् रहता है । इन दोनों प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं ।

६२ अनिट् घानुओं में इट् नहीं लगता । यथा, उया-ख्यातः famous, उया-ख्यातवान्, शा-घातः known, शातवान्; ध्या-ध्यातः, ध्यातवान्; या-यातः, यातवान्; स्ना-स्नातः, स्नातवान्; इ-इतः, इतवान्; चि-चितः, चितवान्; जि-जितः, जितवान्; स्मि-स्मितः, स्मितवान्; क्रीतः, क्रीतवान्; नीतः, नीतवान्; प्रीतः, प्रीतवान्; भीतः, भीतवान्; द्रुतः, द्रुतवान्; धूतः, धूतवान्; ध्रुतः, ध्रुतवान्; स्तु-स्तुतः, स्तुतवान्; स्रुतः, स्रुतवान्; हुतः, हुतवान्; कृतः, कृतवान्; दृतः, दृतवान्; धृतः, धृतवान्; भृतः, भृतवान्; मृतः, मृतवान्; सृतः, सृतवान्; स्मृतः, स्मृतवान्; हृतः, हृतवान् ।

६३ तिङन्त में जो कार्य्य होते हैं प्रायः वे सब कार्य्य निष्ठा, क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय में भी होते हैं । यथा, शक्-शक्तः शक्तवान्; मुच्-मुक्तः, मुक्तवान्; रिच्-रिक्तः, रिक्तवान्; सिच्-सिक्तः, सिक्तवान्; त्यज्-त्यक्तः, त्यक्तवान्; भज्-भक्तः भक्तवान्; भुज्-भुक्तः, भुक्तवान्; युज्-युक्तः, युक्तवान्; सृज्-

सृष्ट्, सृष्टवान्; कृष्-कृष्तः, कृष्टवान्; वृष्-वृष्टः, वृष्टवान्; युष्-
 युष्टः, युष्टवान्; राष्-राष्टः, राष्टवान्; रुष्-रुष्टः, रुष्टवान्;
 शुष्-शुष्टः, शुष्टवान्; सिष्-सिष्टः, सिष्टवान्; आप्-आप्तः,
 आप्तवान्; क्षिप्-क्षिप्तः, क्षिप्तवान्; तप्-तप्तः, तप्तवान्; सृप्-सृतः,
 सृतवान्; लिप्-लितः, लितवान्; लुप्-लुप्तः, लुप्तवान्; शप्-शप्तः,
 शप्तवान्; रभ्-रब्धः, रब्धवान्, लभ्-लब्धः, लब्धवान्; दिष्-
 दिष्टः, दिष्टवान्; दृष्-दृष्टः, दृष्टवान्; विश्-विष्टः, विष्टवान्; स्पृष्-
 स्पृष्टः, स्पृष्टवान्; कृष्-कृष्टः, कृष्टवान्; तुप्-तुष्टः, तुष्टवान्; दुप्-
 दुष्टः, दुष्टवान्; पिप्-पिष्टः, पिष्टवान्; पुप्-पुष्टः, पुष्टवान्; मृप्-
 मृष्टः, मृष्टवान्; शिप्-शिष्टः, शिष्टवान्; श्लिप्-श्लिष्टः, श्लिष्टवान्;
 दग्-दग्धः, दग्धवान्; दिग्-दिग्धः, दिग्धवान्, नग्-नग्धः, नग्ध-
 वान्; रुद्-रुद्धः, रुद्धवान्; लिद्-लीढः, लीढवान् ।

६५ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो सेद् धातुओं के परे इद् होता है । यथा, लिख्-लिखितः, लिखितवान्; लिग्-लिङ्गितः, लिङ्गित-
 वान्; लङ्-लङ्गितः, लङ्गितवान्; स्थाष्-स्थाघितः, स्थाघितवान्;
 भष्-भक्षितः, भक्षितवान्; चर्च-चर्चितः, चर्चितवान्; याच्-
 याचितः, याचितवान्; यञ्-यञ्जितः, यञ्जितवान्; वाञ्छ्-
 वाञ्छितः, वाञ्छितवान्; गज्ज-गज्जितः, गज्जितवान्; तज्ज-
 तज्जितः, तज्जितवान्; राज्-राजितः, राजितवान्; उज्ज्-उज्जितः,
 उज्जितवान्; घट्-घटितः, घटितवान्; घट्ट्-घट्टितः, घट्टितवान्;
 घेष्ट्-घेष्टितः, घेष्टितवान्; घुट्-घुटितः, घुटितवान्; घेष्ट्-घेष्टितः,
 घेष्टितवान्; स्फुट्-स्फुटितः, स्फुटितवान्; कुण्ट्-कुण्टितः,
 कुण्टितवान्; पट्-पटितः, पटितवान्; लुण्ट्-लुण्टितः, लुण्टित-
 वान्; क्रीड्-क्रीडितः, क्रीडितवान्; पिण्ड्-पिण्डितः, पिण्डित-
 वान्; मुण्ड्-मुण्डितः, मुण्डितवान्; लोड्-लोडितः, लोडितवान्;

घृष्-घृषितः, घृषितवान्; पष्-पषितः, पषितवान्; पन्-पनितः,
 पनितवान्; पष्-पषितः, पषितवान्; स्पष्-स्पषितः, स्पषित-
 वान्; मन्द्-मन्दिषितः, मन्दिषितवान्; मर्द्-मर्दिषितः, मर्दिषितवान्;
 निम्द्-निम्दिषितः, निम्दिषितवान्; नन्द्-नन्दिषितः, नन्दिषितवान्; मुड्-
 मुदिषितः, मुदिषितवान्; रुद्-रुदिषितः, रुदिषितवान्; विद्-विदिषितः,
 विदिषितवान्; घाष्-घाषितः, घाषितवान्; स्पधि-स्पधितः, स्प-
 धितवान्; कुष्-कुषितः, कुषितवान्; कम्-कम्पितः, कम्पित-
 वान्; जल्-जल्पितः, जल्पितवान्; गुम्-गुम्फितः, गुम्फित-
 वान्; घुम्-घुम्भितः, घुम्भितवान्; लम्-लम्भितः, लम्भितवान्;
 श्रुम्-श्रुम्भितः, श्रुम्भितवान्; जृम्-जृम्भितः, जृम्भितवान्;
 स्तिम्-स्तिम्भितः, स्तिम्भितवान्; अष्-अषितः, अषितवान्;
 क्षर्-क्षरितः, क्षरितवान्; चर्-चरितः, चरितवान्; स्वर-स्वर-
 रितः, स्वरितवान्; स्फुर्-स्फुरितः, स्फुरितवान्; उवल्-उव-
 लितः, उवलितवान्; दल्-दलितः, दलितवान्; मिल्-मिलितः,
 मिलितवान्; मील्-मीलितः, मीलितवान्; वेल्-वेहितः, वेहि-
 तवान्; शल्-शलितः, शलितवान्; शील्-शीलितः, शीलितवान्;
 खल्-खलितः, खलितवान्; खर्ष-खर्षितः, खर्षितवान्;
 गर्ध-गर्धितः, गर्धितवान्; जीव्-जीवितः, जीवितवान्; धाव्-
 धावितः, धावितवान्; सेव्-सेवितः, सेवितवान्; अश्-
 अशितः, अशितवान्; काश्-काशितः, काशितवान्; ईक्ष्-ईक्षि-
 तः, ईक्षितवान्; कांश्-कांक्षितः, कांक्षितवान्; तृष्-तृषितः,
 तृषितवान्; मिक्ष्-मिक्षितः, मिक्षितवान्; रक्ष्-रक्षितः, रक्षि-
 तवान्; लप्-लपितः, लपितवान्; शिष्-शिषितः, शिषितवान्;
 मर्त्स-मर्त्सितः, मर्त्सितवान्; रस्-रसितः, रसितवान्; लस्-
 लसितः, लसितवान्; श्वस्-श्वसितः, श्वसितवान्; शंस-
 शंसितः, शंसितवान्; हस्-हसितः, हसितवान्; हिस्-हिसितः;

द्विसितवान् ; ईह्-ईहितः, ईहितवान् ; ऊह्-ऊहितः, ऊहितवान् ; गह्-गहितः, गहितवान् ; रह्-रहितः, रहितवान् ।

६५ निष्ठा प्रत्यय के प्रयोग में इट् प्रत्यय धावे तो णिच् का लोप होता है । यथा, कारि-कारितः caused to be made, कारितवान् ; क्षालि-क्षालितः, क्षालितवान् ; पालि-पालितः, पालितवान् ; अर्पि-अर्पितः, अर्पितवान् ; स्थापि-स्थापितः, स्थापितवान् ; ध्रावि-ध्रावितः, ध्रावितवान् ; रोपि-रोपितः, रोपितवान् ; जनि-जनितः, जनितवान् ।

६६ निष्ठा षोष् स्विदिमिदिदिदिष्टः—निष्ठा प्रत्यय परे होने से शी का शय् होता है । यथा, शयितः शयितवान् ।

६७ निष्ठा प्रत्यय परे होने से धि, उकारान्त, ऊकारान्त, और घृ धातु के उत्तर इट् नहीं होता । यथा, धि-धितः, धितवान् ; यु-युतः, युतवान् ; द-दतः, दतवान् ; नु-नुतः, नुतवान् ; स्नु-स्नुतः, स्नुतवान् ; भू-भूतः, भूतवान् ; पू-पूतः, पूतवान् ; भू-भूतः, भूतवान् ; सू-सूतः, सूतवान् ; घृ-घृतः, घृतवान् ।

६८ गणपाठ के समय में जो धातु ईकार-संस्वर हों, निष्ठा प्रत्यय परे रहने से उनके उत्तर इट् नहीं होता । यथा, दीप्-दीप्तः, दीप्तवान् ; प्रस्-प्रस्तः, प्रस्तवान् ; पृष्-पृक्तः, पृक्तवान् ।

६९ दूसरे प्रकरणों में जहाँ धातु के परे विकल्प से इट् होता है वहाँ निष्ठा प्रत्यय परे रहने से इट् नहीं होता । यथा, इष्-इष्टः, इष्टवान् ; गुष्-गुप्तः, गुप्तवान् ; इष्-इप्तः, इप्तवान् ; लुष्-लुप्तः, लुप्तवान् ; भस्-भस्तः, भस्तवान् ; प्रस्-प्रस्तः, प्रस्तवान् ; घृष्-घृष्टः, घृष्टवान् ; भृष्-भृष्टः, भृष्टवान् ; मृष्-मृष्टः, मृष्टवान् ; गाष्-गाष्टः, गाष्टवान् ; गुष्-गुष्टः, गुष्टवान् ; सिष्-सिष्टः, सिष्टवान् ।

स्निग्धः, स्निग्धवान् ; मुह्-मुग्धः, मूढः, मुग्धवान्, मूढवान् ;
सह्-सोढः, सोढवान् ।

७० निष्ठा और क्तिन् प्रत्यय परे रहने से द्विप् द्विच् और
सिच् धातुओं के च् का ऊ होना है । यथा, द्विच्-द्यूतः, द्यूत-
वान् ; द्विच्-ष्ट्यन्तः, ष्ट्यन्तवान् ; सिच्-स्यूतः, स्यूतवान् ।

७१ निष्ठा और क्तिन् प्रत्यय परे होने से क्त्स् इत्यादि
धातुओं के भ् का धा होता है । यथा, क्त्स्-क्रान्तः, क्रान्तवान् ;
क्ष्-क्षान्तः, क्षान्तवान् ; क्षम्-क्षान्तः, क्षान्तवान् ; च्-चान्तः,
चान्तवान् ; तम्-तान्तः, तान्तवान् ; दम्-दान्तः, दान्तवान् ;
रम्-रान्तः, रान्तवान् ; शम्-शान्तः, शान्तवान् ; धम्-धान्तः,
धान्तवान् ।

७२ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो मङ्गिकृति-
निष्ठा प्रत्यय परे रहने से गम्, नम्, यम्, रम्, क्षण्, तन्, ;
मन् और हन् के वन्त्य वर्ण का लोप होता है । यथा, गम्-गतः,
गतवान् ; नतः, नतवान् ; यतः, यतवान् ; रतः, रतवान् ; क्षणः,
क्षतवान् ; ततः, ततवान् ; मतः, मतवान् ; हतः, हतवान् ।

७३ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो खन्, जन् और संन् धातु
का यथाक्रम खा, जा और सा होता है । यथा, खन्-खातः,
खातवान् ; जन्-जातः, जातवान् ; संन्-सातः, सातवान् ।

७४ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो मङ्गिकृति-
निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दन्श् इत्यादि धातुओं के उपधा-
नकार का लोप होता है । यथा, दन्श्-दष्टः, दष्टवान् ; रञ्-
रक्तः, रक्तवान् ; सञ्-सक्तः, सक्तवान् ; बन्ध्-बद्धः, बद्धवान् ;
स्तम्-स्तब्धः, स्तब्धवान् ; स्रश्-स्रष्टः, स्रष्टवान् ; ध्वस्-ध्वस्तः,
ध्वस्तवान् ; स्रस्-स्रस्तः, स्रस्तवान् ; शस्-शस्तः, शस्तवान् ।
प्रत्य्-प्रथितः, प्रथितवान् ; मन्थ्-मथितः, मथितवान् ।

N. B. क्वा के स्थान में इट होने पर ७०, ७१, ७२, ७४ का कार्य नहीं होता है ।

७५ इदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः—निष्ठा प्रत्यय परे होने से प्रकारान्त धातु के इ अीर उसके परस्थित निष्ठा के त का न होता है । यथा, क्लिडु-क्लिन्नः, क्लिन्नवान्; क्षुडु-क्षुन्नः, क्षुन्नवान्; खिडु-खिन्नः, खिन्नवान्; छिडु-छिन्नः, छिन्नवान्; भिडु-भिन्नः, भिन्नवान्; पडु-पन्नः, पन्नवान्, सडु-सन्नः, सन्नवान् । मडु धातु में नहीं होता । यथा, मत्तः, मत्तवान् ।

७६ भोदित्थ । श्वादिभ्यः—गणपाठ के समय में जो धातु भोकार-संसृष्ट हों उनके परे निष्ठा के त का न होता है । यथा, दज्-दणः, दणवान्; विज्-विन्नः, विन्नवान्; भुज्-भुन्नः, भुन्नवान्; मज्-मन्नः, मन्नवान्; मस्ज् के स् का लोप होता है-मन्नः, मन्नवान्; दू-दूनः, दूनवान्; सू-सूनः, सूनवान्; लू-लूनः, लूनवान्; दी-दीनः, दीनवान्; डी-डानः, डीनवान्; शि धातु के इ का दीर्घ होता है, क्षीणः, क्षीणवान् ।

७७ इदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः—र के परे निष्ठा के त का न होता है । यथा, गूर्-गूर्णः, गूर्णवान्, पूर्-पूर्णः, पूर्णवान्; चूर्-चूर्णः, चूर्णवान् ।

७८ संयोगदेशान्ती धातोर्वन्तः—ग्ला, म्ला, द्रा, स्त्या धातु के परे निष्ठा के त का न होता है । यथा, ग्ला-ग्लानः, ग्लानवान् । म्ला-म्लानः, म्लानवान्; द्रा-द्राणः, द्राणवान्; स्त्या-स्त्यानः, स्त्यानवान् ।

७९ निष्ठा प्रत्यय परे हो तो प्रकारान्त धातु के अर का ईर होता है । यथा, कृ-क्रीर्णः, क्रीर्णवान्; गृ-ग्रीर्णः, ग्रीर्णवान्;

वद्, वप्, घद् और स्थप् धातुओं के व का उ होता है । यथा, उपितः, उपितवान्; उक्तः, उक्तवान्; उदितः, उदितवान्; उप्तः, उप्तवान्; ऊढः, ऊढवान्; सुप्तः, सुप्तवान् ।

६१ निष्ठा, क्त्वा क्तिन् प्रत्यय परे हो तो गा (गै) पा और हा धातुओं के वा का ई होता है । यथा, गीतः, गीतवान्; पीतः, पीतवान्; हीनः, हीनवान् ।

६२ शुषः कः । पधो वः । धायो मः—निष्ठा सहित (क्षै), पव् और शुप् धातुओं का यथाक्रम क्षाम, पक और शुष्क होता है । यथा, क्षामः, क्षामवान्; पकः, पकवान्; शुष्कः, शुष्कवान् ।

N. B. कर्तृवाच्य में धातु के परे क्तवन् प्रत्यय होता है और क्तवन् प्रत्यय से बना हुआ पद कर्ता का विशेषण होता है, इसलिये कर्ता के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होता है । यथा, स पुस्तकं पठितवान्, तौ पुस्तकं पठितवन्तौ, ते पुस्तकं पठितवन्तः, सा चन्द्रं दृष्टवती, ते चन्द्रं दृष्टवथौ, ताश्चन्द्रं दृष्टवथः । वृक्षात् फलं पठितवान्, वृक्षात् फले पठितवती, वृक्षात् फलानि पठितवन्ति ।

२ कर्मवाच्य में क्तकर्मक धातुओं के परे क्त प्रत्यय होता है और क्त प्रत्यय से बने हुए पद कर्म के विशेषण होते हैं तथा कर्म के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होने हैं । यथा, कुम्भकारेण पटः कृताः, पटौ कृतौ, पटाः कृताः । मित्रेण पथी लिखिता, पथी लिखिते, पाथः लिखिताः । माखिसा सुष्यं चितम्, सुष्ये चिते, सुष्याणि चितानि ।

(क) गार्थर्थाकर्मकशिशुपशीह्स्वासथसजनरुद्रीर्यनिष्पध-
अकर्मक, गार्थर्क तथा शी, रथा, भाय्, वप्, रिक्तव् और वद्
में उपपत्ति योग से क्तकर्मक होने पर कर्तृवाच्य में भी क्त होता है और
इससे बने हुए कर्ता के विशेषण होने हैं । यथा, स जागरिताः, मा भूत्वा,
अर्धं दृष्टम्, शिशुः शिवितः, वृद्धो मृतः । स प्रार्थं गतः, स गुरं प्रीणितः ।

स विद्यालयं प्रदातः । स एवमाधिशयितः, स शय्यामधिष्ठितः, सुनिराश्रयम
प्राप्तितः, स ग्राममधुषितः । पिता पुत्रमाग्लिष्टः, वानरो वृक्षमारुढः ।

३ यदि कवयु और क प्रत्यय से बने शब्द समाधिका क्रिया की
भाति प्रयुक्त न होकर विशेषणरूप में प्रयुक्त हों तो विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति
और वचन को प्राप्त होते हैं । यथा; अधीतवान् छात्रः, अधीतवन्त छात्रम्,
अधीतवता छात्रेण, अधीवते छात्राय इत्यादि । भीतः शिशुः, भीत शिशुम्,
भीतेन शिशुना इत्यादि ।

४ सब धातुओं के उत्तर भाववाच्य में क होता है । भाववाच्य में क
प्रत्यय से बने शब्द समाधिका क्रिया की भाति व्यवहृत हों तो सदा
होवलिङ्ग की प्रथमा का एकवचन होता है । यथा, तेन कृतम्, ताभ्यां कृतम्,
तैः कृतम्, त्वया कृतम्, युवाभ्यां कृतम्, युष्माभिः कृतम्, मया कृतम्,
आवाभ्यां कृतम्, अस्माभिः कृतम्, शिशुना रदितम्, तेन भुक्तम्, मया
शातम्, स्वया दृष्टम्, कन्यया हसितम् । जब विशेष्य पद की भाति व्यवहृत
होते हैं तब अकारान्त होवलिङ्ग के समान होते हैं । यथा, गतम्, गते,
गतानि; रदितम्, रदिते, रदितानि ।

५ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च—मति, बुद्धि और पूजा अर्थ वाले
धातु के उत्तर वर्तमान काल में क होता है । यथा, राज्ञं मतः, दृष्टः,
दृष्टः, पूजितः ।

Exercise—38

1. Translate into Hindi—एवं कथञ्चित्वा स पुम्नके गृहीतवान् ।
कार्त्तुन सुभद्रां प्रसूयोदवान् । गृगमादाय गच्छता तेनैक शूकरो दृष्टः ।
एवं विवदमानौ द्वावपि राजकुलं गतवन्तौ । पौरैण तस्य घनमपहृतम् ।
हायमभिहितं भवता । तौ मुनिकुमारौ मभायां गतवन्तौ । हायवधार्यं
तस्योपरि कुटारं उल्लिखवान् । त्वन् धम्मं श्रेतुमिहागतोऽस्मि । रामस्य
तोदयेन वाणेन राखणो इतः । वानरेण हनो राजा विधाश्रीरेण रक्षिताः ।

2. Translate into Sanskrit:—(a) नापितसे ऐया बह कर

घर चला गया । भाजू देखकर वह वृक्ष पर चढ़ गया । वे प्रवृत्त
लेकर घर चले गये । मैंने तुम्हारे लड़के को एक पत्र लिखा था । वीर
शत्रु पर बाण छोड़ा । श्याम ने खेल में जाल फैला दिया । (२) मैंने पा
पुस्तक खरीदी । राजा की आज्ञा से चोर जेली पर लटका दिये गये
पिता की आज्ञा शिर पर धारण कर रामचन्द्र बन गये ।

(b) The king heard the cry of a woman. He sent
him a letter. I saw two tigers in the forest. You have
been many times tested by me. He asked him many
questions. Saying so he came back his home. Brahma
has created us and the earth. I have composed this book
in two years. I ordered him to go there.

3. Correct:—वयमत्र आगतः । सर्वे तत्र गतः । अहं पुस्तकं क्रीत-
न्तः । स धनं दत्तः । तौ श्यामं दृष्टवान् । बालिका पत्रं लिखितवान् ।
पृथग्वत् फलानि पतितवन्तः ।

क्तिन् (क्ति)

६३. द्वित्रयां क्तिन्—भाषयाच्य में धातु के परे 'क्तिन्' होता
है । क्तिन् का ति रहता है और इससे बने शब्द स्त्रीलिङ्ग होते
हैं । यथा, क्त्वा-क्त्वातिः, गी-गीतिः, मा-मितिः, स्था-स्थितिः,
चि-चित्तिः, नी-नीतिः । ऐसे ही प्रीतिः, भीतिः, श्रुतिः, द्रुतिः,
नुतिः, ध्रुतिः, स्तुतिः, स्रुतिः, हृतिः, धृतिः, भृतिः, मृतिः,
death, पृतिः, सृतिः, स्मृतिः, शक्तिः, मुक्तिः, उक्तिः, मक्तिः,
मुक्तिः, यज्ञ-रुष्टिः, युक्तिः, सृष्टिः, हृष्टिः, पृष्टिः, उष्टिः,
पत्तिः foot-soldier, मित्तिः, वित्तिः discussion, शक्तिः,
शुद्धिः, पृद्धिः, शुद्धिः, सिद्धिः, सतिः, तद-नतिः line, मतिः,

भान्तिः, गुप्तिः, तृप्तिः, क्षोप्तिः, सुप्तिः, लब्धिः, कम्-कान्तिः,
 ह्रान्तिः, क्षान्तिः forbearance गतिः, नतिः, भ्रान्तिः, रतिः,
 शान्तिः, धम्-धान्तिः, दृष्टिः, कृष्टिः, तुष्टिः, पुष्टिः, घृष्टिः, रुष्टिः ।

N. B. ग्वा, म्वा, हा, ह्रस्वादि धातुओं के परे ति का नि होता है ।
 द्या, म्लानिः, म्लानिः weariness, हानिः ।

णक (ण्युल्)

१४ धातुधौ—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में 'णक' होता है
 और णक का भक रहता है । यथा, नी-नायकः, धु-धायकः,
 पू-पायकः, कृ-कारकः, । ऐसे ही तारकः, स्मारकः, नाशकः,
 पाचकः, दाटकः, विच्-रेचकः, सेचकः, मोचकः, शेषकः, शोध-
 कः, शोषकः, दा-दायकः, गायकः, जनि-जनकः, पालि-पालकः,
 पोत्रि-पोत्रकः ।

(क) निमित्त अर्थ समझा जाय तो भविष्यन् काल में
 धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णक होता है । यथा, भुज्-भोजको
 भजति (भोजन करने के निमित्त जाता है), पच्-पाचको भजति
 (पाक करने के निमित्त जाता है) ।

(ल) षच् (षुन्) । तिङिनि षुर् । कृत्विनिर्दिश्य एव—तिङ्गो
 समझा जाय तो षुन्, षन् और रञ्च् धातुओं के उत्तर कर्तृ-
 वाच्य में षक होता है और षक का भक रहता है । यथा,
 मलकः, गतकः, रजकः, (रज्जु-रज्जो वाच्यः—रञ्च् के र् का
 शेष होता है) ।

(ष) षन्द् और धक (तिङिनि) षण्णन् । षुर् ष—तिङ्गो
 समझा जाय तो तौ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में षण्द् और
 धक होता है और षण्का भन और धक रहता है । यथा,
 गायन्, गायकः ।

तृच् ।

१०-तृच्-धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में तृच् होता है और तृच् का म रहता है । यथा, वा-दानु-दाना, पा-पाना, मा-माना, जि-जेना, मो-नेना, थीना, कर्ता, हर्ता, क्षेता, मर्ता, वेत्ता, पौद्धा, रोद्धा, गन्ता, हन्ता ।

शौच, धर्म और साम्यरूपकरण अर्थ में भी तृच् होता है ।

(क) लुट् विभक्ति के अनुसार तृच् पर होने से भी धातु के उत्तर इट् होता है । यथा, भू-भविता, पदु-पदिता, कलिता, चलिता, देविता, नोदिता, नसिता, दाविता, संविता, कारि-कारयिता, स्थापि-स्थापयिता, जनि-जनयिता, मू-सविता, सोता, स्तु-स्तयिता, स्तोता, इप्-पयिता, पष्टा; शुच्-शोचिता, शोछा, रुप्-रोपिता, रोष्टा ।

अण् ।

११-कर्मण्यण्—कर्मवाचक पद के परवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अण् होता है और अण् का म रहता है । यथा, कुम्भं करोति इति कुम्भकारः, तन्तून् वयति तन्तुवायः weaver, तन्त्रं वयति तन्त्रवायः weaver, शास्त्राणि करोति शास्त्रकारः, सूत्रकारः, चाटुकारः flatterer, सूत्रधारः, माहा-कारः, भाषाकारः, कर्मकारः, वारिधाहः cloud.

अट् ।

१२-दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिवहुनान्दीकिलिपिलिविलि-मतिकर्तृचित्रनेत्रसंख्याजहावाहृषर्षतृधनुंररपु—दिवा इत्यादि कर्म-वाचक पद के परवर्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है और अट् का म रहता है । यथा, दिवाकरः,

विभाकरः, निशाकरः, प्रभाकरः, भास्करः, अन्तकरः, किङ्करः, लिपिकरः, बलिकरः, भक्तिकरः, अहस्करः the sun, चित्रकरः, कर्मकरः (कर्मणि भृतौ-भृत्य अर्थ समभा जाय तो अण् होता है) ।

(क) कृणो हेतुताच्छीलानुलोम्बेषु—हेतु और अनुकूल अर्थ समभा जाय तो कर्मवाचक पद के परवर्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अद् होता है । यथा, हेतु अर्थ में-शोककरः घन्धुनाशः (शोक का हेतु घन्धुनाश), अर्थकरः यशस्करः विद्यालामः (अर्थ और यश का हेतु विद्यालाम), क्लेशकरः, क्षोभकरः, रोगकरः । अनुकूल अर्थ में-वलकरं पुष्टिकरं अन्नम् (बल और पुष्टि के अनुकूल अन्न), हितकरः, प्रीतिकरः, मङ्गलकरः ।

(ख) पुरोऽप्रतोऽप्रेषु सत्तोः—पुरस्, अप्र, अप्रे, अप्रतः, इन कई शब्दों के परवर्ती रु धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अद् होता है । यथा, पुरःसरः, अप्रसरः, अप्रेसरः, अप्रतः सरः ।

(ग) चरेष्टः—अधिकरणवाचक पद के परवर्ती चर् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अद् होता है । यथा, जले चरति जलचरः, धारिणि चरति धारिचरः, स्थले चरति स्थलचरः, भुवि चरति भूचरः, वने चरति वनचरः, निशयां चरति निशाचरः, पार्श्वे चरति पार्श्वचरः, खे चरति खेचरः (कमी कमी अधिकरणवाचक पद सविभक्तिक होता है), रात्रौ चरति रात्रिचरः रात्रिचरः (रात्रि शब्द विकल्प से द्वितीया-एकपचनागत होता है), वनेचरः ।

(घ) कर्मवाचक पद के परवर्ती गौ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अद् होता है । यथा, साम गायति सामगः ।

(ङ) कर्मवाचक पद के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अद् होता है और हन् का प्र होता है । यथा,

शत्रुं हन्ति शत्रुघ्नः, पापं हन्ति पापघ्नः, पित्तं हन्ति पित्तघ्नः
घातं हन्ति घातघ्नः, मित्रं हन्ति मित्रघ्नः, गां हन्ति गोघ्नः, पशुं
हन्ति पशुघ्नः, त्रिदोषं हन्ति त्रिदोषघ्नः ।

अ (अच्)

९८ नन्दिप्रह्विपवादिभ्यो ल्युणिन्त्वच्—पच् इत्यादि धातु के
उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है । यथा, पचः cook, चलः
trembling, सर्पः, दिग्-देवः, चरः, धृ-घरः mountain.

(ङ) हरतेरनुषमनेऽच्—कर्मवाचक पद के परपत्नीं ह धातु
के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है । यथा, अंशं हरति अंशहरः,
भागं हरति भागहरः, रोगहरः, शोकहरः, दुःखहरः, बलेशहरः ।
भारवहन अर्थ में नहीं होता, यथा, भारं हरति भारहारः (भष्
लगा है) ।

(ख) भर्हः—कर्मवाचक पद के परपत्नीं भर्ह धातु के
उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है । यथा, पूजां भर्हति पूजार्हः,
सत्त्वं भर्हति सत्तर्हः, सत्कारं भर्हति सत्कारार्हः, निन्दां भर्हति
निन्दार्हः ।

(ग) अधिदाने शोते—अधिकरण वाचक पद के परपत्नीं
शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है । यथा, शिलायां
शोते शिलाशयः, भूमौ शोते भूमिशयः, शय्यायां शोते शय्याशयः ।

पार्श्व इत्यादि शब्दों के परपत्नीं शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ
होता है । यथा, पार्श्वेन शोते पार्श्वशयः, पृष्ठेन शोते पृष्ठशयः, वरीणे शोते
उरशयः, उक्तानः शोते उक्तानशयः, अश्वगूर्द्धां शोते अश्वगूर्द्धशयः ।

क (अच्)

(ष) भजोऽनुगतौ कः—कर्मवाचक पद के परपत्नीं भा-
कारान्म धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ (क) होता है और धातु
के भा का अंग होता है । यथा, भजन् व्रजति भजन्तः, भूमिदः,

करद्, धनद्, जलद्, वारिद्, तनुं प्रायते तनुत्रम् (अपा-
दान के उत्तर वा धातु के परे भी अ होता है। यथा, आत-
पात् प्रायते आतपत्रम्), धर्मं जानाति धर्मज्ञः, रसज्ञः,
सर्वज्ञः, नृन् पाति नृपः, भुवं पाति भूपः, भूमिपः, मधुपः ।

आतधोपसर्ग—उपसर्ग के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर मो
र होता है। यथा, विज्ञः, अभिज्ञः, प्रदः, प्रतिपः, व्याघ्रः, निमः ।

(ब) छि एषः—सुबन्त पद या उपसर्ग के परवर्ती स्था
धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के आ का
लोप होता है। यथा, गृहे तिष्ठति गृहस्थः, मध्यस्थः, धनस्थः,
प्रकृतिस्थः, सुस्थः, संस्थः, दुस्थः, उत्थः Standing, निष्ठः
skilled in.

(छ) सप्तमां कर्नेर्धः । उपसर्ग व संज्ञायाम्—उपसर्ग या सुबन्त
पद के परवर्ती जन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है
और धातु के अकार और नकार का लोप होता है। यथा,
सरसि जायते सरोजम्, सरसिजम्, (कभी कभी पूर्व पद
विभक्त्यन्त होता है); मनसि जायते मनोजः, मनसिजः,
अप्सु जायते अजम्, अद्गात् जायते अद्गजः, जले जायते
जलजम्, पङ्कात् जायते पङ्कजम्, स्वेदजः, अण्डजः, जरायुजः,
सह जायते सहजः, अनु जायते अनुजः, अग्ने जायते अमजः,
द्वि जायते द्विजः, आत्मजः, प्रजायन्ते प्रजाः ।

(ज) अन्तात्पन्ताच्चदूरपारसर्वाङ्गेषु ङः—सुबन्त पद के परवर्ती
गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के
अकार तथा मकार का लोप होता है। यथा, अन्तं गच्छति
अन्तगः, अध्यानं गच्छति अध्वगः, दूरगः, पारगः, सर्षं गच्छति
सर्षगः, सर्व्यत्रगः, गृहं गच्छति गृहगः, प्रामगः, तल्पं गच्छति,
तल्पगः, श्ले गच्छति श्लगः ।

समर्थ - वर, भुव, तारा, उग्र् और विद्वान् शब्द के उत्तरी ध्वनि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और विद्वान् ध्वनि धातु के उत्तर में अिड होने हैं । वरा, वीर वरुणि वरुणः, वरुणः, वरुणम्; मुनेः वरुणि मुनेणः, मुनेणः, मुनेणम्; स्वामः वरुणि स्वामः, वरुणिः, वरुणिम्; उरुणः वरुणि उरुणः, उरुणिः, उरुणिम्; विद्यायाः वरुणि विद्याः, विद्याः, विद्याम् ।

(ऋ) अने कौशात्तयोः - वडेश, शोक और तमम् ध्वनि के परवर्ती अणुध्वनिक ध्वनि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के मकार तथा मकार का लोप होता है । यथा, वडेशम् अणुध्वनित वडेशापदः, शोकापदः, तमोपदः ।

अइ (क)

९९ इणुपशातोः - जिन धातुओं की उवधा में इ, उ, ऋ हो उनके उत्तर कर्तृवाच्य में अइ होता है और अइ का अ रहता है । यथा, विद्-विदः, युष्-युधः, नुड-नुदः, नृत्-नृतः ।

(क) प्री, क और ग धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अइ होता है । ई के स्थान में इय् और ऋ के स्थान में इर् होता है । यथा, प्री-प्रियः, क-किरः, ग-गिरः ।

(ख) दुदः क् फण - सुषन्त पद के परवर्ती दुद् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अइ होता है । दुद् के ह् का घ् होता है । यथा, कामं दोग्धि कामदुवा घेनुः ।

णिन्

१०० मन्त्रिप्रद्विपचादिभ्यो लुगिन्यक - धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णिन् होता है और णिन् का इन् रहता है । यथा, मन्त्र-मन्त्रिन्-मन्त्री, वहु-धादी, प्रतिधादी, परिधादी, यस्-वासी, प्रवासी, अधिवासी, राध्-अपराधी, चर्-अभिचारी, सञ्चारी, स्था-स्थाधी, सु-संसारी, द्विष्-द्वेषी, विद्वेषी, शध्-रोधी,

विरोधी, प्रतिरोधी; दुह्-द्रोही, विद्रोही; दिव्-परिदेवी, ह-
अधिकारी, मध्-प्रमाथी, लप्-अमिलापो ।

(क) ह्य्यजातो ङिनिस्ताच्छील्ये । प्रते । बहुलमाभीक्ष्ये—उपसर्ग
और सुबन्त पद के परवर्ती धातु के उत्तर प्रत, शील और
पौनःपुन्य अर्थ में ङिन् होता है । यथा, मत अर्थ में—स्थण्डिले
रीने स्थण्डिलगामी, आद्धभोजी । शील अर्थ में—उष्णं भुङ्क्ते
उष्णभोजी, अनु याति अनुयायी, अनु जीवति अनुजीवी, सोमं
पिवति सोमपायी, अग्रे याति अग्रयायी, साधु करोति साधु-
कारी, प्रमादी, सत्यवादी, प्रियवादी, विकर्त्वी, मनोहारी,
विकारी, हृदयग्राही, कणवाहो, पण्डितमानी, सुभगमानी,
अनुगामी, सहगामी । पौनःपुन्य अर्थ में—पुनः पुनः मिथ्या वदति
मिथ्यावादी, पापकारी, कलहकारी, मित्रद्रोही ।

(ख) करणे यञः—करणवाचक पद के परवर्ती यञ् धातु
के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में ङिन् होता है । यथा, सोमेन
इष्टवान् सोमयाजी, अग्निष्टोमेन इष्टवान् अग्निष्टोमयाजी ।

(ग) कर्मणि हन्ः—कर्मवाचक पद के परवर्ती हन् धातु
के भूतकाल में कर्तृवाच्य में ङिन् होता है और हन् धातु के
ह का घ और न का त होता है । यथा, पितरं जघान पितृ-
घातो, पितृव्यं जघान पितृव्यघातो, पुत्रं जघान पुत्रघातो, मित्रं
जघान मित्रघातो ।

(घ) भविष्यत् काल समझा जाय तो भू, या, स्या, गम्,
युष् और क्ष् धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में ङिन् होता है ।
यथा, भू-मायी what will be, यायी, स्यायी, प्रस्थायी,
गामी, प्रतिवोधी, युष्-प्रतियोधी, प्रतिरोधी ।

(च) विभृ—युञ्, त्यञ्, भञ्, रञ्, वि-पूर्वक विञ्,
सम् पूर्वक पृच् और सृञ् धातु के उत्तर शील अर्थ के कर्तृ-

वाच्य में विभुत् होना है और विभुत् का इत् लक्ष्य है । यथा, कुत्र गीर्षी, विगीर्षी, उविगीर्षी, ह्यगीर्षी, परिगीर्षी, प्रागीर्षी, विजागीर्षी । इत् (इत्) धातु के स् का लोप होना है यथा, गीर्षी, विगीर्षी, अनुगीर्षी, विवेकी, इत्तुम् वागकी, इत्तुम् इत्तुमी ।

(४) इत् अर्थगोचर विभक्ति — निम्ना गणों सम्बन्ध ज्ञान होने पर कर्मवाचक वा के वाचकी वि पूर्वक ली धातु के उत्तर मूल-कात् के कर्तृवाच्य में इत् होता है । यथा, मोमं विक्रीतान् मोमविक्रीणी, मूलविक्रयो, नैलविक्रीणी, पुत्रविक्रीणी, मुद्रविक्रीणी सोमविक्रीणी ।

(५) कर्मव्यक्तो विभुत् — इत् इत्यादि धातुओं के उत्तर होने पर कर्म के कर्तृवाच्य में ' इत् ' होता है । यथा, शन् शन्, धमा, परिधमी, दधो, इमी, घमो, घ मू-घसामी ।

सञ् ।

101 विघ्नस्तुदः—विघ्न और मरुत् शब्द के परवर्ती तुड धातु के तथा पर और स्रष्ट शब्द के परवर्ती तृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में सञ् होता है और सञ् का म रहता है । यथा, विघ्नं तुदति विघ्नं तुदः । अद्विपरन्तस्य मुम्—मरुत् के स् का म होता है, यथा, मरुत्तुदति मरुत्तुदः wounding the vital parts, परं तपति परन्तपः, स्रष्टं तपति स्रष्टन्तपः ।

N. B. द्विपरन्तपोन्तापे सचि ह्रस्वः—पर शब्द के परवर्ती तापि धातु के उत्तर सञ् होता है और धातु के आ का अ होता है । यथा, परं तापति परन्तपः ।

(६) असूर्य्यं और उग्र शब्द के परवर्ती दृश् धातु के उत्तर कर्त् ।

वाच्य में खड् होता है और वृश् का पश्य होता है । यथा, असूर्य्यम्पश्यः, उग्रम्पश्यः ।

(ल) प्रियवरो वदः खच् । बहाम्ने लिहः—प्रिय और वश शब्द के परवर्ती वद् धातु के और भक्ष शब्द के परवर्ती लिह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खड् होता है । यथा, प्रियम्पदः, वशम्पदः, भक्षलिहः ।

(ग) वार्चयमपुरन्दरो च —व्रत अर्थ में वाच् शब्द के परवर्ती यम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खड् होता है । यथा, वार्चयमः (मौनवती) ।

(घ) सर्व्वलाघरीषेषु क्पः—सर्व्व, कूल, भक्ष और करीष शब्द के परवर्ती कप् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खड् होता है । यथा, सर्व्वङ्कपः, कूलङ्कपः, भक्षङ्कपः, करीषङ्कपः ।

वदित्कले क्षत्रिवदोः—कूल शब्द के परवर्ती उत् पूर्व्वक दज् और यद् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खड् होता है । यथा, कूलमुद्भ्रजः breaking down the bank कूलमुद्भ्रजः ।

ख—(ग) संशयां भृशत्रिषारिषहितपिद्मः—संशय समझी जाय तो विभ्य शब्द के परवर्ती भृ, पति और स्वयम् शब्द के परवर्ती भृ, सर्व्व शब्द के परवर्ती सद् तथा वसु शब्द के परवर्ती धृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ख होता है और ख का अ रहता है । यथा, विभ्वम्मरो विष्णुः, विभ्वम्मरा पृथिवी, पतिवरा, स्वयंवरा कन्या, सर्व्वसहा पृथिवी । वसु शब्द के परे न् होता है; वसुन्धरा पृथिवी ।

खड्—(घ) मेघतिमवेतु ह्रजः । क्षेमत्रिषमद्देहन् च—भय, प्रिय और क्षेम शब्द के परवर्ती ह्र धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खड् होता है और खड् का अ रहता है । यथा; भयद्दुरः, प्रियद्दुरः, क्षेमद्दुरः ।

(ज) नासिकास्तनयोध्मचिटीः—स्तन शब्द के परवर्ती धे घातु के उत्तर कर्तृवाच्य में छट् होता है । यथा, स्तनन्धयः शिशुः स्तनन्धवी कन्या ।

खि

१०२ आत्मोदरकुक्षिषु इति चान्द्राः—कुक्षि और उदर शब्द के परवर्ती भृ घातु के उत्तर खि प्रत्यय मोता है और खि का इ रहता है । यथा, कुक्षिम्मरिः, उदरम्मरिः ।

ख्य

१०३ मनआत्मनने ख्यश्च— आत्ममनन अर्थ में कर्मवाचक पद के परवर्ती मन् घातु के उत्तर कर्तृवाच्य में ख्य होता है और ख्य का य रहता है । यथा, आत्मानं पण्डितं मन्यते पण्डितम्मन्यः, शृतार्थम्मन्यः, धन्यम्मन्यः ।

इ

१०४ स्तम्यशकृत्तोरिन्— शकृत् और स्तम्य शब्द के परवर्ती कृ घातु के उत्तर कर्तृवाच्य में इ होता है । यथा, शकृत्करि, स्तम्यकरिः ।

(क) फलेग्रहिरात्मम्मरिश्च— इ प्रत्यय परे होने से फलेग्रहि और आत्मम्मरि पद निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, फलानि गृह्णाति फलेग्रहिः, आत्मानं विभक्ति आत्मम्मरिः ।

खनट्

१०५ आदयसुभगस्यूलपलितनम्रान्धत्रिवेषुष्वाभेष्वसौ कृजः बरषे खुर-
अभूतनद्वाय अर्थ समझा जाय तो प्रिय इत्यादि शब्द के परवर्ती कृ घातु के उत्तर करणवाच्य में खनट् होता है और खनट् का अन रहता है । यथा, अप्रियः प्रियः क्रियतेऽनेन

प्रियङ्करणम्, पलितङ्करणम्, नग्नङ्करणम्, अन्धङ्करणम्, स्थूल-
ङ्करणम्, सुभगङ्करणम्, आढ्यङ्करणम् ।

खिण्णु और खुकञ्

१०६ कर्त्तरि भुवः खिण्णु खुकञी—अभूततद्वाच्य अर्थ में प्रिय
इत्यादि शब्दों के परवर्ती भू धातु के उत्तर कर्त्वाच्य में
खिण्णु और खुकञ् होते हैं और दोनों का यथाक्रम इण्णु और
उक रहता है । यथा, अप्रियः प्रियो भवति प्रियम्भविण्णुः,
आढ्यम्भविण्णुः, प्रियम्भावुकः, आढ्यम्भावुकः, सुभगम्भावुकः ।

णि ।

१०७ भजोणिः—सुवन्त पद के परवर्ती भज् धातु के उत्तर
कर्त्वाच्य में णि होता है और णि का लोप हो जाता है ।
यथा, अंशं भजते अंशभाक्, दुःखं भजते दुःखभाक् ।

क्विप् ।

१०८ सत्सृष्टिषु ददृहपुगविदभिदद्विद्विनीराजाम् उपसर्गेऽपि क्विप्—
सुवन्त पद के परवर्ती धातु के उत्तर कर्त्वाच्य में क्विप् होता
है और इसका विल्कुल लोप होता है । यथा, समासद्,
संसद्, परिषद्, पुत्रसुः (पुत्र उत्पन्न करने वाला), वीरसुः,
प्रसुः, घर्मद्विद्, मित्रद्विद्, शास्त्रविद्, घर्मविद्, प्रह्लाविद्,
गोत्रविद्, मर्मविद्, पक्षच्छिद्, मर्मच्छिद्, शत्रुजित्, इन्द्र-
जित्, सेनानीः, अप्रणीः, विराट्, स्वराट्, सघ्राट्, जलस्पृक् ।

N. B. उदक शब्द के उत्तर नहीं होता । उदकरष्टरा में अट् होता है ।

(क) शुक्लमंगामन्त्रपुण्येषु कृमः—सु, कर्मन्, पाप, मन्त्र और
पुण्य शब्द के परवर्ती कृ धातु के उत्तर कर्त्वाच्य के भूतकाल
में क्विप् होता है । यथा, सु कृतवान् सुकृत्, कर्म कृतवान्
कर्मकृत्, पापकृत्, मन्त्रकृत्, पुण्यकृत् ।

(घ) अग्रभ्रूणवृत्तेषु क्विप्—भ्रूण्, ब्रह्मन् और वृत्र शब्द के परवर्त्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में क्विप् होता है । यथा, भ्रूणं जघान भ्रूणहा, ब्रह्महा, वृत्रहा ।

(ग) सोमे सुजः । अग्नौ चोः—अग्नि शब्द के परवर्त्ती चि और सोम शब्द के परवर्त्ती सु धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है । यथा, अग्नि चितथान् अग्निचिप्, सोमं सूतथान् सोमसुत् ।

क्विप् और पङ्

१०९ स्वदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च—उपमान धाचक तद्, यद्, एतद्, मघत्, अस्मद्, युष्मद्, अद्स्, इद्स्, अन्य और समान शब्द के परवर्त्ती दृश् धातु के उत्तर कर्मवाच्य में क्विप् और पङ् होता है । क्विप् का लय लोप हो जाता है और पङ् का अ रहता है ।

(क) क्विप् और पङ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से तद्, यद्, एतद्, अस्मद्, और युष्मद् शब्द के वु का लोप और उसके पूर्ववर्त्ती अ का आ होता है । यथा, स इय दृश्यते ताद्क्, ताद्दशः; याद्क्, याद्दशः; एताद्क्, एताद्दशः; अस्माद्क्, अस्माद्दशः; युष्माद्क्, युष्माद्दशः ।

N. B. अस्मद् और युष्मद् शब्द के स्थान में पञ्चम्ये में म् और ल् होने से भी होता है । यथा, मादङ्, मादशः; मादङ्, मादशः ।

(ख) क्विप् और पङ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से अद्स् का अम्, इद्स् का ई, किम् का की, मघत् का मया, समान का स और अन्य का अन्या हो जाता है । यथा, इय दृश्यते भम्द्क्, भम्द्दशः; भयमित्य दृश्यते ईद्क्, ईद्दशः; क इय दृश्यते कीद्क्, कीद्दशः; भयमित्य दृश्यते मयाद्क्,

मवाद्दृशः, समान इव दृश्यते सदृक्, सदृशः; अन्य इव दृश्यते
अनवाद्दृक्, अनवाद्दृशः ।

कनिप्

११० दृतेः कनिप्—कर्मवाचक पद के परवर्ती दृश् धातु के
उत्तर कर्तृवाच्य के भूतकाल में कनिप् होता है और कनिप्
का वन् रहता है । यथा, पारं दृष्टवान् पारदृश्या ।

इष्णु

१११ अलङ्कृष्, निराङ्गन् प्रजनोत्पचोत्पत्तोन्मदरुष्यप्रपष्टुशुसहचर
इष्णुः । भुवश्च—शील, धर्म और सम्यकरण अर्थ में सह्, रुच्,
वृष्, अलङ्कृ, निराङ्, प्रजन्, उत्पच्, उत्पत्, उन्मद्, अपत्रप्,
वृत्, चर्, और प्र-भू धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में इष्णु
होता है । यथा, सह्-सहिष्णुः, रोचिष्णुः, पथिष्णुः, अलङ्कुरि-
ष्णुः, निराकरिष्णुः, प्रजनिष्णुः, उत्पचिष्णुः, उत्पतिष्णुः, उन्म-
दिष्णुः, अपत्रपिष्णुः, पथिष्णुः, चरिष्णुः, प्रभविष्णुः ।

स्तुक्

११२ ग्वाजितवस्वस्तुच्—शील इत्यादि अर्थ में जि, भू, स्था
और ग्ला धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में स्तुक् होता है और
स्तुक् का स्तु रहता है । यथा, जिष्णुः Victorious, भूष्णुः,
स्थास्तुः, ग्लास्तुः languid.

वन्

११३ प्रसिष्टिष्प्रसिष्टिषेः ऋः—शील इत्यादि अर्थ में प्रस्,
गृष्, धृष् और क्षिप् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में वन् होता
है और वन् का नु रहता है । यथा, प्रस्तुः timid, गृध्नुः
greedy, धृष्णुः bold, क्षिप्नुः throwing.

उक्ञ्

११४ लपतपदस्थाभूषवहनकमगमशुभ्य उक्ञ्—शील इत्यादि अर्थ में कम्, लप्, पत्, पवु, स्था, भू, वृप्, हन्, गम् और श् घातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में उक्ञ् होता है और उक्ञ् का उक् रहता है । यथा, कामुकः, लापुकः, पाटुकः who goes on foot, स्थायुकः, भायुकः, वपुःकः, गामुकः, शाकुकः, हन् का घात् होता है; घातुकः ।

आलु

११५ स्पृहिसृहपतिदधिनिद्रातन्द्राध्रदाभ्य आलुञ्—शील इत्यादि अर्थ में द्य्, नि और तन् पूर्व्यक द्रा, धत् पूर्व्यक धा, शी, स्पृहि, सृहि और पति घातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में आलु होता है । यथा, दयालुः, निद्रालुः, तन्द्रालुः, ध्रदालुः, शयालुः sleepy, गृहपालुः, सृहपालुः, पतयालुः talking.

घुर्

११६ भञ्जभाममिदो गुण् —शील इत्यादि अर्थ में भञ्, भास् और मिदु घातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में घुर् होता है । और घुर् का उर रहता है । यथा, भङ्गुरः, भासुरः, मैदुरः smooth, soft.

क्ष्वरप्

११७ इण्णञ्जिगतिभ्यः क्ष्वरप्—शील इत्यादि अर्थ में णश्, इ, जि, मृ और गम् घातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में क्ष्वरप् होता है और क्ष्वरप् का णर रहता है । यथा, णरः, इणरः, जिणरः, मृणरः । गन्धोश्च—गम् के म् का मृ होता है; गणरः ।

र

११८ नमिस्त्विराम्यजसकमदिसदीपो रः—शील इत्यादि अर्थ नम्, कम्, हिन्स्, स्मि, कम्प्, अजस्, और दीप् घातु के उत्तर कर्तृवाच्य में र होता है । यथा, नम् नमः, हिन्स्-हिस्मेरः, कम्पः, अजस्रः eternal, दीप्रः shining.

उ

११९ उनाशंसनिध उः । किन्दुरिच्छुः—शील इत्यादि अर्थ आपूर्वक शंस्, इप्, मिक्ष् और सन्त घातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में उ होता है । यथा, आशंसुः desirous. इप् इच्छ होता है; इच्छुः, मिक्षुः, जिज्ञासुः, विपासुः, सुसुक्षुः, कीर्षुः, विवक्षुः, जिपृक्षुः, wishing to take, जिप्सुः, तीर्षुः, ईप्सुः, दित्सुः, लिप्सुः, जिपीषुः ।

घर

१२० स्वेतभातविमकपो वार्व् । वरच वरः—शील इत्यादि में स्था, ईश्, भास्, कस् और पडन्त या घातु के उत्तर कर्तृवाच्य में वर होता है । यथा, स्थावरः, ईश्वरः, भास्ववश् का लोप होता है—यायावः horse.

ऊरु

१२१ आगुरुक । वरज्वरती वरुः—शील इत्यादि अर्थ में उ घातु तथा घटन्त वज्, जप, वहु और दन्श् घातु के उत्तर ऊरु होता है और वरु का लोप होता है । यथा, आगुरुकः पञ्च-शयजूकः one who performs sacrifices frequently. अज्रजूकः, यावजूकः, इन्द्रजूकः ।

इत्नु

१२२ शील इत्यादि अर्थ में स्ननि, मदि, दूनि, गदि और हवि धातुओं के उत्तर इत्नु होता है। यथा, स्नयित्नु cloud, मद्यित्नुः a mad mad, दूयित्नुः vitiating, गद्यित्नुः talkative हर्षयित्नुः।

यमर

१२३ यषपदः क्मरच्—शील इत्यादि अर्थ में घस्, मद् और मृ धातु के उत्तर यमर होता है और इसमें मर रहता है। यथा, घस्मरः, अमरः, यमरः going.

कुर

१२४ विदिमिदिच्छिदेः कुरच्—शील इत्यादि अर्थ में छिद्, मिद्, और विद् धातु के उत्तर कुर् होता है। यथा, छिदुरः cutting, मिदुरः, विदुरः who knows.

त्र

१२५ दाम्नीशस्युजस्तुतुदसितिचमिहपतदशनदःकलो—करण अर्थ में दा, नी, स्तु, शस्, यु, युज्, तुड, सि, सिच्, मिह्, पत्, दन्श्, नद् इत्यादि धातुओं के उत्तर कर्तृषाच्य में त्र होता है। यथा, नयति अनेन नैत्रम्, दाति अनेन दात्रम्-sickle, शसति अनेन शस्त्रम्, स्तौति अनेन स्तोत्रम्, पतति अनेन पत्रम्, दशति अनया दंष्ट्रा-jaw.

इत्र

१२६ अतिबुधुस्रनसहपर इत्रः—करणशाच्य में पू, चर्, घर्, खन्, ल्, झ, धू, सू और सह धातु के उत्तर इत्र होता है।

यथा, पूयते दानेन पवित्रम्, चरित्रम्, वहित्रम्, खनित्रम् इत्यादि ।

इ (कि)

१२७ उपसर्गो धोः किः—उपसर्ग और अन्तर् शब्द के परवर्त्तो धा धातु के उत्तर भाववाच्य में इ होता है और धातु के आकार का लोप होता है । यथा, विधिः, निधिः, सन्धिः, धाधिः, अन्तर्हिः disappearance.

(क) कर्मण्यधिकरणे च—कर्मण्यधिक पद के परवर्त्तो धा धातु के उत्तर अधिकरणवाच्य में इ होता है और धातु के आकार का लोप होता है । यथा, जलानि धीयन्तेऽस्मिन् जलधिः, वारिधिः, पयोधिः, जलनिधिः, वारिनिधिः, पयोनिधिः ।

त्रिमक्

१२८ द्वितः किः—गणपाठ काल में जो धातु डु-संख्ये हों उनके उत्तर त्रिच्युत्त अर्थ में त्रिमक् होता है और इसका त्रिम रहता है । यथा, कृ-क्रियया निच्युत्तम् कृत्रिमम्, दा का दत् होता है-दानेन निच्युत्तम् दात्रिमम्, पाकेन निच्युत्तम् पक्त्रिमम् ।

अधु

१२९ द्वितोऽधुच्—गणपाठ काल में जो धातु डु-संख्ये हों उनके उत्तर भाववाच्य में अधु होता है । यथा, धीप्-धेपधुः, रम्-रमधुः, श्वि-श्वपधुः swelling.

अनि

१३० आक्रोशे नश्यतिः—नप् के परवर्त्तो धातु के उत्तर भाववाच्य के आक्रोश अर्थ में अनि होता है । अनि-प्रत्ययान्त शब्द अलिङ्ग होते हैं । यथा, जांप्-भर्जावनिः non-existence, जन्-भजननिः privation of birth.

अन

१११ ल्युट् च—भाष्यवाच्य में धातु के उत्तर अन होता है अन-प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं । यथा, गम्-गमनम् भुज् भोजनम्, शी-शयनम्, यमनम्, आ-रुह्-आरोहणम्, मक्ष्णम्, चलनम्, पतनम्, क्षरणम्, स्वलनम्, रक्षणम्, मक्ष्णम्, गर्जनम्, लङ्घनम्, स्यन्दनम्, तर्पणम्, मननम्, भिक्षि-इ-अध्ययनम्, यञ्चनम्, खण्डनम्, पानम्, दानम्, गानम्, घ्राणम्, ज्ञानम्, विधानम्, आ-धा-आधानम् taking, मानम्, स्नानम्, चि-चपनम्, धि-अधयणम् धषणम्, करणम्, मरणम्, मरणम्, धरणम्, स्मरणम्, हरणम्, दर्शनम्, स्प-शीतम्, सेचनम्, रञ्जनम्, नत्तेनम्, मन्थनम्, रोदनम् ।

N. B. मन्दिमहिषचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—मदि इत्यादि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अन होता है । यथा, मदि-मन्दकः, मदि-मदकः, माधि-साधनः, वदि-वर्द्धनः, शोभि-शोभनः, सह-सहनः, तप-तपनः—The sun, दम्-दननः, रमि-रमणः, मृदि-मृदनः, मोवि-मोषणः, माशि-नाशनः ।

कृ-धमण्डनार्थेभ्यश्च—लोषार्थ और मण्डनार्थ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्लीब इत्यादि अर्थ में अन होता है । यथा, कृप्-क्रीपनः, रोषणः, कोषनः, आ-मृप्-आमर्षणः, मण्डनः, अलङ्करणः ornament.

इ तु वाह्याग्नय इन्द्रस्य गृ गृधि उपल शुच् लप् पत्-परः—शील इत्यादि अर्थ में पाल् इत्यादि धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में अन होता है । यथा, अलनः fire, रोचनः, वर्द्धनः, यतनः, रदनः ।

अनद् ।

(क.) करण और अधिकरण अर्थ में धातु के उत्तर अनद् होता है और इसका अन रहना है । अनद्-प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं । यथा, करण अर्थ में—गीवते अनेन नयनम्,

के परवर्ती धातु के उत्तर कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है और इसका अ रहता है । यथा, कृ-सुकरः, दुष्कृतः, दुष्करः, गम्-सुगमः, दुर्गमः, ईषद्-सुषडः, दुष्-सुषडः, सुषडः, सुष्यजः, दुष्प्यजः, ईष्यजः, सुषमः, दुर्लभः, ईष्यतः

श्रृत् और अन (युच्)

१३५-शातो युच् । भाववां शक्तिवृद्धिनिष्पृष्टिभ्यो युञ्जन्-सु. दूर और ईषन् शब्द के परवर्ती शास्, युष्, इष्, और मृष् धातु के उत्तर कर्मवाच्य में श्रृत् और अन होते हैं । यथा, शास्-सुशासः, सुशासनः, दुःशासः दुःशासनः, सुयोधः सुयोधनः, दुर्योधः दुर्योधनः, सुदर्शः सुदर्शनः, दुर्दर्शः दुर्दर्शनः, सुधर्वः सुधर्वणः, दुर्धर्वः दुर्धर्वणः, सुमर्षणः, दुर्मर्षणः, दुर्मर्षणः ।

अ

१३६ अ प्रत्ययात्— सन् प्रत्ययान्त धातु और नाम धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है । अ-प्रत्यय से घना हुआ शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है । यथा, सनन्त-जिज्ञासा, पिपासा, विकीर्ण-जिगीषा, लिप्सा, जिघांसा wishes to kill चिञ्चिस्ता मीमांसा, जुगुप्सा । नामधातु-तपस्या, वरिवस्या service अशनाया hunger, पुत्रकाम्या, कण्डूया itching.

(क) गुरोध हलः—गुरु स्वरयुक्त व्यञ्जनान्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है । यथा, मिक्षा, सेषा, भाकांक्षा, परीक्षा, दीक्षा, निन्दा, खेला play, रक्षा, शङ्का, अर्था, सूचार्था, लज्जा, धीडा, क्रोडा, मेधा apprehension, वाधा, अनुकम्पा, ईर्ष्या, हिंसा, असूषा, वाञ्छी, प्रदा omission, आशंसा, प्रशंसा ।

(व) चिन्तिपूजिकथि कुम्बिचर्चश्च—चिन्ति, पूजि, कथि, चर्चि, स्पृहि, दोलि, पीडि नीर शोभि धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है । यथा, चिन्ता, पूजा, कथा, चर्चा, स्पृहा, पीडा, शोभा ।

(ग) विद्भिद्दिभ्योऽब्—जो धातु गणपाठकाल में यकार-उत्प्लव्ण हों उनके उत्तर भाववाच्य में अ होता है । यथा, त्रपा, यथा, त्वरा, पचा । मृज् का गुण नहीं होता; मृजा purification.

मिद् इत्यादि धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है । यथा, मिदा separation, कृपा, तृपा, क्षमा, दया ।

(ष) इच्छा (शः)—अ प्रत्यय होने से इप् का इच्छ् और श् का पृच्छ् होता है । यथा, इच्छा, पृच्छा asking.

(ष) भातधोषसर्गे—उपसर्ग के परवर्ती आकारन्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है । यथा, आभा, प्रमा, विभा, अनुभा, प्रमा perception, उपमा, अनुमा inference, विधा, व्यवधा, अविधा name, सन्ध्या, उपधा, अनुधा (ध्रुवा, अन्तर्धा)

संज्ञा, प्रज्ञा, अनुज्ञा संज्ञा, अवज्ञा, प्रतिज्ञा, उपज्ञा, आज्ञा, संख्या, संख्या, अभिख्या, संख्या, अवस्था, विद्या, प्रतिष्ठा, आख्या regard.

अन

१३७ व्यासस्यो बुच्—जिजन्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अन होता है । अन प्रत्यय से यता हुआ पद् स्त्रीलिङ्ग होता है । यथा, अर्थि-अर्थना कल्पना, कारण pain, गणना, धारणा, पारणा, वि-मानि-विमानना dishonour, यन्त्रणा,

यातना, वासना । कहीं २ क्लीबलिङ्ग होता है; प्रेरणम् प्रीणन-
 तर्पणम्, शोधनम्, साधनम्, गोपनम् ।

वन्द्, विद्, आस्, इप्, प्रन्थ् और ध्रन्थ् धातु के उत्तर
 भाववाच्य में अत होता है । यथा, वन्दना, वेदना, आसन-
 seat, प्रन्थना, ध्रन्थना stringing flower.

न (नङ्)

१३८ यज्ञशाचयतविच्छप्रक्षो नङ्—यज्, यत्, स्वप्, प्रच्छ-
 याच् और तृप् धातु के उत्तर भाववाच्य में न होता है ।
 यथा, यज्ञः, यज्ञः, स्वप्नः, प्रक्षः याच्त्रा, सुष्णा ।

यक् ।

१३९ मज्जयतोमनि क्यप्—यज् चर् और विद् धातु के उत्तर
 भाववाच्य में यक् होता है और यक् का य रहता है । ए-
 प्रत्यय से घना हुआ शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है । यथा, मज्ज-
 wandering about, प्रमज्जया, परिमज्जया, चर्प्या, परि-
 चर्प्या, विद्या ।

(क) सज्ञावां समञ्जनियन्निपतमनविद्युन्सोः सृजिनः । कृत्वा य-
 क्, शी, यज् मृग् धातुओं के उत्तर यक् होता है और नि-
 लिखित पद निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, क्रिया, कृत्वा
 शी-शक्या, यज्-इज्या, मृग्-मृगाया ।

उणादि-प्रत्ययान्त शब्द ।

पुं लिङ्ग ।

संज्ञु-संज्ञ् + कु	मञ्जल-मञ्ज् + मलन्	मण्ड-मण् + ङ
धन्नि-मङ्ग+नि	मञ्जलि-मञ्ज्+मलित्	मतिधि-मन्+धित्
मद्दुर-मद्+उरच्	मगु-मण् + उ	मण्यन्-मण्+धित्

• व्यञ्जनात् धातुओं के अन्त में अर्ध म हा धरे हुए समकाल
 वादिये । जैसे, 'मल' को मण् समकाल वादिये ।

भनल-भन्+कलच्	श्रपम श्रप्+भमच्	कुरङ्ग-हृ+भङ्गच्
भनिल-भन्+इलच्	श्रपि-श्रप्+इन्	कुलाल-कुल+कालन्
भन्त-भाम्+तन्	श्रोदन-उद्+युच्	कुष्ठ-कुप्+कृषन्
भद्-भप्+दन्	श्रोष्ट-उप्+कृषन्	कृप-कृ+प
भरि-श्र+इ	कक्ष-कप्+स	श्रयानु-श्रय्+थानु
भरण-श्र+उनन्	कङ्काल-कङ्क+कालच्	हृषक-हृष्+कृषुन
भर्षे भर्च्+क	कण्ठ-कण्+ठ	केतु-वि+तुन्
भर्षित्-भर्च्+इस्	कपि-कम्+इ	केलि-केल्+इन्
भर्षे-भृ+भन्	कपोत-कप्+ओतच्	कोकिल-कुक्+इलच्
भलि-श्र+इ	कपोल-कप्+ओलच्	कतु-हृ+तुन्
भक्ष-भश्+षयन्	कमठ-कम्+अठ	क्रिमि-कम्+इन्
भसि भस्+इ	कम्यल-कम्+चल	धुर धु+इन्
भसु(ष)-भस्+उ	करम-हृ+भमच्	खद्ग-खद्+गन्
भसुर-भस्+उरन्	कर्कट-कर्क+भटन्	खण्ड-खन्+ड
भक्ष्य-भस्+ष्टन्	कर्णे-हृ+नक	खुर-खुर्+इन्
भारमन्-भत्+मनिन्	कर्दम-कर्द+भम्	गण्ड-गाम्+ड
भु १प्+भु	कलि-कल+इन्	गण्डूय-गण्ड्+उगन्
भु उद्+उ	कवि हृ+इन्	गठन्-ष्ट्+उति
भुर-उद्+उरच्	काक-कौ+फन्	गत्त-गृ+तत
भु-इन्+उ	काक-हृ+उप्	गर्भ-म-गर्भ+भमच्
उत्त उद्+उ	कासार-कास्+भारन्	गर्भे-गृ+भन्
उद्-उप्+दन्	किशोर-कि-शु+धोरन्	गर्भ्य-गृ+य
उफन्-उप्+मनिन्	कुबकुर-कुक्+उरच्	गिरि-गृ+इ
उठ ऊप्+उ	कुरि-कुप्+वित	गुरु-गृ+हु
श्रप् भप्+स	कुन्द-कु+दन्	गुल्म-गुर्+मक्
श्रु-श्र+तुन्	कुमार-कुम+भारन्	गृध-गृप्+कृषन्

गो-गम्+डो	दन्त-दम्+गन्	पाणि-पण्+इण्
गोपुम-गुप्+ऊम्	ददं-दन्+उरम्	पितृ-पा+गृन्
गोमागु-गो-मा+उण्	दर्म-द+म	विशान-विशिन+म
प्रणि-प्रण्+इ	दस्यु-दस+गुन्	भण्
पाम-प्रस्+मन्	दियम्-दिण्+मनन्	पुमस् पा+डुममुन्
प्राया-गृ+फन्	धर्म-धृ+मन्	पुरव-पृ+कुपन्
प्रीम-प्रस्+मक्	घातु-घा+तुन्	पूग-पू+गन्
ग्लौ-ग्लै+डौ	धीपर-धा+परस्	पोत-पू+तन्
धर्मा-धृ+मक्	धूम-धू+मक्	प्लीहन्-प्लीह्+कनि
गण्डाल-घण्ड्+मालच्	धूर्त्-धूर्ध्व्+तन्	फेन-स्फाय्+तक्
चन्द्र-चन्द्र्+रफ्	धूलि-धू+लिक्	पनिज्-यण्+इजि
छाग-छो+गन्	ध्वनि-ध्वन्+इ	घदर-घट्+मरस्
जन्तु-जन्+तुन्	नद्य-नह्+ध	घघिर-घन्ध्+किरच
जरट्-ज्+अटच्	नापित-न,भाप्+तन्	घन्धु-घन्ध्+उ
जरायु-जरा-इ+प्रण	निशीय-नि-शो+थक्	बलि-बल्+रन्
तक्षन्-तक्ष्+कनिन्	निक-नि-सद्+फन्	वाहु-वह्+भ्रुण्
तण्डुल-तण्ड्+उलच्	नृ-नी+ञ्	विन्दु-विन्दु+उ
तनय-तन्+फयन्	पक्ष-पण्+स	ब्रह्मन्-बृह्+मनिन्
तन्तु-तन्+तुन्	पतङ्ग-पत्+अङ्गच्	मल्लूक-मल्ल्+ऊक
तमस्+तम्+असुन्	पथिन्-पत्+इथिन्	भवत्-भा+उवतु
तमाल-तम्+कालन्	पनस्-पन+असच्	भानु-भा+तु
तरङ्ग-तृ+अलच्	परशु-पर-श+कु	भिदु-भिदु+कु
तरु-तृ+उ	पजन्य-पृप्+अन्य	मिपज्-मी+मजि
तालु-तृ+भ्रुण्	पर्वत-पर्व्+मतच्	भृङ्ग-भृ+गन्
तुपार-तुप्+आरन्	पशु-पृश्+कु	मेक-मो+कन
दण्ड-दम्+ड	मांशु-पन्श+कु	मेरि-मी+किप्रन्

समर-स्रम् + करन्	मुष्क-मुप् + क	वर्हिस्-वृदि + इति
सात् साज् + तृच्	मूर्ख-मुद् + ख	वलय-वल् + कपन्
मघश्न्-मद् + कनिन्	मूपिक-मूप + किकन्	वसन्त-वस् + भञ्च्
मणि-मण् + इ	मृगायु-मृग-या + कु	धात धा + त
मण्ड-मन् + उ	मृदङ्ग-मृद् + भङ्गच्	वापि-वा + इन्
मण्डूक-मण्ड् + ऊक	यति-यत् + इन्	वायस-वय्+असच्
पत्सर-मद् + सर	याम-या + मन्	वायु-वा + उन्
पत्स्य-मद् + स्यन्	युवन्-यु + कनिन्	वासर-वास् + अर
प्यु-मन् + युच्	यूथ-यु + थक्	विटप-विट् + कपन्
पूल मा + ऊल	यूप-यु + प	विडाल-विट्+कालन्
पूर-मि + ऊरन्	रञ्जु-रञ् + उ	विधु-व्यध् + कु
राल-मृ + आलच्	रथ-रय् + क्थन्	विप्र-वप् + रन्
रोचि-मृ + इचि	रभस-रभ् + असच्	वीचि-वे + ईचि
र-मृ + उ	रवि-ठ + इ	वीर-भज् + रक
रत्-मृ + उति	राजन्-राज् + कनिन्	वृक-वृ + कक्
रिट्-मर्क + अटन्	राशि-अश् + इण्	वृक्ष-मध्य + कस्
रि-मृ + तन	रासभ-रास् + भभच्	वृद्धिक-मध्य+किकन्
र्य-मल् + कपन्	राहु-रह् + उण्	वृषम-वृष् + अभच्
रि-मस् + इन्	रिपु-रप् + कु	वृषल-वृष् + कल
मसूर-मस् + ऊरच्	रणु-री + नु	वेणु-भज् + नु
महिष-मद् + टिपच्	वटु-वट् + उ	वेतस-वे + असच्
माजिर-मृज्+भारन्	घत्स-घद् + सलच्	वेप्र-वि + थ
मिहिर-मिद्+किरच्	घत्सर-घस् + सर	वेधस्-वि-धा+असि
मीन-मी + नक्	घरुण-घृ + उनन्	शकुन-शक् + उन
मुडुर-मक् + उरच्	घर्ण-घृ + नक्	शकुनि-शक् + उनि
मुनि-मन् + इ	घर्ष्य-घृ + घ्यरच्	शकुन्त-शक् + उन्त

शक्-शक् + तुन्	शोध-शु + धन्	सेतु-सि + तुन्
शङ्कु-शङ्क् + उ	श्येन-श्यै + इनच्	सोम-सु + मन्
शङ्ख-शम् + ख	श्यन्-शिव + कनिन्	स्तम्भ-स्था + म्भ्य
शत्रु-शद् + षत्रुन्	षण्ड-सन् + ड	स्तूप-स्तु + प
शपथ-शप् + अथच्	सखि-स-ख्या + इन्	स्तोम-स्तु + मन्
शम्भु-शम् भू + डु	सर्पव-स् + थाप	हंस-हन् + स
शरणि-शु + अनि	साधु-साध + उण्	हनु-हन् + उ
शलम-शल + भमच्	सारधि-स् + अधिन्	हरि-ह + इन्
शादुर्दूल-शु + दूलच्	सार्थ स् + कथन	हरिण-ह + इनच्
शिशिर-शश् + किरच्	सिन्धु-स्यन्द + उ	हरित-ह + इति
शिशु-शो + उ	सुर-सु + षत्रन्	हविस्-हु + इति
शुक-शु + कक्	सूनु-सू + नु	हस्त-हस् + तन्
शूर-शू + ऊन्	सूप-सु + प	हेतु-हि + तुन्
शृङ्गार-शु + भारन्	सूरि-सू + क्विन्	होम-हु + म

कलीयलिङ्ग

भ्रम-भङ्ग + र	भल्ल-भस् + घ्न	कपाल-कप + कालन्
भञ्जिन-भज् + इनच्	अस्थि-अस् + कधिन्	कमल-कम् + कलच्
भञ्जिर भज् + किरच्	आयुस्-इ + उति	कर्मन्-ह + मनिन्
भनीक-भन् + ईकन्	इध्म-इन्ध + मक्	कलुष-कल् + उपच्
भभ्यर-भभ्य + भरन्	उरस्-श्र + भसुन्	कयच-कु + भच्
भभ्यु-भभ्य + उ	उपस्य-यद् + भसि	काष्ठ-काश + कथन्
भभ्यम्-भाप् + भसुन्	भक्थ-भन् + पक्	किलिष-किल + द्विपच्
भयस् इ + भसुन्	भोजम्-उय् + भसुन्	कुण्डल-कुण्ड् + कलच्
भारण्य-भ्य + भग्य	भोजस्-भोज् + भसुन्	गुरीद-गुम् + ईद
भदस्-भ + उति	कनक-कन् + मक्	हय्य-ह्य् + रक्

क्षीर-घस्+ईरन्	तिमिर-तिम्+किरच्	पाताल-पत्+मालञ्
क्षेम-क्षि+मन्	तुहित-तुह्+इतन्	पात्र-पा+त्रन्
क्षेत्र-क्षि+घ्नन्	तृण-तृह्+क्त	पाप-पा+प
गगन-गम्+युच्	तेजस्-तिञ्+भसुन्	पाप्मन्-पा+मनिन्
गह्वर-गाह्+ध्वरच्	सोय-तु+कोय	पिशित-पिश+क्त
गात्र-गम्+घ्नन्	दात्र-दा+ध्वन्	पीयूष-पीय+ऊपन्
गोत्र-गु+षत्र	दामन्-दो+मनिन्	पुण्डरीक-पुण्ड+ईक
चक्र-चक्+रक्	दाह-ह्+भ्रुण्	पुण्य-पु+दुण्य
घक्षुस्-घक्ष्+उसि	दिन-दो+किनन्	पुरीष-पृ+इपन्
घत्वर-घत्+ध्वरच्	द्रविण-द्रु+इतन्	पुलिन-पुल+इतन्
घर्मन्-घर्+मनिन्	धनुस्-धन्+उसि	पुष्कर-पुष्+कान्
घेतस्-चित्+भसुन्	धःन्य-धा+यत्	पूपत्-पृप्+भनि
उष-उद्+घ्नन्	घामन्-घा+मनिन्	पृष्ट-पृष्ट्+यष्
मघन्-उद्+मनिन्	नक्षत्र-न-क्षि+त्रन्	वाप्य-वाप+प
उन्दस्-उन्दु+भसुन्	नभस्-नह्+भसुन्	मद्-मद्+र
उद्भि-उद्भि+रक्	नम्मन्-नृ+मनिन्	ममन्-भस्+मनिन्
जगत्-गम्+भति	नलिन-नल+इतच्	भुवन-भू+भयुन्
जनु-जन्+उ	नामन्-म्ता+मनिन्	मङ्गल-मङ्ग+भलच्
जघ्-जन्+ठ	नीर-नी+रक्	मधु-मन्+उ
जगमन्-जन्+मनिन्	पक्षमन्-पक्ष+मनिन्	मनस्-मन्+भसुन्
जानु-जन्+उष्	पटल-पट्+कलच्	मन्दिर-मन्दु+किरच्
जक-जक्+रक्	पत्र-पन्+घ्नन्	मर्मन्-मृ+मनिन्
जन्-जन्+घ्नन्	पद्म-पद्+मन्	मर्मन्-मृ+धरन्
जस-जस्+भसुन्	पयस्-पय्+भसुन्	मल-मृञ्+कल
ज्य-जन्+प	पर्ण-पृ+न	मन्तु-मस्+तुन्
ज्यन्-जन्+उलच्	पथ्यन्-प+थनिप्	मांस-मन्+स

मिथुन-मिथ्+उनन्	धंश-धन्+श	शरीर-शृ+ईरन्
मुकुट-मक्+उट्	घक्-घक्+क्	शर्मन्-शृ+मनिन्
मुख-खन्+भच्	घक्षम्-घह्+भसुन्	शल्य-शल्य्+य
मुमल-मुस्+फल	घचस्-घच्+भसुन्	शथ्व-वस्+प
मेदस्-मिद्+भसुन्	घपुसि-घप्+उसि	शस्त्र-शस्+घ्नन्
यक्ष्मन्-यक्ष्+मनिन्	घम-घप्+रन्	शल्लूक-शल्ल+उकञ्
यजुस्-यज्+उसि	घयस्-घी+भसुन्	शिरस्-श्रि+भसुन्
यन्त्र-यम्+त्रन्	घर्घस्-घर्घ्+भसुन्	शिल्प-शील्+प
यशस्-अस्+भसुन्	घर्मन्-घृत्+मनिन्	शिव-शी+घन्
युग्म-युज्+मक्	घर्मन्-घृ+मनिन्	शिविर-शी+किरच्
रहस्-रह्+भसुन्	वसु-वस्+उ	शीघ्र-शिघ्र+रक्
रक्षस्-रक्ष्+भसुन्	वस्तु-वस्+तुन्	शील-शी+लक्
रजस्-रज्+भसुन्	वस्त्र-वस्+घ्नन्	शुपिर-शुप्+किरच्
रल-रम्+न्	वारि-वृ+इप्	शूर्प-श+प
राष्ट्र-राज्+घ्नन्	वासस्-वस्+भसुन्	शृङ्ग-शृ+गन्
रुषम-रुच्+मक्	विपिन-वेप+इनन्	शोचिस्-शुच्+इति
रुधिर-रुध्+किरच्	विश्व-विश्+कन्	श्रोत्र-श्रु+घ्नन्
रूप-रु+प	घृजिन-घृज्+इनच्	सदस्-सद्+भसुन्
रेतस्-री+भसुन्	घेतन-घी+तनन्	सरस्-सृ+भसुन्
रोमन्-रु+मनिन्	घेमन्-घे+मनिन्	सलिल-सल्+इलच्
लघङ्ग-लृ+भङ्गच्	घेश्मन्-विश+मनिन्	सिन्दुर-स्यन्दु+उरन्
लाङ्गल-लङ्ग्+उलच्	घ्योमन्-घ्ये+मनिन्	स्रोतस्-स्रु+भसुन्
लाङ्गल-लङ्ग्+उलच्	शकल-शक्+फल	हिम-हन्+मक्
गलोमन्-लृ+मनिम्	शशन्-शक्+श्रुतिन्	हृद्य ह्+कयन्
लोहित-रह्+क	शत शो+उतच्	हेम-दि+मन्

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग

प्रहार-भङ्ग + भारन् करोक-श + उ	पथ्यल-पल् + धल
आमिष-अम् + टिपच् किरिट-हृ + फोटन्	मुकुल-मुच् + उलच्
दत्त-कम् + स	कोदण्ड-कुण्+अण्डच्
कम्बु-कम् + उ	घाट्ट-घट् + ध्रुण्
करोष-हृ + इंपन्	तोगै-त + धक्
कर्पूर-हृ + ऊरच्	

स्त्रीलिङ्ग

अंगुली-अङ्ग + उलिच् छाया-छो + य	पृथ्वी-प्रध् + विधन्
आजि-अज् + इन्	जाया-जन् + यक्
आलु-अल् + उण्	जिह्वा-जिह् + फन्
एका-एप् + तकन्	तडित्-तड + इति
ऊर्मि-अ + मि	तनु-तन् + उ
उरस्-उप् + अनि	तरणि-तृ + धनि
कस्तूरी-कृन् + भरन्	तृष्णा-तृप् + न
कीर्ति-कीर्त् + इन्	त्यच्-तन् + चिक्
कृपि-कृप् + इन्	दुहितृ-दुह् + तृच्
खर्या-खट् + खन्	धरणि-धृ + धनि
धनि-धन् + इ	धेनु-धे + नु
गङ्गा-गम् + गन्	नाभि-नह् + इज्
गाथा-गौ + कथन्	नेमि-नी + मि
प्रदणि-प्रह् + धनि	नौ-नुदु + डौ
चञ्चु-चञ्च + उ	पताका-पत् + आकन्
चम्-चम् + ऊ	पृतता-पृ + तनन्
छवि-छो + इ	पृथिवी-प्रय् + विधन्
	पेयणि-पिप् + अनि
	फल्गु-फल् + गुक्
	धधू-धह् + उ
	दन्ध्या-दन्ध् + यक्
	ध्रमि-ध्रम् + इन्
	ध्रु-ध्रम् + डू
	मक्षिका-मक्ष्+सिकन्
	मदिरा-मदृ+किरच्
	मसुरी-मस् + उरच्
	महिला-मह् + इलच्
	मही-मह् + इ
	मातृ-मा + तृच्
	माया-मा + य
	माला-मा + वन्
	मुद्रा-मुदृ + रक्
	यातृ-यत् + श्रन्

योपित्-युप् + इति वागुरा-वा + उरच्
 रजनी-रञ्ज्+अनि वीणा-वी + न
 रशना-अश् + युच् वीधि-विध् + इन्
 रात्रि-रा + त्रिप् घेणि-धी + नि
 लालसा-लल्+असुन् वेदि-विद् + इन्
 वृत्ति-वृत् + इन् शरद्-शृ + अदि
 वह्नि-वल् + इ शर्करा-शृ + करन्
 वसति-वस + अति शर्ध्वरो-शृ + प्यरच्

शलाका-शल्+आकन्
 शिला-शी + ल
 श्रेणि-ध्रि + ति
 सरणि-सृ + अनि
 सरित्-सृ + इति
 सिकता-सिक्+अतच्
 स्तूपा-स्तु + स
 स्वसृ-सु+अस्+अन्

विशेषण

अम्ल-अम् + क् कूर-कृ + रक्
 आर्द्र-अद् + रक् क्षिप्र क्षिप् + रक्
 उप्य-उप् + णक् क्षुद्र-क्षुत् + रक्
 अरुह्य-अरुज् + कु गभीर-गम् + ईन्
 कटु-कट् + उ गम्भीर-गम् + इन्
 फटिन-कट् + इनच् गौर-गु + रन्
 कठोर-कट्+ओरन् चञ्चल-चञ्च+अलच्
 कविल-कम्+इलच् चटुल-चट्+उलच्
 फरण-कृ + उनन् चण्ड-चन् + ड
 फश्मल-कश् + मल चतुर-चत्+उरच्
 किम्पदन्ति-किम्-घट् चवल-चुप्+कल
 +भ्रिच् चरम्-चर् + अमच्
 कुटिल-कुट्+किलच् चारु-चर् + उण्
 हरस्न-हृत्+अस्न विक्रण-चिन्+कण
 हृण्य-हृण् + मक् तरल-त् + कल
 कोमल-कु + मल सहण-त् + उनम्

तिग्म-तिज् + मक्
 तीक्ष्ण-तिज् + क्ल
 तीव्र-तीव् + रक्
 दक्षिण-दक्ष् + इनन्
 दाहण-दृ + उनन्
 दीन-दी+नक
 धवल-धाव + कलच्
 धूसर-धू + सर
 पंगु-पण + उ
 पट्ट-पट् + उ
 पाण्डु-पण्ड् + कु
 पिशुन-पिश् + उनन्
 पीथर-पा + प्यरच्
 पुष्कल-पुष् + कलच्
 पूष-प्रये + कु
 पेशल-पिश् + अलन्

प्रथम-प्रथ + लभच्	रक्ष-रक्ष् + क्त्स	शिथिल-थथ+किरच्
बहु-बहु + कु	हचिर-रुच्+किरच्	शुक्ल-शुच् + रक्
भयातक-भी+भानक	लघु-लङ् + कु	शुचि-शुच् + इन्
मौम-भी + मक्	वक्र-वञ्च् + रक्	शुभ्र-शुम् + रक्
मौरु-भी + क्त्स	उदान्ध-बहु+भान्य	श्याम-श्वै + मक्
भूरि-भू + क्तिन्	वरेण्य वृ + एन्य	सरल-सृ + कल
मन्थर-मन्थ्+अरच्	वर्तल-वृत्+भलच्	सूक्ष्म-सूच् + मन्
मलिन-मल्+इत्तच्	घाम,घा + म	स्थावर-स्था+किरच्
मदन्-मद् + अति	विदुर-विद्+कुरच्	स्थिर-स्था + किरच्
मुहुस-मुह् + उत्ति	विशाल-विश्+कालन्	स्वादु-स्वद् + उण
मृदु-मृद् + कु	वृद्धत्-वृद् + अति	

Exercise—39

1. What is the difference between the use of स्वा & पृ and क & कवृ ?

2. Give one word for:— शास्त्राणि करोति इति । प्रभां करोति इति । हितं करोति । पूजामहति । ललाटं तपति । शत्रुं उदात्त । भयमिव हरयते । वक्त्रमुचितम् । नृन् पालि । वसूनि धरति या । नीचवेदनेनेति । अग्निः प्रियः भवति । प्रियं वदति यः सः । कामं ह्रीन्धि या । निशायां धरति इति । तमोऽपहन्ति यः ।

3. Derive— हान्ति, शान्तिः, जनकः, पाचकः, राजकः, हुन्ता, सचिका, चाटुकारः, विभाकरः, शत्रुह, अंशहरः, मधुपः, कुधः, विदोही, स्थायी, विदोही, परिधमी, परन्तपः, विरवम्भरा, भयङ्करः, वण्डितमान्यः, भागम्भरिः, दुःखभाक्, परिपद्, सघ्राट्, ताडशः, सहिष्णुः, धानुकः, निद्रालुः, मासुरः, परवरः, द्विलः, लिप्सुः, ईरवरः, विदुरः, शरत्रम्, चरित्रम्, चारित्रिः, वेपथुः, अप्ययनम्, दाहनम्, स्वादः, भयम्, शोधः,

सुट्-प्रत्याहार

१ सुट् कर्त्तृ पूर्व—इ धातु के ककार के पहले सम् श्यक्ति उपसर्ग के परे सुट् होता है; और सुट् का स् रहता है। यथा, संस्कारः ।

२ मत्वपूर्वेष्वः इति लो भूतो गमत्ते च—भूज और समूह अर्थ में सम्, परि और उप पूर्वक इ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, संस्कारोति (भूवर्णोत्थयः) संस्कार्यन्ति (सहोमयर्णीत्यर्थः) ।

३ अपात् प्रतिप्रसंगान्वाहारेण च—प्रतिपत्त, विकार वाक्याख्याहार (आकांक्षित एकदेशपूरण) अर्थ में उप पूर्वक इ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, उपसृत्य कन्या (अलं-कृत्येत्यर्थः), उपसृत्य ब्राह्मणाः (समुदिता इत्यर्थः), पशोदक-स्योपंसकुरुते, गुणाधानं करोति; उपसृतं भुंक्तेः (विहृतमित्यर्थः) उपसृतं प्रुंते (वाक्याख्याहारेण प्रुंते इत्यर्थः) ।

४ द्विसावां प्रवेध—द्विसा अर्थ में उप और प्रति पूर्वक इ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, उपस्किरति, प्रतिस्किरति ।

५ अपाचतुष्पाच्छनुनिश्चालेखने—आलेखन अर्थ में अप पूर्वक इ धातु के पहले सुट् होता है। यथा, अपस्किरते वृषो हृष्टः ।

६ गोशब्दं सेवित्ता सेवितप्रमाणेषु—सेवित, असेवित और प्रमाण अर्थ में पद शब्द परे हो तो गो शब्द के परे सुट् होता है। यथा, गोभिः सेवितः गोस्पदः । आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ।



व्याकरण-कौमुदी

चतुर्थ भाग

विभक्ति-निर्णय

१ संज्ञाकारणोपविशो विभक्तिः—जिसके द्वारा संख्या और लिंग का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं। यथा, घटः, घटी, घटाः। यहाँ घट शब्द में प्रथमा विभक्ति रहने से एक घट, दो घट और बहुत घट का बोध होता है। अर्द्धं पश्यति, यहाँ अर्द्ध में द्वितीया विभक्ति रहने से कर्मकारण का बोध होता है।

२ विभक्तयः सप्त—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी ये सात विभक्तियाँ हैं।

प्रथमा

१ अभिव्येयमात्रे प्रथमा—क्रिया भिन्न वस्तु के नाम का बोध होने से उस (प्रातिपदिक) में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, पितृ, सखा, पुण्यम्, गिरिः, नदी, जलम्, रामः, सीता, भ्रमणः, एकः, ह्ये, अयः, क्षेणः इत्यादि।

२ वर्जति—कर्मकारण में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, अणुः क्षोडति, गौः शब्दावर्तते, मेघो वर्जति।

३ कर्मोपने—सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, पितुः, दे स्यात्तर्षी, दे पुत्राः।

४ कर्मोपने क (कर्मि-न्यतेकामिप्यन्)—इति, राग्यन्तं इत्यादि कुछ भाष्यों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, कर्मोप्यानगरे दहरथ इति क्वातो क्वचित्तरासीन्, पापात्मना

सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्, विपवृक्षोऽपि, संबर्द्धय स्वयं हेतु
मसाम्प्रतम् ।

द्वितीया

७ कर्मणि द्वितीया—कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, पुष्पं चिनोति, अन्नं भुंषते, जलं पिबति ।

८ क्रियाविशेषणे च—क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है; एकवचन-क्रीवलिङ्ग में इसका प्रयोग होता है । यथा, सत्वरं धावति, द्रुतं पलायते, मृदु हसति, साधु मापते ।

९ अथकालाभ्यामत्यन्तसंयोगे (कालाभ्यनोरत्यन्तसंयोगे)—अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति अर्थ में अथ (मार्ग) वाचक और काल-वाचक शब्दों के उत्तर द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, अथवाचक—क्रोशं गिरिः स्थितः, योजनं भृत्येनानुगतः । इतः वाचक—दिवसमुपवसति, मासमधीते । क्रोशं, योजनं, दिवसं, मासं व्याप्य इत्यर्थः ।

१० अभिवारिसवोभयैस्तसन्तैः (उभयसर्वतसोः काष्ठाधिपुत्राणां-दिनु मिनु । द्वितीयासोऽितान्तेषु सतोऽन्यत्रापि दृश्यते । अभितः परितः समया निकषादाप्रतिबोगेऽपि)—तस् प्रत्ययान्त अभि, परि, तर्ष्ये, और उभय शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, मामभितः, गृहं परितः, उद्यानं तर्ष्यतः, नदीमुभयतः ।

११ प्रत्यनुषिण् निकषान्तरान्तरेण-वाचकैः (उभय..... । अन्तरान्तरेणपुष्के । कर्मप्रत्ययकोषपुष्के द्वितीया । मध्य अर्थे । विना अर्थे)—मनि, भनु, धिक्, निकषा, अन्तरा, अन्तरेण और वाच्य शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, वीर्यं मनि ददा, राममनुजातो लक्ष्मणः, हृषणं धिक्, मामं निकषा मनी,

स त्वां मां च अन्तरा उपविष्टः, श्रममन्तरेण विद्या न भवति,
घनं यावदनुसरति ।

तृतीया

१३ तृतीया करणे (कर्तृकरणवोस्तृतीया)—करण कारक और अनुक्त कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, हस्तेन गृह्णाति, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति । अनुक्त कर्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, रामेण यागेन हतो बलिः ।

१४ सहार्थः (सहयुकोऽप्रधाने) साकं साहं समं योगेऽपि)—सहार्थ शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह घनं जगाम, केनापि साहं विरोधो न कर्त्तव्यः । सहार्थ शब्दों के अवयोग में भी होता है, यथा, पिता पुत्रेण गच्छति (पुत्रेण सहैतपर्यः) ।

१५ उन्वाराण्ययोनार्थश्च—ऊन (कम), धारण और प्रयोजन अर्थ वाले शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, उन्वार्थ-पक्षेन ऊनः, विद्यया हीनः, अहङ्कारेण शून्यः । धारणार्थ-अलं विधादेन, कलहेन किम् । प्रयोजनार्थ-घनेन प्रयोजनम्, कोऽर्थः कलहेन ।

१६ अल्पकालाम्शाम्पर्ये (अपवर्गे तृतीया)—अपवर्ग अर्थान् विद्यासमाप्ति और कलमाप्ति अर्थ घोष होने से अल्पवाचक और कालवाचक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, अल्पवाचक-प्रोक्षेनानुवाकोऽधीतः । कलवाचक—विमिर-होमिः गतम्, मासेन व्याकरणमधीतम् । मासं व्याकरणमधीतम् न तु स्फुरति, इस स्थान में अध्ययन के कल की प्राप्ति

नहीं समझी जाती, इमल्लिने तृतीया विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति हुई है ।

१६ वेनाङ्गेनाङ्गिणे विधायः (वेनाङ्गविधायः)—त्रिपद मङ्गु के विकार से मङ्गी का विकार दीर्घ पड़ना है, उस मङ्गुवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, मङ्गुया काणः, पदेन सन्नः, कर्णेन वधिरः, गृष्टेन कुम्भः ।

१७ लक्षणार् (इषम्भूतकृते)—जिस लक्षण वा विद्द द्वारा कोई व्यक्ति सूचित हो उस लक्षणबोधक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, जटामिः तापसमपश्यम्, भूयानि शिशुमर्शम्, पुस्तकेन छात्रमद्राक्षम् ।

१८ प्रवृत्त्यादिभ्यश्च (प्रवृत्त्यादिभ्यश्चापह्वयानम्)—स्वल्पविशेष में प्रवृत्ति प्रभृति शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, प्रवृत्त्या चारुः, स्वभावेन सरलः, वाहृत्या सुन्दरः, जात्या ब्राह्मणः, गोत्रेण शापिडक्यः, नाम्ना सोमवातः, प्रायेण दुःखितः, धेयेन गच्छति, त्वरया घाघति, यत्नेन लिखति, सुखेन स्वपिति, दुःखेन याति, षष्ठेरेण वदति ।

चतुर्थी

१९ चतुर्थी सम्प्रदाने—सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, दृष्टिदाय धनं ददाति, मिश्रवे मिश्रां ददाति ।

२० तादृष्ये (तादृष्ये चतुर्थी वाच्या)—कोई वस्तु या क्रिया जिसके निमित्त समझी जाती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, यूपाय दारु, कुण्डलाय हिरण्यम्, अश्वाय घासः, रुधनाय स्थाली, ज्ञानाय अध्ययनम्, दीनाय धनोपासर्जनम्, ज्ञानाय नदीं याति, पाकाय अग्निमाहरति ।

२१ निवृत्तौ निवर्तनीयात्—निवृत्ति अर्थ में जिससे निवृत्ति

ते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, मशकाय मशकनिवृत्तये इत्यर्थः, धातपाय छत्रम् (धातपनिवृत्तये), सायै जलम् (पिपासानिवृत्तये), तापाय स्नानम्, (ताप-निवृत्तये), रोगाय औषधम् (रोगनिवृत्तये), पापाय प्रायश्चित्तम् (पापनिवृत्तये) ।

१२ सम्पद्यमानात् कल्प्यादेः (कल्पि सम्पद्यमाने च)—कल्पि धातु के प्रयोग में सम्पद्यमान के उत्तर चतुर्थी विभक्ति है । यथा, भक्तिज्ञानाय कल्पते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्यते, स्वर्गाय भवति, अधर्मो नरकाय भवति ।

१३ हितशुचनमोभिः (नमःस्वस्तिस्वाहास्वधावपद्ययोगाच्च । हितशोमे हित, सुख और नमस् शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति है । यथा, हितं पुत्राय, सुखं शिष्याय, नमः गुरवे ।

१४ स्वस्तिस्वाहास्वधावपद्युभिः (नमःस्वस्ति.....)—स्वस्ति स्वधा और वपद्य शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति है । यथा, स्वस्ति प्रजाभ्यः; स्वाहा भद्रये; स्वधा इन्द्राय वपद्य ।

समर्थार्थकैश्च—समर्थार्थक शब्द के योग में चतुर्थी होती है । यथा, समर्थो मल्लो मल्लाय, अलं मल्लो शक्तो मल्लो मल्लाय, प्रभुर्मल्लो मल्लाय । समर्थार्थक के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा, प्रभवति मल्लाय, शक्तोति मल्लो मल्लाय ।

मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा (मन्यकर्मण्यनादरेविभाषाऽप्राणिषु)।—समझे जाने से दिवादिगणीय मन् धातु के अथवा-कर्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, शूणाय मन्यते, नाहं त्वां कुम्भकुराय मन्ये । पश्चान्तर में विकल्पि होती है, पर शृगाल, काक, शुक, नौ और

अत्र शब्द कर्म हो तो चतुर्थी नहीं होती, यथा त्वामहं शृगालं मन्ये ।

२७ वा गत्यर्थकर्मणि चेष्टायाम् (गत्यर्थकर्मणि द्वितीया-चतुर्थी चेष्टायामनञ्चि)—चेष्टा समझे जाने से गत्यर्थ धातु के कर्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, प्रामाथ गच्छति, व्रजाय व्रजति । पक्षान्तर में द्वितीया होती है; पर चेष्टा न समझी जाने से नहीं होती; यथा, मनसा मथुरां गच्छति । अध्वयाद्यक कर्म हो तो नहीं होते; यथा, अध्वानं गच्छति, पन्थानं गच्छति ।

२८ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः—अप्रयुज्यमान तुमन्त धातु के कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, फलेभ्यो याति, फलान्याहत्तुं याति इत्यर्थः ।

२९ तुमर्याद्य भाववचनात्—तुमर्ययुक्त भाषवाच्य में विहित प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है । यथा, यागाय याति, यष्टुं याति इत्यर्थः ।

पञ्चमी

१० अवादाने पञ्चमी—अवादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, अश्यात् पतितः, गृहाचलितः, जलादुत्थितः ।

११ स्वर्लोपे कर्मव्यधिकरणे च—द्वय् प्रत्ययान्त वृ के अग्रयोग में कर्म और अधिकरण कारक में पञ्चमी होती है । यथा, प्रासादात् प्रेशने, प्रासादादमारुह्य इत्यर्थः; भासनात्प्रशो-कयति, भासने उपविश्य इत्यर्थः ।

—कालपरिमाण और अक्षयपरिमाण हो अवधिकोद्यक शब्द के उत्तर पञ्चमी विभक्ति

है । यथा, कालपरिमाण—अग्रहायणात् पञ्चमासाः, माघात्
ये मासि, विवाहात् सप्तमे दिने । अध्वपरिमाण—पाटलि-
शतकोशाः, प्रयागात् त्रिशत्कोशाः, कुशक्षेत्रात् दश-
मानि ।

३३ निरुष्टादेकोत्कर्षे (पञ्चमी विभक्ते)—दो या अधिक वस्तुओं
में किसी एक वस्तु की उत्कर्षता (अधिकता) प्रकट
हो तो निरुष्ट वस्तु में पञ्चमी होती है । यथा, घनात्
गरीयसी, चैत्रो मैत्रात् बर्लीयान्, माधुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः
त्रयः ।

३४ मर्षादाभिविध्योराद्योने (पञ्चम्यपाहपरिमिः आह् मर्षादभि-
। आह् मर्षादावधने)—मर्षादा और अभिविधि (व्याप्ति)
मझे जाने पर 'भा' अव्यय के योग में पञ्चमी होती है ।
मर्षादा—भा जन्मनः, भा शैशवात्, भा समुद्रात्, भा
लात् । अभिविधि—भा घनात् धृष्टो देवः, घनस्य प्रान्तं
त्यर्थः, भा सकलात् ब्रह्म, सकलं व्याप्य इत्यर्थः ।

अन्यार्थः (अन्वारादितरत्ते दिक्शब्दान्तरपदाज्जाहिवुक्ते)—
शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा,
यः कः पत्रिवातुं समर्थः, घटः पटादितरः, इदमस्मा-
। अन्यार्थं क्रिया के योग में भी होती है; यथा, स्वर्णं
यते ।

दिग्देशकालवाचिभिः (अन्वारादितरत्ते)—दिग्वाचक,
क और कालवाचक शब्द के योग में पञ्चमी होती है ।
दिग्वाचक—पूर्वो प्रामान्, उत्तरो गृहात् । देशवाचक—
त्रात् पूर्व्यदेशे । कालवाचक—चैत्रात् पूर्व्यः फाल्गुनः,
प्राक्, शयनात् पूर्व्यम्, उत्थानम् परतः, प्रस्थाना-
।

३७ षड्विंशत्यप्रभृतिभिः— षड्विस्, भारान् और प्रभृति शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, गृहात् षड्विः, ग्रामान् षड्विः (ममदीश्वर के मन से षड्विः शब्द के योग में पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति होती है), भारान् घनान्, भारान् उद्यानान्, जन्मनः प्रभृति, शैशवात् प्रभृति ।

३८ आ-आदिभ्याञ्च (भव्यादिश्च.....)— आ और आदि प्रत्ययान्त शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, उद्यानात् उत्तरा गृहम्, गृहादुत्तरादि सरः, हिमालयान् दक्षिणा भारतपर्यम्, प्रयागात् दक्षिणादि चिन्ध्यः ।

३९ ऋतेषु द्वितीया च—ऋते शब्द के योग में पञ्चमी और द्वितीया होती है । यथा, ज्ञानाऋते, ज्ञानमृते ।

४० पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च (पृथग्विनानानामिस्तृतीयाऽन्व-स्याम्)—पृथक् और विना शब्द के योग में पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया होती है । यथा, चैत्रात् पृथक्, चैत्रं पृथक्, चैत्रेण पृथक् ; धर्मात् विना, धर्मं विना, धमेण विना ।

४१ स्तोत्रकृच्छ्राक्षयकतिपयेभ्यस्तृतीया च (कणे च स्तोत्राक्षय-कतिपयस्यासत्त्वचनस्य)—स्तोक, कृच्छ्र, अल्प और कतिपय शब्द में पञ्चमी और तृतीया होती है । यथा, स्तोकान्मुक्तः, स्तोत्रेन मुक्तः; कृच्छ्रान्मुक्तः, कृच्छ्रेण मुक्तः; अल्पान्मुक्तः, अल्पेन मुक्तः; कतिपयान्मुक्तः, कतिपयेन मुक्तः । विशेषण होने से नहीं होता । यथा, स्तोफः पाकः, स्तोफं पचति ।

४२ हेतौ च—हेतु अर्थ बोध होने से हेतुबोधक शब्द के योग में तृतीया और पञ्चमी होती है । यथा, घनात् कुलम्, घनेन कुलम्, भयात् कम्पः, भयेन कम्पः, हर्षात् नृत्यति, नृत्यति, दुःखात् रोदिति, दुःखेन रोदिति ।

पष्ठी ।

४३ पष्ठी सम्बन्धे (पष्ठी वेधे)—सम्बन्ध में पष्ठी होती है । यथा, मम पिता, तव पुत्रः, तस्य भ्राता, महिषस्य शृङ्गम्, गो-दुग्धम्, नद्या जलम्, वृक्षस्य छाया, अग्नेः शिखा, वायोर्वेगः, जलस्य प्रवाहः ।

४४ कर्तृकर्मणोः कृति—कृत् प्रत्यय के प्रयोग में कर्ता और कर्म में पष्ठी होती है । यथा; कर्ता में—शिशोः शयनम्, अश्व-स्य गतिः, तव पिपासा, मम बुभुक्षा । कर्म में—अन्नस्य पाकः, पयसः पानम्, सुप्तस्य भोगः, धनस्य दाता, वृक्षस्य छेदकः ।

४५ उभयवाचौ कर्मणि—यदि कर्ता और कर्म दोनों की प्राप्ति हो तो केवल कर्म में पष्ठी होती है । यथा, गवां दोदो गोपेन, पयसः पानं शिशुना, धनस्य दानं नृपेण, जलस्य शो-पणं सूर्येण, अर्थस्य हरणं चौरैण ।

(क) क्वचिद्विभाषा कर्त्तरि—कहीं कहीं कर्ता में विकल्प से पष्ठी होती है । यथा, घटस्य कृतिः, कुम्भकारेण कुम्भकारस्य वा, चन्द्रस्य दिदृक्षा मया मम वा, शिष्यस्य प्रशंसा गुरुणा गुरोर्वा, शब्दानामनुशासनम्, आचार्य्येण आचार्य्यस्य वा ।

४६ न सप्तमः (न लोकाध्ययनिष्ठसत्त्वर्षवृणाम्) ।—शत्, शानच् कप्तु, कानच्, स्यत् और स्यमान प्रत्यय के प्रयोग में पष्ठी नहीं होती । यथा, शत्-गृहं गच्छन्, जलं पिबन् (द्विपो विभाषा—द्विप् धातु में विकल्प से होती है; यथा, सुरं द्विपन्, सुरस्य द्विपन्) । शानच्—अन्नं भुञ्जानः, व्याकरणमधीयानः । कप्तु—मोदनं पेषिषान्, प्रार्थं जाग्मिषान् । कानच्—गुरं घयन्दानः, शास्त्रं शुभवाणः । स्यत्-गृहं गमिष्यन्, वेदं पठिष्यन् । स्यमान-गृहं सेविष्यमाण, धनं दास्यमानः ।

४३ न मुमुक्षाः (न लोका...)—मुमुन्, यया, जल् और जमुन् प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी विभक्ति नहीं होती । यथा, मुमुन्-गृहं गतुम्, यन्त्रं द्रष्टुम् । जल्-जलं पीतम्, कलं गृह्णीत्या । यया-व्याकरणमधीत्य, गृहमागत्य । जमुन्-गृहं मेवं रीतम्, शास्त्रं धार्य धातम् ।

४८ मोक्षताप (न लोका...) उकारान्त वृत् प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी नहीं होती । यथा, जलं पिपासुः, रिपुं जिप्युः, शिलां शिप्युः, विपदां निपाकरिप्युः, कलं गृह्यालुः ।

४९ मोक्षतोत्प्लवमविष्यन्तिनाम् (न लोका...)—अहेनेर्भविष्यत् प्रत्ययः (उक्, शीलार्थं वृत् और भविष्यद्ध्यं जिन् प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी नहीं होती । यथा, बह-गृहं गामुकः, जलं घृतं क-शत्रुं घातुकः (कामुक शब्द के प्रयोग में होती है; यथा, धनस्य कामुकः) । शीलार्थं वृत्-घनं, दाता, यन्नं दाता, विपदां निराकर्ता । भविष्यद्ध्यं जिन्-घनं दायी, घृतं मोर्जी, गृहं गामी ।

५० न खलपानाम् (न लोका...)—खल्यं प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी नहीं होती । यथा, नैतन् सुकरं मथता, नैतद्दुष्करं तेन, सर्व्वमीषत्कारं सुधिया, मया सुमर्षणः शत्रुः, त्वया दुःशासनो रिपुः ।

N. B. छ, हुर् और इप्त् शब्द के भोग में घाट के उच्च जो ब और अन होता है उसे खल्यं प्रत्यय कहते हैं ।

५१ न निष्ठायाः—निष्ठा प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी नहीं होती । यथा, क-तेन व्याकरण मधीतम्, मया जलं पीतम्, त्वया-चन्द्रो दृष्टः । क्वत्तु-स गृहं गतवान्, महं चन्द्रं दृष्टवान्, त्वं चेदं अधीतवान् ।

५२ कस्य वर्त्तमाने (कस्य च वर्त्तमाने)—वर्त्तमान काल में प्रिहित क प्रत्यय के प्रयोग में यष्टी होती है । यथा, राज्ञां मतः

राजमिर्मन्वते इत्यर्थः, सतां पूजितः, सद्भिः पूज्यते इत्यर्थः ।

५३ अधिकरणवाचिनश्च—अधिकरण कारक में विहित क प्रत्यय के प्रयोग में पड़ी होती है । यथा, इदमेवां शयितम्; एतदेवामासितम् ।

५४ विभाषा भावे—भाववाच्य विहित क प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता में विकल्प से पड़ी होती है । यथा, मम स्नातम्, मम स्थितम्, मम शयितम्, मम जागरितम् । पक्षान्तर में तृतीया होती है ।

५५ कृत्वानां कर्त्तारि वा—कृत्य प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता में विकल्प से पड़ी होती है । यथा, पुस्तकं तत्र पाठयम्, चन्द्रो मम दृश्यः, गुरुस्तस्याश्च नोयः । पक्षान्तर में तृतीया होती है ।

५६ कर्मणि जाति-वि-निप्रहणी द्विसाधाम् (जाति निप्रहणाट्टा-निषा द्विसाधाम्)—द्विसा अर्थ समझे जाने से जाति, विष् या नि वा प्र पूर्वक हन् धातु के कर्म में पड़ी होती है । यथा, चौरस्य उज्जासयति, शस्त्रोऽपिनष्टि । नि ष प्र ध्यस्त, अस्त भौर विश्वस्त भाव में होने से भौ होता है; यथा, अहन्ति, प्रहन्ति, निप्रहन्ति, प्रणिहन्ति वा चौरस्य ।

५७ वा स्मृत्यर्थद्वेषां कर्मणि (अधोगर्थद्वेषां कर्मणि)—स्मर-त्वे ईष् भौर ईश् धातु के कर्म में विकल्प से पड़ी होती है । यथा, पुत्रो मातुः स्मरति, दाता दरिद्रस्य दपते, पिता पुत्रस्य दृष्टे । पक्षान्तर में द्वितीया होती है ।

५८ कृत्पर्यायिणाम् विभाषा करणे—कृत्पर्य धातु के करण कारक में विकल्प से पड़ी होती है । यथा, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्, अयां हि तृप्ताय न वारिधारा स्यादुः सुगन्धिः स्वदने सुवारा । पक्षान्तर में तृतीया होती है ।

५९ भस्तृत्पर्यायिणाम् (कृत्पर्यार्थ प्रत्ययेन)—भस्तान्, भति, भति भौर भतानु प्रत्यय के योग में पड़ी होती है । भस्तान्—

पुरस्ताद्गुह्यस्य, उपरिष्ठात् मञ्जस्य । अति-पुरो नगरस्य,
अधोवृक्षस्य । अति-उत्तरात् समुद्रस्य, दक्षिणात् हिमालयस्य
अत्रह-दक्षिणतो ग्रामस्य, उत्तरतो गृहस्य ।

१० कृत्वसमुचोःकालाधिकरणे (कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे)—
कृत्वसु और सुच् प्रत्यय के प्रयोग में कालवाचक शब्द के
अधिकरण में पष्ठी होती है (धोपदेव और क्रमदीश्वर के मत
से विकल्प से होती है ।) यथा, कृत्वसु—पञ्चकृत्यो दिवसस्या-
धीते, सप्तकृत्यो दिवसस्यागच्छति । सुच्-द्विर्दिवसस्य भुङ्क्ते,
त्रिर्दिवसस्य स्वपिति ।

११ एतया द्वितीया च—एनप् प्रत्ययान्त शब्द के योग में
पष्ठी और द्वितीया होती है । यथा, दक्षिणेन वाटिकायाः सरः,
दक्षिणेन घृक्षघाटिकां सरः ।

१२ तुल्यार्थेऽतृतीया च (तुल्यार्थेऽतुलोपमाभ्यां तृतीयान्वयत्वात्)—
तुल्यार्थ शब्द के योग में पष्ठी और तृतीया होती है । यथा,
मम तुल्यः; मया तुल्यः; तव समः; त्वया समः; तस्य सदृशः
तेन सदृशः ।

१३ आशिवि कुशलादिभिरचतुर्थी च (चतुर्थी आशिव्यायुष्यमरभ-
कुशलमुग्यार्थहितैः)—आशीर्वाद् समझे जाने से कुशल, निरामय,
हित, सुख, अर्थ, आयुष्य और ऐसे अर्थ के शब्दों में
पष्ठी और चतुर्थी होती है । यथा, कुशलं देवदत्तस्य भूयात्,
कुशलं देवदत्ताय भूयात्; निरामयं देवदत्तस्य भूयात्, निरा-
मयं देवदत्ताय भूयात्; सुखं देवदत्तस्य भूयात्, सुखं देव-
दत्ताय भूयात् ।

१४ विशया षष्ठी—कर्मा कर्मी कर्म भादि कारकों में पष्ठी
विभक्ति होती है उसे 'विशया षष्ठी' कहते हैं । यथा, सर्वा
मतम्, मातुः स्मरति, शम्भोभरणयोर्मते, कलातां ततः इत्यादि ।

६५ दूरान्तिकार्थः पञ्चमी च (दूरान्तिकार्थं पञ्चमन्तरत्वाम्)—दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्द के योग में पष्ठी और पञ्चमा विभक्ति होती है । यथा, दूरं प्रामान्, अन्तिकं नगरस्य, अन्तिकं नगरात् ।

६६ निमित्ताद्येतुप्रयोगे (पष्ठी हेतुप्रयोगे)—हेतु शब्द के प्रयोग में निमित्तबोधक शब्द के उत्तर पष्ठी विभक्ति होती है । (घोषदेव और भट्टोजि दीक्षित इस स्थान में तृतीया आदि पाँच विभक्तियों का विधान करते हैं) । यथा, अन्नस्य हेतोर्यसति, अल्पस्य हेतोर्यद्गुहातुमिच्छन् ।

६७ सर्वनाम्नस्तृतीया च—हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्त-बोधक सर्वनाम शब्द के उत्तर पष्ठी और तृतीया होती है । (घोषदेव, क्रमदीश्वर और भट्टोजि दीक्षित प्रथमा इत्यादि शतौ विभक्तियों का विधान करते हैं) । यथा, कस्य हेतोः आगतः; केन हेतुना स आगतः ।

सप्तमी

६८ सप्तम्यधिकरणे—अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है । यथा, गृहे तिष्ठति, शय्यायां शेते, नद्यां स्नाति ।

६९ यस्य च भावेन भावलक्षणम्—यदि एक क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का काल निश्चित हो तो उस क्रिया और उसके कर्ता में भावे सप्तमी होती है । यथा, रथावस्तं गते गतः, ।स्तगमनसमकालं गत इत्यर्थः । विधाशुद्धिते समागतः, धूदयसमकालं समागत इत्यर्थः ।

७० साधुनिपुणाभ्यामर्चयाम् (साधुनिपुणाभ्यामर्चयां सप्तम्यश्रुते)—प्रशंसा समझी जाने से साधु और निपुण शब्द के योग में सप्तमी विभक्ति होती है । यथा, ध्याकरणे साधुः, साहित्ये निपुणः (घोषदेव के मत से पष्ठौ और सप्तमी दोनों होते हैं) ।

७१ कस्य सहेनिनाकर्मणि (कस्येन्विषय कर्मण्युत्तरमङ्गानम्)—
इति सहित क प्रत्यय के प्रयोग में कर्म में सप्तमी होती है ।
यथा, अधीतं व्ययाकरणमनेन अधीता व्याकरणे, अघकीर्णं
मत-मनेन अघकीर्णां मते ।

७२ अध्वतो ध्वधौ प्रथमा च (दतश्चाध्वकालनिम्माणं तत्र पञ्चमी ।
उदुमुनोदध्वनः प्रथमा-सप्तम्यौ)—व्यवधान समझे जाने से अध्व-
वाचक शब्द के उत्तर सप्तमी और प्रथमा विभक्ति होती
है । यथा, ग्रामो धनान् पञ्चसु क्रोशेषु पञ्चक्रोशा वा,
पञ्चक्रोश व्यवधाने विद्यते इत्यर्थः । दयागः पाटलिपुत्रात्
दशसु योजनेषु दश योजनानि वा, दशयोजनव्यवधाने विद्यते
इत्यर्थः ।

७३ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च—प्रसित और उत्सुक शब्द
के योग में सप्तमी और तृतीया विभक्ति होती है । यथा,
धनेषु प्रसितः, धनैः प्रसितः, विद्यायामुत्सुकः, विद्ययोःसुकः ।

७४ क्रियामध्येऽध्वकालाभ्यां पञ्चमी च (सप्तमी पञ्चम्यौकारकमभ्ये)—
दो क्रियार्यों के मध्यवर्ती अध्ववाचक और कालवाचक शब्द
के उत्तर सप्तमी और पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा,
अध्व-वाचक—अयमिह स्थित्वा क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं
विध्येत् । कालवाचक—अयमद्य भुक्त्वा द्वयहे द्वयहाद्वा भोक्ता ।

७५ दूरान्तिकाभ्यो द्वितीया तृतीयापञ्चम्यश्च (दूरान्तिकाभ्यो
द्वितीया च)—दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्द के उत्तर सप्तमी,
द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा, दूरं
ग्रामस्य, दूरं ग्रामस्य, दूरेण ग्रामस्य, दूरात् ग्रामस्य । अन्तिके
गृहस्य, अन्तिकं गृहस्य, अन्तिकेन गृहस्य, अन्तिकात् गृहस्य ।
विशेषण होने से नहीं होता है । यथा, दूरो ग्रामः, दूरः पण्याः ।

७६ षष्ठी षानादरे—क्रिया द्वारा निरादर समाप्ता जाय तो
जिसका निरादर हो उसमें और क्रिया में सप्तमी और षष्ठी

होती है । यथा, रुदति शिशो जगाम, रुदतः शिशोर्जगाम;
रुदन्तं शिशुमनाद्दृश्येरथः ।

७६ साक्षिप्रभृतिभिश्च (स्वामोखराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूनैश्च)—
साक्षिन्, प्रतिभू, कुशल, स्वामिन्, ईश्वर, अधिपति, प्रसूत,
आयुक्त और दायाद शब्द के योग में सप्तमी और षष्ठी होती
है । यथा, विवादे साक्षी, विवादस्य साक्षी; व्यवहारे प्रतिभू,
व्यवहारस्य प्रतिभू; मीमांसायां कुशलः, मीमांसायाः कुशलः;
स्त्रियां प्रसूतः, स्त्रियाः प्रसूनः ।

७७ यत्तच्च निर्द्धारणम्—जाति, गुण, क्रिया अथवा संज्ञा द्वारा
समुद्भूत-स्वजातीय से एक के पृथक्करण को निर्द्धारण कहते हैं ।
जिससे निर्द्धारण (पृथक्करण) किया जाय उसमें सप्तमी और
षष्ठी होती है । यथा, मनुष्येषु क्षत्रियः शूरः, मनुष्याणां क्षत्रियः
शूरः, गोषु कृष्णा बहुक्षीरा, गवां कृष्णा बहुक्षीरा; अध्वगेषु
धावन्तः शीघ्रगामिनः, अध्वगानां धावन्तः शीघ्रगामिनः; छात्रेषु
मैत्रः प्रवीणः, छात्राणां मैत्रः प्रवीणः ।

७८ निमित्तात् कर्मसमवाये (निमित्तात् कर्मयोगे)—कर्म के
साथ सम्बन्ध होने से निमित्तयोधक शब्द के उत्तर सप्तमी
होती है । यथा, चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्,
केलेषु चमरी हन्ति, सोमि पुष्कलको (कस्नूरीमगः) ।
दतः । पश्चान्तर में चतुर्थी होती है, यथा, मुक्ताफलाय करिणम्,
हरिणं पलाय इत्यादि ।

N. B. अथवा 'मुक्ताफलमाहत्तुं' ऐसा बरके 'क्रियायोपरस्व
य कर्मणि स्थानिनः' सूत्र से इसमें चतुर्थी सिद्ध करते हैं ।

कारक

१ क्रियावधि कारकम्—क्रिया के साथ जो सम्बन्ध है उसे
कारक कहते हैं ।

२ पद् कारकाणि— कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, मपादान और अधिकरण, ये छः कारक हैं ।

कर्त्ता

३ क्रियासम्पादकः कर्त्ता (स्वतन्त्रः कर्त्ता)—क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कारक कहते हैं । यथा, शिशुः क्रीडति, गौः शब्दायते, मेघो गज्जति, गोपो दुग्धं दोग्धि, मालाकाः पुष्पं चिनोति, चानरो वृक्षमारोहति, राजा प्रजाः पालयति ।

४ प्रयोजकश्च (तत्प्रयोजको हेतुश्च)— जो दूसरे को क्रिया के करने के लिये प्रवृत्त करता है उसे भी कर्त्ता कारक कहते हैं ।

५ तृतीया प्रयोग्ये (कर्त्, काण्योस्तृतीया)— क्रिया की अणि-जन्त अवस्था के कर्त्ता को णिजन्त होने पर प्रयोग्य कर्त्ता कहते हैं । प्रयोग्य कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है । यथा, देवदत्त ओदनं पचति—यस्यदत्तो देवदत्तेन ओदनं पाचयति । यहाँ देवदत्त 'पच्' क्रिया का अणिजन्त अवस्था में कर्त्ता था, णिजन्त अवस्था में प्रयोग्य कर्त्ता हुआ और तृतीया विभक्ति हुई है । यस्यदत्त देवदत्त को 'पच्' क्रिया के लिये प्रवृत्त करता है इसलिये यह प्रयोग्य कर्त्ता हुआ और इसमें प्रथमा विभक्ति हुई है ।

६ गम्यर्थिनि कर्मसंज्ञा प्रयोग्यस्य (गतिपुटिश्रयवसानार्थशब्दस्य । कर्मसंज्ञामणिकर्त्ता गौ)— गम्यार्थे धातु के प्रयोग में प्रयोग्य कर्त्ता में कर्म-संज्ञा होती है । यथा, देवदत्तो गृहं गच्छति, यस्यदत्तो देवदत्तं गमयति ।

७ कर्त्तागम्यर्थिश्च (गतिपुटि.....)— ज्ञानार्थ तथा भ्र. धातु, भ्रश, निश्च भ्रानार्थे धातु के प्रयोग में प्रयोग्य कर्त्ता में कर्म-संज्ञा होती है । यथा, कर्त्तागम्यर्थि—शिष्यो धामं बुध्यते, गुरुः

शिष्यं धर्मं बोधयति । अशनार्थं—पुत्रोऽन्नमश्नाति, माता पुत्रं मन्नं आशयति ।

८ शब्दकर्मकाणामकर्मकाणाञ्च (गतिबुद्धि.....)—पद, वाक्य, ग्रन्थ, उपदेश, तिरस्कार, प्रशंसा, प्रभृति शब्दकर्मक और ह्रै, क्त्वि, शब्दाय, जल्प, भाप्, लप्, श्रु, वि-क्षा, उप्-लभ् भिन्न कर्मक धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में कर्म संज्ञा होती है । यथा शब्दकर्मक—शिष्यो वेदमधीते, गुरुः शिष्यं वेदमध्यापयति । अकर्मक—शिशुः रोते, माता शिशुं शाययति ।

९ विभाषा ह्रस्वह्रजोः (ह्रकोरन्वतरस्याम्)—ह्रस्व और कृत् धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में विकल्प से कर्मसंज्ञा होती है । यथा, भृत्यो भारं हरति, प्रभुर्भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति, कुम्भकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुम्भकारं कुम्भकारेण वा घटं कारयति ।

१० कर्मभावयोस्तृतीया (कर्तृकरणयोस्तृतीया)—कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रयोग में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है । यथा; कर्मवाच्य—गोपेन दुग्धं दुहते, मालाकारेण पुष्पं चांयने, राज्ञा धनं हीयते । भाववाच्य—शिशुना दधने, यूना दस्यते, वृद्धेन सुष्यते ।

११ कर्मसंज्ञार्था प्रयोज्यकर्मणोः प्रथमाद्वितीये कर्मणि (बुद्धिमश-कौः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया । प्रयोज्यकर्मण्यन्वेषां द्यन्तानां सादयो मगः)—जहाँ प्रयोज्य कर्त्ता की कर्म-संज्ञा हो वहाँ कर्म-वाच्य के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा, शिष्येण वेदोऽधीयते, गुरुणा शिष्यो वेदमध्याप्यते । यहाँ प्रयोज्य कर्त्ता 'शिष्य' में प्रथमा और कर्म 'वेद' में द्वितीया विभक्ति हुई । इसके अतिरिक्त, देवदत्तेन भोदनं पच्यते, यज्ञदत्तेन भोदनं पच्यते ।

१० विग्नो च प्रतिलिप्त्विनायाः—क्रिया-प्रयुक्ति स्थान में ही गलत कारक का विधान होता है, किन्तु क्रिया-प्रयुक्ति के स्वभाव क्रिया नियुक्ति में भी अर्थ विशेष तत्त्व कारक का विधान होगा है । यथा, भक्ष्यान् पतितः, भक्ष्यान् पतितः; मध्ययनाष्टिमनि, मध्ययानन् विरमनि; मिश्रये मिश्रां ददाति, मिश्रये मिश्रां न ददाति; महामिदं स्पन्दने, महामिदं न स्पन्दने; हस्तेन गृह्णाति, हस्तेन न गृह्णाति; पम्त्रेणाच्छादयति, पम्त्रेण नाच्छादयति; गृहे तिष्ठति, गृहे न तिष्ठति; शय्यायां शेते, शय्यायां न शेते; जलं पिबति, जलं न पिबति; चन्द्रं पश्यति, चन्द्रं न पश्यति; मेघो वर्षति, मेघो न वर्षति; नदीं पदति, नदीं न पदति ।

११ विवक्षावशात् कारकाणि—जहाँ जो कारक विहित है वहाँ विवक्षावशात् (यत्ना के इच्छानुसार) दूसरा कारक भी होता है । यथा; गृहं गच्छति, गृहे गच्छति; गृहं प्रविशति, गृहे प्रविशति; पुष्पेभ्यः स्पृहयति, पुष्पाणि स्पृहयति; पुष्पेभ्यः स्पृहा, पुष्पेषु स्पृहा; अरये कुप्यति, अरौ कुप्यति; गां दोग्धिं दोग्धि, गोदुग्धं दोग्धि; नृपं धनं याचते, नृपादनं याचते; वृक्षं पुष्पं चिनोति, वृक्षात् पुष्पं चिनोति; पुत्रं गृहं नयति, पुत्रं गृहे नयति; जलधिर्ममृतं ममन्धुः, जलधेरमृतं ममन्धुः; शिष्याय विद्यां वितरति, शिष्ये विद्यां वितरति; हिमवतो गङ्गा प्रमवति, हिमवति गङ्गा प्रमवति ।

कर्म

१२ क्रियामागतं कर्म (कर्तुरीप्तिवृत्तमं कर्म)—क्रिया द्वारा जो आक्रान्त हो उसे कर्मकारक कहते हैं । यथा, गृहं प्रविशति, चन्द्रं पश्यति, ग्रामं गच्छति, अन्नं भुङ्क्ते, जलं पिबति,

पुणं चिनोति, वस्त्रं ददाति, वेदमघोते, वृक्षमारोहति, शाखां छिनत्ति, काष्ठं भिनत्ति ।

१४ अधिशोभ्यासामधिकरणम् (अधिशोभ्यासां कर्म)—अधि पूर्वक शी, स्था और आस् घातुओं के अधिकरण की कर्म-संज्ञा होती है । यथा, शय्यामधिरोते गृहमधितिष्ठति, ग्राम-मध्यास्ते ।

१५ उपान्वध्यास्वसाः—उप, अनु, अधि और आङ् पूर्वक पस् घातु के अधिकरण की कर्मसंज्ञा होती है । यथा, ग्राम-मुपवसति (उपवास अर्थ में होता है, उपवसति वने), गृहमनुवसति, नगरमधिगसति, गुरोरालयमावसति ।

१६ अभिनिविशो विभाषा (अभिनिविशश्च)—अभि पूर्वक और नि पूर्वक विश् घातु के अधिकरण की विकल्प से कर्मसंज्ञा होती है । यथा, धर्ममभिनिविशते, धर्मेऽभिनिविशते ।

१७ कृषदुहोरसृज्योः सम्प्रदानम् (कृषदुहोरसृज्योः कर्म)—उप-सर्ग पूर्वक कृष् और द्रुह धातु के सम्प्रदान कारक की कर्म-संज्ञा होती है । यथा, भृत्यमभिक्रुष्यति, शत्रुमभिक्रुष्यति ।

१८ विभाषा दिवः करणम् (दिवः कर्म च)—दिव् घातु के करणकारक की विकल्प से कर्मसंज्ञा होती है । यथा; अक्षान् दीप्यति, अक्षैर्दीप्यति ।

१९ द्वे कर्मणि दुहादेः (अङ्घ्रियन् च । दुहवाचपव्दसउलधिप्रच्छिन्न-विष्णासृजिन्यमुषाम् । कर्मणुक् स्वादवयित् तथा स्वातीहृत्प्रदान्)—इह, वाच्, पच्, हण्ड्, रुप्, प्रच्छ्, चि, घ्, शास्, जि, मन्, मुप्, स्यादि (दुहादि) और नी, ह, रुप्, पद्, (न्यादि) घातुओं में दो कर्म होते हैं, प्रधान और अवधान । क्रिया के साध प्रधान रूप से जिसका सम्बन्ध हो उसे प्रधान कर्म कहते हैं । यथा, गोवो नां दुग्धं दोग्धि, हरिद्रो राज्ञानं घन

यामने, मानाकाशे च। पुण्यं मित्रोति, शिष्यो गुरुं यामं
 वृष्याति, गिरा पुत्रं गृहं भवति, देवा जलविद्यामृतं ममन्तु ।
 वशी वृष्य, धन, पुत्र, यामने, पुत्र, भग्न प्रधान कर्म है और
 गो, राजा, वृष, गुरु, गृह, जलधि ममन्तान कर्म है । इन
 अप्रधान कर्मोंको भक्तिगण या भक्तिशिक्षण कर्म कहते है
 मर्त्यान् देवी कर्मों में त्रिगते मरण कारक को प्रवृत्ति की
 सामायना और वक्ता की इत्याः विदुषु उन कारकों में प्रवृत्त
 न होकर कर्मकारक में प्रवृत्त होता है, उर्मीको भक्तिगण,
 भक्तिशिक्षण या अप्रधान कर्म कहते है किन्तु गिराशा होने से
 गौर्गुण्यं वीरिध, राजः धनं यामने, वृशात् पुष्यं चिरोति,
 गुरोर्धामं वृष्याति, पुत्रं गृहं भवति, जलविद्यामृतं ममन्तु, इन
 प्रकार भवादानादि कारक भी हो सकते है ।

२१ कर्मोति कर्म्ये प्रधान—कर्म्यवाच्य के प्रयोग में कर्म-
 कारक की प्रथमा विभक्ति होती है । यथा; प्राप्ते गम्यते चन्द्रो
 दृश्यते, वृक्ष आयच्छते, शत्रुरमिद्रु ह्यते ।

// २२ न्यादेः प्रधाने (गौणे कर्मोति दुहादेः प्रधानेनीदृष्ट्वाइन् ।
 बुद्धिमिशार्थोः शब्दकर्मकला निनेच्छवा । प्रवेत्यकर्मकान्येवां शाल्मली
 आदयो मताः)—कर्म्यवाच्य के प्रयोग में नो, इ, ह्य् और वृ
 धातु के प्रधान कर्म में प्रथमा होती है । यथा; गौश्रामं
 नीयते, हियते, कृष्यते, उह्यते वा ।

२३ दुहादेः प्रधाने (गौणे....)—कर्म्यवाच्य के प्रयोग में दुहादि
 धातुओं के अप्रधान कर्म में प्रथमा होती है । यथा; गौर्गुण्यं
 दुह्यते, राजा धनं याम्यते, चौरः शतं दण्डयते, गुरोर्धामं
 वृष्यते, वृक्षं पुष्यं चीयते, शिष्यो धर्ममनुशिष्यते, जलधि-
 मृतं ममन्थे ।

कण्डुलाशोदनं पचति । गगान् शतं दण्डयति । यज्ञमवस्थादि गान् ।

माणवकं धर्मं मूने शास्त्रि वा । शतं जयति देवदत्तम् । देवदत्तं शतं मुष्णाति ।

करण

२४ सापेक्षतमं करणम्—क्रिया के करने का जो सर्वप्रधान उपाय है उसे करणकारक कहते हैं । यथा; चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति, हस्तेन गृह्णाति, शस्त्रेण लुनाति, यष्ट्या प्रहरति, शरेण विध्यति, अश्वेन सञ्चरते, धरुत्रेण आच्छादयति ।

सम्प्रदान

२५ यस्मै दानं सम्प्रदानम् (कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्)—जिसको कुछ दिया जाना है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं । यथा; दद्याय धनं ददाति, मिश्रये मिश्रां ददाति, सूर्यस्य गुरवे दद्यात् ।

२६ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः—रुच्यर्थक धातु के प्रयोग में प्रीयमाण (जिसकी प्रीति, सुति या प्रसन्नता हो अथवा जिस पर उसका असर पहुँचता हो) में सम्प्रदान होता है । यथा; मोदकः शिशये रोचते, रदं मयां स्वदने ।

२७ स्पृहेरीतितः—स्पृहि धातु के प्रयोग में जिसके निमित्त स्पृहा की जाय उसमें सम्प्रदान होता है । यथा; धनाय स्पृहयति, तुष्यन्वः स्पृहयति ।

२८ धारैरत्तमर्गः—धारि धातुओं के प्रयोग में ब्रह्म देनेवाला सम्प्रदान में होता है । यथा; तुम्यं शनं धारयति, त्वं मयां सदस्यं धारयति ।

२९ क्रियया यमभिप्रैति (क्रियया यमभिप्रैति लोडि सम्प्रदानम्)—क्रिया द्वारा जिसको अभिप्रेत किया जाय उसमें सम्प्रदान

होता है । यथा, शिकणे मीद्वनकमानयति, गुणे दक्षिणामादति,
पुत्राय नन्दं ददति ।

३० क्रीपरोहेर्वाग्राधेना तदुपेयः (कृपड् हेःवाग्राधेन व इति
योगः)—क्रीपार्यक, द्रोहार्यक, ईश्वर्यक और मंगूर्यक धातु
के प्रयोग में जिस पर क्रीप इत्यादि हो वह सम्प्रदान होता
है ।

३१ प्रयाश्चर्षा ध्रुवः प्रवर्तकः (प्रयाश्चर्षा ध्रुवः पूर्वस्य कर्त्तुः)—
प्रति पूर्व्यक और भाश्च पूर्व्येक ध्रु धातु के प्रयोग में जिसको देने
की प्रतिज्ञा की जाय वह सम्प्रदान में होता है । यथा; दग्दित्राय
धनं प्रतिशृणोति, आशृणोति या; दग्दिष्टेण मह्यं धनं देहाति
प्रवर्तितः प्रतिजानीते इत्यर्थः ।

अपादान

३२ यतो विग्लेयोऽपादानम् (ध्रुवमपायेऽपादानम्)—जिससे कोई
वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं । यथा; अश्वात्
पतितः, हस्ताद् भ्रष्टः, जलाद्दुत्थितः, गृहात् प्रस्थितः, विदेशात्
प्रत्यागतः ।

३३ मीत्रार्यानि भवहेतुः—मयार्थ और प्राणार्थ धातु के प्रयोग
में मय के हेतु में अपादान होता है । यथा; मयार्थ—व्याघ्रादि-
भेति, महिपात् प्रस्थति । प्राणार्थ—आत्पात् प्रायते, मल्लुका-
द्रक्षति ।

३४ हेतुरत्यक्तोः (जनि कर्तुः प्रकृतिः)—उत्पत्ति के कारण में
अपादान होता है । यथा; वीजाद्दुहुरो जायते, पितुः पुत्रो जायते,
दुग्धात् घृतमुत्पद्यते, धर्मात् सुखं भवति, अधर्मात् दुःखमुद्भवति ।

३५ आविर्भवनभूर्भुवः (भुवः प्रभवः)—भू धातु के प्रयोग में

जिस स्थान में (जहाँ से) किसी वस्तु का प्रकाश या आविर्भाव हो उसमें अपादान होता है। यथा, हिमयतो गङ्गा प्रभवति, बाल्मीकाप्रात् धनुःखण्डमाखण्डलस्य, आविर्भवतीत्यर्थः ।

१९ विरामार्थिनां यतो विरतिः (ज्युप्साविरामप्रमादार्थिनामुपसंख्यानम्)—विरामार्थक धातु के प्रयोग में जिससे विराम हो उसमें अपादान होता है। यथा, अध्ययनाद्विरमति, कलहान्निवर्त्तते ।

२० पराजेरसह्यम् (पराजेरसोऽः)—परा पृथ्वीक जि धातु के प्रयोग में असहा विषय में अपादान होता है। यथा, अध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते, अध्ययनं पापाच्च सोढु-मसमर्थ इत्यर्थः ।

२० दस्योदर्शनमिच्छति (अन्तर्दो वेनादर्शनमिच्छति)—जिससे कोई वस्तु छिपाना चाहते हैं उसमें अपादान होता है। यथा, गुरोरन्तर्धत्ते पितुर्निर्लीयते, दस्योर्लुकायते, गुरुः पिता दस्युर्वा न मां पश्येदिति, लज्जया भयेन वा तद्दर्शनपथादप-सरतात्यर्थः ।

१९ यतोऽज्युप्सा तदर्शानाम् (ज्युप्साविरामप्रमादार्थिनामुपसंख्यानम्)—ज्युप्सा (hating) अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में जिससे ज्युप्सा हो उसमें अपादान होता है। यथा, पापाच्च्युप्सते, नरकान् यीमत्सते ।

२० त्रयार्थिनां यत्स्वप्ना—स्वप्नार्थक धातु के प्रयोग में जिससे स्वप्न हो उसमें अपादान होता है। यथा, गुरोर्लज्जते, पितुस्त्वपते, मातुर्जिह्वेति ।

२१ अपोत्स्वर्षानामप्यापिता (आख्यातोपयोगे)—अध्ययनार्थ धातु के प्रयोग में अध्यापक में अपादान होता है। यथा, उपाध्यायादधीते, गुरोः पठति ।

४२ धारणार्थानामोप्सितः—धारण अर्थ के धातु के प्रयोग में जिससे निवारण करना हो उसमें अपादान होता है । यथा; अग्नेभ्यः काकं धारयति, यवेभ्यश्छागं निघेधति, व्यसनात् पुत्रं निवारयति ।

४३ श्रुत्यर्थानां श्रावयिता (श्राव्यातोपयोगे)—श्रवणार्थक धातु के प्रयोग में जो सुनाने वाला है उसमें अपादान होता है । यथा, गुरोः शास्त्रं शृणोति, नटात् गीतमाकर्णयति, कम्पात् श्रुतं भवता, मया श्रुतमिदं तातात् ।

४४ ग्रहणप्राप्त्यर्थानां तत्स्थानम् (लुगुप्ता ...)—ग्रहणार्थक और प्राप्त्यर्थक धातु के प्रयोग में ग्रहण स्थान और प्राप्तिस्थान में अपादान होता है । यथा; ग्रहणार्थक-भाचाट्पात् उपवेशं गृह्णाति, प्रजाभ्यः करमादत्ते । प्राप्त्यर्थक-उपाध्यायात् विद्यां प्राप्नोति, गुरोर्ज्ञानं लभते ।

४५ प्रमादार्थानां यतः प्रमादः (लुगुप्ता ...)—प्रमाद अर्थ के धातु के प्रयोग में जिससे प्रमाद हो उसमें अपादान होता है । यथा; घर्मात् प्रमाद्यति, अक्षय्यनादनपधानम् ।

अधिकरण ।

४६ आधारोऽधिकरणम्—कर्त्ता और कर्म के आधार को अधिकरण कहते हैं । आधार तीन प्रकार के होते हैं, ऐक-देशिक, वैषयिक और अभिव्यापक । यथा ऐकदेशिक—यने वसति, यनेकदेशे इत्यर्थः; नद्यां स्नाति, गृहे स्वपिति, शय्यायां शिशुं शाययति । वैषयिक—जले इच्छा, जलविषये इत्यर्थः; विद्यायामनुरागः । अभिव्यापक—दुग्धे माधुर्यमस्ति, दुग्धस्य सध्यांनवयथान् स्वाप्य इत्यर्थः; तिलेषु तैलमस्ति, यद्वा वादिका-

Exercise—40

1. What is the difference between कारक & विभक्ति ?

2. Use the following words in your own Sentences:—

सर्वतः, प्रति, चिह्नं, अन्तरेण, सह, स्वप्ना, अन्तरा, विना, फलम्, चर्हिः, श्यते, निपुणः, पृथक्, नमः, स्वस्ति, उत्तरा, वपद्, निकषा, परितः, भवम्, प्रमादान्, उपवने ।

3. What case-endings are governed by अभ्यास्ते, उप-
वसति, अधिवसति, अभिनिविशते, रोचते, धारयति, प्रतिशृणोति, अभि-
शृणोति and अधितिष्ठति ।

4. Illustrate the following:— अत्यन्तसंयोगे द्वितीया, अपचरौ
तृतीया, हेतौ तृतीया पञ्चमी च, स्वबल्लोने पञ्चमी, भावे सप्तमी, तादर्थ्ये
षष्ठी, निर्हारणे षष्ठी सप्तमी च, विवक्षया षष्ठी, लक्षणात् तृतीया and
तृतीया प्रयोग्ये ।

5. Translate into Hindi and account for the case-
endings of black words.— अहं मद्य यमुनातटं गमित्वामि ।
राजानं प्रति एवं सा उवाच । चिह्नं त्वां पापकारिणम् । रामो लक्ष्मणेन
सहितया च वनं जगाम । बालका वानराश्च स्वभाषेन चञ्चला भवन्ति ।
कर्पाशामउर्जने हुस्त्रमज्जितानाश्च रक्षणे । साधवः सर्वभूतेषु दयां
दृशन्ति । राजा चर्मणि मृगं हन्ति । गोषु कृष्णा बहुक्षीरा भवन्ति ।
रामं निकषा नदी वसति । भ्रातरि भागतेऽहं दाराणदीं वारयामि ।
द्वेषां विना कुलं न भवति । महता कष्टेनोपाश्रितं विभं हेमया ज्ञापि
वम् । माता शिशुं शर्यायां शाययति । यशदत्तः देवदत्तेन भेदेन
वसति । अल्पस्य हेतोर्बहुं दातुमिच्छद् । जात्या साक्ष्यः कर्मणा
विप्लव । अरमे वसति पुत्राय राज्यभारं दत्वा स वनं जगाम । जननी

जन्मभूमेः स्वर्गादिषु गतिवती । गोदापानीनांरेऽसौ निज्ज्वलन्तस्त्रयो-
 त्परंरगने । पीडया कृष्णि विरक्तंनि भवति । उदरेऽपि दुर्लभे
 प्रकीर्णाय न भावने । पयोऽप्याय हि मत्तं जंबवम् । हि दुर्लेभे
 विद्यायेन दुर्गदंभु यो नः । यत्ने वृत्ते चर्द् न विद्यति केषु
 शेषः । यो विद्यति सहायो भवति न पृथक्पार्थक्यम् । तेन मुनिना
 सूर्यकः विद्यायः कृतः । कोऽपि पुत्रेण ज्ञानेन यो न विद्याय चन्दिः ।
 पुत्रा विद्या दुष्यन्ती नाम राजा बभूव ।

6. Translate into Sanskrit:— (a) मैं भार्गु के साथ घर
 जाता हूँ । राजा श्रियों को घन देना है । वानर वृक्ष पर चढ़ते हैं ।
 यह कुण्डल के लिये मोना मालिनी है । बिना परिश्रम के विद्या नहीं
 होती । लोभ से क्रोध और क्रोध से पाप होता है । क्रोध से बढ़कर दूष्टा
 कोई पाप नहीं है । वृक्ष फल से और मनुष्य विद्या से नष्ट होते हैं ।
 दान से विद्या का हान्य नहीं होना सूर्योदय होने पर मैं जाऊँगा ।
 सूर्य का लक्ष प्रीत्यकाल में टंडा होता है ।

(b) I have come to learn Dharmshastras from you. Do
 not be angry with me. I have no friend except you. A tree
 is known by its fruits. Knowledge without modesty is
 useless. In ancient time, there lived in Mithila a virtuous
 king. Every one of the world worships God for absolution.

7. Correct— ग्रामस्य निरुषा । ग्रामस्य परितः नदी वल्लि ।
 स मां कृष्यति । पिता मह्यमभिकृष्यति । पशुभ्यः हिंसे बलिष्ठः । धर्मस्य
 विना किमपि न सिध्यति । तव ज्ञाने कोऽपि मम सहायको नास्ति ।
 यत्नात् किं यो न विष्णुं चाधते । ईश्वरेण भिन्नः को सहायकोऽस्ति ।
 स्वया भागते अहं तत्र गमित्स्यामि । ग्रामस्य उत्तरा हि सरः । अहं तव प्रते न
 सन्नुष्टः । सर्वे जना घनं शृहयन्ति । पितुराणां शिरमादाय वनं स्वस्थे ।

धनता मम तव च हरिः । आसनेऽधितिष्ठति । इदं मां न रोचते । धनात्
 हीनं न किमपि आद्रियते । स मम शतं धारयति । पयः पानः सिद्धता ।
 विषल्यस्य अन्तिकस्य ।

तद्धित

१ तद्धित—संज्ञा के परे जिन प्रत्ययों के लगाने से दूसरी
 संज्ञायें बनती हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं ।

साधारण नियम

१ णितिवृद्धिराद्यस्य (तद्धितेष्वचामादेः)—जिन प्रत्यय के
 णू का लोप होता है उसके आने से प्रातिपदिक के आदि स्वर की वृद्धि
 होती है ।

२ सुभगादेरुभयोः (ह्रस्वगतिन्ध्यन्ते पूर्व्यपदस्य च । अनु-
 णितिकार्दीनाञ्च)—सुभगा, दुर्भगा, अधिदेव, अधिभूत, परलोच, सर्व-
 लोच, अशुचल, परस्त्री इत्यादि प्रातिपदिक के अन्तर्गत दोनों परों के
 आदि स्वर की वृद्धि होती है ।

३ सुवज्यालादेर्द्वितीयस्य—सुवजाल, अर्द्धवज्याल, अग्निदेवता,
 निर्गन्धता, दिक्कर्म, विकर्म, अनुर्वय, पञ्चवय इत्यादि प्रातिपदिक के अन्तर्गत
 द्वितीय पर के आदि स्वर की वृद्धि होती है ।

४ न णित्कारण्यं स्वयमेव—जिन प्रत्यय के णू का लोप होता है
 उनके आने से प्रातिपदिक के आदि स्वर की सर्वत्र वृद्धि नहीं होती ।

५ शौषोऽपवर्णस्योः—तद्धित प्रत्यय के ष और र के अन्तर्गत
 ष और र के आदि प्रातिपदिक (शरत्) के अन्तर्गत ष और र का लोप होता है ।

६ गुण उपवर्णस्य (शौर्गुणः)—तद्धित प्रत्यय के ष और र के
 अन्तर्गत ष और र के आदि प्रातिपदिक के अन्तर्गत ष का गुण होता है ।

७ अक्षीर्शोऽभ्यो यः स्थरयत्—अकार, ओकार और एकार
 के अन्तर्गत तद्धित प्रत्यय का ष स्वर का चार्थ्यनिर्दिष्ट वाक्य है ।

८ टेलोपोडिति (टिः)—ड-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से प्रातिपदिक के टि १ अन्त्य स्वर को पूर्ववर्ती व्यञ्जन वर्ग सहित टि कहते हैं) का लोप होता है ।

९ तैर्विंशतेः (तिविंशतेडिति)—ड-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से विंशति के ति का लोप होता है ।

१० इयुचौ यवयोद्यचः पदान्ते णिति—ण्-इत् वाले तद्धित प्रत्यय के परे रहने से पद के अन्तस्थित आदि स्वर के स्थान में इयव य का इय् और व् का उव् होता है ।

११ द्वारादीनाञ्च—द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यलक्ष, इरति, स्वर, स्वादु, मृदु, खस, धन् और स्व इत्यादि प्रातिपदिक के स्थान में य् और व् का क्रम से इय् और उव् नहीं होता ।

१२ न स्यागतादीनाम्—स्वागत, स्वध्वर, खड्ग, ध्वज, ध्वज, व्यबहार और स्वपति प्रातिपदिक के भाग य् और व् का इय् और उव् नहीं होता ।

घा श्वापदन्यङ्कोः—घापद, न्यङ्कु इन दोनों प्रातिपदिकों का विकल्प से होते हैं ।

१३ अश्वययाक्षितः—घ्-इत् वाले तद्धित प्रत्ययों से बने हुए श्वर धष्यय होते हैं ।

१४ अपत्ये (तस्यापत्यम्)—वक्षमाण (बड़े जाने वाले) अपत्य अपत्य अर्थ में विहित है ।

२ अदस्तात् विण् (अत् इत्)—अपत्य अर्थ में अकारान्त शब्द के परे विण् प्रत्यय होता है । इस के ण्, ण् का लोप होता है और इ रहता है । यथा, श्वरस्य अपत्यं शौरिः, दशरथस्यापत्यं दशरथिः, द्रोणस्यापत्यं द्रोणिः, युधिष्ठिरस्यापत्यं यौधिष्ठिणिः, अर्जुनस्यापत्यं अर्जुनिः, विकर्णस्यापत्यं विकर्णिः, कृष्णस्यापत्यं कृष्णिः ।

(क) बाह्यादिभ्यःक्—अपत्य अर्थ में बाहु इत्यादि शब्दों के परे पिण् होता है । यथा, बाहोरपत्यं बाह्विः, उपबाहोरपत्यं उपबाह्विः, सुमित्राया अपत्यं सौमित्रिः, दुर्मित्राया अपत्यं दूर्मित्रिः ।

(ख) डको व्यासप्रधाश्रीःविणि (सुधातुरकङ् च । व्यासवरडनिपाद्-बाह्याडविम्बानां चेति षक्तञ्चम्)—पिण् प्रत्यय परे होने से व्यास और सुधातृ शब्दों के परे डक होता है और इसका भक रहता है । यथा; व्यासस्यापत्यं वैयासकिः, सुधातुरपत्यं सौधातकिः ।

३ नडादिभ्यः पायनण् (नडादिभ्यः फक्)—अपत्य अर्थ में नड् इत्यादि शब्द के उत्तर पायनण् होता है और इसका धायन रहता है । यथा; नडस्यापत्यं नाडायनः, चरस्यापत्यं चारा-यणः, दासस्यापत्यं दासायनः, शकटस्यापत्यं शाकटायनः, द्रोणस्यापत्यं द्रोणायनः, पर्वतस्यापत्यं पार्वतायनः, वदरस्या-पत्यं वादरायणः, दक्षस्यापत्यं दाक्षायणः ।

४ गर्गादिभ्यः व्यण् (गर्गादिभ्यो वञ्)—अपत्य अर्थ में गर्ग इत्यादि शब्दों के परे व्यण् होता है और इसका य रहता है । यथा; गर्गस्यापत्यं गार्ग्यः, घटस्यपत्यं घात्स्यः, अगस्ति-स्यपत्यः, पुलस्ति-पौलस्त्यः, मण्डु-माण्डव्यः, मधु-माधव्यः, जेगीपु-जिगीपव्यः, कुण्डिनी-कौण्डिन्यः, यज्ञवल्क-याज्ञवल्क्यः, पिडल-शापिडल्यः, चणक-चाणक्यः, जमदग्नि-जामदग्न्यः, आशर-पराशर्यः, अग्निवेश-आग्निवेश्यः, दिति-दैत्यः, अदिति-दित्यः, प्रजापति-प्राजापत्यः ।

५ शिवादिभ्यः षण् (शिवादिभ्योऽण्)—अपत्य अर्थ में शिव इत्यादि शब्दों के परे षण् होता है और इसका अ रहता है । यथा; शिवस्यापत्यं शैवः, ककुत्स्थ-काकुत्स्थः, विधवण-वैधवणः,

रवण-रावणः, ऊर्णनाम-भौर्णनामः, गृगाया भपत्यं पार्गः, इत्यादिः, मपति-मापतः ।

(क) विशदः—भपत्य भर्ग में विद् इत्यादि शब्द के परे पण् होता है । यथा; विद्भ्यापत्यं-वैदः, उर्व्यं-भौर्व्यः, कल्पफाश्यपः, कुशिक-कौशिकः, भरद्वाज-भारद्वाजः, विश्वानर-वैश्वानरः, शरद्वन्-शारद्वतः, शुनक-शौनकः, पुत्र-पौत्रः, दुहितु-दौहित्रः ।

(ख) मृतादेव—भपत्य भर्ग में भृमु इत्यादि शब्द के परे पण् होता है । यथा; भृगोरपत्यं भार्गवः, मरोचि-मारीचः, वसिष्ठ-वासिष्ठः, कुत्स-कौत्सः, गोतम-गौतमः, अङ्गिरस-आङ्गिरसः, विश्वामित्र-वैश्वामित्रः, धृतराष्ट्र-धार्तराष्ट्रः, पाण्डु-पाण्डवः, वसुदेव-वासुदेवः, यदु-यादवः, पुरु-पौरवः, रघु-राघवः, कुरु-कौरवः, मनु-मानवः, द्रुपद-द्रौपदः, पथ्वीत-पार्थ्वीतः ।

(ग) ऐश्वाकुरौरथ मनुष्यमानुषः (जनपदशब्दात् क्षत्रिणात् । कुर्णादिभ्यो ययः । मनोजांतावम् यतौ युक् च—ऐश्वाक इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा; ऐश्वाकौरपत्यम् ऐश्वाकः, कुरु-कौरव्यः, मनु-मनुष्यः, मानुषः ।

(घ) मातृर्दुसंख्यायाः (मातुरुसंख्यासंभद्रपूर्वयोः)—पण् प्रत्यय परे होने से संख्यावाचक शब्द के परवर्ती मातृ शब्द के परे दुर् होता है और इसका उर् रहता है । यथा; द्वयोर्मात्रोरपत्यं द्वमातुरः पण्णां मातृणामपत्यं पाण्मातुरः । सम् और भद्र शब्द के परे रहने पर भी होता है; यथा, साम्मातुरः, भाद्रमातुरः ।

(च) कन्यायाः कनीनः (कन्यायाः कनीन च)—पण् प्रत्यय परे रहने से कन्या का कनीन होता है । यथा; कन्यायाः अपत्यं कानीनः ।

(खीभ्याः वेद्यन् (खीभ्यो ङङ्)—अपत्य अर्थ में स्त्री प्रत्ययान्त शब्द के परे वेद्यन् होता है और इसका एव रहता है । यथा गङ्गाया अपत्यं गाङ्गवेद्यः, राधाया अपत्यं राधेद्यः, विन्ता-वीन्तेद्यः, ताडका-ताडकेद्यः, सरमा-सारमेद्यः, भगिनी-भागिनेद्यः, कुन्ती-कौन्तेद्यः, गोधा-गोधेद्यः ।

गोधेरगोधारौ (गोधाया ङङ्, आरगुदीचाम्)—गोधापत्यं, एव अर्थ में गोधेर और गोधार निपातन से सिद्ध होते हैं ।

(क) शुभ्रादिभ्यश्च—अपत्य अर्थ में शुभ्र इत्यादि शब्द के परे वेद्यन् होता है । यथा; शुभ्रत्यापत्यं शीघ्रेद्यः अत्रि-आत्रेद्यः, विमातृ-वैमात्रेद्यः, शकुनि-शाकुनेद्यः, इतर-ऐतरेद्यः ।

(ख) लोपः वेद्यन्पूर्वस्य—वेद्यन् प्रत्यय होने से प्रातिपदिक के अन्तस्थित उवर्ण का लोप होता है । यथा; मुकण्डोरपत्यं मार्कण्डेद्यः, कमण्डलीः अपत्यं कामण्डलेद्यः ।

(ग) न पाण्डुरङोः—पाण्डु और षट् शब्द के उवर्ण का लोप नहीं होता । यथा; पाण्डोरपत्यं पाण्डवेद्यः, कद्रु-काद्रुवेद्यः ।

(घ) सुभगादेरिह वेद्यनि—वेद्यन् प्रत्यय होने से सुभगा इत्यादि शब्दों के उत्तर इन् होता है । यथा; सुभगाया अपत्यं सीभागिनेद्यः, दुर्भगा-दौर्भागिनेद्यः, वन्धकी-वान्धकिनेद्यः, कनिष्ठा-कानिष्ठिनेद्यः ।

कुलटाया वा—कुलटा शब्द के उत्तर विकल्प से होता है । यथा, कुलटाया अपत्यं कौलटिनेद्यः, कौलटेद्यः ।

N. B. यहाँ कुलटा का अर्थ मिश्रोपजीवनी सती स्त्री है, अन्धकारिणी नहीं । अन्धकारिणी अर्थ में कौलटेद्यः, कौलटेद्यः होता है ।

• स्वप्नादिभ्यः पीयन्—अपत्य अर्थ में स्वप् इत्यादि शब्द के उत्तर पीयन् होता है और इसका एव रहता है । स्वप्नुरपत्यं स्वप्नोद्यः ।

पितृमातृभ्यश्चोः येयण् वा ऋत्तोपञ्च—पितृस्वन्तु और मातृस्वन्तु शब्द के उत्तर विकल्प में येयण् होता है । येयण् होने से ऋकार का लोप होता है । यथा; पितृस्वन्तुरस्यै येतृभ्यमेयः, पैतृभ्यघोयः; मातृस्वन्तु-स्वन्तुभ्यो येयः, मातृभ्यघीयः ।

८ रेवत्यादिभ्यः विकण् (रेवत्यादिभ्यष्टक्)—अपत्य अर्थ में रेवती इत्यादि शब्द के उत्तर विकण् होता है और इसका एक रहता है । यथा, रेवत्या अपत्यं रेवतिकः, अश्वपाली-आश्वगालिकः ।

लोपोमर्गादिर्यद्भुवचने—बहुवचन में गर्ती इत्यादि के परे आन्व प्रत्यय का लोप होता है । यथा; गर्तास्य अपत्यानि गर्तीः, वत्सास्य अपत्यानि वत्साः, अगस्ति-अगस्तयः, विश्वावसु-विशवावसवः, वस्रु-वस्रवः, सुद्रक्त-सुद्रक्ताः, जमदग्नि-जमदप्रय ।

यस्कादेः—बहुवचन में यस्कादि के परे अन्त्व प्रत्यय का लोप होता है । यथा, यस्कस्य अपत्यानि यस्काः, द्रुह्यस्य अपत्यानि द्रुह्याः, वृणकर्ण-वृणकर्णाः, जह्जारथ-जह्जारथाः ।

विदादेः—बहुवचन में विद इत्यादि के उत्तर अपत्य प्रत्यय का लोप होता है । यथा, विदस्य अपत्यानि विदाः, उर्व्व-उर्व्वाः, कम्पय-कम्पयाः, कुशिक कुशिकाः, भरद्वाज-भरद्वाजाः, उपमन्यु-उपमन्यवः, विश्वानर-विश्वानराः, शरद्वत् शरद्वतः, शुनक-शुनकाः ।

अभ्यादेश्च (अत्रिभृगुकुत्सवशिष्टगोतमाङ्गिरोभ्यश्च)—बहुवचन में अत्रि इत्यादि के उत्तर अपत्य प्रत्यय का लोप होता है । यथा, अत्रोपत्यानि अत्रयः, भृगु-भृगवः, कुत्स-कुत्साः, वशिष्ट-वशिष्टाः, गोतम-गोतमाः, अङ्गिरस्-अङ्गिरसः ।

राजसंशाभ्यो विभाषा (तद्राजन्ययद्भुषु तेनैवास्त्रियाम्)—बहुवचन में राजसंशक शब्द के उत्तर अपत्य प्रत्यय का विकल्प से लोप होता है । यथा रघोरपत्यानि रघवः, रापवाः, कुरु-कुरुवः, कौरवाः

पु-पदकः, वादवाः, इत्याहु-इत्याकवः, ऐक्षाकाः, वृष्णि-वृष्णवः, वार्थोवाः ।

न स्त्रियाम् (तद्राजन्य.....) स्त्रीलिङ्ग में अपत्य प्रत्यय का लोप नहीं होता । यथा, यस्कस्य अपत्यानि स्त्रियः यास्क्यः, विदस्यापत्यानि स्त्रियः वैद्यः, अत्रेः अपत्यानि स्त्रियः अत्रेभ्यः, रथोरपत्यानि स्त्रियः राथव्यः । अर्थ विशेषे वापत्यानि—अपत्य अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं वे अन्य विशेष अर्थों में भी होते हैं ।

ईय-कण्-णीन-पीकणञ्—अर्थविशेष में ईय, कण्, णीन और पीकण् प्रत्यय भो होते हैं । कण् का क, णीन का ईन और पीकण् का ईक राश है ।

(क) तद्धेति तद्धीते (तद्धीते तद्धेद)—तन् धेत्ति, तन् अधीते । इन दो अर्थों में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, तर्कं धेत्ति अधीते वा तार्किकः, न्यार्यं धेत्ति अधीते वा नैयायिकः, वेदान्तं धेत्ति अधीते वा वेदान्तिकः, पुराण-पौराणिकः, वेद-वैदिकः, अलङ्कार-आलङ्कारिकः, ज्योतिस्-ज्योतिषिकः, व्याकरण-वैयाकरणः, क्रम-क्रमकः, पद-पदकः ।

हृष्योऽन्त्यः शिक्षादेः—शिक्षा हृत्पादि के अन्त्य स्वर का ह्रास होता है । यथा, शिक्षां वेत्ति अधीते वा शिक्षकः, मीमांसा-मीमांसकः ।

(ख) तेन प्रोक्तम्—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, ऋषिणा प्रोक्तं भार्यम्, मनुना प्रोक्तम् मानर्थ, मानर्थायम्, विष्णुना प्रोक्तं वैष्णवं, पतञ्जलि-पतञ्जलम्, कणाद-कणादम्, पाणिनि-पाणिनीयम्, जैमिनि-जैमिनीयम्, अत्रि-भाष्येयम्, उशनस्-अशानसम्, भद्रि-भद्रिस्तम्, पराशर-पाराशरीयम्, बृहस्पति-बार्हस्पत्यम्, अ-नारदीयम्, वाल्मीकि-वाल्मीकीयम्, बौधायन-बौधाय-नीयम् ।

(घ) तेन कृतम्—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथा-

यस्यैव यद्युक्तं प्रत्ययं होते ही । यथा, कार्त्तव्यं कृतम् कार्त्तव्यम्, अङ्गेन वृत्तम् भाङ्गिकम्, शरीर-शारीरिकम्, गान्-गायिकम्, युगत-वीर्येणम्, मञ्जिका-माञ्जिकम्, शुद्ध-शुद्धम् ।

(व) तेन शब्द (तेन शब्दं तन्नाम्)—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, कर्मणः कर्मायम्, कुसुमेन रानं कौमुमम्, नीली-नीलम्, हरिः-हारिम्, मञ्जिष्ठा-माञ्जिष्ठम्, लाक्षा-लाक्षिकम्, रौच्य-रौचनिकम्, पीन-पीनकम् ।

(घ) तस्य देवता—सा अस्य देवता, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, विष्णोःस्य देवता शैवः, विष्णुरस्य देवता वैष्णवः, शक्तिः अस्य देवता शाक्तः, गणपति-गणपत्यः, प्रजापति-प्राजापत्यः, वायु-वायव्यः, अग्नि-आग्नेयः, सोम-सौम्यः, धावापृथिवी-धावापृथिव्यम्, धावापृथिव्यम्; अग्नीषोम-अग्नीषोमीयम्, अग्नीषोम्यम् ।

(ङ) तस्य समूहः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, मिश्रानां समूहः मीशम्, भद्रा-राणां समूहः भाङ्गारम्, मयूर-मायूरम्, धेनु-धेनुकम्, कलाप-कालापकम्, राजन्य-राजन्यकम्, राजपुत्र-राजपुत्रकम्, मनुष्य-मानुष्यकम्, अपूप-आपूपिकम्, गणिका-गणिककम्, प्रह-ण-प्राहण्यम् ।

N. B. समूहे सण्ड-काण्ड-तलः—समूह अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव खण्ड, काण्ड और तल् प्रत्यय होते हैं । यथा, कमलानां समूहः कमलखण्डम्, कुमुदानां समूहः कुमुदखण्डम्, दुर्वाणां समूहः दुर्वाकाण्डम्, कर्मणां समूहः कर्मकाण्डम् । तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जनानां समूहः जनता, बन्धुनां समूहः बन्धुता ।

(ज) तेन भवः—इस अर्थ में (यहाँ-भव शब्द से ज्ञात,

स्थित, संक्रान्त, आधिभूत इत्यादि कई अर्थ समझे जाते हैं) शब्द के परे यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं। यथा, मधु-रायां भवः माधुरः, कलिङ्गे भवः कालिङ्गः, शरद्-शरदः, वसन्त-वासन्तिकः, हेमन्त-हेमन्तिकः, समुद्र-सामुद्रिकः, द्वीप-द्वीपायनः, द्वैष्यः; अकाल-आकालिकः, शश्वत्-शाश्वतिकः, कुल-कुलीनः, दुष्कुल-दुष्कुलेयः, दुष्कुलीनः; प्राच्-प्राच्यम्, दिश्-दिरयम्, वर्ग-वर्ग्यम्, कण्ठ-कण्ठयम्, दन्त-दन्त्यम्, तालु-तालुव्यम्, धोष्ठ-धोष्ठयम्, जिह्वामूल-जिह्वामूलीयम्, अन्तर-मान्तरिकम्, मनस्-मानसं, मानसिकम्; शरीर-शारीरिकम्, धारण-धारण्यकः, कोश-कौशेयम्, इह भवं ऐहिकम्; लोक-लौकिकम्, भूमि-भूमिः, दिव्-दिव्यः, अन्न-अन्न्यम्, आदि-आद्यम्, अन्त-अन्त्यम्, वेशे भवा वेश्या, सर्वकाल-सार्वकालिकम्, कदाचित्-कादाचित्कम्, सम्प्रति-साम्प्रतिकम्, अध्यात्म-आध्यात्मिकम्, अधिभूतं भवं आधिभूतिकम्, अधि-देवं भवं आधिदैविकम्, मध्यन्दिने भवं माध्यन्दिनम् ।

टिलोपोऽकस्माद्बहिषोः—अकस्मात् और बहिष् के टि षा लोप होता है। यथा, अकस्माद्भवं आकस्मिकम्, बहिः भवं बाह्यम्, बाहिकम् ।
 र्थापुंसाभ्यां नण्—भव इत्यादि अर्थ में रथी और पुनसु; के परे नण् होता है और इसका न रहता है। यथा, रथीपु भवं रथीणम् पुनसु-पुनसुम् ।

हेमन्-शौचस्तिकपौनःपुनिकाः—हेमन्, शौचस्तिक और पौनः-पुनिके निमित्तन से सिद्ध होते हैं। यथा, हेमन्ते भवं हेमन्तम्, शौचोः भवं शौचिकम्; पुनः पुनर्भवं पौनःपुनिकम् ।

प्रतीच्योद्दीच्यतिरर्थाः—प्रतीच्य, उद्दीच्य - और तिरर्चीव अर्थन से सिद्ध होते हैं। यथा, प्रतीचि भवं प्रतीच्यम्, उद्दीचि भवं उद्दीच्यम्, तिरर्चि भवं तिरर्चीनम् ।

(ऋ) तत्र साधुः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, सभायां साधुः सन्यः, समात्रे साधुः सामाजिकः, अतिर्यां साधुः आतिथेयः, वेदे साधुः वैदिकः, संप्रामे साधुः सांप्रामिकः, संयुगे साधुः सांयुगीनः, वितण्डा-वैतण्डिकः, संकथा-सांकथिकः, संप्रह-सांप्रहिकः ।

(ट) देये कालादवगम्यावे (देवमृषे)—अवश्यम्भावे अर्थ समझा जाय तो देय अर्थ में कालवाचक शब्द के परे यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, मासे देयं मासिकम्, वर्षे देयं वार्षिकम्, संवत्सर-सांवत्सरिकम्, अप्रहायण-आप्रहायणिकम्, ध्रावण-ध्रावणिकम् ।

निर्वृत्ते च (तेन निर्वृत्तम्)—निर्वृत्त अर्थ में भी होता है । यथा, दिनेन निर्वृत्तं दैनिकम्, मासेन निर्वृत्तं-मासिकम्, वर्षे-वर्षिकम्, संवत्सर सांवत्सरिकम् ।

अहोऽहः—अह्द शब्द का अह होता है । यथा, अह्ना निर्वृत्तं आह्निकम् ।

व्याप्तौ च—व्याप्ति अर्थ में भी होता है । यथा, दिने व्याप्तं स्थितं दैनिकम्, मासे व्याप्य स्थितम् मासिकम्; वर्षम्-वार्षिकम्, वयुरो मन्वन् व्याप्य स्थितं चतुर्मास्यम् ।

वयसि च—वयम् अर्थ में भी होता है । यथा, द्वे वर्षे वयस एक द्विवर्षीयः, द्विवर्षीयः, द्विवार्षिकः, द्विवर्षः; पञ्च वर्षाण्यस्य वयः पञ्चवर्षीयः, पञ्चवर्षीयः, पञ्चवार्षिकः, पञ्चवर्षः; षोडश वर्षाण्यस्य वयः षोडशवर्षीयः, षोडशवर्षीयः, षोडशवार्षिकः, षोडशवर्षः ।

(ठ) तत आगतः—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, मथुराया आगत माथुरः, नगराद्गतः नागरिकः, भाषण-भाषणिकः, व्याद-भौषाध्यायकम्, पितामह-पैतामहकम्, मातु-मातृकम्,

सवितृ-सावित्रम्, भ्रातृ-भातृकम्, पितृ-पैतृकम्, विश्वम्;
त्रिया भागतं स्त्रौणम्, पुंस भागतं पौंसम् ।

(४) तदहति—तत् अहति, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथा-
सम्भव उपसर्गक प्रत्यय होते हैं । यथा, शतमहति शतिकः,
सहस्रमहति साहस्रिकः, छेदम् अहति छेद्यः, भेदम् अहति भेद्यः,
दण्ड-दण्ड्यः अर्घ्य-अर्घ्यः, यध-यध्यः, यज्ञ-यज्ञीयः, दक्षिणा-
दक्षिणीयः, दक्षिण्यः ।

(५) तस्मादनपेतम् (धर्मपथ्यर्थन्यायानपेते)—तस्मात् अन-
पेतम्, इस अर्थ में शब्द के परे यथासम्भव उपसर्गक प्रत्यय
होते हैं । यथा, धर्मानपेतं धर्म्यम् according to jus-
tice, or morality, न्यायात् अनपेतं न्याय्यम्, अर्थ-अर्थ्यम्,
पथ-पथ्यम्, विधि-वैधम् ।

(६) तस्मैदम्—तस्य इदम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर
यथासम्भव उपसर्गक प्रत्यय होते हैं । यथा, विष्णोस्त्रिं वैष्ण-
वम्, शिवस्त्र्येदं शैवम्, जनपद-जानपदम्, तस्य इदं तदीयम्,
एतस्य इदं एतदीयम्, देव-दैवम्, असुर-आसुरम्, सम्राज्-
साम्राज्यम्, इन्द्र-पेन्द्रम्, महेन्द्र-माहेन्द्रम्, मनस्-मानसम्,
शरीर-शारीरम्, पितृ-पितृयम्, गो-गव्यम्, महिष-माहिष्यम्,
वैशु-वैशवम्, पलाश-पालाशम्, तदित-त्वादिरम्, विल्व-वैल्वम्,
मुञ्ज-मौञ्जम्, स्त्री-स्त्रौणम्, पुमस्-पौंसम्, गङ्गा-गाङ्गम्,
दिवत्-दिवसम्, पशुपति-पाशुपतम्, शङ्कर-शाङ्करम्, सुर-
सौरम्, चन्द्र-चान्द्रम्, वेद-वैदिकम्, उपनिषद्-ओपनिषदम्,
पृथिवी-पार्थिवम्, जल-जलीयम्, तेजस्-तैजसम्, वायु-वाय-
वीयम्, शत्रु-शात्रयम्, रुद्र-रौरयम्, न्यस्क-नैयस्कयम्, न्यास्क-
यम्; श्वापद-शौवापदम्, श्वापदम्; भरत-भारतम्, भारत-
भारतपर्योयम्, युष्माकमिदं-युष्मदीयम्, मस्माकमिदम्,

अस्मदीयम् ।

सम्प्रदायेक्यत्वे—एकवचन में सुम् का लट् और अस्म् का मद् होता है । यथा, तव इदं लट्तीयम्, मम इदं मदीयम् ।

गुष्माकास्माकी जीनयनोः (गुष्मद्गुष्मदोरन्यतरस्यां सञ्ज्ञे-
णौन और दग् प्रत्यय परे रहने में गुम् का गुष्माक और लम् क
आस्माक होता है । यथा; गुष्माकमिदं यौष्माकीयम्, यौष्माकम्, आस्माक-
मिदं आस्माकीयम् आस्माकम् ।

तथकसमकार्येक्यत्वे—एकवचन में तवक और ममक होता है ।
यथा, तव इदं तवकीयम्, तवकम्; मम इदं मामकीयम्, ममकम् ।

परादेः कन् षीयणि—षीयन् प्रत्यय परे रहने से पर, स्व, तव
इत्यादि शब्द के उत्तर, कन् होता है और इसका क रहता है । यथा,
परस्येदं परकीयम् । एव शब्द के परे विकल्पर से होता है; स्वस्येदं स्वकीयम्
स्वीयम् ।

सौरसारथ-स्वायम्भुवाः—सौर, सारथ और स्वयम्भुव निरुक्त
से सिद्ध होते हैं । यथा, सूर्यस्येदं सौरं दिनम्, सरथा इदं सारथं
अलम्, स्वयम्भुव इदं स्वायम्भुवं धाम ।

भवदीयान्यदीयो—भवदीय और अन्यदीय निरुक्त से सिद्ध
होते हैं । यथा, भवत इदं भवदीयम्, अन्यस्येदं अन्यदीयम् ।

(त) तस्य विकारः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भ-
उपर्युषत प्रत्यय होते हैं । यथा, सुवर्णस्य विकारः सौवर्ण-
रजतस्य विकारः राजतः, सीसस्य विकारः रूसः, दाह
दारथः, देवदारु-देवदारथः, पयस्-पायसः; मणि-मान्थः
मुद्ग-मौद्गः, श्नु-पेक्षवः, गुड-गौडः, पिष्ट-पैष्टः, तिल-तैलम् ।

(थ) तदस्य पण्यम्—तत् अस्य पण्यम् इस अर्थ में शब्द
के उत्तर यथासम्भय उपर्युषत प्रत्यय होते हैं । यथा, लवण-

स्य षण्यं लाघणिकः, तैलमस्य षण्यं तैलिकः, अपूपा अस्य षण्यं आपूपिकः, तण्डुल-ताण्डुलिकः, मोदक-मोदकिकः, उशीर-अशीरिकः, ताम्बूल-ताम्बूलिकः ।

(३) तदस्य प्रहरणम्—तत् अस्य प्रहरणम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; धनु-स्य प्रहरणं धानुष्कः, अस्तिः अस्य प्रहरणं अस्तिकः a swordsmen, प्रासु-प्रास्तिकः, परश्वध-पारश्वधिकः, परशु-पारश-विकः, सरवारि-तारवारिकः, शक्ति-शाक्तीकः, यष्टि-याष्टीकः, (कविपद्मश्लोकम्) ।

(४) तदस्य प्रयोजनम्—तत् अस्य प्रयोजनम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; स्वर्गः प्रयोजनमस्य स्वर्ग्यम्, यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्, आयुस्-मायुष्यम्, काम-काम्यम्, गृहप्रवेशन-गृहप्रवेशनीयम्, अनुप्रवचन-अनुप्रवचनीयम्, संवेशन-संवेशनीयम् ।

(५) तदस्य शीलम्—तत् अस्य शीलम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, तपोऽस्य शीलं तापसः, छात्रमस्य शीलं छात्रः, शिक्षा अस्य शीलं शैक्षः, गौह-प्रारोहः, चुरा-चौरः ।

(६) तदस्य प्राप्तं कालम्—तत् अस्य प्राप्तम्, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; समधोऽस्य प्राप्तः सामथिकः, फालोऽस्य प्राप्तः फालिकः, दिपोऽस्य प्राप्तः दैष्टिकः, अतुरस्य प्राप्तः आर्तवः ।

(७) कविदृश्य हृतं ग्रन्थे—ग्रन्थ समझे जाने पर 'कविदृश्य' इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; रामकविदृश्य हृतं रामायणम्, भगवत्कविदृश्य हृतं भागवतम्, भारतकविदृश्य हृतं भारतम्,

वाक्यं पदञ्चाधिष्ठत्य कृतं वाक्यपदीयम्, राघवान् पाण्डवा-
ञ्चाधिष्ठत्य कृतं राघवपाण्डवीयम्, किरातमज्जुनञ्चाधिष्ठत्य
कृतं किराताज्जुनीयम्, अनुशासनमधिष्ठत्य कृतं अनुशासनिकम्,
अश्वमेध-अश्वमेधिकम्, आधमवास-आधमवासिकम्, मुपल-
मौपलम्, महाप्रस्थान-महाप्रस्थानिकम्, स्वर्गारोहण-स्वर्गा-
रोहणिकम् ।

(ब) तस्मै प्रभवति (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः)—तस्मै प्र-
भवति, इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय
होते हैं । यथा; सन्तापाय प्रभवति सान्तापिकः, सन्ताप
प्रभवति सान्तापिकः, संश्रामाय प्रभवति सांश्रामिकः, सङ्घात-
साङ्घातिकः, उत्पात-औत्पातिकः ।

काम्मुकं धनुषि (कर्मण उक्त्वा)—धनु अर्थ में काम्मुक
शब्द निघण्टुन से सिद्ध होते हैं । यथा; कर्मणे प्रभवति काम्मुकं धनुः ।

(म) तस्मै हितम्—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव
उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; यज्ञाय हितं यज्ञीयम्, अध्वराय
हितं अध्वरीणम्, ब्रह्मणे हितं ब्राह्मण्यम्, विश्वजनेभ्यो हितं
विश्वजनीनम्, सार्वजनेभ्यो हितं सार्वजनीनम् (आसर्वजना-
जनभोगोत्पदात् साः ।

(न) काले नक्षत्राक्तयोगे (नक्षत्रेण युक्तः कालः)—काल और
नक्षत्र योग सम्भवा जाय तो नक्षत्रवाचक शब्द के उत्तर यथा-
सम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; विशालया नक्षत्रेण
युक्तो मासः वैशाखः, राघवा नक्षत्रेण युक्तो मासः राघ,
उपेष्ठा-उपेष्ठः, आयाडा-आयाडः, अयणा-भायणः, भायजिकः
मद्रा-माद्रः, मद्रपदा-माद्रपरः, प्रोष्ठपरा-प्रोष्ठपरः, मरिचिकी-
भारिचनः, अश्वयुज्-भारवयुजः, कृतिका-कालिकः, कालिकिकः,
अमदायणी-अमदायणः, आमदायणः, आमदायणिकः, मृती

मार्गः, मृगशीर्ष-मार्गशीर्षः, मृगशिरस्-मार्गशिरसः, मघा-माघः, फल्गुनी-फाल्गुनः, फाल्गुनिकः, चित्रा-चैत्रः, चैत्रिकः ।

यलोपस्तिथ्यपुष्ययोः—तिथ्य और पुष्य शब्द के य का छोर होता है । यथा; तिथ्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः तैयः, पुष्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः पौषः ।

(४) तद्बहति—तत् बहति, इस अर्थ में यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; धुरं बहति धुर्ब्यः, धौर्यः, सर्व्वधुरं बहति सर्व्वधुरीणः, चतुर्धुरा-चतुर्धुरीणः, हल-हालिकः, सीर-सीरिकः, रघ-रघ्यः, युग-युग्यः, शकट-शाकटः ।

(५) तेन जीवति—इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; वेतनेन जीवति वैतनिकः, वाहनेन जीवति वाहनिकः, जालेन जीवति जालिकः, उपदेशेन जीवति औपदेशिकः, धनुषा जीवति धानुष्कः, क्रयविक्रयाम्यां जीवति क्रयविक्रयिकः, आयुध-आयुधिकः, आयुर्धायः, वागुरा-वागुरिकः, नौ-नाविकः, व्यवहार-व्यवहारिकः ।

(६) तदस्मिन् दीयते—तत् अस्मिन् दीयते, इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, हापस्मिन् वृद्धिः दीयते द्विकंशतम्, त्रिकंशतम्, चतुष्कंशतम्, पञ्चकंशतम् वृद्धिः । आय, लाम इत्यादि के दान में होता है ।

(७) तादर्थ्ये—तादर्थ्ये समझे जाने पर शब्द के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा; पादार्यम् उदकं पापम्, अर्घ्यम् उदकं अर्घ्यम्, पलये इदम् चालेयम्, अतिथये इदं मातिथ्यम्, अग्निदेवतायै इदं अग्निदेवत्यम्, पितृदेवतायै इदं पितृदेवतम् ।

(८) ताभ्ये—इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर यथासम्भव उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । प्रत्यय होने से शब्द के अर्थ में परि-

यस्य नर्ही होता, पहला ही अर्थ रहना है । यथा; वन्दुरं
 घान्धयः, चौर एव चौरः, घण्डाल एव घण्डालः, मन एव
 मानसम्, देवता एव देवताम्, प्रज्ञ एव प्राज्ञः, कुतुक-कौतुकम्,
 कुतूहल-कौतूहलम्, मरुन्-मारुतः, रथस्-राश्वसः, मेरुत-मैप-
 ज्यम्, इतिहय-पेतिहयम्, त्रिलोकी-त्रैलोक्यम्, कदवा-काद-
 प्यम्, द्विगुण-द्वैगुण्यम्, त्रिगुण-त्रैगुण्यम्, पद्गुण-पाद्गुण्यम्,
 चत्वारो वर्णा एव चानुर्थर्ण्यम्, सैना-सैन्यम्, सन्निधि-सान्नि-
 ध्यम्, समीप-सामीप्यम्, उपमा-औपम्यम्, सुख-सौख्यम्,
 सोदर-सौदर्यः, एक-ऐक्यः, ऋत्यप-ऋत्यापिकः, सूर एव
 सूर्यः, मर्त्त एव मर्त्यः, समान-सामान्यम्, याव-यावकः,
 बाल-बालकः, नौ-नौका, नव-नव्यम्, नवीनम्, वगैश्च वाचिकं
 सन्देशवचनम् ।

देवात्तल्—स्वार्थ में देव शब्द के उत्तर तल् होता है । यथा; देव
 एव देवता ।

भागरूपनामभ्यो धेयः—स्वार्थ में भाग, रूप, नामन् इनके परे
 धेय प्रत्यय होता है । यथा; भाग एव भागधेयः, नाम एव नामधेयम् ।

मृदस्तिकन्—स्वार्थ में मृद् शब्द के उत्तर तिकन् प्रत्यय होता है ।
 यथा; मृदेव मृत्तिका ।

सस्नो प्रशंसाधाम्—प्रशंसा समझी जाय तो स्वार्थ में मृद् शब्द
 के उत्तर स और स्न प्रत्यय होते हैं । यथा; प्रशान्ता, मृत् सृत्ता, सृत्ता ।

नूत्ननूतनी—नूत्न और नूतन शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं ।
 यथा, नवमेव नूत्नं, नूतनम् ।

औपयिकश्च—औपयिक शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा,
 तथाप एव औपयिकः

(व) सोऽस्य निवासोऽभिजनो वा (सोऽस्य निवासः अभिजनश्च)—
 सः अस्य निवासः । (निवासोनाम यत्र सम्प्रत्युच्यते), सः अस्य

अभिजनः (अभिजनो नाम यत्र पूर्वैरुचितम्) इस अर्थ में शब्द के उत्तर यथासम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, मधुरा मस्य निवासः माधुरः, मिथिला अस्य निवासः मैथिलः, कम्बोज-काम्बोजः, कश्मीर-काश्मीरः, गन्धार-गान्धारः, कलिङ्ग-कालिङ्गः, उत्कल-उत्कलः, सिन्धु-सैन्धवः, तक्षशिला-ताक्ष-शिलः, विदेह-वैदेहः, पञ्चाल-पाञ्चालः, मगध-मागधः, अयोध्या-आयोध्यिकः, मद्र-माद्रः, अङ्ग-आङ्गः, वङ्ग-वाङ्गः । अभिजन अर्थ में भी ऐसा ही होता है । यथा, गान्धोस्य अभिजनः गान्धारः इत्यादि ।

लोपो बहुवचने (तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्)—
बहुवचन में निवास और अभिजन अर्थ में विहित प्रत्यय का लोप होता है । यथा, अङ्ग एषां निवासः अङ्गाः; वङ्ग एषां निवासः वङ्गाः, कलिङ्ग एषां निवासः कलिङ्गाः, विदेह एषां निवासः विदेहाः, उत्कल-उत्कलाः, कम्बोज-कम्बोजाः, मगध-मगधाः, पञ्चाल-पञ्चालाः, कश्मीर-कश्मीराः ।

न स्त्रियाम् (तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्)—स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता । यथा, मगध आसौ निवासः मागध्या, पञ्चाल-पाञ्चाल्या, विदेह-वैदेह्याः, कलिङ्ग-कलिङ्ग्याः ।

सोऽस्य राजेत्येवम्—सः अस्य राजा, इस अर्थ में भी वे ही प्रत्यय और कार्य्य होते हैं जो 'सोऽस्यऽनिवासः, सोऽस्याभि-जनः' अर्थ में होते हैं । यथा, कश्मीरस्य राजा काश्मीरः, कलिङ्गस्य राजा कालिङ्गः, विदेहस्य राजा वैदेहः, पञ्चाल-पाञ्चालः, मगध-मागधः, निपथ-नैपथः । बहुवचन में कश्मीराः, कलिङ्गाः, विदेहाः, पञ्चालाः, मगधाः, निपथाः ।

(घ) तस्य भावः—इस अर्थ में शब्द के उत्तर में यथा-सम्भव उपर्युक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, कुमारस्य भावः

कौमारम्, शिशोर्भावः शैशवम्, वृद्धस्य भावः वाद्धव्यम्,
 स्थविर-स्थाविरम्, गुरु-गौरवम्, लघु-लाघवम्, सुष्ठु-सौष्ठ-
 वम्, ऋजु-भार्जवम्, मृदु-मार्दवम्, पटु-पाटवम्, सुरभि-
 सौरभम्, रमणीय-रामणीयम्, कमनीय-कामनीयम्, स्थिर-
 स्थैर्यम्, धीर-धीर्यम्, गम्भीर-गाम्भीर्यम्, दृश-कार्श्यम्,
 जड-जाड्यम्, शीत-शैत्यम्, उष्ण-औष्ण्यम्, दृढ-दृढ्यम्,
 मन्द-मान्द्यम्, सुमग-सौभाग्यम्, दुर्मग-दौर्भाग्यम्, मधुर-
 माधुर्यम्, माधुरो; मूर्ख-मौर्ख्यम्, विपम-वैषम्यम्, सम-
 साम्यम्, कातर-कातर्यम्, कर्कश-कार्कश्यम्, बाल-बाल्यम्,
 शुक्ल-शौक्ल्यम्, सुमनस्-सौमनस्यम्, दुर्मनस्-दौर्मनस्यम्,
 प्रवीण-प्रावीण्यम्, उदासीन-भौदासीन्यम्, रूपण-कार्पण्यम्,
 मध्यस्थ-माध्यस्थ्यम्, उदार-औदार्यम्, विगुण-वैगुण्यम्,
 सुजन-सौजन्यम्, स्थूल-स्थौल्यम्, अधिक-आधिक्यम् ।

(इ) तस्य भावः कर्म च (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्माणि च)-तस्य
 भावः, तस्य कर्म, इति अर्थो मे शब्द के उत्तर यथासम्भवं
 उपयुक्त प्रत्यय होते हैं । यथा, ब्राह्मणस्य भावः कर्म वा ब्राह्म-
 ण्यम्, चौरस्य भावः कर्मे वा चौर्यम्, अलस-भालस्यम्,
 सेनापति-सैनापत्यम्, अधिपति-आधिपत्यम्, सखि-सख्यम्,
 शूर-शौर्यम्, वीर-वीर्यम्, दूत-दूत्यं, दौत्यम्; पुरोहित-पौरो-
 हित्यम्, सुहित सौहित्यम्, सारथि-सारथ्यम्, नास्तिक-ना-
 स्तिक्यम्, नास्तिक-नास्तिक्यम्, पण्डित-पाण्डित्यम्, वणिज्-
 वणिज्यम्, शुचि-शौचम्, अशुचि-अशौचम्, मुनि-मीनम्,
 अकुशल-अकौशलम्, अनुकूल-आनुकूल्यम्, प्रतिकूल-प्राति-
 कूल्यम्, पुरुष-पौरुषम्, सुघातु-सौघात्रम्, दुर्घातु-दौर्घात्रम्,
 सुहृद्-सौहार्दम्, दुर्हृद्-दौर्हार्दम्, अनृशंस-आनृशंस्यम्,
 पुशल-कौशल्यं, कौशलम्, चपल-चापल्यम्, चापलम्; निपुण-

नैपुण्यम्, नैपुणम्, सहाय-साहाय्यम्, साहायकम्; चतुर्-
चातुर्ष्यम्, चातुरी ।

(अ) इतरेष्वपि दृश्यन्ते—पिण् इत्यादि प्रत्यय जो अपत्य अर्थ में आते हैं वे तद्विध अनेक अर्थों में आते हैं । यथा, धर्मं चरति धार्मिकः, वशं गतः वश्यः, पृथिव्या ईश्वरः पार्थिवः, सर्व्वभूमेः ईश्वरः सार्व्वभूमिः, चाक्षुषा गृह्यते चाक्षुषं रूपम्, श्रवणेन गृह्यते श्रावणः शब्दः, रसनया गृह्यते रसनो रसः, त्वचा गृह्यते त्वाचः स्पर्शः, चक्षुषा निष्पन्नं चाक्षुषं प्रत्यक्षम्, श्रवणेन निष्पन्नं श्रावणम्, रसनया निष्पन्नं रसनम्, त्वचा निष्पन्नं त्वाचम्, पारं गतयान् पारीणः, पारावारं गतयान् पारावारीणः, अर्थेन क्रीतः धार्थः, विद्यया लब्धं वैद्यम्, विद्यायां कुशलः वैद्यः, स्त्रिया जितः स्वैणः, द्वारे नियुक्तः दौवारिकः, भाण्डागारे नियुक्तः भाण्डागारिकः, हिमवतः प्रभवति हिमवती गङ्गा, विदूरात् प्रभवति वैदूर्य्यो मणिः, रथेन सञ्चरते रथिकः, भ्रष्टेन सञ्चरते आश्विकः, शकुनीन् हन्ति शाकुनिकः, शकुन्तान् हन्ति शाकुन्तिकः सहसा वर्त्तते साहसिकधोरः, जलेन वर्त्तते जलीयो मत्स्यः, अनुकूलं वर्त्तते मानुकूलिकः, प्रतिकूलं वर्त्तते प्रातिकूलिकः, नावा ताप्यां नाव्या नदी, वयसा तुल्यः वयस्यः, तुलया सम्मितं तुल्यम्, गृहपतिना संयुक्तः गार्हपत्योऽग्निः, समाने तीर्थे वसति सतीर्थ्यः, समाने उदरे शयितः समानीदर्थ्यः, अग्ने दीयते अग्नि्यम्, अप्रीयम्, लोके विदितः लौकिकः, सर्व्वलोके विदितः सार्व्वलौकिकः, नित्यं क्रियते दीयते वा नैत्यम्, नैत्यकम्, नैत्यिकम्; निमित्तेन क्रियते दीयते वा नैमित्तिकम्, प्रवेशेन दीयते प्रावेशनम्, प्रावेशनिकम्; सर्वाङ्गाणि व्याप्नोति सर्वाङ्गीणस्तापः; आप-
पदं व्याप्नोति आपपदीनः पटः, अनुपदं वक्षा अनुपदीना उपा-

मत्, भयमित्रं सभ्यक् गच्छति भयमित्रोपः, भयमित्रोपः
 a soldier who faces the enemy valiantly, सननिः
 पदेरवाप्यते सातपदीनं सख्यम्, इन्द्रस्य आत्मनो रिङ्गं
 इन्द्रियम्, कुशाप्रमिय कुशाधीना बुद्धिः, काकनालमि
 (काकागमनमिद्य तालपतनमिद्य काकनालम्) काकनालीयम्,
 प्राक् सम्भूतः प्राचीनः eastern, अवाक् सम्भूतः अवाचीनः
 southern, सुस्नातं पृच्छति सौस्नातिकः, सुप्रशयनं पृच्छति
 सौषशयनिकः, परदारान् गच्छति पारदारिकः, याचितेन
 निवृत्तं याचितकम्, अर्थं गृह्णाति आर्थिकः, आपणस्य घर्म्यं
 आपणिकम्, नरस्य घर्म्या नारी, घातस्य शमनं कोपनं वा
 घातिकम्, पित्तस्य शमनं कोपनं वा पैत्तिकम्, सन्निपातस्य
 शमनं कोपनं वा सान्निपातिकम्, अस्ति परलोक इति मति-
 र्यस्य आस्तिकः, नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य नास्तिकः,
 अस्ति दिष्टमिति मतिः यस्य दैष्टिकः, आमलस्याः फलं आम-
 लकम्, चर्ष्याः फलं चादरम्, अश्वदण्डस्य फलं आश्वदण्डम्,
 न्यप्रोधस्य फलं नैयप्रोधम् ।

लोपः क्वचित् प्रत्ययस्य—कहीं कहीं प्रत्यय का लोप होता है ।
 घीहीणां फलानि घीहयः, यथानां फलानि यथाः, मागणां
 फलानि मापाः, मल्लिकायाः पुष्पं मल्लिका, मालत्याः पुष्पं
 मालती, करवीरस्य पुष्पं करवीरम्, पारलस्य पुष्पं पारलं,
 जात्याः पुष्पं जाती, यूथ्याः पुष्पं यूथी ।

जम्ब्या विभाषा—जम्बु शब्द के उत्तर विभक्त्य से होता है । कर्णः
 जम्बु । फलं जम्बु जाम्बवम् ।

द्वैतग्रीवाघञ्जिनौ—द्वैतग्रीवा और अघञ्जिन निपातन से
 सिद्ध होने हैं । यथा, एते गोदोहादु उद्भवति द्वैतग्रीवाम्,

अथ श्वो वा घटते अद्यश्वीनं मरणम्, अद्यश्वीनो वियोगः,
अथ श्वो वा प्रसूता अद्यश्वीना स्त्री ।

पान्थसाक्षिवाहुँपिकाः— पान्थ, साक्षिन् और वाहुँपिक निपा-
तन से सिद्ध होत हैं । यथा; पथि कुशलः पान्थः, साक्षात्
दृष्टवान् साक्षी, वृद्धया जीवति वाहुँपिकः ।

आमुष्मिकामुष्यायणौ—पिकण् और पायनण् प्रत्यय सहित
बदस् का आमुष्मिक और आमुष्यायण निपातन से होता है ।
यथा; आमुष्मिन् (परलोके) हितं आमुष्मिकम्, अमुष्य (मृतस्य)
पुत्र आमुष्यायणः ।

पौनः पुन्यम्—पौनःपुन्य निपातन से सिद्ध होता है । यथा;
पुनः पुनरनुष्ठानं सद्द्वयनं वा पौनःपुन्यम् ।

N. B. नस्यलोपोऽन्त्यस्य—तद्धित प्रत्यय होने से शब्द के अन्त-
स्यवत् न् का लोप होता है । यथा; अग्निशस्त्राणोऽपत्यं अग्निशस्त्रिः, बहुलो-
मोऽपत्यं औपुत्रोमिः, राशौ समूहः राजकम्, हरितर्ना समूहः हास्त्रिकम्,
पथि कुशल, पथिकः, सर्वकर्मसु कुशलः सर्वकर्मणिः नामैव नामधेयम्,
द्वेषो शत्रो भवः द्वेषिणः, सामयेति अधीते वा सामकः, आत्मन् आत्मीयम् ।

२ नानन्तस्य पणि—ण् प्रत्यय परे होने से अन्-भागान्त
शब्द के न् का लोप नहीं होता है । यथा, यूनो भावः यूवनम्, मघेन इदं
साधनम्, शर्त्ता समूहः शौवनम्, पर्वणि क्रियते दीयते वा पार्वणम्,
कर्मणि कुशलः सामकः, सुत्वन इदं सौत्वनम्, पश्वनोऽपत्यं पाश्वनः,
कर्मणा परिश्रुतः चार्मणः, कर्मस्य शीलं चार्मणः, भस्मनो विकारः
माननः ।

३ ये च भावकर्मवर्जं—तद्धित के य परे रहने से अन् भागान्त
शब्द के न् का लोप होता है । यथा, शामनि शत्रुः शामन्यः, मरुनि शत्रुः
मरुन्यः, अश्वनि साधुः अश्वन्यः, राशनि साधुः, राजन्यः कर्मणि इभवति
कर्मस्य, मुदनि भवः मुदन्यः । कर्म और भाव अर्थ में न् का लोप

होता है । यथा, राज्ञो भावः कर्म वा राज्यम् ।

४ नाध्यात्मनोर्णिति—णीन् प्रत्यय होने से अध्वन् और आत्मन्, के न् का लोप होता है । यथा, अध्वनि साधुः अध्वनीनः, आत्मने द्विं आत्मनीनम् ।

५ मनन्तस्यापत्यणि—अपत्य अर्थ में विहित पञ् प्रत्यय परे रहने से मन् भागान्त शब्द के न् का लोप होता है । यथा, दुनाम्नोऽपत्यं सौतामः, दुर्नाम्नोऽपत्यं दौर्नामः, कृतनाम्नोऽपत्यं कर्त्तनामः ।

६ या हितनाम्नः—हितनामन् के परे विकल्प से न का लोप होगा है । यथा, हितनाम्नोऽपत्यं हितनामः, दैतनामनः ।

७ हेमाश्मनोविकारे—विकारार्थ विहित पञ् प्रत्यय परे रहने से हेमन् और अश्मन् के न् का लोप होता है । यथा, हेमनो विकारः हेमः, अश्मनो विकारः अश्मः ।

८ चर्मणः कोपे—कोप अर्थ में चर्मन् के न् का लोप होता है । यथा, चर्मणो विकारः चर्मः कोपः ।

९ मज्जणोऽजातो—जाति भिन्न अर्थ में मज्जन् के न् का लोप होता है । यथा, मज्जा अश्व देवता मज्जा अश्मन्, मज्जं हविः मज्जी शीपधिः, मज्ज उदारणे मज्जाः, मज्जण इयं मज्जी तज्जु । जाति अर्थ में नहीं होता । यथा, मज्जणोऽपत्यं मज्जणः ।

१० मेनन्तस्य यणि—पञ् प्रत्यय होने से इन्-भागान्त शब्द के न् का लोप नहीं होता है । यथा, यजिन इयं यजितम्, हस्तिन इयं हस्तिनम्, मेधाविन इयं मेधाविनम्, सविन इयं सविनम्, अत्यय अर्थ में होता है; यथा, मेधाविनोऽपत्यं मेधावः, साविनोऽपत्यं सावावः । यजिन् इत्यपि में नहीं होता, यथा, यजिनोऽपत्यं यजिनः, वेतिनोऽपत्यं वेतिनः ।

इन् संकुलवर्ष में भिन्ना हो लो नहीं होता; यथा, स्त्रीणोऽपत्यं स्त्रीणः, तर्भिनोऽपत्यं तर्भिनः, यजिनः अपत्यं यजिनः ।

१० तस्य भावस्त्वतलौ—तस्य भावः, इस अर्थ में शब्द के उत्तर त्व और तल् प्रत्यय होते हैं। तल् का त रहता है। त्व प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग और तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, प्रभोर्भावः प्रभुत्वम्, प्रभुता; भीरोर्भावः भीरुत्वम्, भीरुता; मनुष्य-मनुष्यत्वम्, मनुष्यता, अमर-अमरत्वम्, अमरता; पशु-पशुत्वम्, पशुता, शूर-शूरत्वम्, शूरता; चपल-चपलत्वम्, चपलता; नास्तिक-नास्तिकत्वम्, नास्तिकता; अलस-अलसत्वम्, अलसता; अन्ध-अन्धत्वम्, अन्धता; मूर्ख-मूर्खत्वम्, मूर्खता; मूक-मूकत्वम्, मूकता; राज-राजत्वम्, राजता; युवन्-युवत्वम्, युवता; न्यून-न्यूनत्वम्, न्यूनता ।

११ वा नीलादेर्मिति—तस्य भावः, इस अर्थ में नील इत्यदि प्रातिपदिक के उत्तर इमिति होता है और इसका इमन् रहता है। इमन् प्रत्ययान्त शब्द पुलिङ्ग होते हैं। पक्षान्तर में त्व और तल् होते हैं। यथा, नीलस्य भावः नीलता, नीलत्वम्, नीलता; पीत-पीतता, पीतत्वम्, पीतता; रक्त-रक्तता, रक्तत्वम्, रक्तता; शुक्ल-शुक्लता, शुक्लत्वम्, शुक्लता; उष्ण-उष्णता, उष्णत्वम्, उष्णता; जड-जडता, जडत्वम्, जडता; मधुर-मधुरता, मधुरत्वम्, मधुरता ।

(क) ओलौघोऽन्त्यस्य—इमन् प्रत्यय होने से शब्द के अन्त्यस्थित उ का लोप होता है (इष्ट और ईयसु प्रत्यय में भी यही नियम लगता है) । यथा, लघोर्भावः लघिता, लघुत्वम्, लघुता; अणु-अणिता, अणुत्वम्, अणुता; तनु-तनिता, तनुत्वम्, तनुता; स्वादु-स्वादिता, स्वादुत्वम्, स्वादुता; पटु-पटिता, पटुत्वम्, पटुता; शत्रु-शत्रिता, शत्रुत्वम्, शत्रुता ।

(घ) शतो रः शृणोरेः (र शतो ह्लादेशेऽप्योः)—इमिति, इष्ट,

और ईयस् प्रत्यय होने से पृथु, मृदु, दृढ, कृश, भृश और परिवृद्ध के ऋ का र होता है । यथा, पृथोर्भावः प्रथिमा, पृथुत्वम्, पृथुता; मृदु-प्रथिमा, मृदुत्वम्, मृदुता; दृढ-प्रथिमा, दृढत्वम्, दृढता; कृश-प्रथिमा, कृशत्वम्, कृशता; भृश-प्रथिमा, भृशत्वम्, भृशता; परिवृद्ध-परिप्रथिमा, परिवृद्धत्वम्, परिवृद्धता ।

(ग) प्रिय-मदतोः प्र-मदौ (प्रियस्त्रिस्त्रिस्तोस्त्रिस्तुशब्दवृत्तौ च यन्दास्त्रिणां प्रत्यस्त्रिर्बहिर्बहि एव प्रापिचन्द्रः)—इमन्, इष्ट और ईयसु प्रत्यय होने से प्रिय का प्र और मदत् का मद् होता है । यथा, प्रियस्य भावः प्रेमा, प्रियत्वम्, प्रियता; मदतो भावः महिमा, महत्त्वम्, महत्ता ।

(घ) गुरु-ह्रस्व-दीर्घाणां गर् इत्त-द्रायाः (प्रियस्त्रि... । स्वरुपु बहुस्वक्षिप्रशुद्राणां णादिपरं पूर्वस्य च गुणः)—इमनि, इष्ट और ईयसु प्रत्यय होने से गुरु का गर्, ह्रस्व का हस् और दीर्घ का द्राच् होता है । यथा, गुरोर्भावः गरिमा, गुरुत्वम्, गुरुता; ह्रस्व-ह्रसिमा, ह्रस्वत्वम्, ह्रस्वता; दीर्घ-द्राधिमा, दीर्घत्वम्, दीर्घता ।

(ङ) भूमा षहोर्लोपो भू च षहोः)—यद्गु शब्द के परे इमनि होने से भूमन् निपातन से सिद्ध होता है । यथा, षहोर्भावः भूमा ।

१२ औषधे षतिष् (तेन तुल्यं क्रिया चेदिति)—साद्रश्य समभा जाय तो शब्द के उत्तर षतिच् होता है और इसका षत् रहता है । यथा, चन्द्र इष मुखं चन्द्रषन्मुखम्, हिममिष शीतलं हिमषत् शीतलम्, समुद्र इष गम्भीरः समुद्रषद्गम्भीरः, पर्वत इष उन्नतः पर्वतषदुन्नतः, ब्राह्मण इष वर्धाते ब्राह्मणषद्वर्धाते, क्षत्रिय इष युध्यते क्षत्रियषद्युध्यते, पितरमिष पूजयति पित्र-

यन् पूत्रयत्युपाध्यायम्, पुत्रमिव स्निह्यति पुत्रवत् स्निह्यति
 लिथ्यम्, गृहे इय वसति गृहयद्रसति घने, शय्यायामिव शीते
 शय्यायत् शीते भूतले, देवदत्तस्य इय भयनं देवदत्तभयनं
 यदत्तस्य, रामस्येव पितृभक्तिः रामवत् पितृभक्तिर्भरतस्य,
 राज्ञेव राजवत्, आत्मैव आत्मवत् ।

११ तेन वित्तवृत्तवर्णौ (तेन वित्तवृत्तवृत्तवर्णौ)—तेन वित्तः,
 एत अर्थं में शब्द के उत्तर चुञ्चु और चण होते हैं । यथा,
 अर्थेन वित्तः अर्थचुञ्चुः, अर्थचणः famous for wealth,
 विद्यया वित्तः विद्याचुञ्चुः, विद्याचणः, ज्ञानेन वित्तः ज्ञानचुञ्चुः,
 ज्ञानचणः । माया-मायाचुञ्चुः, मायाचणः, अस्त्र-अस्त्रचुञ्चुः,
 अस्त्रचणः, कर्मन्-कर्मचुञ्चुः, कर्मचणः ।

१२ तदस्वारिम्न् वा संजातं तारकादिभ्य इतः (तदस्य सञ्जातं
 तारकादिभ्य इतः)—तत् अस्य संजातम्, तत् अस्मिन् संजातम्,
 एत अर्थो में शब्द के परे इत होता है । यथा, तारका अस्मिन्
 सञ्जाताः तारकितं नमः, पल्लवाः अस्य सञ्जाताः पल्लवितः
 तद्, फलानि अस्य संजातानि फलितो वृक्षः, पुष्प-पुष्पिता
 लता, तरङ्ग-तरङ्गिता नदी, उत्कण्ठा-उत्कण्ठितं मनः, अन्धकार-
 अन्धकारितं जगन्, कलङ्क-कलङ्कितधन्ः, कर्द्म-कर्द्मितः
 अस्याः, पुलकानि अस्मिन् सञ्जातानि पुलकितं शरीरम्, अङ्कुर-
 अङ्कुरितं घान्यम्, व्याधि-व्याधितो मनुष्यः, मञ्जरी-मञ्जरितः,
 मन्मथ-मन्मथितः, स्तवक-स्तवकितः, किसलय-किसलयितः,
 कुवलय-कुवलयितः, कुवलय-कुवलयितः, कोरक-कोरकितः, निश-
 निशितः, मुद्रा-मुद्रितः, शुमुशा-शुमुशितः, पिपासा-पिपासितः,
 सुखितः, दुःख-दुःखितः, मण-मणितः, तिलक-तिलकितः,
 हर्ष-हर्षितः, हर्ष-हर्षितः, क्षुप् (क्षुषा)-क्षुषितः, तीमन्त-
 तीमन्तितः, जर-जरितः, रोग-रोगितः, रोमाञ्ज-रोमाञ्जितः,

पञ्चश-पञ्चिदशः, षडश-षडशतिः, सप्तश-सप्ततिः, अष्टोत्त-
 श-अष्टोत्ततिः, नवश-नवतिः, दशश-दशतिः, अश्वि-अश्विनिः, शिब्य-शिब्यि-
 प्रतिशिब्य-प्रतिशिब्यिः, मूर्च्छा-मूर्च्छिन्, दीक्षा-दीक्षिन् ।

१५ प्रमाणे मात्र इत् इत्यन्तः (प्रमाणेऽप्यन्तम् मात्रम्)—
 परिमाण अर्थ में इत् के उत्तर मात्रम्, इत्तम्, और इत्सम्
 प्राप्य होते हैं और इनका यथाक्रम मात्र, इत्त और इत्सम्
 रहता है । यथा, हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रम्, हस्तवन्,
 हस्तद्वयसम् ; जानु प्रमाणमस्य जानुमात्रम्, जानुद्वयम्,
 जानुद्वयसम् ; ऊरुमात्रम्, ऊरुद्वयम्, ऊरुद्वयसम्, वितस्ति-
 वितस्तिमात्रम्, वितस्तिद्वयम्, वितस्तिद्वयसम्, ताल-ताल-
 मात्रम्, तालद्वयम्, तालद्वयसम्, गज-गजमात्रम्, गजद्वयम्,
 गजद्वयसम् ।

१६ पतदेतदेभ्यः परिमाणे वतुप्—परिमाण अर्थ में वद्, तद्
 और पतद् के परे वतुप् होता है और इसका वत् रहता है ।

(क) आ इः (आ सध्वन्तजन्तः)—वतुप् होने से वद्, तद्, पतद्
 के इ का था होता है । यथा, वत् परिमाणमस्य यावान्, इत्
 परिमाणस्य तावान्, पतत् परिमाणमस्य एतावान् ।

(ख) क्विदिदत्तौ (क्विदिदम्भौ बो धः)—क्विम् और इदम् शब्दों
 उत्तर वतुप् होने से क्विदत् और इदन् निपातन से तिव
 होते हैं । यथा, क्वि परिमाणमस्य क्वियान्, इदं परिमाणमस्य
 इदयान् ।

१७ क्विन्तः संख्यापरिमाणे क्वितिः (संख्यापरिमाणे क्विति व)—संख्या-
 परिमाण समझा जाय तो क्विन् शब्द के उत्तर क्विति होता
 है और इसका क्विति रहता है । यथा, का संख्या परिमाण-
 १० क्विति । क्विति शब्द बहुवचनान्त है ।

१८ अवयवे तयद् संख्यायाः (संख्याया अवयवे तयद्)—अवयव

अर्थ में संख्यावाचक शब्द के उत्तर तयद् होता है और इसका अर्थ रहता है। यथा, चत्वारो अवयवा अस्य चतुष्टयम्, पञ्च अवयवा अस्य पञ्चतयम्, शत-शततयम्, सहस्र-सहस्रतयम् ।

(क) डयद् वा द्वित्रिभ्याम् (द्वित्रिभ्यां तपस्वायन् वा) — अवयव अर्थ में द्वि और त्रि के परे विकल्प से डयद् होता है और इसका अर्थ रहता है। पक्षान्तर में तयद् होता है। यथा, द्वौ अवयवौ अस्य द्वयं, द्वितयम्; त्रयोऽवयवा अस्य त्रयम्, त्रितयम् ।

(ख) उमाघः (उमादुदात्तो नित्यम्) — अवयव अर्थ में उम के उत्तर य होता है। यथा, उमौ अवयवौ अस्य उमयम् ।

(ग) तदस्मिन्नधिकमिति दशान्तात्पर्यः — तत् अस्मिन् अधिकम्, इस अर्थ में दशन् भागान्त शब्द के उत्तर ड होता है और इसका अर्थ रहता है। यथा, एकादश अधिका अस्मिन् एकादशं शतम्, द्वादशं शतम्, त्रयोदशं शतम्, चतुर्दशं शतम् ।

(घ) शतन्त विशतेश्च — तत् अस्मिन् अधिकम्, इस अर्थ में शत भागान्त और विशति शब्द के उत्तर ड होता है। यथा, विशन् अधिका अस्मिन् त्रिंशं शतम्, चत्वारिंशं शतम्, पञ्चाशं शतम्, एकत्रिंशं शतम्, चतुश्चत्वारिंशं शतम्, पञ्चपञ्चाशं शतम्, त्रिंशं शतम्, एकविंशं शतम् ।

१२ संख्यायाः पूरणे डद् (तस्य पूरणे डद्) — पूरण अर्थ में संख्यावाचक शब्द के उत्तर डद् होता है और इसका अर्थ रहता है। यथा, एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः, चतुर्दशः, पञ्चदशः, षोडशः, सप्तदशः, अष्टादशः ।

(क) नान्तादसंख्यादेशे मद् — पूरण अर्थ में नकारान्त संख्यावाचक शब्द के उत्तर मद् होता है। मद् का म रहता है। यथा, पञ्चानां पूरणः पञ्चमः, सप्तानां पूरणः सप्तमः, अष्टमः,

नवमः, दशमः । अन्य संख्यावाचक शब्द में नहीं होता; यथा, एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः ।

(ख) चत्तुर्-प-कतिभ्यः (चत् कति कतिपयचतुर्णां युक्)-पूरण अर्थ में चत्तुर्, प-कति और कतिपय के उत्तर चट् होता है और इसका थ रहता है । यथा, चतुर्णां पूरणः चतुर्थः, प-पट्टः, कति-कतिषः, कतिपय-कतिपयथः ।

(ग) द्वेस्तीयः-पूरण अर्थ में द्वि. के उत्तर तीय होता है । यथा, द्वयोः पूरणः द्वितीयः ।

(घ) तृतीय-तुर्थ्य-तुरीयाः-पूरण अर्थ में तृतीय, तुर्थ्य और तुरीय निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, त्रयाणां पूरणः तृतीयः, चतुर्णां पूरणः तुर्थ्यः, तुरीयः ।

(च) विशत्यादेस्तमद् वा (विशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम्)-पूरण अर्थ में विशति इत्यादि संख्यावाचक शब्द के उत्तर विवल् से तमद् होता है और इसका तम रहता है । पश्चान्तर में उद् होता है । यथा, विशतेः पूरणः विशतितमः, विशः, एकविंशतितमः, एकविंशः, द्वाविंशतितमः, द्वाविंशः, त्रयोविंशतितमः, त्रयोविंशः, त्रिंशत्तमः, त्रिंशः, चत्वारिंशत्तमः, चत्वारिंशः, पञ्चाशत्तमः, पञ्चाशः ।

नित्यं शतादेः (नित्यं शतादिमासाश्चामासंवरसराद्य)-एत इत्यादि शब्द के उत्तर नित्य तमद् होता है । यथा, शतस्य पूरणः शततमः, सदस्य-सदस्यतमः, अयुत अयुततमः, मासतमः, अर्द्धमासतमः, संकल्पतमः ।

पट्ट्यादेर्धासंख्यादेः-वष्टि प्रभृति संख्यावाचक शब्द के उत्तर नित्य तमद् होता है । यथा, पट्टेः पूरणः पट्टितमः, सप्ततितमः, अष्टीतितमः । नवतितमः । अन्य संख्यावाचक शब्द पहले रहने से विकल्प से होता है; यथा, एकपट्टेः पूरणः एकपट्टितमः, एकपट्टः, द्विपट्टितमः, द्विपट्टः ।

(द) बहु-गण-पूण-न पेन्वस्तिथुक् (बहुगणगणमहाय तिथुक्)-पूरण

अर्थ में वहु, गण, पूग और संघ के उत्तर तिथुक् होता है और इसका तिथ रहता है । यथा, घट्टनां पूरणः घट्टतिथः, गणानां पूरणः गणतिथः, पूगतिथः, संघतिथः ।

(३) वस्वन्तादिथुक् (वतोरिथुक्)— पूरण अर्थ में वतु प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर इथुक् होता है और इथ रहता है । यथा, यावतां पूरणः यावतिथः, तावतिथः, कियतिथः, एतावतिथः ।

२। तदस्यास्मिन्वास्ति मनुप् (तदस्यास्त्यस्मिन्निति म नुप्)—तत् प्रत्यय अस्ति, तत् अस्मिन् अस्ति इन अर्थों में शब्द के उत्तर मनुप् होता है और इसका मन् रहता है । यथा, मतिरस्यास्ति मतिमान्, बुद्धिः अस्मिन् अस्ति बुद्धिमान्, धी-धीमान्, धी-धीमान्, अंशु-अंशुमान्, पितृ-पितृमान्, धनुस्-धनुष्मान्, धनुस्-धनुष्मान्, अग्नि-अग्निमान्, वायु-वायुमान्, नदी-नदीमान् देशः, गायोऽस्यां सन्ति गोमती शाला ।

N. B. अवर्यान्तिान्तो घः (मादुपधायाध्यमत्वोर्घोऽयययादिभ्यः)—अवर्यान्ति शब्द के उत्तर विहित मनुप् के म का व होता है । यथा, ज्ञानं अस्ति ज्ञानवान्, धन-धनवान्, बल-बलवान्, विद्या-विद्यावान्, दया-दयावान्, क्षमा-क्षमावान् ।

२ अङ् अ षण-स्पर्शाभ्यात् (भ्रयः । संज्ञायाम्)—जिन शब्दों के अन्त में ङ, ण, ष, न भिन्न स्पर्श वर्ण हों उनके उत्तर विहित मनुप् के म का व होता है । यथा, तद्धित् अस्मिन्नस्ति तद्धित्वान्, विद्युत् अस्मिन्नस्ति विद्युत्वान् ।

३ अवर्योपधात् (मादुपधायाध्य...)—जिन शब्दों की अन्त में अवर्य हो उनके उत्तर विहित मनुप् के म का व होता है । यथा, आत्मा अस्ति आत्मवान्, भासोऽस्य सन्ति भास्वान् ।

४ मकारोपधात् (मादुपधायाध्य...)—जिन शब्दों की अन्त में

में म ही उनके उच्चार विहित मनुर् के म का व होता है । यथा, लक्ष्मीर-
र्याम्नि स्त्रीवतन्, शमी-शमीवतन् ।

५ म यथादेः (मातुपधायाञ्च....)—यत्र इत्यादि शब्दों के उच्चार विहित मनुर् के म का व नहीं होता । यथा, यवमान्, कुशमान्, वषामान्, प्राशामान्, गन्धमान्, हस्तिमान्, कुटुम्बान्, उर्मिमन्, भूमिमान्, वृष्टिमान् ।

६ उदन्यदादयः संशयात्—मनुर् प्रत्यय होने से और संज्ञा अर्थ बोध होने से उदन्यत् इत्यादि निवातन से सिद्ध होते हैं । यथा, उदङ्ग-
स्त्रिममन्नि उदङ्गवान् समुद्रः, अन्यत्र उदङ्गवान्, धर्म अस्यामस्ति धर्मवती
नाम नदी, अन्यत्र धर्मवती; अस्थि अस्मिन्नस्ति अष्टीवान्, जानूम्मन्त्रि,
अन्यत्र अस्थिमन् ; पादमस्यान्ति पद्रीवान् नाम राजा, अन्यत्र पदवान्,
कक्ष्या अस्यास्ति कक्षीवान् नाम शक्ति, अन्यत्र कक्षीवान् ; लवनमस्मिन्-
स्ति लवणवान् नाम पर्वतः, अन्यत्र लवणवान् ।

(क) कुमुद नड-वेतस-महिषेभ्यो इवतुप्—कुमुद, नड, वेतस
और महिष के उत्तर इवतुप् होता है और इसका वन् रहता
है । यथा, कुमुदान्यस्मिन् सन्ति कुमुद्धान्, नडान्यस्मिन् सन्ति
नडवान् वेतसान्यस्मिन् सन्ति वेतसवान्, महिषा अस्मिन्
सन्ति महिषवान् ।

(घ) अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिर्वा—अस् भागान्त, माया,
मेधा और स्रज् के उत्तर विकल्प से विनि होता है और
उसका चिन् रहता है । पक्षान्तर में मनुप् होता है । यथा,
यशोऽस्यास्ति यशस्वी, यशस्वान् ; तेजोऽस्यास्ति तेजस्वी,
तेजस्वान् ; पयोऽस्या अस्ति पयस्विनी, पयस्वती धेतुः माया
अस्यास्ति मायावी, मायावान् ; मेधा अस्यास्ति मेधावी, मेधा-
वान् ; स्रक् अस्यास्ति स्रक्वी, स्रक्वान् ।

जिनके लपसः—तपस् शब्द के उत्तर नित्य विनि होता है ।
यथा, तपोऽस्यास्ति तपस्वी ।

(ग) इन् वा नैकस्वरादवर्णात्—एकाधिक स्वरविशिष्ट अवर्णान्त शब्द के उत्तर विकल्प से इन् होता है । पक्षान्तर में यथासम्भव भनूप् और विनि होता है । यथा, ज्ञानं अस्यास्ति ज्ञानी, ज्ञानवान्; बल-बली, बलवान्; धन-धनी, धनवान्; शिखा शिखी, शिखावान्; चूडा-चूडी, चूडावान्; माया-मायी, मायावी; साहस-साहसी, साहसवान्; त्रिवेक-त्रिवेकी, त्रिवेकवान्; उत्साह-उत्साही, उत्साहवान् ।

नित्यं सुखादेः—सुख इत्यादि के उत्तर नित्य इन् होता है ।
यथा, सुखमस्यास्ति सुखी, दुःख-दुःखी, प्रणय-प्रणयी, कृच्छ्र-कृच्छ्री, सदस्र-सदस्री ।

हस्तकाराणां जातौ—जाति समझे जाने से हस्त और कर के उत्तर नित्य इन् होता है । यथा, हस्तोऽस्यास्ति हस्ती (गजः), करोऽस्यास्ति करी (गजः) । अन्यत्र हस्तवान् पुरुषः ।

वर्णादि ब्रह्मचारिण—ब्रह्मचारी समझे जाने से वर्ण शब्द के उत्तर नित्य इन् होता है । यथा, वर्णः अस्यास्ति वर्णी (ब्रह्मचारी) । अन्यत्र वर्णवान् ।

पुष्पादिभ्योदेशे—स्थान समझे जाने से पुष्कर इत्यादि शब्द के उत्तर नित्य इन् होता है, यथा, पुष्कराण्यस्यां सन्ति पुष्करिणी (दीघिका), पद्मान्यस्यां सन्ति पद्मिनी, उत्पलिनी, पट्टुजिनी, सरोजिनी, सरोरुहिणी, भरविन्दिनी, अम्मोजिनी, मन्दिनी, कमलिनी, कुमुदिनी, कैरविणी, विसिनी, मृणालिनी, तमालिनी, नलिनी, सरङ्गिणी, बह्मोलिनी, तटिनी, मेवाहिनी ।

अर्थात् वाचके—वाचक समझे जाने से अर्थ शब्द के उत्तर

नित्य इन् होता है । यथा, अर्योऽस्यास्ति अर्यो (याचकः) । अन्यत्र अर्थवान् ।

अर्थान्तेभ्यश्च—अर्थ अन्त वाले शब्दों के उत्तर नित्य इन् होता है । यथा, विद्यारूपोऽर्थः, प्रयोजनमस्यास्ति विद्यार्थो, धनार्थो, धान्यार्थो, हिरण्यार्थो, शुद्धक्षिणार्थो ।

(घ) मांसादेशो विभाषा—मांस इत्यादि शब्द के उत्तर विकल्प से ल होता है । यथा, मांसमस्यास्ति मांसलः, धो-धीलः Prosperous, पक्ष्म-पक्ष्मलः having eye-lash, स्नेह-स्नेहलः शीत-शीतलः, पिङ्गलः, पित्तलः bilious, पृथुलः, मृदुलः, मण्डलः, चटुलः, कपिलः, प्रन्थिलः, कुशलः, पांशुलः, श्लेष्मलः, पेशलः dexterous, तुण्डलः, अंशलः, घत्सलः । पश्चान्तर में मतुप् होता है ।

(च) फेनादिह्र—फेन के उत्तर विकल्प से ल और ह्र होता है । यथा, फेनोऽस्मिन्नस्ति फेनलः, पश्चान्तर में फेनायन् ।

(छ) लोमादेशः (लोमादिनादिविच्छादिभ्यः शनेलकः)—लोमन् इत्यादि शब्द के उत्तर श होता है । यथा, लोमाग्नस्य सन्ति लोमशः, रोमशः, गिरिशः, कर्कशः, कपिशः ।

(ज) विच्छाण्डाभ्यामितः (लोमादि.....)—विच्छा और ष्टु के उत्तर ह्र होता है । यथा, विच्छा अस्यास्ति विच्छिलः, पट्टिलः ।

(झ) दन्तादुरः (दन्त उन्नत उरप्)—दन्त के उत्तर उर होता है । यथा, उन्नता दन्ताः मन्तपस्य दन्तुरः ।

(ञ) ऊन-मुनि हुक्-मनुभ्यो रः (ऊनदनिहुक्मभ्यो रः)—ऊन, एति, मुक्क और मधु के उत्तर र होता है । यथा, ऊनरः, एतिरः, मुक्करः, मधुरः ।

मुखादेश्व-मुख इत्यादि के उत्तर र होता है । यथा; मुखं
अस्यास्ति मुखरः; कुञ्जरः; नगरम्, पाण्डुरः ।

(३) नड-शादाभ्यां ड्वल्प्—नड और शाद के उत्तर ड्वल्प्
होता है और इसका चल रहता है । यथा; नडा अस्मिन् सन्ति
नड्वल्; & bounding in reeds, शादा अस्मिन् सन्ति
शाद्वल्: muddy.

(४) कृष्यादेश्वल्: (रजः कृष्यास्तुतिपरिपदो बलन्)—कृषि
इत्यादि के उत्तर वल् होता है ।

दीर्घान्त्वस्य (वले)—वल् प्रत्यय होने से अन्त्य स्वर का दीर्घ
होता है । यथा; कृषिरस्यास्ति कृषीयल्; पारपद्मल्: पर्पद्मल्:
spectator, रजस्यल्, ऊर्जस्वल्: powerful, दन्तायलो
हस्ती, शिखायलो (मयूरः) ।

(५) केशादेश्वः संज्ञायाम्—संज्ञा समझे जाने से केश इत्यादि
के उत्तर व होता है । यथा; केशा सन्त्यस्य केशवः (विष्णुः),
मणिरस्यास्ति मणिवः (नागविशेषः), अजग-अजगधं (पिनाकः)
गाण्डधम्, इकार का दीर्घ भी होता है; गाण्डीधम् ।

(६) स्वाशमिन्देश्वर्ष्यं (स्वमिन्देश्वर्ष्यं)—पेश्वर्ष्यं समझे जाने से स्व्य
के उत्तर अस्मिन् होता है । यथा; स्व्यं (पेश्वर्ष्यं) अस्यास्ति स्व्यामी ।

(७) शीतोष्णाभ्यामालुसहने—असहन अर्थ में शीत और
उष्ण के उत्तर आलु होता है । यथा; शीतं न सहते शीतालुः,
उष्णं न सहते उष्णालुः ।

(८) वातातीसारभ्यां रोने किन् (वातातीसारभ्यां कुङ्क्)—रोग
समझे जाने से वात और अतीसार के उत्तर किन् होता है ।
यथा; वातोऽस्यास्ति वातकी, अतीसार-अतीसारकी ।

(९) वल्यदेश्वर्ष्यः (तुन्दिवलिष्वर्ष्यः)—वल्लि इत्यादि के उत्तर भ
होता है । यथा; वल्योऽस्मिन् सन्ति वलिभम् ।

वामह रहता है । यथा; मातुः पिता मातामहः, पितामहः, मातामही, पितामही ।

२७ टः कर्मणः कुशले (कर्मणि षटोऽठ्) कुशल अर्थ में कर्मन् के उत्तर ट होता है । यथा; कर्मणि कुशलः कर्मठः ।

२८ पूर्वादिनिस्तृतीयाथे (पूर्वादिनिः । सपूर्वाच्च)—तृतीया के अर्थ में पूर्व्य के उत्तर इनि होता है और इसका इन् रहता है । यथा; पूर्व्यमनेन कृतं (भुक्तं, पीतं, गतं वा) पूर्व्यो, कृतं पूर्व्यमनेन कृतपूर्वो कटम्, भुक्तं पूर्व्यमनेन भुक्तपूर्वो भोदनम्, पीतं पूर्व्यमनेन पीतपूर्वो पयः, गतं पूर्व्यमनेन गतपूर्वो गृहम् ।

(६) इशादिभ्यश्च— तृतीया के अर्थ में इष्ट इत्यादि के उत्तर इनि होता है । यथा; इष्ट मनेन इष्टी यज्ञे, अधीत-अधीती शास्त्रे, धृत-धृती वेदे, गृहीत-गृहीती उपदेशे, अज्ञात-अज्ञाती इतिहासे, आसेवित-आसेवितो गुरो, निराकृत-निराकृती शत्रौ, उपकृत-उपकृती मित्रे, अवकीर्ण-अवकीर्णी व्रते ।

२९ अतिभावने तमबिह्वौ—अनेक में से एक का उत्कर्ष जाना जाय तो तमप् और इष्टन् प्रत्यय होते हैं और इनका यथाक्रम तम और इष्ट रहता है । यथा; अयमेषामतिशयेन पटुः पटुतमः, पटिष्ठः; अयमेषां अतिशयेन लघुः लघुतमः, लघिष्ठः; गुद-गुदतमः, गरिष्ठः; प्रियतमः, प्रेषुः; दीर्घतमः, दीर्घिष्ठः; इदतमः, इडिष्ठः; मृदुतमः घ्रदिष्ठः; वृत्रातमः, वृशिष्ठः ।

३० द्व्योक्ताख्यसुनौ (द्विवचनविभक्त्योपदेशरवीयसुनौ)—दो में से एक का उत्कर्ष समझा जाय तो शब्द के उत्तर तरप् और पिपुन् होते हैं और इनका तर और ईयल् रहता है । यथा; अपमनयोरतिशयेन पटुः पटुतरः, पटीयान्; लघु-लघुतरः, लघीयान्; गुद-गुदतरः, गरीयान्; प्रियतरः, प्रीयान्; दीर्घ-

तरः, द्राघीयान् ; दृढतरः, दृढीयान् ; मृदुतरः, मृदीयान् ;
कृशतरः, कृशीयान् ।

N. B. श्रज्यौ प्रशस्यस्य (प्रशस्यस्य श्रः । ज्य च)—इत् और ईयसुन् प्रत्यय होने से प्रशस्य शब्द का थ और ज्य होता है । यथा; अयमेपामतिशयेन प्रशस्यः श्रेष्ठः, ज्येष्ठः; अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः शेषान् ।

२ आ ज्यादेरीयसुनः (ज्यादादीयसः)—ज्या आदेश के परवर्ती ईयसुन् के ई का आ होता है । यथा; ज्यायान् ।

३ धर्षज्यौ वृद्धस्य (वृद्धस्य च)—इत् और ईयसुन् पर रहने से वृद्ध का वर्ष और ज्य होता है । यथा; अयमेपामनयोर्वा अतिशयेन वृद्धः वर्षिष्ठः, वर्षीयान् ; ज्येष्ठः ज्यायान् ।

४ अन्तिकयादयोर्नेद-साधौ—अन्तिक का नेद और साध का साध होता है । यथा; नेदिष्ठः, नेदीयान् ; साधिष्ठः, साधीयान् ।

५ अल्पस्य कन् विभाषा (युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्)—अल्प का विकल्प से कन् होता है । यथा; कनिष्ठः, कनीयान् ; अरिष्ठः अरिणीयान् ।

६ युनः कयन्वौ (स्थूलदूरयुयइस्यक्षिप्रक्षुद्राणां यनादिपरं पूर्वस्य च गुणः)—युवन् का विकल्प से कन् और यन् होता है । यथा; कनिष्ठः, कनीयान् ; यविष्ठः, यवीयान् ।

७ स्थूलदूरयोः स्थयदधौ (स्थूलदूर ...)—स्थूल का स्थं और दूर का दर होता है । यथा; स्थविष्ठः, स्थवीयान् ; दरिष्ठः, दरीयान् ।

८ उष्णुदयोर्षरक्षोदी (त्रियस्थिरस्फिकरीदयदुल्लगुणुद-तूनदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फुर्यदि गर्भनिर्वयवशाविष्ट्याः)—उष् का षर और युष् का शोद होता है ।

९ क्षिप्रयदुन्दयोः क्षेपयदौ (त्रियस्थिर ...)—क्षिप्र का क्षे और यदुष् का षद होता है । यथा; क्षेविष्ठः, क्षेवीयान् ; वदिष्ठः, वदीयान् ।

१० स्थिरस्य स्थः (प्रियस्थिर...)—स्थिर का स्थ होता है ।
 वया, ज्वेष्टः, स्वेयान् ।

११ विन्मनुषोर्लुक्—इष्टन् धीर ईयसुन् परे रहने से विन् और
 इदुर् प्रत्यय का लोप होता है । यथा, अयमेपामतिशयेन मायावी, मायिष्ठः
 मयौवान्; बलिष्ठः, बलीवान् ।

१२ भूयोभूविष्टौ (बहुलोपो भू च बहुः)—बहु शब्द का
 ईयसुन् परे रहने से भूयस् और इष्टन् परे रहने से भूविष्ठ निपातन से सिद्ध
 होते हैं । यथा; अयमनयो रतिशयेन बहुः भूयान्, अयमेपा मतिशयेन बहुः
 भूविष्टः ।

११ क्विपत्तदा द्वयोरेकस्य इतरः (क्विपत्तदा निर्धारणे द्वयोरेकस्य
 इतरच्)—दो में से एक का निर्धारण समझा जाय तो किम्, यद् और तद् के उत्तर इतर होता है और इसका अतर रहता
 है । यथा; अनयोः कतरः धौष्ण्यः, अनयो र्यतरो ब्राह्मणः, ततर
 आगच्छतु ।

१२ बहुता इतमः (वा बहुता जातिपरिप्ररने इतमच्)—अनेक में
 से एक का निर्धारण समझा जाय तो किम्, यद् और तद् के
 उत्तर इतम होता है और इसका अतम रहता है । यथा; एषां
 कतमः शौचः, एषां यतमः क्षत्रियः ततमः प्रयातु ।

N. B. एकान्याभ्याश्च (एकाश्च प्राचाम्)—ए और अन्य
 के इतर इतर और इतम होता है । यथा; भवतोरेकतरः पठतु, भवतामे-
 कतमः शृणोति, तयो रन्यतरो यातः, तेषामन्यतमो मृतः ।

१३ द्विमेदस्येभ्योऽद्वये चतरा चतमानेकोत्कर्षे—दो और अनेक
 में से एक का उत्कर्ष समझा जाय तो किम्, एकारान्त और
 मध्य शब्द के उत्तर चतराम् और चतमाम् होता है और इन
 का तराम् और तमाम् रहता है । यथा; किन्तराम्, किन्तमाम् ;

प्राज्ञेतराम्, प्राज्ञेतराम्, उच्येत्तराम्, उच्येत्तराम् । इत्य-
समसो जाने से नहीं होता । यथा, उच्येत्तराम् ।

३४ प्रागावा रूपः—प्रागावा समसो जाने से शब्द के उत्तर
रूप होता है । यथा, प्राग्वो घैवाकरणः घैवाकरणरूपः, नैवा-
विकल्पः, भाल्लुकिरूपः, मीमांसकरूपः ।

३५ इपदने कल्पदेशदेशीयाः (इपदसमाप्ती कल्पदेशदेशीयाः)—
इपत् न्यून अर्थ में शब्द के उत्तर कल्प, देश्य और देशीय होता
है । यथा, इपदो विद्वान् विद्वत्कल्पः, विद्वदेश्यः विद्वदेशीयः ।

N. B. तिङन्ताश्च (तिङन्तश्च)—उपर के तीन शब्दों के प्रत्यय
तिङन्त पद के परे होते हैं । यथा, पठितराम्, पठितरान्, पठितरम्,
पठितर्यम्, पठितदेश्यम्, पठितदेशीयम् ।

(क) वा शब्दो बहुः पुरस्तात्—इपत् (घोड़ा) ऊन अर्थ में मुख्य
पद के पहले विकल्प से बहु प्रत्यय होता है । यथा, इपदः
पदुः पदुपदुः, पदुकल्पः, पदुदेश्यः, पदुदेशीयः ।

३६ तेन तुल्यः स्थानस्थानीयौ—तेन तुल्यः, इस अर्थ में शब्द
के उत्तर स्थान और स्थानीय होता है । यथा, पितृ तुल्यः पितृ-
स्थानः, पितृस्थानीयः, भ्रातृस्थानः, भ्रातृस्थानीयः, मातृस्थानः,
मातृस्थानीयः, मातृप्यक्षा ।

(ख) जातो जातीयः—जाति अर्थ में शब्द के उत्तर जातीय
होता है । यथा, ब्राह्मणजातीयः, क्षत्रियजातीयः, पुरुषजातीयः,
स्त्रीजातीयः, यणिज्जातीयः, रजकजातीयः, तार्किकजातीयः,
घैवाकरणजातीयः ।

३७ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने हृत्वसुच्—क्रिया के अभ्या-
वृत्तिगणन (कौ बार क्रिया अनुष्ठित हुई है, उसकी गणना)
समझी जाय तो संख्यावाचक शब्द के उत्तर हृत्वसुच् होता
है और इसका हृत्वस् रहता है । यथा, पञ्चवारान् भुङ्क्ते,

पञ्चदशो भुङ्क्ते, सप्तवारान् स्वपिति सप्तदश्वः स्वपिति;
सप्तदश्वः पठति ।

(क) द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्—क्रिया के अभ्यावृत्तिगणन समझे जाने से द्वि, त्रि और चतुर के उत्तर सुच् होता है और इसका स् रहता है। यथा, द्वौ वारी भुङ्क्ते द्विभुङ्क्ते, त्रीन् वारान् भुङ्क्ते त्रिभुङ्क्ते ।

N. B. लोपोऽन्त्यस्य चतुरः—सुच् होने से चतुर के अन्त्य सर्व ध लोप होता है। यथा, चतुरो वारान् भुङ्क्ते चतुर्भुङ्क्ते ।

२ एकस्य सकृच्च—सुच् होने पर एक का सङ्ख्य पद बनता है। यथा, एकं वारं भुङ्क्ते सकृच्च भुङ्क्ते, एकं वारं अधीते सङ्ख्यधीते । यदा चत्वारि भवन्ति तदा चत्वारि । केवल गणनामात्र समझी जाती है ।

(घ) विभाषा बहोरविप्रकृष्टकाले धाच् (विभाषा बहोरधाऽविप्रकृष्टकाले)—क्रिया के अभ्यावृत्तिगणन तथा क्रिया के अनुष्ठान के काल की परस्पर निकटता समझी जाय तो घट्टु के उत्तर विकल्प से धाच् होता है और इसका धा रहता है। पक्षान्तर में इत्य-सुच् होता है। यथा, घट्टुधा दिवसस्य भुङ्क्ते, घट्टुदश्वो दिवसस्य भुङ्क्ते । निकटता नहीं समझी जाय तो नहीं होता, यथा, घट्टुदश्वो मासस्य गच्छति ।

(ग) बहुवार्थाद्वा चशस् (बहुवार्थाच्छग कारकाऽन्वयतारणम्)—बहुपं और भत्वार्थ शब्दों के उत्तर विकल्प से चशस् होता है और इसका शस् रहता है। यथा, बहु ददाति, बहुशा ददाति, भूरि ददाति, भूरिषो ददाति, भल्पं ददाति, भल्पशो ददाति ।

N. B. संख्यैकदेशयचनाच्च धीप्तायाम् (संख्यैकयचनाच्च धीप्तायाम्)—दीप्ता समझी जाय तो संख्यापद और एक देश परस्पर के उत्तर विकल्प से चशस् होता है। यथा, संख्यायाश्चक-

इं इं इति द्विगो इति, यच्च एत इति पञ्चगो इति । एतरेण-
यामक—यां यां इति पञ्चगो इति, अर्द्धं अर्द्धं इति अर्द्धो
इति ।

३८ विकारे मय्—विकार अर्थ में शब्द के उत्तर मय्
होता है और इगका मय रहता है । यथा, स्वर्णमय विकार
स्वर्णमयी घटः, स्वर्णमयी प्रतिमा, गृहो विकारः मृन्मयी घटः,
गृन्मयी प्रतिमा ।

(क) हिरण्यकः—हिरण्यमय निपातन से सिद्ध होता है । यथा,
हिरण्यमय विकारः हिरण्यमयः ।

(ख) अवरणे—मगयय समझे जाने से शब्द के उत्तर मय्
होता है । यथा, दारुण्यस्यापययाः दारुण्यम् आसनम्, दर्मा
अभ्यापययाः दर्ममयी प्राज्ञाः, काष्ठान्यस्यावययाः काष्ठमयी
दस्ती, ऊर्णामयं वासः, अन्नमयी यज्ञाः, अपूपमयं धाडम् ।

(ग) व्याप्तौ (तत्प्रकृतवचने मय् । कर्णवच बहुवृत्त)—व्याप्ति
अर्थ में शब्द के उत्तर मय् होता है । यथा, जलेन व्याप्तं जल-
मयं जगत् प्रलये, रोगमयं शरीरम् ।

(घ) संसर्गे (तत्प्रकृत.....)—संसर्ग समझे जाने से शब्द के
उत्तर मय् होता है । यथा, तिलेन संसृष्टं तिलमयं तर्पणम्,
घृतमयं ध्यङ्जनम्, पापमयं शरीरम् ।

(ङ) अपृथग्भावे च (तत्प्रकृत.....)—अपृथग्भावे में शब्द के
उत्तर मय् होता है । यथा, विष्णोरपृथग्भूतं विष्णुमयं जगत् ।
वाग्म्योऽपृथग्भूतं वाङ्मयं शास्त्रम् ; चित्तोऽपृथग्भूतः
चिन्मयः पुरुषः ।

(च) गोश्च शुीये—पुरीष (मैल) अर्थ में गो के उत्तर मय्
होता है । यथा, गोः पुरीषं गोमयम् ।

३९ स्नेहे सैलन् (स्नेहे सैलन्)—स्नेह अर्थ में शब्द के उत्तर

नैरन् होता है और इसका तैल रहता है । यथा, तिलस्य स्नेहः तिलनेलम्, सर्पपतैलम्, परण्डतैलम् ।

१० धाच् संख्या विधाये—विधा (प्रकार) अर्थ में संख्या-वाचक शब्द के उत्तर धाच् होता है और इसका धा रहता है । यथा, एका विधा एकधा, द्वे विधे द्विधा, तिस्रो विधाः त्रिधा वा भुङ्क्ते ।

(क) भावान्तरापादने च—भावान्तरापादन अर्थात् अन्यभाष्यभाष्यभाष्य अर्थ में धाच् होता है । यथा, पञ्चराशीन् एकधा इह, एकं राशिं पञ्चधा कुत ।

(ख) ऐक्यत्वाद्वा वा—ऐक्य इत्यादि (विकल्प से) निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, एका त्रिधा ऐक्यम्, द्वे विधे द्वैर्षं द्वेषाः, त्रैधम्, त्रैधा; षोढा । पक्षान्तर में एकधा, त्रिधा, चतुर्धा ।

११ पाशः कुत्सिते—कुत्सित अर्थ में शब्द के उत्तर पाश होता है । यथा, कुत्सितो घैयाकरणः घैयाकरणपाशः, मीमांसकपाशः मियकपाशः, वैदिकपाशः, लेखकपाशः ।

१२ भूतपूर्वो चरत्—भूतपूर्व अर्थ में शब्द के उत्तर चरत् होता है और इसका चर रहता है । यथा, भाद्रयो भूतपूर्वः भाद्रचरः, इषो भूतपूर्वः इषचरः, भविष्यो भूतपूर्वः भविष्यचरः, अर्धातो भूतपूर्वः अर्धातचरः ।

(क) लक्षणे रूपध—सम्यन्व समका जाय तो भूतपूर्व अर्थ में चरत् और रूप्य प्रत्यय होते हैं । यथा, देवदत्तस्य भूतपूर्व देवदत्तरूप्यम्, देवदत्तचरं वा भवनम् ।

१३ एकशक्तिविशेषादे—सदायमून्य अर्थ में एक शब्द के उत्तर भाक्ति प्रत्यय होता है और इसका भाक्ति रहता है । यथा, एक एव एकाकी ।

४४ प्राक्टेरक स्वार्थे—स्वार्थं समझे जाने से शब्द के टिका अक्षर होता है। यथा, कन्या एव कन्यका, तारा एव तारका।

(क) बालादिरिक (प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात् इदाप्यङ्कः)—स्वार्थं समझे जाने से बाला इत्यादि के टिका अक्षर होता है। यथा, बाला एव बालिका, तरला एव तरलिका, निपुणा-निपुणिका, चतुरा-चतुरिका, चपला-चपलिका, लता-लतिका, गोधा-गोधिका ।

(ख) अज्ञाते कन्—अज्ञात अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है और इसका क रहता है। यथा, कस्यापमर्कः अश्वकः, उष्ट्रकः, गर्द्भकः ।

कुत्सिते—कुत्सित अर्थ में शब्द के उत्तर कन् होता है। यथा, कुत्सितोऽश्वः अश्वकः, कुत्सितो मदिपः मदिपकः ।

(ग) अल्पे—अल्प अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, अल्पं तैलं तैलकम्, क्षीरकम्, सलिलकम् ।

(घ) ह्रस्वे—ह्रस्व अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, ह्रस्वः वृक्षः वृक्षकः, ह्रस्वः पटः पटकः, स्तम्भः स्तम्भकः, दण्डः दण्डकः ।

(च) अनुकम्पाम्—अनुकम्पा अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, अनुकम्पितः पुत्रः पुत्रकः, यक्षकः, दुर्धूलकः ।

(छ) संशायाम्—संज्ञा अर्थ में शब्द के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, फरमकः, रोहितकः, शर्विलकः ।

(ज) रिश्यामन्त्यो ह्रस्वः—स्त्रीलिङ्ग शब्द के उत्तर कन् होने से अन्त्य स्वर ह्रस्व होता है। यथा, मालयी-मालयिका, म्नागरी-म्नागरिका, लघुणी-लघुणिका, माघयी-माघयिका, चण्डी-चण्डिका, कुशण्डी-कुशण्डिका, शोकाली-शोकालिका,

मृणाली-मृणालिका, यूथी-यूथिका, वदरी-वदरिका, दूर्ती-
दूर्तिका, काली-कालिका, शारी-शारिका, सूची-सूचिका ।

N. B. ह्रस्वे कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः (कुटीशमीशुण्डाभ्यो
रः) — इस अर्थ में कुटी, शमी और शुण्डा के उत्तर र होता है । यथा,
इत्थ कुटी कुटीरः, शमीरः, शुण्डारः distiller.

२ अश्वोक्षवत्सर्पमेभ्यस्तरट् (वत्सोक्षाश्वर्पमेभ्यश्च तनु-
त्वे) — ह्रस्व अर्थ में अश्व, उक्षन्, वत्स और ऋषभ शब्द के उत्तर तरट्
होगा है और इस का तर रहता है । यथा, इत्सोऽश्वः अश्वतरः, उक्षतरः,
ऋषभतरः, ऋषभतरः ।

४५ एभ्यस्तत्सिल् वा — पञ्चमी विभक्ति के स्थान में विकल्प
से तत्सिल् होता है और इसका तस् रहता है । यथा, गृहान् ,
गृहतः; ग्रामात्, ग्रामतः; नगरात्, नगरतः; सर्व्वेऽस्मान्,
सर्व्वतः; विश्वस्मात्, विश्वतः; उभयस्मात्, उभयतः, भवतः,
भवतः; एकस्मात्, एकतः; अन्यस्मात्, अन्यतः; पूर्व्वस्मान्,
पूर्व्वतः; परस्मान्, परतः; दक्षिणस्मात्, दक्षिणतः; उत्तरस्मान्,
उत्तरतः; हस्तात्, हस्ततः; वृक्षात्, वृक्षतः; मेघात्, मेघतः;
जलान्, जलतः ।

एतन्मात्र — सप्तमी के स्थान में विकल्प से तत्सिल् होता है ।
यथा, पूर्व्वस्मिन्, पूर्व्वतः; दक्षिणस्मिन्, दक्षिणतः; उत्तर-
स्मिन्, उत्तरतः; प्रथमे, प्रथमतः; परस्मिन्, परतः; अप्रे,
अप्रेतः; आदौ, आदितः; मध्ये, मध्यतः; अन्ते, अन्ततः; पृष्टे,
पृष्टतः; पार्श्वयोः, पार्श्वतः; सर्व्वस्मिन्, सर्व्वतः ।

नित्यं पर्यभिष्याम् (पर्यभिष्या च) — परि और अभि उपसर्ग
के उत्तर तत्सिल् होता है । यथा, परितः, अभितः ।

N. B. न हाकरोहोः (अपादाने चाहीयरोहोः) — हा और रद्
के प्रयोग में तत्सिल् नहीं होता । यथा, स्वर्गात् हीयते, पर्व्वताश्चरोहति ।

४६ सप्तम्यास्यल् वा सर्व्वनाम्नः—द्वि, भस्मद्, युष्मद् भिन्न सर्व्वनाम की सप्तमी के स्थान में विकल्प से यल् होता है और इसका प्र रहता है । यथा, सर्व्वस्मिन्, सर्व्वत्र; उभयस्मिन्, उभयत्र; एकस्मिन्, एकत्र; अन्यस्मिन्, अन्यत्र; इतरस्मिन्, इतरत्र; पूष्यस्मिन्, पूष्यत्र; परस्मिन्, परत्र; अपरस्मिन्, अपरत्र ।

N. B. भ-य-ता एतद्-यद् तदाम् (एतदोऽम् । एतादीनामः) —तस्मिन् और तन् होने से एतद् का भ, यद् का य और तद् का त होता है । यथा, एतरमात् अतः, एतरिमात् अत्र; यस्मात् यतः, यस्मिन्-यत्र; तस्मात् ततः, तस्मिन् तत्र ।

२ किमः कुः—किम् का कु होता है । यथा, कामात् कुः, कस्मिन्-कुत्र ।

३ कृद्दी—क और कृद् निगलन से गिळ होते हैं । यथा, किरिः क, कृद ।

४ इरिदमः—इरम् का इ होता है (इनीम् में भी होता है) । यथा, अस्मात्, इतः ।

५ मगमो हः (इदमो हः)—सप्तमी के स्थान में इ होता है । यथा, अस्मिन्, इह ।

(६) इनागम्यि इयमे—पञ्चमी, सप्तमी निगलन मगमय विनासिक के स्थान में मी मगिाल् और तल् मगय देने जाते हैं । यथा, मी मगाम् मनीमगाम्, मत्रमयाम् । मी मगमन् मनीमगमन्, मत्रमयमन्, मत्रमयमन्, मत्र मगमा-मनीमगमा, मत्रमयमा, मत्रमयमे मनीमगमे, मत्रमयमे, मत्रमय मयत — मनीमयत मत्रमयत ।

१० इदमस्यो क कृद्—काल कामो जाते ही तद् की

सर्व्य सर्व्यनाम शब्दों के उत्तर सप्तमी के स्थान में दा होता है। यथा, एकस्मिन् काले एकदा ।

शी वा सर्वस्य (सर्वस्य सोऽन्वतरस्या दि)—दा होने से सर्व्य विकल्प से स होता है। यथा; सर्व्यस्मिन् काले सदा, सर्वदा ।

(क) अन्यक्रियदा हिल्च (अनघतनेहिलन्वतरस्याम्)—अन्य, अन् और यद् की सप्तमी के स्थान में दा और हिल् होता है और हिल् का हि रहता है। यथा; सर्व्यस्मिन् काले अन्यहि, अन्यदा ।

क्रियदोः कर्यो—दा और हिल् होने से क्मि का क और यद् का व होता है। यथा; कस्मिन् काले कदि, कदा; यस्मिन् काले यदि, यदा ।

(स) तदो दानी च—तद् की सप्तमी के स्थान में दा, हिल् और दानीम् होता है ।

तस्तदः—दा, हिल् और दानीम् होने से तद् का त होता है। यथा, तस्मिन् काले तदा, तदि, तदानीम् ।

इदो दानीम्—इदम् की सप्तमी के स्थान में दानीम् होता है। यथा; अस्मिन् काले इदानीम् ।

अधुनेतर्हो—अधुना और एतदि पर निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; अस्मिन् काले अधुना, अस्मिन् एतस्मिन् वा काले एतदि ।

४८ पृष्ण् पूर्वदिहनि—दिन समझे जाने से पूर्व इत्यादि के उत्तर पृष्ण् होता है। यथा; पूर्वस्मिन्नहनि पूर्वेषुः, अन्यस्मिन्नहनि अन्येषुः, अपरस्मिन्नहनि अपरेषुः, इतरेषुः, अन्यतरेषुः, अधरेषुः, उत्तरेषुः, उभयेषुः। उभय के उत्तर षुस् अन्वय भी होता है; यथा उभयस्मिन् अहनि उभयेषुः ।

N. B. हासघोऽघश्चः परेष्वयः—दिन समझे जाने से विभक्ति पूर्व का एषु, समान का सवस्, इदम् का अघ और पर का ग्यस्

तथा परेत्तवि होता है । यथा; पूर्वस्मिन्नइति अत्, ममानेऽइति सत्, अस्मिन्नइति अत्, परस्मिन् अइति अत्, परेत्तवि ।

२. ऐगमः-पठन्-परारथो धर्य—कृपर समझे जाने से विभक्ति सहित इदम् का ऐगमन्, पूर्व्य का पठन्, और पूर्वतर का परारि होता है । यथा, अस्मिन् वयं ऐगमः, पूर्वस्मिन् वयं पठन्, पूर्वतर वयं परारि ।

४९ धाल् प्रकारे तृतीयायाः—प्रकार अर्थ में तृतीया विभक्ति के स्थान में धाल् होता है और इसका था रहता है । यथा; सध्व्यैः प्रकारैः सध्व्यैथा, अन्येन प्रकारेण अन्यथा, इतरेण प्रकारेण इतरथा, उभयथा, अपरथा ।

N. B. य-तां यत्तदोः—धाल् होने से यद् का य और तद् का त होता है । यथा; येन प्रकारेण यथा, तेन प्रकारेण तथा ।

२ कथमित्थमो—कथम् और इत्थम् निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा; केन प्रकारेण कथम्, अनेन एतेन वा प्रकारेण इत्थम् ।

५०—परादेरस्तात् सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमानाम्—पर इत्यादि शब्द के उत्तर सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में अस्तात् होता है । यथा; परस्मिन् परस्मात् परो वा परस्तात्, पश्चिमे पश्चिमात् पश्चिमो वा पश्चिमस्तात् ।

पश्चात्—अस्तात् सहित अपर का पश्चात् निपातन से सिद्ध होता है । यथा; अपरस्मिन् अपरस्मात् अपरो वा पश्चात् ।

उपध्र्युपरिष्ठात्—अस्तात् सहित ऊर्ध्व्यं का उपरि और उपरिष्ठत् निपातन से सिद्ध होता है । यथा; ऊर्ध्व्यं ऊर्ध्व्यात् ऊर्ध्वो वा उपरि उपरिष्ठात् ।

(क) पूर्वाधरावरानामसिच—पूर्व्य, अधर और अवर के सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में अस्तात् और असि प्रत्यय होते हैं; असि का अस् रहता है ।

पुराधोपूर्व्याधरयोः—अस्तात् और असि होने पर पूर्व्य का पुर

और अधर का अघ होता है । यथा, पूर्वस्मिन् पूर्वस्मात् पूर्वो वा
स्मात्, पुरः; अधरस्मिन् अधरस्मात् अधरो वा अधस्तात्, अधः ।

अथो विभाषापरस्य—अस्तात् और अति होने से अधर का
अघ से अघ होता है । यथा, अवरस्मिन् अवरस्तात् अवरो वा अवस्तात्,
स्तात्, अवः, अवरः ।

(ख) दिग्देशयोर्दक्षिणोत्तरयोस्तसुः—दिग्वाचक और देशवाचक
अथ और उत्तर शब्द की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के
स्थान में अतसु होता है और इसका अतस् रहता है । यथा;
दक्षिणस्मिन् दक्षिणस्मात् दक्षिणो वा दक्षिणतः, उत्तरस्मिन्
उत्तरस्मात् उत्तरो वा उत्तरतः ।

(ग) उत्तराधरदक्षिणानामातिः—उत्तर अधर और दक्षिण की
सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा के स्थान में आति होता है और
इसका आत् रहता है । यथा, उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो
वा उत्तरान्, अधरात्, दक्षिणात् ।

५१ एनर् अतूरेऽपञ्चम्याः—अतूर अर्थ में सप्तमी और प्रथमा
के स्थान में एनप् होता है और इसका एन रहता है । यथा,
उत्तरस्मिन् उत्तरो वा उत्तरेण, अधरेण, दक्षिणेन ।

५२ दक्षिणोत्तरयोरादाही च—दक्षिण और उत्तर शब्द की
सप्तमी और प्रथमा के स्थान में आत् और आहि प्रत्यय होते
हैं, आत् का, आ रहता है । यथा, दक्षिणा, दक्षिणादि; उत्तरा,
उत्तरादि ।

५३ अनेऽस्मभ्यवेभ्यस्तनप्—अन्य अर्थ में कालवाचक अव्यय
शब्द के उत्तर तनप् होता है और इसका तन रहता है ।
यथा, मय भव्य अद्यतनम्, प्रातर्भवं प्रातस्तनम्, सायं भव्यं
स्तनम्, दीपातनम्, दिवातनम्, पुरातनम्, चिन्तनम्,
रातनम्, अधुनातनम्, इदानीन्तनम् तदानीन्तनम् ।

(क) प्राङ्-प्रगेभ्याश्च (गायत्रिर्प्राङ् प्रोऽध्वरेभ्यश्चपुट्पुली तुद् च) — प्राङ्, प्रागे, इन सप्तम्यन्त शब्दों के उत्तर भाँ होता है। यथा, प्राङ्तेनम् (दोषहर के पदले का), प्रोतेनम् (प्रातःकाल का)।

(ख) विभाषा पूर्व्याहपरार्हाभ्यां सप्तम्याम्—सप्तमी विभक्ति में पूर्व्याह और अपराह शब्दों के उत्तर विकल्प से तनप् होता है। यथा, पूर्व्याहो भवं पूर्व्याहोतेनम्, पूर्व्याहिकम्; अपराहो भवं अपराहोतेनम्, आपराहिकम्।

(ग) निश्चयपूर्वदिः—उदुर्ध्व इत्यादि के उत्तर निश्चय तन होता है। यथा, उदुर्ध्वे भवः उदुर्ध्वतनः, उपरि भवः उपरितनः, अधः भवः अधस्तनः, प्राक्तनः, पूर्व्वे भवः पूर्व्वतनः।

(घ) आदिमध्याभ्यां मन्—सप्तमी विभक्ति में आदि और मध्य के उत्तर मन् होता है और इसका म रहता है। यथा, आदौ भवः आदिमः, मध्ये भवः मध्यमः।

(च) अप्रान्तपरचात्भ्यो ङिनः—अप्र, अन्त और पश्चात् के उत्तर ङिम होता है और इसका इम रहता है। यथा, अप्रो भवः अप्रिमः, अन्ते भवः अन्तिमः, पश्चात् भवः पश्चिमः।

(छ) चिर-परन्-परारिभ्यस् सः—चिर, परत् और परारि के उत्तर स होता है। यथा; चिरज्ञम् ancient, पदज्ञम् परारिज्ञम्।

(ज) दक्षिणपश्चात्पुरोभ्यस्त्वण्—दक्षिणा, पश्चात् और पुरस के उत्तर त्वण् होता है और इसका त्व रहता है। यथा, दक्षिणात्यः, पश्चात्यः, पौरस्त्यः।

(झ) अनेहकतगिल्प्रल्भ्यस्त्यः—अमा, इह, क और तसिल् तथा प्रल् प्रत्ययान्त शब्दों के उत्तर त्य होता है। यथा, इहत्यः, कत्यः। तसिल् प्रत्ययान्त—ततस्त्यः, अतस्त्यः। प्रल् प्रत्ययान्त—तत्रत्यः, अत्रत्यः, कुत्रत्यः।

५४ द्विमध्विचनौ विभक्त्यन्तात्—अनिश्चय अर्थ में विभक्त्यन्त किम् शब्द के उत्तर चिन् और चन होता है। यथा, कश्चिन्, केनचिन्, कस्मैचित्, कस्माच्चित्, कस्यचिन्, कस्मिच्चिन्, कुत्रचिन्, क्वचित्, कुत्रचित्, कश्चन, किञ्चन, काचन, कुतश्चन, क्वचन, कुत्रचन ।

५५ वृभ्वस्त्वियोगेऽभूततद्भावे चिः—ए, भू, और अस् धानु के लोप में अभूततद्भाव (जो धस्तु नहीं है इसके होने के) अर्थ में शब्द के उत्तर चि चि होता है और इसका सम्पूर्ण लोप होता है ।

(क) दीर्घोऽन्त्या—अभूततद्भावे अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित हस्य का दीर्घ होता है। यथा, अलघुं लघुं रोति लघूकरोति, अलघुर्लघुः भवति लघूभवति, अलघुर्लघुः पात् लघूस्यात् ।

(ख) ईर्कणस्य—अभूततद्भावे अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित अ का ई होता है। यथा, अशुक्लं शुक्लं करोति शुक्लीकरोति, अशुक्लः शुक्लो भवति शुक्लीभवति, अशुक्लः शुक्लः स्यात् शुक्लीस्यात् ।

(ग) श्रुतो रोः—अभूततद्भावे अर्थ में प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित श्रु का रो होता है। यथा, अधोत्तारं धोत्तारं करोति धोत्रीकरोति, धोत्रीभवति, धोत्रास्यात् ।

(घ) लोपोऽन्त्यादेस्तस्य—अभूततद्भावे अर्थ में प्रत्यय होने से अहम्, मजम्, यभम्, येतस्, रहस् और वजस् के अन्तस्थित लोप होता है। यथा, अहकरोति, अहमपति, अहस्यात्, यिमनीकरोति, यिमनीमपति, यिमनीस्यात्, उद्यकरोति, उद्यमपति, उद्यमस्यात्, सुयेनीकरोति,

सुचेतीभवति, सुचेतीस्यात्, विरहो करोति, विरहो भवति,
विरहो स्यात्, विरजो करोति, विरजो भवति, विरजो स्यात् ।

(घ) विभाषा सातिच् कारस्व्यं—कारस्व्यं (सम्पूर्ण) समझे जाने से अभूततद्वाय अर्थ में ह्, भू और भस् धातु के योग में विकल्प से सातिच् होता है और इसका सात् रहता है । यथा, वृत्स्नं लघणं जलं करोति जलसात् करोति, वृत्स्नं लघणं जलं भवति जलसाद्भवति, वृत्स्नं लघणं जलं स्यात् जलसात् स्यात् । मस्मसात् करोति, मस्मसाद्भवति, मस्मसात् स्यात् । पक्षान्तर में च्वि होता है; यथा, जर्ला करोति, जर्ला भवति, जर्ला स्यात्, मस्मां करोति, मस्मी भवति, मस्मी स्यात् ।

(ङ) अभिविधौ सम्पदा च—अभिविधि (ध्याति) समझे जाने से अभूततद्वाय अर्थ में ह्, भू, भस् और सम् पूर्वक पद धातु के योग में विकल्प से सातिच् होता है । यथा, भग्निसाद्भवति, भग्निसात् स्यात्, भग्निसात् सम्पद्यते । पक्षान्तर में च्वि होता है; यथा, भग्नी करोति, भग्नी भवति, भग्नी स्यात्, भग्नी सम्पद्यते ।

अधीनतावाञ्च (सन्धीनवचने)—अधीनता अर्थ में भी होता है । यथा, राज्ञोऽधीनं करोति राजसात् करोति, राज्ञोऽधीनं भवति राजसाद्भवति, राज्ञोऽधीनं स्यात्-राजसात् स्यात्, राज्ञोऽधीनं सम्पद्यते-राजसात् सम्पद्यते । राजी करोति, राजी भवति, राजी स्यात्, राजी सम्पद्यते ।

५६ देवे प्राच् च—देव अर्थ में ह्, भू, भस् और सम् पूर्वक पद धातु के योग में सातिच् और प्राच् होता है और प्राच् का प्रा रहता है । यथा, ब्राह्मणाव देवं करोति ब्राह्मण-करोति, ब्राह्मणप्रा करोति; ब्राह्मणसाद्भवति, ब्राह्मणप्रा

भवति, ब्राह्मणसात् स्यात्, ब्राह्मणशा स्यात्, ब्राह्मणसात् सम्पद्यते, ब्राह्मणया सम्पद्यते ।

५.० इत्या द्वितीयादेः कृषी डाच्—रु धातु के योग में द्वितीय, तृतीय, शम्भ और बीज के उत्तर कर्षण अर्थ में डाच् होता है और इसका आ रहता है । यथा; द्वितीया करोति, तृतीया करोति, द्वितीयं तृतीयं कर्षणं करोतीत्यर्थः; शम्भाकरोति अनु-लोमहाष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षतीत्यर्थः; बीजाकरोति, बीजेन-इ कर्षतीत्यर्थः ।

(क) संख्यावाचक गुणान्तायाः—गुण शब्द अन्त में रहने से व्याघाचक शब्द के उत्तर रु धातु के योग में कर्षण अर्थ में डाच् होता है । यथा; द्विगुणाकरोति, त्रिगुणाकरोति क्षेत्रम्, द्विगुणं त्रिगुणं कर्षतीत्यर्थः ।

(ख) समयाच्च यापनायाम्—यापन समझे जाने से समय शब्द के उत्तर डाच् होता है । यथा; समयाकरोति समयं यापयतीत्यर्थः ।

(ग) सपत्र-निष्पत्राभ्यां व्यथने (सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने)—व्यथन अर्थ में सपत्र और निष्पत्र के उत्तर डाच् होता है । यथा; सपत्राकरोति मृगं व्याधः; सपत्रं शरं अस्य शरीरे प्रवेशयन् व्यथयतीत्यर्थः; निष्पत्राकरोति, शरीरात् शरं अपरपार्श्वे निष्का-मयन् व्यथयतीत्यर्थः ।

(घ) निष्कुलान्तिक्षोपणे—निष्कोपण (कोप से बाहर करना) अर्थ में निष्कुल के उत्तर डाच् होता है । यथा; निष्कुलाकरोति दाडिमम्, दाडिमस्य अन्तरवययान् यदिनि सारयतीत्यर्थः ।

(ङ) सुखप्रियाभ्यामानुलोम्ये—आनुलोम्य अर्थ में सुख और प्रिय के उत्तर डाच् होता है । यथा; सुखाकरोति, प्रियाकरोति मित्रम्, अनुकुलाचरणेन आनन्दयतीत्यर्थः ।

(छ) दुःखात्प्रानिलेभ्ये—प्रातिलोभ्य अर्थ में दुःख के उत्तर डाच् होना है । यथा; दुःखाकरोति भृत्यः, स्वामिनं पीडय-
तीत्यर्थः ।

(ज) शूलात्पाके—पाक अर्थ में शूल के उत्तर डाच् होता है । यथा; शूलाकरोति मांसम्, शूलेन पचतीत्यर्थः ।

(ऋ) सत्यादशब्दे—शपथमिन्न अर्थ में सत्य के उत्तर डाच् होता है । यथा; सत्याकरोति भाण्डं वणिक्, ऋतव्यमिति प्रतिजानीति इत्यर्थः ।

(ट) भद्रात् परिवापने—मुण्डन अर्थ में भद्र के उत्तर डाच् होता है । यथा; भद्राकरोति, साकल्यं मुण्डनं करोतीत्यर्थः ।

N. B. पुं वत्तसिलादिषु भासितपुंस्कस्य— तसिल्, शब्. चरट्, जातीय, देशीय और पाञ्च प्रत्यय परे रहने से स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुं वद्भाव होता है । यथा, उत्तरस्याः दिशः उत्तरतः, उत्तरस्यां दिशि उत्तरतः, सर्व्वस्यां दिशि सर्व्वत्र, अपिता भूतपूर्वा अपितचरी, जाया प्राङ्गमी प्राङ्ग-
जातीया, ईषदूना पण्डिता पण्डितदेशीया, वुरिवता पाचिका पाचकराया ।

२ कल्पपादिषु च—कल्प, रूप, तर और तम प्रत्यय परे रहने से स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुं वद्भाव होता है । यथा; ईषदूना पण्डिता पण्डितकल्पा, ग्रयस्ता गायिका गायकरूपा, इयमनयोरतिशयेन निपुणा निपुणतरा, इयमा-
सामतिशयेन चपला चपलतमा ।

३ ईवूपोर्विभाषा—कल्प ह्रस्वादि प्रत्यय परे रहने से ईवन्त और ऊवन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का विकल्प से पुं वद्भाव होता है । यथा; ईषदूना विदुषी विदुषीकरूपा, विद्वत्करूपा; ईषदूना मेधाविनी मेधाविनीरूपा, मेधाविरूपा इष मनयोरतिशयेन मायाविनी, मायाविनीतरा, मायावितरा; इयमासामतिशयेन मनोहारिणी मनोहारिणीतमा, मनोहारितमा; वामोरूकरूपा, वामोरकरूपा; वामोरूकरूपा वामोररूपा; वामोरूतरा; वामोरतमा, वामोरतमा ।

वैयाकरण लोग ऊवन्त के पुं वद्भाव को निषेध करके विकल्प से उर्

का ह्रस्वविधान करते हैं; पुंवद्भाव के अभाव में ऊर् का कहीं विकल्प और कहीं मित्य ह्रस्व विधान करते हैं। यथा, विदुषोकत्वा, विदुषिकत्वा, विदुषकत्वा; मादृषिकत्वा, मादृषणकत्वा ।

४ शस्त्रियह्रस्वार्थस्य—शस् प्रत्यय परे रहने से बहुवचन अर्थ लोहित शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा; बहुभ्यो देहि, बहुभ्यो देहि, अल्पाभ्यो देहि, अल्पाभ्यो देहि ।

५ स्वतलोर्गुणवचनस्यः—स्व और तल् प्रत्यय परे रहने से गुणवचन लोहित शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, निपुणाभा भावः निपुणस्वम्, निपुणता; चपलाया भावः चपलत्वम्, चपलता; मेधाविन्या भावः मेधावित्त्वम्, मेधाविता; प्रियवादिन्या भावः प्रियवादित्वम्, प्रियवादिता ।

Exercise—41

1 Give the comparative and superlative forms of बलिन, मतिमत्, लघु, बहु, उरु, दीर्घ, गुरु and इद ।

2 Derive—दाशरथिः, अस्मत्सात्, अन्तिमः, मौमित्रिः, अमात्यः, वपारत, पार्ष्वतायनः, सायन्तनम्, आदिप्यः, आदित्यः, पौत्रः, पाण्डवः, कपसात्, अन्वया, मनुष्यः, भागिनेयः, वैदान्तिक, पाणिनीयम्, काश्यपम्, तर्हि, अन्वेषः, सर्वत्र, यत्र, कालिका, दण्डकः, चपलिका, दिवा, आभेयः, अनता, द्वैपायनः, आष्याशिकम्, सयः, मासिकम्, इष्य, मानसम्, पाथिवम्, सांचालिकः, शान्धवः, माधुर्व्यम्, मौवनम्, and मनुष्यम् ।

3. Substitute single words for—स्पृश्य भावः, पुत्रमित्र, पञ्चवा अदिमन् संजाताः, गज प्रमाणस्य, पंच कषपवा भावः, सप्तानां पृथक्, स्त्रीरस्यादि, माया अस्य अस्ति, उष्णं न रहने, बाधोऽस्य सन्ति, मानुसता, अवमेषामतिशयेनप्रियः, कथमनघोरनि, रुचेन प्रियः, स्वर्णस्य विकारः, दुर्भा अस्य अवयवाः, द्वे विधे, बुद्धिग

अथ, गर्भे प्रहारे, पूर्वमिन्नहनि, प्रातर्भयम् अगुलं शुक्लं भवति, अगुं नम्य अण्वम्, मनोरपथम्, वायव्य अण्वानि, वेदं अर्चने, शरीरं कृत्वा, विश्वरूप देवता, अर्धमर्हति, भरतस्य इदम्, रजतम् विहारः, वेतनेन जीवति, धर्मं चरति, अन्येन प्रकारेण and बाला एव ।

4. Translate into Hindi:—दाशरथिः तस्य वचनं कृत्वा इष्टो बभूव । पाण्डवकौरवयोर्महान् युद्धोऽभूत् । अग्निन् वने महाउषा नाम ताप्य आसीत् । तस्य उषेष्ट पुत्रो बुद्धिमानसि । घाण्टूष्टिमवलोक्य सर्वे यत्र तत्र पलायिताः । अग्निन् मठे बहवो वैष्णवाः सन्ति । अदितेर-पाथानि आदितेया दिते देव्याद्याय मन्ति ।

5. Translate into Sanskrit:—(a) मातापिता सन्तान की रक्षा करते हैं । देशभक्त अपने देश को प्राण से भी अधिक प्यार करते हैं । आप समुद्रपर्यन्त पृथ्वी के राजा हैं । कौशिक ने रामचन्द्र से कहा । हिमालय भारतवर्ष के उत्तर में है ।

(b) I will go there and see your brother. You have sent me three books. The army of the enemy was defeated. The royal officers went to the tree. He works all day and never wastes time. Please come to my house tomorrow.

6. Correct:—कौशलराजः कति पुत्राः सन्ति । दाशरथिस्व भार्गवाणां पालय । धनिना सेवा सर्वे कुर्वन्ति । मधुस्तिष्ठति जिह्वामे इदं तस्य हलाहल । घालकेन चन्द्रं पर्यते । मां घनस्य प्रयोजनं नास्ति । धनेन विद्या गरीयसी । पतिना नीयते बध् । लक्ष्मीमादाऽस्ति ।

स्त्री-प्रत्यय

१ स्थियम्—इस प्रकरण में पुलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग याने के नियम का उल्लेख किया जाता है ।

२ अदन्तादाप् (अजायतशाप्) —अकारान्त प्रातिपदिक के उत्तर आप् होता है और इसका आ रहता है । यथा; कृश-कृशा, दीन-दीना, मलिन-मलिना, कृपण-कृपणा, क्रूर-क्रूरा, सरल-सरला, प्रबल-प्रबला, अचल-अचला, निपुण-निपुणा, चतुर-चतुरा, तरल-तरला, चपल-चपला, दक्षिण-दक्षिणा, उत्तर-उत्तरा, पूर्व-पूर्वा, पश्चिम-पश्चिमा, प्रथम-प्रथमा, द्वितीय-द्वितीया, तृतीय-तृतीया, अनुकूल-अनुकूला, प्रतिकूल-प्रतिकूला, मनोहर-मनोहरा ।

(क) भाषि प्रत्ययकात् पूर्वस्यात् इत् (प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात् इत्यनुक्तः) —आप् होने से प्रत्यय के ककार के पूर्ववर्ती अकार का इकार होता है । यथा; नायक-नायिका, पाचक-पाचिका, नाटक-नाटिका, पालक-पालिका, कारक-कारिका, बोधक-बोधिका, साधक-साधिका, बालक-बालिका ।

(ख) नाटकादेः (त्यक्तरण निषेधः । तारका ज्योतिषि । अटका विवृ-
 र्हेत्वे । क्षिपकादीनां च न) —अटका इत्यादि के ककार के पूर्व-
 वर्ती अकार का इकार नहीं होता । यथा; अटका, इटका,
 कन्यका, करका, सटका, तारका, अधित्यका, उपत्यका ।

३ ईप् गौरादिभ्यः—गौर इत्यादि अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है और इसका ई रहता है ।

ईपि क्षीरोऽनर्गत्व (यस्येति च) —ईप् होने से शब्द के अन्त-
 यत् अ का लोप होता है । यथा, गौर-गौरी, कुमार-कुमारी,
 शौर-किशोरी, सुन्दर-सुन्दरी, तरुण-तरुणी, पितामह-पिता-
 मही, मातामह-मातामही, नद्-नदी, सट-सटी, नट-नटी, पट-पटी,
 ल-लदी, स्थल-स्थली, काल-काली, नाग-नागी, मण्डल-
 मण्डली, सल्लक-सल्लकी, वेतस-वेतसी, भामलक-भामलकी,

मृग-मृगी, श्लोण-श्लोणी, बइर-बइरी, कयर-कयरी a braid of hair.

(क) ज्ञनी ज्ञतेरदन्तदीप् (ज्ञतेरदन्तःविश्वामित्रोपवात्)—जाति
अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है ।
यथा; सिद्ध-सिद्धी, ध्याय-ध्यायी, मल्लूक-मल्लूकी, मृग-मृगी,
हरिण-हरिणी, कुरङ्ग-कुरङ्गी, गर्दम-गर्दमी, शूकर-शूकरी,
कुम्भकुर-कुम्भकुरी, जम्बूक-जम्बूकी, शृगाल-शृगाली, विडाल-
विडाली, घोटक-घोटकी, महिष-महिषी, हंस-हंसी, सारस-
सारसी, चक्रवाक-चक्रवाकी, मानुष-मानुषी, ब्राह्मण-ब्राह्मणी,
गोप-गोपी, चण्डाल-चण्डाली, पिशाच-पिशाची, राक्षस-
राक्षसी, निशाचर-निशाचरी ।

N. B. नाजादेः—जातिवाचक शब्दों में अत्र इत्यादि के परे ईप्
नहीं लगता । यथा; अन्न-अन्ना, कोकिल-कोकिला, चटक-चटका, अंग-अन्गा,
मूषिक-मूषिका, पुत्रक-पुत्रिका, बाल-बाला, बत्स-बत्सा, ज्येष्ठ-ज्येष्ठा, कनिष्ठ-
कनिष्ठा, शूद्र-शूद्रा, (महत् शब्द पहले रहने से ईप् होता है; यथा;
महाशूरी) ।

२ न योपघाद्गघयादियर्जात् (जाते)—जातिवाची
शब्दों की उपधा में य हो तो ईप् नहीं होता । यथा; वीर्य-वीर्या । गवय
a species of ox, हय, मुक्य, मत्स्य और मनुष्य के उत्तर ईप् होता
है; यथा; गवयी, हयी, मुकयी ।

३ लोपो मत्स्यमनुष्ययोर्व्यस्य (सूर्य्यतिध्यागस्त्यमत्स्यानां
य उपधायाः)—ईप् होने से मत्स्य और मनुष्य के य का लोप होता है ।
यथा; मत्स्य-मत्सी, मनुषी ।

(ख) श्चदन्तादीप् (श्चतेभ्यो. णीप्)—श्चकारान्त शब्दों के
उत्तर ईप् होता है । यथा; दातृ-दात्री, घातृ-घात्री, कर्तृ-कर्त्री,
जनवितृ-जनवित्री, प्रसवितृ-प्रसवित्री ।

N. B. न स्वस्रादेः (न पट् स्वस्रादिभ्यः)—स्व इत्यादि शकारान्त शब्दों में ईप् नहीं होता । यथा; स्वसा, माता, बुद्धिता, याता, नवान्ता, तिस्रा; चतस्राः ।

(ग) नान्तादीप् (श्न्नेभ्यो ङीप्)—नकारान्त शब्दों के परे ईप् होता है । यथा; कामिन्-कामिनी, मानिन्-मानिनी, मायाविन्-मायाविनी, तपस्विन्-तपस्विनी, विलासिन्-विलासिनी, अधिकारिन्-अधिकारिणी, उपकारिन्-उपकारिणी, अनुरागिन्-अनुरागिनी, प्रियवादिन्-प्रियवादिनी, मनोहारिन्-मनो-हारिणी ।

N. B. उपधाया लोपोऽनः (अल्लोपोऽनः) ईप् होने से अन् भागान्त शब्दों की उपधा का लोप होता है । यथा; राजन्-राज्ञी, पर म् और व् संयुक्त उपधा का लोप नहीं होता ।

२ संख्यायाः—संख्यावाची नकारान्त शब्दों के परे ईप् नहीं होता है । यथा; पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश ।

३ न मनन्तात्—मन् भागान्त शब्दों के परे ईप् नहीं होता । यथा; क्षीमा, शामा, छदामा, अतिमहिमा ।

४ नानन्ताद्बहुमीही (अनो बहुमीहेः)—बहुमीहि समास होने से अन् भागान्त शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता । यथा; बहुनि सन्तपर्यायाणि बहुपर्वी वेशुपष्टिः ।

विभाषा ङाप् (ङाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्)—बहुमीहि समास होने से अन् भागान्त शब्दों के उत्तर विकल्प से ङाप् होता है और इसका आ रहता है । यथा; बहुपर्व्या, बहुपर्व्ये, बहुपर्व्याः, पक्षान्तर में बहुपर्व्या, बहुपर्व्याणी, बहुपर्व्याणः ।

ईप् लोपधालोपिनो वा (अन उपधालोपिनोऽन्वतरस्याम्)—जिन अन् भागान्त शब्दों की उपधा का लोप होता है उनके परे ईप् समास होने से विकल्प से ङाप् और ईप् होता है ।

गया, यदकःसाम्यत्र राजानः बहुराजा, बहुगणे, बहुराजाः, बहुगामी, बहुराज्यो, बहुराज्यः । पशाम्पर मे बहुराजा, बहुराजानो, बहुराजानः ।

N. B. पुनराक्षरः (पुनस्तिः । शशुपमयोनामनञिते) — गुणि इत्यादि निकलन से गिर होते हैं । यथा; पुन-पुनञि, पुनस्ति, पुनः, गन्-गुनी, मपान्-मपेनी, मपानी ।

(प) उरभ्यामीन्—उ और म् लोप होने वाले प्रत्ययों के योग से बने शब्दों के उत्तर ईप् होता है । यथा; उरतेत् भवत भयनी, इवत्-इवती, कियत्-कियती, धीमत्-धीमती, बुद्धिमत्-बुद्धिमती, पुत्रयत्-पुत्रयती, लज्जायत्-लज्जायती, बलवत्-बलवती, प्रमायत्-प्रमायती, हृतयत्-हृतयती, प्रेयस्-प्रेयसी, धेयस्-धेयसी, गरीयस्-गरीयसी, लघीयस्-लघीयसी, कर्नायस्-कर्नायसी । श्चारेत्-सत्-सती, रुदत्-रुदती, शप्वत्-शप्वती, द्विपत्-द्विपती, विघ्नत्-विघ्नती, कुर्वयत्-कुर्वयती, गृह्यत्-गृह्यती, जानत्-जानती ।

N. B. शतुर्नून्-भू-दिवादिभ्याम्—इं होने से म्वादि, रिवादि और चुादि गभीय पाठ के उत्तर शतु प्रत्यय को नून् का भागन होता है । नून् का न रहता है और शतु के त् के पूर्व समाप्त है । यथा; म्वादि-श्वत्-धावन्ती, गच्छत्-गच्छन्ती, पतत्-पतन्ती, तिष्ठत्-तिष्ठन्ती, चलत्-चलन्ती, चुरादि-परयत्-परयन्ती, क्षरयत्-क्षरयन्ती, स्मारयत्-स्मारयन्ती, स्थापयत्-स्थापयन्ती, पाष्यत्-पाष्यन्ती । दिवादि-दीव्यत्-दीव्यन्ती, नश्यत्-नश्यन्ती, जीर्ण्यत्-जीर्ण्यन्ती, मुह्यत्-मुह्यन्ती ।

२ वा तुदादेः (आच्छीनयोर्नुम्) — तुदादिगभीय शतुओं के परे विकल्प से नून् होता है । यथा; तुहत्-तुहन्ती, तुहती; इच्छत्-इच्छन्ती, इच्छती; पृच्छत्-पृच्छन्ती, पृच्छती; स्पृशत्-स्पृशन्ती, स्पृशती, सिञ्चत्-सिञ्चन्ती, सिञ्चती ।

३ अदादेश्चादन्तात् (आच्छीनघोर्नुम्)—अदादिगणोप भा-
षान्त धातु के परे विकल्प से नून होता है । यथा; यात्-यान्ती, पाती;
मात्-मान्ती, माती; भात्-भान्ती, भाती; स्नात्-स्नान्ती, स्नाती ।

४ विभाषा स्यतुः (आच्छीनघोर्नुम्)—ईप् होने से स्वतः
अन्तान्त शब्दों का विकल्प से नून होता है । यथा; भविष्यत्-भविष्यन्ती,
भविष्यती; करिष्यत्-करिष्यन्ती, करिष्यती; दास्यत्-दास्यन्ती, दास्यती;
दास्यत्-दास्यन्ती, दास्यती ।

(च) टित्-पिदभ्याभोप् (पिद् गौरादिभ्यश्च । टित्चाणन् द्वेष-
द्वेषन् मात्रच् तथच् टक् ट्यक्कञ्कारणः)—ट् और प् लोप होने वाले
अप्ययों से बने हुए शब्दों के परे ईप् होता है । यथा; ट्कारेत्—
याधन-गांयनी, कर्मकर-कर्मकरी, अर्थकर-अर्थकरी, यशस्कर-
यशस्करी, निशाचर-निशाचरी, भयङ्कर-भयङ्करी, चतुर्भ-चतुर्थी,
पञ्चम-पञ्चमी, षष्ठ-षष्ठी, सप्तम-सप्तमी, अष्टम-अष्टमी, नवम-
नवमी, दशम-दशमी, एकादश-एकादशी, द्वादश-द्वादशी, त्रयो-
दाश-त्रयोदशी, चतुर्दश-चतुर्दशी, षोडश-षोडशी, द्वय-द्वयी,
त्रय-त्रयी, चतुष्टय-चतुष्टयी, दयामय-दयामयी, स्वर्णमय-स्वर्ण-
मयी, मृन्मय-मृन्मयी, हिरन्मय-हिरन्मयी । प्कारेत्—तर्क-
कर्त्री, रजक-रजकी, मानय-मानयी, वैष्णव-वैष्णवी, द्रौपद-
द्रौपदी, पाञ्चाल-पाञ्चाली, मागध-मागधी, मैथिल-मैथिली,
चातुर-चातुरी, माधुर-माधुरी, भाग्निनेय-भाग्नि-
नेयी, पौत्र-पौत्री, दौहित्र-दौहित्री, ईदृश-ईदृशी, तादृश-तादृशी,
कीदृश-कीदृशी, सदृश-सदृशी, पतादृश-पतादृशी,
अन्यादृश-अन्यादृशी ।

N. B. ईप् लोपः घ्यणो हलः (हलस्तद्धितस्य)—ईप् होने
के परवर्ती घ्यम् प्रत्यय का लोप होता है । यथा; गार्ध-गार्धी,

के उत्तर ईप् होता है । यथा, द्वे अस्या दाघ्नौ द्विदार्त्नी A cow tied with two ropes, त्रीण्यस्या दामानि त्रिदार्त्नी; द्वे अस्या द्वायने द्विदायनी A cow two years old, त्रिहायणी, चतुर्हायणी गौः । हायन शब्द वयोवाचक न हो तो ईप् और णत्व नहीं होता । यथा, द्विहायना, त्रिहायना, चतुर्हायना शाला ।

(ण) इन्तादिभावा (ह्रदिकारादक्तिः)—इकारान्त शब्द के उत्तर विकल्प से ईप् होता है । यथा, ध्रेणी, ध्रेणीः; राजी, राजिः; आली, आलिः; कटी, कटिः; रात्री, रात्रिः; रजनी, रजनिः; शारी, शारिः; यष्टी, यष्टिः; अर्ही, अर्हिः; कपी, कपिः; मुनी, मुनिः; शकटी, शकटिः ।

N. B. नित्यं सङ्घुः (सङ्घशिश्वीति भाषायाम्)—सङ्घि में नित्य होता है । यथा, सङ्घी ।

२ न क्ते (ह्रदिकारादक्तिः)—क्ति प्रत्यय से बने हुए इकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता है । यथा, गतिः, स्थितिः, इक्तिः, मतिः, भक्तिः, मुक्तिः, बुद्धिः ।

३ वा शक्ति-पद्धतिभ्याम् (वह्नादिभ्यश्च)—शक्ति और पद्धति शब्द के उत्तर विकल्प से होता है । यथा, शक्ती, शक्तिः (अस्त्र अर्थ में), पद्धती, पद्धतिः ।

(त) पत्युनो यज्ञसंयोगे—यज्ञसंयोग अर्थात् यज्ञ के फलमागित्य अर्थ में पति के उत्तर ईप् और इकार के स्थान में न होता है । यथा, यशिष्ठस्य पत्नी, यशिष्ठानुष्ठितयज्ञफलमोक्षत्रोत्वर्थः । प्रामस्य पतिरियम् (यहाँ पति का अर्थ अधिकारिणी है, फलमोक्षी नहीं है; इसी से ईप् और न नहीं होता) ।

N. B. सपत्नीप्रभृतयः (नित्यं सपत्यादिषु)—सपत्नी इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, रामानः पतिरस्याः सपत्नी, एकः पतिरस्या

के उत्तर भान् घ ईप् होता है । यथा, भवस्य जाया भवानी, शर्वस्य जाया शर्वाणी, रुद्र-रुद्राणी, मृड-मृडाणी, इन्द्र-इन्द्राणी, वरुण-वरुणानी, इत्यादि ।

(क) न लोपो ब्रह्मणः—भान् होने से ब्रह्मन् के नकार का लोप होता है । यथा, ब्रह्मणो जाया ब्रह्माणी ।

(ख) मातुलादान् विभाषा (भक्तलोपाध्यायचोराकुम्भा)—मातुल शब्द के उत्तर विकल्प से भान् होता है । यथा, मातुलस्य जाया मातुलानी, मातुली ।

(ग) वा क्षत्रियादेरानीषो (अर्धक्षत्रियाभ्यां वा स्वाधे)—क्षत्रिय इत्यादि शब्द के उत्तर विकल्प से भान् और ईप् होते हैं । यथा, क्षत्रिय-क्षत्रियाणो क्षत्रिया A woman of the Kshatriya caste, क्षत्रियी the wife of a Kshatriya, अर्ध-अर्धवाणी, अर्ध्या, अर्ध्यो; उपाध्याय-उपाध्यायानी, उपाध्यायी The wife of a teacher, उपाध्यायी, उपाध्याया— a female preceptor, आचाट्या, आचाट्यानी the wife of an Acharya or holy teacher (न मूर्द्धस्य नहीं होता) आचाट्या a spiritual preceptress.

(घ) अर्धवितेवे हिमानेः (हिमार्णयोर्महत्त्वे । यकारोपे । यवर्त्तित्वात्)—अर्ध विशेष में हिम, भरपय, यव और यवन के उत्तर नित्य भान् और ईप् होता है । यथा, महत् हिमं हिमानी, महत् भरपयम् भरपयानी, मुष्टो यवः यवानी, यवतानी त्रिणि यवनानी ।

५ उरुणात्—उकारान्त शब्द के उत्तर उर् होता है और इसका ऊ रहना है । यथा, कुर-कुरा, कर्-कर्, मलात्, कर्त्तव्यात्, कर्त्तव्याः ।

न रज्ज्वादे—रज्जु इत्यादि के उत्तर ऊर्ण नहीं होता । यथा, रज्जुः, धेनुः, आलुः, इतुः, कमरज्जुः, रुक्माकुः, वृत्वाहुः, अध्वर्युः ।

(क) विभाषा तन्वादे—तनु इत्यादि के उत्तर विकल्प से ऊर्ण होता है । यथा, तनूः, तनुः, चञ्जूः, चञ्जुः ।

श्वधूः श्वशुरस्य—श्वशुर का निपातन से श्वधू होता है । यथा, शशुरस्य जाया श्वधूः ।

(ख) उरोशीपम्मे (ऊरुत्तरपदाशीपम्मे)—उपमा अर्थ में ऊरु के उत्तर ऊर्ण होता है । यथा, रम्मे श्वास्या ऊरु रम्भोरुः, करमाश्विवास्या ऊरु करभोरुः, करिकराश्विवास्या ऊरु करि-
तारु ।

(ग) वामादिपूर्वात्च (संहिताशककक्षणवामादेत्च)—वाम इत्यादि पूर्वार्थों ऊरु के उत्तर में ऊर्ण होता है । यथा, वामोरुः, हेतोरुः, सदोरुः, संहितोरुः, लक्षणोरुः, शफोरुः ।

Exercise—42

1 Give the feminine forms of:—प्रथम, मनुष्य, तपस्विन्, नद्, राजन्, युवन्, धीमन्, पतन्, नर्तक, गार्ग्य, उद्, आचार्य, उपाध्याय, मृगनयन, पति, मृदु, कुरु, श्वशुर, भविष्यन्, मनोहारिन्, कामिन्, शूद्र, गायक and क्षत्रिय ।

2 Give single words for:—आचार्यस्य जाया, श्वशुरस्य मातुलस्य जाया, धीरः पतिरस्याः, मृग इव भयनेऽस्या, ब्रह्मगो गणकस्य जाया, समानः पतिरस्या, पञ्च पतवोऽस्या, करमाशि-
जाया ।
3. Translate into Sanskrit—राजा कृपन् मे भवती कन्या
का स्वधर्मर किया । उसने एक मन्थ दान दिया । शीघ्रे जज्ञ

में मत्स्य की परछाईं देख कर जो उसे बेधेगा, उसी के साथ द्रौपदी का विवाह होगा । अनेक वीर राजाओं ने मत्स्य बेधने की चेष्टा की, पर कोई भी सफल न हुआ । अन्त में ब्राह्मण वेपथारी अर्जुन ने मत्स्य को मार गिराया और द्रौपदी को लेकर भाइयों सहित अपने स्थान को चले । पर दुर्योधन ह्वाधादि सब राजाओं ने युद्ध करके द्रौपदी को छीन लेने का विचार किया । युद्ध में अर्जुन ने सब को परास्त किया । द्रौपदी सहित पाँचों पाण्डव अपने घर पहुँचे और द्वार से ही माता को पुकार कर कहा कि हे माता, हम लोग एक फल लाये हैं । माता ने कहा कि भायम में खाँट लो । माता, के ऐसा कहने के कारण द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की स्त्री हुई ।

समास

१ एकवदीभावः समासः—दो या अधिक पद भावस में मिल जाते हैं तो उन्हें समास कहते हैं । समास में केवल अन्त के पद में विभक्ति होती है ।

N. B. लुक् विभक्तेः—समास के अन्तर्गत विभक्ति का लोप होता है ।

२ नस्यलोपः पूर्वस्य (न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य)—समास होने पर पूर्वपद के अन्तस्थित न् का लोप होता है ।

३ परस्य स्वरै (नस्तद्धिते)—स्वर वर्ग परे रहने से परपद के अन्तस्थित न् का लोप होता है (क्त्वा प्रत्यय परे रहने से भी परपद के अन्तस्थित न् का लोप होता है ।

४ लोपोऽर्जोवर्णयोः (यस्येति च)—स्वरवर्ग परे रहने से अ और इ का लोप होता है ।

५ अकारो नमो हलि (नलोपो नमः)—अकार वर्ग परे रहने से नन् का अ होता है ।

६ भन् स्वरै (तदमानुद्वयि)—स्वरवर्ग परे हो तो भन् का अन् होता है ।

७ टेलोपो डिति (टैः)—ए-इत् वाले प्रत्यय के परे रहने से टि का लोप होता है ।

८ तैर्घिशतैः (ति विशतेर्घिति —विशति के ति का लोप होता है ।

९ हस्योऽन्ते गोस्त्रियाघन्यार्थे (गोस्त्रियोरुपसङ्गनस्य)—वहाँ अन्य पदार्थ का बोध हो वहाँ अन्तस्थित गो रुग्ण और स्त्री प्रत्यय का हस्य होता है ।

स्त्री नैयसुनः—ईयसुन् के परवर्ती स्त्रीप्रत्यय का हस्य नहीं होता ।

१० समासाः प्रातिपदिकानि (कृतद्धितसमासाश्च)—समान होने पर समस्त भाग प्रातिपदिक होता है अर्थात् उनके उत्तर फिर विभक्तिवा लगती हैं ।

११ विदोष्यलिङ्गमन्यार्थे—वहाँ अन्य पदार्थ का बोध हो वहाँ समस्त भाग विदोष्य के लिंग को प्राप्त होता है ।

१२ मपुंसकौकयचने समाहारः—समाहार समान होने पर समस्त भाग मपुंसकलिङ्ग और पृथ्वचनान्त होता है ।

१३ पुंषद्वायः सख्यनामः—समास में स्त्रीलिङ्ग सख्यनाम का पुंवाच्य (पुल्लिङ्ग के समान आकार) होता है ।

१४ महतो महा विदोष्ये (भान्महतः समानाधिकरण-शारीययोः) विदोष्य पद परे हो तो महत् का महा होता है ।

अव्ययीभाव समास

१ पूर्वपदार्थप्रधानोऽभ्ययीभावः—जिस समास में पूर्वपद प्रधान हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं ।

(क) मपुंसकमभ्ययीभावे (भान्मदीभावश्च)—अव्ययी भाव समास होने पर समस्त भाग कर्त्वीयलिङ्ग होता है ।

(ख) भान्मदीभवे रस्यन्वाः सः (भान्मदीभावोऽन् रस्यन्वाः)—

पञ्चमो को छोड़ कर अकारान्त अन्वयाभाव के परे विभक्ति के स्थान में म् होता है । यथा; राममभिरुच्य प्रवृत्ता कथा भवितारम कथा, कृष्णस्य समीपान् गतः उपरुत्तान् गतः ।

(ग) विभक्त्यन्वयोपादानम्भ्योः (वृत्तिसंगतयोऽनुत्तम्)—तृतीयो भावः अन्वयो विभक्ति में विकल्प में म् होता है । यथा; रामस्य समीपेन कार्य्ये इति उपरामम्, उपरामेन वा कार्य्यम्, रामस्य समीपे स्थितः इति उपरामम्, उपरामे वा स्थितः ।

(घ) शुद्ध पाठात् (अन्वयीभावश्च । अन्वयःशब्दः पुनः)—प्रकारान्त विभक्त्यन्वयोपादान के परशर्तो विभक्ति का लोप होता है ।

३ गुणःशब्दस्य समीपः (अन्वये विभक्तिमनीगमृद्विबुद्धपर्यायान् स्वभावप्रतिशब्दशब्दुर्भाषितशब्दमण्डुर्ध्वयैगण्यस्तदायमन्वयतिप्रत्ययान्तक-
नेषु)—समीप, अभाव, अत्यय, असम्प्रति, पश्चात्, योग्यता, योग्यता, अनतिवृत्ति, आनुपूर्व्य, विभक्ति, सादृश्य, योग्यय, साकल्य, समृद्धि, पर्यन्त इत्यादि अर्थ में सुबन्त पद के साथ अक्षय का समास होता है । यथा; समीप—गृहस्य समीपं उप-
गृहम्, गङ्गाया समीपं उपगङ्गम्; अभाव—विघ्नस्य अभाव-
निर्विघ्नम्, मक्षिकानां अभावः निम्मेक्षिकम्; अत्यय—हिमस्या-
त्ययः अतिहिमम्, बाधाया अत्ययः अतिबाधम्; असम्प्रति—
निद्रा सम्प्रति न युज्यते अतिनिद्रम्, शोकः सम्प्रति न युज्यते
अतिशोकम्; पश्चात्—रथस्य पश्चात् अनुरथम्, अनुगृहम्;
योग्यता—रूपस्य योग्यं अनुरूपम्, अनुकूलम्; योग्यता—दिनं दिनं
प्रतिदिनम्, प्रतिगृहम्, अनतिवृत्ति—शक्तिमतिक्रम्य यथाशक्ति,
यथाज्ञानम्; आनुपूर्व्य—उद्येष्टस्य आनुपूर्व्येण अनुज्येष्टम्, अनु-
घर्णम्; विभक्त्यर्थ—हरी अघिहृदि, गृहे अघिगृहम् ।

सहः लोडकाले (अन्वयोभावे वाक्ये)—अन्वयोभावे समास में सह शब्द के स्थान में स होता है । यथा; सहस्य—हरेः सहस्रं

सहरिः; योगपत्त—चक्रेण युगपत् सचक्रम्; साकस्य—तृणमपि
 अपरिपश्य सतृगम्; सशुद्धि—मद्राणां समृद्धिः समद्रम्;
 पर्वन्त—अग्निप्रन्थपट्यन्तमधीते सान्नि । काल् अर्थ में स नहीं
 होता; यथा, सहपूर्व्याहम्, सहापराहम् ।

४ शवद्वधारणे—अवधारण अर्थ में सुवन्त के साथ यावत्
 का समास होता है । यथा, यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व,
 यावन्त्यमत्राणि सन्ति तावत् आमन्त्रयस्वेत्यर्थः; यावन्तः
 लोकास्तावन्तोऽव्युत्तमणामा यावच्छ् लोकम् ।

५ विभाषा वदिरादिः पञ्चमा (अपरिवदिरश्चः पञ्चमाः)—पञ्च-
 भ्यन्त पद के साथ वदिस्, प्राच्, अवाच्, प्रत्यच्, मप, परि-
 त्यादि शब्दों का विकल्प से समास होता है । यथा, वदह-
 र्तिम्, प्रामाद्वदिः प्रागुपवनम्, उपवनात् प्राक् ।

६ आह्मव्यादाभिविध्योः—मट्यादा और अभिविधि (तेन
 विना मट्यादा, तत्सहितोऽभिविधिः) अर्थ में सुवन्त पद के
 साथ आह् अव्यय का विकल्प से समास होता है । यथा,
 आपाटलिपुत्रम् (आपाटलिपुत्रात्) वृष्टो देवः; आकुमारं
 (भा कुमारेभ्यः) पशुः कालिदासस्य; आमुक्ति (आमुक्तेः)
 संसारः ।

७ लक्ष्णेनाभिप्रती आभिमुख्ये—आभिमुख्य (सम्मुख) अर्थ में
 लक्ष्यवाचक सुवन्त पद के साथ अभि और प्रति अव्ययों का
 विकल्प से समास होता है । यथा, अभ्यग्नि (अग्नि अभि)
 रुद्रमाः पतन्ति, प्रत्यग्नि (अग्नि प्रति) ।

८ यस्य चायामस्तेनानुः (यस्य चायामः)—जिसकी दीर्घता का
 बोध हो उसके साथ अनु अव्यय का विकल्प से समास होता
 है । यथा; अनुगङ्गम् (गंगाया अनु) वाराणसी, गंगा दीर्घ-
 एतद्गदीर्घ्योपलक्षिता इत्यर्थः ।

१. पारमथी पठ्या (पारे मध्ये पठ्या वा)—पठ्यन्त पद के साथ पार और मध्य शब्दों का विकल्प से अव्ययीभाव होता है। यथा; समुद्रस्य पारं पारेस्तमुद्रम्, गङ्गायाः मध्यं मध्ये-गङ्गम् (निपातन से ए का आगम होता है)। पश्चान्तर में पृष्ठी समास होता है।

१० संख्या नदीभिः समाहारे (नदीभिश्च । समाहारे चावभिव्यक्ते)—समाहार समझे जाने से नदीवाचक सुयन्त पद के साथ संख्यावाचक शब्द का अव्ययीभाव समास होता है। यथा; तिस्रणां गंगानां समाहारः त्रिगङ्गम्, पञ्चनदम्, सप्तगोदावरम्।

अन्यपदार्थं च संशयात्—संज्ञा अर्थ में और अन्य पदार्थ का बोध होने से नदीवाचक सुयन्त पद का अव्ययीभाव समास होता है। यथा; उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन् उन्मत्तगङ्गम्, लोहित-गङ्गम्, तुष्णीगङ्गम्, शनैर्गङ्गम्, इमानि देशविशेषनामानि।

११ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि (च)—अव्ययीभाव समास में तिष्ठद्गु-यद्गु, आयतीगवम्, खलेयवम्, खलेशुसम्, लूनयवम्, लूप-मानयवम्; पूतयवम्, पूयमानयवम्, संहितयवम्, संहियमाण-यवम्, संहितशुसम्, संहियमाणशुसम्, सामभूमि, समपदाति, सुपमस्, विपमस्, दुःपमम्, निःपमम्, अपसमम्, आयतीस-मम्, प्रौढम्, पापसमम्, पुण्यसमम्, प्राङ्गम्; प्ररथम्, प्रमृगम्, प्रदक्षिणम्, अपरदक्षिणम् सम्प्रति और असम्प्रति निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; तिष्ठन्ति गायो यस्मिन् काले शोढाय तिष्ठद्गु, आयान्ति यस्मिन् काले गायो गोष्ठम् आयतीगवम्।

N. B. शरदादेरन् (अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः)—अव्ययीभाव समास में शरद्, विराट्, अनन्, मनन्, अनडुर्, जगन्, दिग्, दिमपत्, विद्वत्, विद्, सद्, दिग्, रण्, विग्, यदुर्, लड्, यद्, क्विप् और चरा शब्दों के उत्तर अन् होता है और अन् का अर्थ

है । यथा; शरदः समीपम् उपशरदम्, प्रतिदिशम्, आहिमवतम्, अनुदशम् ।

२ जराया जरस् (जराया जरस् च)—अन् होने से जरा का अर्थ होता है । यथा; जरायाः समीप उपजरसम् ।

३ सरजसोपशुने (अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वन-
बुद्धकशामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्व्वष्टीवपदष्टीधनकन्दिवरा-
त्रन्दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषानुपदुष्यायुष्यायुषम्यञ्जुप-
तिोक्षमहोक्षशुद्धाक्षापशुनगोष्ठ्याः) — सरजन और उपशुन
शब्दों से सिद्ध होते हैं । यथा; रजोऽपि अपरित्यज्य सरजसम्, शुनः
पि उपशुनम् ।

४ प्रतिपरसमनुभ्योऽक्षणः—प्रति, पर, समू और अनु के पा-
अक्षि शब्द के उत्तर अन् होता है । यथा; प्रलक्षम्, परोक्षम्,
प्रम्, अनलक्षम् ।

५ अनन्तात् (अनन्ध)—अन् भागान्त शब्द के उत्तर अन् होता
यथा; उपराजम्, अध्यात्मम्, प्रत्यध्वम् ।

६ नपुंसकात् (नपुंसकादन्यतरभ्याम्)—नपुंसक अन्-
उ शब्द के उत्तर विकल्प से अन् होता है । यथा; उपवर्मम्, उपवर्म्म ।

गिरि-नदी-पौर्णमास्याप्रहायणीभ्यः (नदीपौर्णमास्या-
प्रहायणीभ्यः) गिरेश्च सेनकस्य)—गिरि, नदी, पौर्णमासी और
प्रहायणी के उत्तर विकल्प से अन् होता है । यथा; उपगिरिम्, उपगिरिः;
उपनदी, उपनदि; उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि; उपप्रहायणम्, उपप्रहायणि ।

७ रूपशान्ताद्यापञ्चमात् (भयः)—पञ्चमभिन्न रूपश-वशान्ति
शब्दों के उत्तर विकल्प से अन् होता है । यथा, उपदशम्, उपदशत्;
अनुपनिषम्, अनुसमित् ।

८ प्रतेहरः सप्तमीस्थानात्—प्रति शब्द के परवर्ती सप्तम्यर्थ में
प्रतेहर उरु शब्द के उत्तर अन् होता है । यथा; हरति, प्रतुरसम् ।

६ अनुगममायामे—ईर्ष्या अर्थ में अनुगमन् मिलान से सिद्ध होता है । यथा; गोः पशवः अनुगमम् ।

तत्पुरुष-समास

१२ उत्तरपदप्रधानतत्पुरुषः—जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं ।

N. B. परलिङ्गं तत्पुरुषे (परलिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः)—तत्पुरुष समास होने पर समस्त भाग उत्तर पद के लिंग को प्राप्त होता है ।

२ रात्राद्वाहा पुमांसः (रात्राद्वाहाः पुंमि)—तत्पुरुष समास होने में समस्त भाग के अन्तस्थित रात्र, अह और अह शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं ।

३ रात्रं नपुंसकं संख्यापूर्व्यम्—संख्यावाचक शब्द पहले हो तो रात्र शब्द नपुंसक होता है ।

४ पुण्यदहः (पुण्यसुदिनाभ्यामज्ञो नपुंसकत्वंयक्तव्यम्)—पुण्य शब्द के परवर्ती अह नपुंसक होता है ।

१३ द्वितीया धितादिभिः (द्वितीया धिनातीत्यत्रितयगतत्वस्तप्रकारैः)—धित इत्यादि सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त पद का समास होता है और उसे द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं । यथा; षष्ठं धितः षष्ठधितः;

दुःखमतीतः दुःखातीतः, कृपं पतितः कृपपतितः, गृहं गतः गृहगतः, तुहिनमत्यस्तः तुहिनात्यस्तः, सुखं प्राप्तः सुखप्राप्तः, सुखापन्नः सुखापन्नः, प्रामं गामी प्रामगामी (गम्यादीनामुपसंख्यानम्);

अन्नं बुभुक्षुः अन्नबुभुक्षुः, वेदं विद्वान् वेदविद्वान् ।

(क) खट्वा क्तेन कुत्सायाम् (खट्वा क्ते)—निन्दा अर्थ में क प्रत्यय से बने सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त खट्वा शब्द का समास होता है । यथा; खट्वां आरुहः खट्वारुहः ।

(ख) काला अत्यन्तसंयोगे (कालाः । अत्यन्तसंयोगे च)—अत्यन्त संयोग अर्थ में सुबन्त पद के साथ द्वितीयान्त कालवाचक सुबन्त पद का समास होता है । यथा; मुहूर्तं सुखं मुहूर्त-

सुखम्, मानं गम्यः मासगम्यः, एवं भोग्यः दर्पभोग्यः; सुहृत्तं मानं दर्पं ध्याप्य इत्यर्थः ।

१८ तृतीया रूपेण (पूर्वगतसमसो न चंद्रान्निपुणमिधयः)—

पूर्व इत्यादि सुबन्त पद के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है और उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। यथा, मासेन पूर्व्यः मास-
पूर्व्यः, पर्येण धवसः पर्यावरः, याचा कलहः याकलहः, गुडेन
मथः मुहमिधः, भाचारेण इलक्षणः (विक्रणः) भाचारइलक्षणः,
धान्येन धर्मः धान्यार्थः, माता सद्गुणी मातृसद्गुणी, विशा
ममः विनृसमः ।

(६) ऊनार्थ (पूर्व)—ऊनार्थ सुबन्त पद के साथ

तृतीयान्त पद का समास होता है। यथा, एकेन ऊनः एकोनः,
रेण्या होनः विद्याहीनः, धमेण रहितः धमरहितः, गव्येण
मथः गव्यगृन्थः, अङ्गेन विकलः अङ्गविकलः ।

(७) कर्तृकारणयोः (कर्तृकारणं कृता बहुलम्)— कृन्-प्रत्यय

के सुबन्त पद के साथ कर्त्ता और कारण में विहित तृतीयान्त
का समास होता है। यथा; कर्त्ता में—ध्याप्तेन हतः ध्याप्त-
; अहिना दष्टः अहिदष्टः, ध्यासेन रचितः ध्यासरचितः,
पानिना प्रणीतं पाणिनिप्रणीतम्, नारदेन प्रोक्तं नारदप्रोक्तम्,
न मक्ष्यं द्विजमक्ष्यम्, पुत्रेण देयं पुत्रदेयम् । कारण में—
मंत्रः मन्त्रभिन्नः, भस्मिना छिन्नं भस्मिच्छिन्नम्, भस्मिना
अग्निदाघः, जलेन सिक्तः जलसिक्तः, अञ्जलिना पेयं
लिपेयम्, शिरसा धार्यं शिरोधार्यम् ।

१ चतुर्थी बलि-हित सुयीः (चतुर्थीतदर्थार्थबलिहितसुजाश्रितेः ।

अथवालो विशेषबलिहता चेति वक्तव्यम्)—सुबन्त बलि, हित

सुख शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है

और इसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं। यथा; भूताय बलिः भूत-

बलिः, पुत्राय हितं पुत्रहितम्, भ्रात्रे सुपं भ्रातृसुखम् ।

(क) अर्थेन च (चतुर्थीतदर्थार्थं)—अर्थ शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है । समस्त भाग विशेष्य के लिंग को प्राप्त होता है । यथा; द्विजाय अर्थं द्विजार्थः सुपः, द्विजार्था यथागूः, द्विजार्थं पयः ।

(ख) विकृतिः प्रकृत्या तादर्थ्यं (चतुर्थीतदर्थार्थं)—तादर्थ्य अर्थ में प्रकृतिस्थलीय सुबन्त पद के साथ विकृतिस्थलीय चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है । यथा; कुण्डलाय हिरण्यं कुण्डलहिरण्यम्, यूषाय दाह यूषदाह—wood for sacrificial post.

१६ पञ्चमी भयादिभिः (पञ्चमी भयेन । भयभीतमीरिति वाच्यम् । अपेतापोड मुक्तभतितापत्रस्तैरत्वशः)—भय इत्यादि सुबन्त पद के साथ पञ्चम्यन्त पद का समास होता है उसे पञ्चमो तत्पुट्य कहने हैं । यथा; व्याघ्रात् भयं व्याघ्रभयम्, व्याघ्रात् भीतः व्याघ्रभीतः, व्याघ्रात् भीः व्याघ्रभीः, व्याघ्रात् भीतिः व्याघ्रभीतिः, गृहात् निर्गतः गृहनिर्गतः, अधर्मात् जुगुप्सुः अधर्मजुगुप्सुः, सुप्नात् अपेतः सुष्णापेतः, बन्धनात् मुक्तः बन्धनमुक्तः, रथान् पतितः रथपतितः, तरङ्गात् अपत्रस्तः तरङ्गापत्रस्तः, विदेशान् आगतः विदेशागतः ।

१७ षष्ठी समर्थेन (षष्ठी)—समर्थसुबन्त पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास होता है उसे षष्ठी तत्पुट्य कहने हैं । यथा; गङ्गायां जलं गङ्गाजलम्, तरोः छाया तदच्छायाः, आग्नेः शिखा अग्निशिखा, वायोः घेगः वायुघेगः, जलस्य प्रगाढः जलप्रगाढः, गुल्मस्य भोगः गुल्मभोगः, पयसः पानं पयःपानम्, बन्धायाः दानं बन्धादानम्, गर्वां दोहः गोदोहः, भ्राताया भद्रः भ्राताभद्रः, दशावाक्यन्तः दशाक्यन्तः, सूर्यस्य उदयः सूर्योदयः, वृष्टेः पानः वृष्टि-

पातः, शिरसः छेदः शिरश्छेदः, गवां वधः गोवधः, पितुः गृहं पितृगृहम्, राज्ञः भवनं राजभवनम्, मनीः वचनं मनुवचनम्, अर्थस्य नाशः अर्थनाशः, कृपस्य उदकं कृपोदकम् ।

N. B. न निर्धारणे—निर्धारण अर्थ में विहित पट्टी का समास नहीं होता । यथा, मनुष्याणां क्षत्रियः शूद्रः, गवां कृष्णा बहुशीरा ।

२ न पूरणार्थः (पूरणगुणसुद्धिनार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन)—पूरणार्थ पद के साथ पठ्यन्त पद का समास नहीं होता । यथा, राज्ञां प्रथमः, पुत्रयोः द्वितीयः, भ्रातॄणां तृतीयः, शिष्याणां चतुर्थः, अत्राणां पञ्चमः ।

३ न गुणवाचिभिः (पूरण)—गुणवाचक पद के साथ पठ्यन्त पद का समास नहीं होता । यथा, पटस्य बौद्धम्, कोकनदस्य कौदित्यम्, आकाशस्य नीलिमा, द्राक्षाया माधुर्यम् । कहीं कहीं होता है, यथा, अर्थस्य गौरवम् अर्थगौरवम्, उदके मान्द्यम् सुद्धिमान्द्यम्, अर्थस्य कार्त्तम् अर्थकार्त्तम् ।

४ न तृप्त्यर्थः (पूरण)—तृप्त्यर्थक पद के साथ पठ्यन्त पद का समास नहीं होता । यथा, अपां तृप्तः, कलानां सुद्धितः, अक्षरव आशितः ।

५ न तृजकाभ्यां याजकादिवर्जम् (तृजकाभ्यां कर्त्तरि)—तृ और अक्ष प्रत्यय से बने शब्दों के साथ पठ्यन्त पद का समास नहीं होता । यथा, तृच्—जगतः सञ्च, सुखस्य दाता, दुःखस्य हर्ता; अक—पत्नी पालकः, वृक्षाणां छेदकः, शत्रूणां घातकः । याजक इत्यादि का समास होता है; यथा, शूद्रयाजकः, देवपूजकः, राजपरिचारकः, वेदाध्या-; सन्तोत्साहकः, देवनातकः, जलपरिवेचकः, भुवनमर्ता, इतिहोता, शोता, गुणमाहकः ।

६ सप्तमी शीघ्रादिभिः (सप्तमी शीघ्रैः)—शीघ्र, घूर्त्त, क्षिप्र, प्रवीण, संवीत, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, सिद्ध, शुभक, पक्व इत्यादि शब्द के साथ सप्तम्यन्त पद का

समास होता है और मध्यमी मन्पुत्र कदलाना है । यथा, दानं शीघ्रः क्षामशोभः, शास्त्रे प्रवीणः शास्त्रप्रवीणः, रत्ने परिहृतः रत्नपरिहृतः, कीर्त्यायां वृशन्ः कीर्त्यावृशन्ः, कर्मोन् निपुण कर्मनिपुणः, भातये शुष्कः भातयशुष्कः, ग्यान्वो वरतः ग्यान्वीवरतः ।

(क) पूर्वःशने— कृण भगं में कृत्य प्रत्यय से बने शब्द के साथ सतम्बन्त पद का समास होता है । यथा, मासं देवं मासदेवं कृणम्, वर्षं परिशोष्यं वर्षंपरिशोष्य कृणम् ।

(ल) जन्-हे-राशतणा—न. प्रत्यय से बने शब्द के साथ दिन और रात्रि के भवयन बोधक सतम्बन्त पद का समास होता है । यथा, पूर्वाह्ने कृतं पूर्वाह्नकृतम्, अपराह्ने कृतं अपराह्नकृतम्, पूर्वाह्ने कृतं पूर्वाह्नकृतम्, अपराह्ने कृतं अपराह्नकृतम् ।

(ग) कुरसायां दाहवाचना (ध्वद्क्षेपक्षेपे)— निन्दा अर्थ में काकवाचक मुबन्त शब्द के साथ सतम्बन्त पद का समास होता है । यथा, तीर्थे काक इय तीर्थकाकः, तीर्थेवायसः, तीर्थेध्वद्क्षः, अनवस्थित इत्यर्थः ।

१० पूर्वादिरेकदेशिनेकवचने (पूर्वापराधरोत्तरेकदेशिनेकाधिरणे)— एकवचनान्त भवययी के साथ पूर्व, अपर, अधर और उत्तर का समास होता है । यथा, पूर्वे कायस्य पूर्वकायः, अपरकायः, अधरकायः, उत्तरकायः । एकवचन नहीं होने से नहीं होता । यथा, पूर्व्यं क्षात्राणामामन्त्रयस्थ ।

१६ अर्द्धं नपुंसकम्—एकवचनान्त भवययी के साथ क्लृप्त-लिङ्ग अर्द्ध शब्द का समास होता है । यथा, अर्द्धं पिप्पलीः अर्द्धं पिप्पली । अन्य लिङ्ग में नहीं होता; यथा, ग्रामस्य अर्द्धः । एकवचन नहीं होने से नहीं होता । यथा, अर्द्धं पिप्पलीनाम् ।

१९ कालाः परिमाणिना—परिच्छेदवाचक पद के साथ काल-
वाचक पद का समास होता है । यथाः मासो जातस्य
मासजातः, वर्षो मृतस्य वर्षमृतः ।

२० एकदेशवाचिना च—एकदेशवाचक पद के साथ काल-
वाचक पद का समास होता है ।

अडोऽड एकदेशात् (अडोऽड एतेभ्यः)—एक देशवाचक पद के
परवर्ती अडन् का अह्न होता है । यथाः पूर्वं अह्नः पूर्व्याह्नः,
मध्यं अह्नः मध्याह्नः, अपरं अह्नः अपराह्नः, सायं अह्नः सायाह्नः ।

N. B. राशेरन् (अह्नः सर्वैकदेशसंख्यातुपुण्याच्च राश्रेः)—
एकदेशवाचक शब्द के परवर्ती राशि शब्द के उत्तर अन् होता है और
सिद्ध अ रहता है । यथाः पूर्वं राश्रेः पूर्वराश्रः, मध्यं राश्रेः मध्यराश्रः,
अपरं राश्रेः अपरराश्रः ।

२१ विभाषा द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-तुर्व्यामि (द्वितीयतृतीयचतुर्थ-
तुर्व्यामिन्वत्तरशाम्)—पष्ठ्यन्त अवयवी के साथ द्वितीय,
तृतीय, चतुर्थ और तुर्व्य का विकल्प से समास होता है ।
यथा, द्वितीयं भिक्षायाः द्वितीयभिक्षा, तृतीयभिक्षा, चतुर्थ-
भिक्षा, तुर्व्यभिक्षा । पश्चान्तर में षष्ठी तत्पुरुष होता है; यथा,
भिक्षायाः द्वितीयं भिक्षाद्वितीयम्, भिक्षातृतीयम्, भिक्षा-
चतुर्थम्, भिक्षातुर्व्यम् ।

२२ अलं चतुर्व्यां पुंवच्च—चतुर्व्यन्त पद के साथ अलं अवयव
का समास होता है और चतुर्व्यन्त स्त्रीलिंग पद का पुंवद्भाव
होता है । यथा; अलं जीविकायै अलंजीविकः ।

२३ अत्यादयः कान्तादी द्वितीयया—कान्त इत्यादि अर्थ में
द्वितीयान्त पद के साथ अति इत्यादि का समास होता है
और स्त्रीलिंग द्वितीयान्त पद का पुंवद्भाव होता है । यथा,
अतिकान्तः खट्वां अतिखट्वः, उत्कान्तो घेलां उदुघेलः ।

२४ अत्रादयः कृशदौ तृतीया—कृ. ए इत्यादि अर्थ में तृतीयान्त पद के साथ अत्र इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग तृतीयान्त पद का पुंषद्भाव होता है । यथा, अत्रकृ. एः कोकिलया अत्रकोकिलः ।

२५ पर्यादयो ग्लानादौ चतुर्थ्या—ग्लान इत्यादि अर्थ में चतुर्थ्यन्त पद के साथ परि इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग चतुर्थ्यन्त पद का पुंषद्भाव होता है । यथा, परिग्लानः अध्ययनाय पर्यध्ययनः, परिग्लानः सेवार्ये परिसेवः ।

२६ निरादयः क्रान्तादौ पञ्चम्या—क्रान्त इत्यादि अर्थ में पञ्चम्यन्त पद के साथ निर् इत्यादि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग पञ्चम्यन्त पद का पुंषद्भाव होता है । यथा, निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः, उत्थितो निद्रायाः उग्नद्रः ।

२७ सामिस्वयमौ केन (स्वयकेन)—क प्रत्यय से बने सुपन्त पद के साथ सामि और स्वयम् अव्ययों का समास होता है । यथा, सामिदृतम्, सामिघटितम्, स्वयद्वृतम्, स्वयन्दत्तम् ।

२८ नञ् सुधा (नञ्)—सुपन्त पद के साथ नञ् का समास होता है । इसे नञ् समास या नञ् रत्युस्य कहते हैं । यथा, न घ्राहणः अघ्राहणः, न मोघः अमोघः, न प्रियः अप्रियः, न विहतः अविहतः, न सिद्धः असिद्धः, न सुखं असुखम्, न दर्शनम् अदर्शनम्, न उपलम्भः अनुपलम्भः ।

२९ ईपरहता — कृन्तभिन्न सुपन्त पद के साथ ईप् अन्वय का समास होता है । यथा, ईपत्विङ्गलः, ईपत्त्रिकणः, ईपन्मुकुलितः ।

३० भाषीपर्ये (कुपतिश्रावः)—ईप् अर्थ में सुपन्त पद के साथ अष् अव्यय का समास होता है । यथा, भाषपुष्पः, भाषोदितः ।

२१ स्तौ पूजयाम् (कुगति प्रादयः)—प्रशंसा अर्थ में सुबन्त
इ के साथ तु और अति अव्यय का समास होता है । यथा;
तुपुरयः, सुब्राह्मणः, अतिशुद्धः, अतिदयालुः ।

२२ दुःखिन्शयाम् (कुगति प्रादयः)—मिन्दा अर्थ में सुबन्त पद
के साथ दुर् अव्यय का समास होता है । यथा, दुष्कुलम्,
दुर्नोतिः, दुश्चरितम् ।

२३ कुः पापायै (कुगति प्रादयः)—कुत्सित अर्थ में सुबन्त पद
के साथ कु अव्यय का समास होता है । यथा, कुब्राह्मणः,
कुपुरयः, कुसंस्कारः ।

२४ धातुमिहपदादि (उपपदमतिद्)—धातु के साथ उपपद
(जिन सुबन्त पदों के परे धातु के उत्तर कृत् प्रत्यय हो उन्हें
उपपद कहने हैं) का समास होता है । इसको उपपद समास
कहते हैं । यथा, कुम्भकारः, प्रभाकरः, निशाकरः, हितकरः,
नितिकरः, अग्रसरः, जलचरः, पार्श्वचरः, हिलाशयः, सर-
जम्, पङ्कजम्, अण्डजः, जलजः, पतंगः, भुजगः ।

२५ उपसर्गाच्च (कुगतिप्रादयः)—धातु के साथ उपसर्ग का
सास होता है । यथा, सम् — संस्करोति, संस्कारः, संस्कृत्यः;
-विजयते, विजयः, विजित्यः, अग्नि—अग्निपिञ्चति, अग्निपेकः;
अपिचयः, आ—आरभते, आरम्भः, आरभ्य ।

अर्थादि च्चि दासत्त्वं — धातु के साथ ऊरी, उररी, आविस्,
स्, स्वधा, स्वाहा, वपद्, वीषट् इत्यादि शब्दों और च्चि
डाच् प्रत्यय का समास होता है । यथा, ऊरी—ऊरी-
करोति, ऊरीकरणम्, ऊरीकृत्यः, आविस्—आविष्करोति, आवि-
ष्किया, आविष्कृत्यः, प्रादुग्—प्रादुर्भवति, प्रादुर्भावः, प्रादुर्भूय ।
नि—स्वीकरोति, स्वीकारः, स्वोहृत्यः, मस्मीभवति, मस्मी-
भावः, मस्मीभूयः, शच्—समयाकरोति, समयाकरणम्, सदा-
हृत्यः, दुःखाकरोति, दुःखाकिया, दुःखाकृत्यः ।

अनुकरणञानिति परम्—धातु के साथ अनुकरण शब्दों का समास होता है । यथा; खाट् करोति, खाट्करणम्, खाट्कृत्य । द्राङ्करोति, द्राङ्क्रिया, द्राङ्कृत्य । इति शब्द परे होने से नहीं होता । यथा; खाडिति वृत्वा निष्ठोयति, द्रामिति कृत्वा पतितः ।

आदरानादयोः उदसती—यथाक्रम आदर और अनादर अर्थ में धातु के साथ सत् और असत् शब्द का समास होता है । यथा; सत्करोति, सत्कारः, सत्कृत्य; असत्करोति, असत्क्रिया, असत्कृत्य ।

अलं भूषणे (भूषणेऽलम्)—भूषण अर्थ में धातु के साथ अलं का समास होता है । यथा अलङ्करोति, अलङ्कारम्, अलङ्कृत्य ।

अन्तरपरिमहे—धातु के साथ अन्तर् शब्द का समास होता है । यथा; अन्तर्भवति, अन्तर्भावः, अन्तर्भूय । परिग्रह अर्थ में नहीं होता; यथा, अन्तर्हृत्वा गतः, हतं परिगृह्य गत इत्यर्थः ।

पुरोऽध्ययम्—धातु के साथ पुरस् अव्यय का समास होता है । यथा; पुरस्करोति, पुरस्कारः, पुरस्कृत्य ।

अस्तं च—धातु के साथ अस्त अव्यय का समास होता है । यथा; अस्तङ्गच्छति, अस्तङ्गतः, अस्तङ्गत्य ।

अच्छ च बदगत्यर्थः (अच्छगत्यर्थं वरेणु)—यद् और गत्यर्थ धातु के साथ अच्छ अव्यय का समास होता है । यथा; अच्छयति, अच्छोद्य, अच्छगच्छति, अच्छगत्य, अमिगुणमित्यर्थः ।

अन्तर्षी तिरः (तिरोऽन्तर्षी)—व्ययपान अर्थ में धातु के साथ तिरच् अव्यय का समास होता है । यथा; तिरोभवति, तिरोभावः, तिरोभूय ।

विभाषा कृत्वा (विभाषा कृति)—ए. धातु के साथ विषद्व से होता है । यथा, तिरन्कृत्य, तिरःकृत्या ।

ताशान् प्रभृतीनि च—ए. धातु के साथ ताशान्, मिथ्या,

नमस्, प्रादुस्, अर्धे, वशे, अमा, अद्धा, उष्णम्, शीतम्, माद्रम्, विकसने, प्रहसने इत्यादि शब्दों का विकल्प से समास होता है। यथा, साक्षात्कृत्य, साक्षात् कृत्वा; नमस्कृत्य, नमः कृत्वा; वशोकृत्य, वशे कृत्वा; मिथ्याकृत्य, मिथ्या कृत्वा।

अनुप्रासेप उरसिमनसौ (अनत्वाच्यान उरसि-मनसौ)—कृ धातु : साथ उरसि और मनसि सप्तम्यन्त पद का विकल्प से समास होता है। यथा, उरसिकृत्य, उरसि कृत्वा स्वीकृत्ये-त्यर्थः। मनसि कृत्य, मनसि कृत्वा, निश्चित्येत्यर्थः। उपश्लेष में नहीं होता; यथा, उरसि शयित्वा।

मध्येपदे निवचने च-कृ धातु के साथ मध्ये पदे और निवचने म्यन्त पदों का विकल्प से समास होता है। यथा, मध्ये-मध्ये कृत्वा; पदेकृत्य, पदे कृत्वा; निवचनेकृत्य, निवचने । उपश्लेष अर्थ में नहीं होता है। यथा, मध्ये शयित्वा, त्वा।

हस्त्ये हस्ते पाणानुपयमने—विवाह अर्थ में कृ धातु के साथ और पाणी सप्तम्यन्त पद के साथ नित्य समास होता है। यथा, हस्त्येकृत्य, पाणीकृत्य, दारकर्म कृत्वेत्यर्थः।

कर्मधारय-समास

३६ तत्पुरुषः समानाधिकरणपदः कर्मधारयः (तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः)—जिस तत्पुरुष समास में समास होने वाले पद समानाधिकरण अर्थात् विशेष्य-विशेषण भाव को प्राप्त हों उसे कर्मधारय कहते हैं।

३७ विशेषण विशेष्येण (विशेष्यं विशेष्येण बहुलम्)—विशेष्य पद के साथ विशेषण पद का समास होता है। यथा, नीलं उत्पलं नीलोत्पलम्, नवः पल्लवः नवपल्लवः, मधुरं वचनं मधुरवचनम्, नव्यं अन्नं नवान्नम्, सर्व्वे लोकाः सर्व्वलोकाः, विश्वे-

देवाः विहादेवाः, इहो वन्वाः इहवन्वाः, सुगति मन्दर्ग सुगि-
मन्दमग, मगः जन्मवाः नान्जन्मवाः, मन पुग्वाः मन्पुग्वाः,
मदान् देवः मदादेवः, मदान् गीः मदागीः, वामः पुग्वाः
वामपुग्वाः, केवलः गीवाकरणः केवलवैवाकरणः, जान नैया-
विकः जग्नेवाविकः, मन मन्वः मन्वर्षः, अर्थो वनाः मन्-
वमवः, मव मदाः मवमदाः ।

N II पुंनन् पूर्व्यं भागिनपुंस्कं कर्मवाच्ये (पुंनन्कर्म-
वाच्ये जार्तावदेशीयेण) — कर्मकारण समान होने से पूर्व्य के
(वरिष्ठ उग पर का पुलिग और लोहित दोनो होना ही) पुंनन्व देण
है । यथा, सुन्दरी मन्दिरा सुन्दामन्दिरा, हृद्य चतुरंगी हृद्यचतुरंगी,
वाचिका श्रो वाचकश्री, वद्यमी कन्या वन्वद्यम्, सुदेवी महर्षी सुदेवः
भाष्या, प्रकृणी भाष्या प्रकृणमर्ष्या । ऊर्ध्वव्ययान्त का नहीं होता
यथा, वामोऽ महर्षा वामोऽमर्षा ।

३८ काने नन् विगिष्टेमानन् — नन् युक्त क-प्रत्ययान्त पद के
साथ नन्मित्र क-प्रत्ययान्त पद का समास होता है । यथा,
शुनञ्च तन् भृशतञ्च हृताहृतम्, मुक्तञ्च तन् अमुक्तञ्च मुक्ता-
भुक्तम् पीतञ्च तन् अपीतञ्च पीतापीतम्, क्लिष्टञ्च तन् अक्लि-
ष्टञ्च क्लिष्टाक्लिष्टम्, पक्वञ्च तन् अपक्वञ्च पक्वापक्वम् । ममान्
प्रकृति वाले शब्दों ही में होता है । सिद्धञ्च अमुक्तञ्च, ऐसे
म्यान में समास नहीं होता ।

३९ वर्णो वर्णेन — वर्णवाचक पद के साथ वर्णवाचक पद
का समास होता है । यथा, नीलञ्च स लोहितञ्च नीललोहितः
लोहितञ्च स धवलञ्च लोहितधवलः; पीतञ्च स धवलञ्च
पीतधवलः ।

४० पूर्वोत्तरकालयोः क्तः (पूर्वकालेऽन्वर्त्तन्तपुराणवक्त्रेण
समानाधिकरणेन) — पूर्वकाल और उत्तरकाल समझे जाने से क-
प्रत्ययान्त पद का समास होता है । यथा, पूर्व्य स्नातः पश्चा-

दुलितः, स्नातानुलिप्तः, यातायातः, शयितोलियतः, दत्ताप-
हतम्, मुक्तोद्गीर्णम् ।

४१ उपमानानि साधर्म्यवचनैः (उपमानानि सामान्यवचनैः)—उप-
मान और उपमेय के समानधर्मवाचक पद के साथ उपमान-
वाचक पद का उपमान समास होता है । यथा, मन इव श्यामः
धनश्यामः, अर्षव इव गर्भीरः अर्षवगर्भीरः, शैल इव उक्षतः
शैलोक्षतः, अनल इव उज्ज्वलः अनलोज्ज्वलः, नवनीतमिव
कोमलं नवनीतकोमलम् ।

जिसके साथ उपमा दी जाती है उसे उपमान और जिसके लिये
उपमा दी जाती है उसे उपमेय कहते हैं । जो धर्म उपमान और उपमेय
दोनों में होता है उसे समान धर्म कहते हैं ।

४२ उपमेयानि व्याघ्रादिभिः साधर्म्याप्रयोगे (उपमित व्याघ्रादिभिः
साधर्म्याप्रयोगे)—समान धर्म का प्रयोग न हो तो व्याघ्र, सिंह,
शू, श्यम, वृक, वृष, वराह, कुञ्जर, चन्द्र, कमल, किसलय,
द्वर, शाबुदूँल, पल्लव इत्यादि उपमान वाचक पदों के साथ
उपमेय का उपमित समास होता है । यथा, पुरुषो व्याघ्र इव
पुरुषव्याघ्रः, पुरुषः सिंह इव पुरुषसिंहः, राजा चन्द्र इव
राजचन्द्रः, मुखं कमलम् इव मुखकमलम्, करः किसलयमिव
करकिसलयम्, अधरः पल्लव इव अधरपल्लवः, यदनं सुधाकर इव
यदनसुधाकरः । उपमान और उपमेय का समान धर्म दो तो
वही होता । यथा, पुरुषो व्याघ्र इव शूः, मुखं कमलमिव सुन्दरम् ।

४३ धेष्यादयः कृतादिभिरभूतवद्भावे (धेष्यादयः कृतादिभिः)—
भूतवद्भाव अर्थ में कृत, मित, मल, भूत, उक्त, युक्त, समा-
गत, समाज्ञात, समारुघात, सम्भावित, संसेवित, अवधारित,
अकल्पित, निराकृत, उपकृत, उपाकृत, दृष्ट, कल्पित, दलित,
कदम्ब, विभूत और उदित शब्दों के साथ धेषि, पूग, मुकुन्द,

राशि, निनय, निगय, निघन, गर, इन्द्र, देव, मुण्ड, मूत, स्रमण, यशस्य, मध्यापक, मभिरपक, प्राह्वण, भ्रत्रिय, विशिष्ट, पट्ट, पविष्ट, कुशल, अपल, निपुण और कृपण शब्दों का समास होता है । यथा, भध्रेणयः भ्रेणयः कृताः श्रेणिकृताः, अपूनाः पूनाः कृताः पूणकृताः, मराशय राशयः कृताः राशि-कृताः, भध्रेणयः भ्रेणयो भूताः श्रेणिभूताः, अनिपुणाः निपुणाः भूता निपुणभूताः, अकुशलाः कुशलाः भूताः कुशलभूताः ।

श्रेण्यादियु ल्यप्पर्यवचनं कर्त्तव्यम् — न्वि प्रत्यय होने से अपने विषय का कार्यनमुद्य भी होता है । यथा, श्रेणीकृताः, पूणीकृताः, रणी-कृताः, श्रेणीभूताः, निपुणीभूताः, राशीभूताः, कुशलीभूताः इत्यादि ।

जब पूर्वपद उत्तरपद का रूपक हो जाय तो उसे रूपक कर्म धारय समास कहते हैं । यथा, देह एव पिञ्जरं देहपिञ्जरम्, मानसमेव विहंगः मानसविहंगः ।

द्विगु समास

४४ संख्यापूर्वो द्विगु—जिस कर्मधारय के पूर्व में संख्या-वाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं ।

४५ तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेषु (तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे न)—तद्धितार्थ, उत्तरपद परे और समाहार अर्थ में द्विगु समास होता है । यथा, तद्धितार्थ—पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः पञ्चगुः उत्तरपद परे—पञ्च हस्तः प्रमाणमस्य पञ्चहस्तप्रमाणः ।

४६ अकारान्तोत्तरपदसमाहारे (आकारान्तोत्तरपदो द्विगुः क्रियानिष्ठः)—समाहार द्विगु होने से अकारान्त शब्द के उत्तर रंप् होता है । यथा, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, चतुर्णां पदानां समाहारः चतुष्पदी, पञ्चानां नलानां समाहारः पञ्चनली, ॥ शतानां समाहारः सप्तशती ।

४७ न भुवनानेः (पात्राचन्तस्य न)—भुवन इत्यादि के उत्तर नर्दी होता है । यथा, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्

समास ।

चतुर्णां युगानां समाहारः चतुर्गुणम्, पञ्चानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम् ।

४८ मयूरव्यसकः (मयूरव्यसकादपरच)—मयूरव्यसक, छाव्यसक, यवनमुण्डः, उच्चावचम्, उच्चनीचम्, अकिञ्चन, अकुतोभयः, राजान्तरम्, प्राणान्तरम्, चिन्मात्रम्, अश्वत्थपियता, खादनमोदता, अहमहमिका, अहंपूर्विका इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं । इन्हें मयूरव्यसकादि समास कहते हैं । यथा मयूरो व्यसकः मयूरव्यसकः a cunning peacock, उद्क् च अवाक् उच्चावचम्, नास्ति किञ्चन यस्य अकिञ्चनः, नास्ति कुतोऽपि भयं यस्य अकुतोभयः, अन्योऽर्थः अर्थान्तरम्, अन्यो देशः देशान्तरम् । इसे नित्यसमास भी कहते हैं ।

४९ आख्यातनाख्यातेन क्रियासमासवे—क्रिया का सतत अनुष्ठान समझे जाने से आख्यात पद के साथ आख्यात का समास होता है । ये पद निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, अश्वत्थपियत इत्येवं सततमभिधीयते यस्यां सा क्रियार्या अश्वत्थपियता, पचतभुञ्जता, खादतमोदता, खादताचामता ।

N. B. सर्व्व पुन्यसंख्याव्ययेभ्यो रात्रेण् (महःसर्व्वकदेश-संख्यातपुण्याच्च रात्रेः)—सर्व्व, पुण्य, संख्यावाचक और भाष्य शब्द के परवर्ती रात्रि शब्द के उत्तर भन् होता है । यथा, सर्व्व रात्रिः सर्व्वरात्रः, पुण्या रात्रिः पुण्यरात्रः, द्विरात्रम्, त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम्, दशरात्रम् (संख्यापूर्व्वे रात्रिं क्लीबम्), अतिरात्रः ।

२ अहोऽहश्च (अहोह एतेभ्यः)—सर्व्व, पुण्य संख्यावाचक और भाष्य के परवर्ती अहन् शब्द के उत्तर भन् होता है और अहन् का शब्द होता है । यथा, सर्व्वमहः सर्वाहः, इत्येगहोः मक इत्यहः, पुन्यपु अह-पु मः पञ्चाहः ।

३ म संख्यायाः समाहारे (म संख्यादेः समाहारे)—संख्या होने में संख्यावाचक शब्द के परवर्ती अर्ध्वात् अट्ट नहीं होता । यथा, द्वयोःश्लोः समाहारे इषदाः, श्वदाः, इकादाः ।

४ म पुणर्विकार्याम् (उभयैकाग्र्याम् च)—पुन्य और एक के परवर्ती अर्ध्वात् अट्ट नहीं होता । यथा, पुन्यवदम्, एकवदम् ।

५ संख्याव्ययवाच्यामङ्गुलैः (मन्पुन्यव्ययवाच्यैः संख्याव्ययवाच्यैः)—संख्यावाचक और अभाव शब्द के परवर्ती अङ्गुलि के उत्तर अन् होता है । यथा, द्वे मणुषी प्रमत्तमन् इण्डुलम्, अण्डुलम्, निण्डुलम् ।

६ राजाहः सन्निभ्यष्टः (राजाहः सन्निभ्यष्टः)—राजन्, अहन् और सन्नि शब्द के उत्तर ट होता है और इण्डा अ रहता है । यथा, अज्ञाना राजा अज्ञराजः, महान् राजा महाराजः, परममहः परमहः, उन्नमहः उत्तमहः, राजः मया राज्यमन्, त्रियः मया त्रिपत्तयः ।

७ गौरवदितार्थं गौरवदितलुकि)—गौ शब्द के उत्तर ट होता है । यथा, गौः गौः गौः गौः, परमो गौः परमगौः, दश गौः दशगौः, पञ्चानां गौः पञ्चाहारः, पञ्चगवम् । दितार्थं में नही होता । यथा, पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः ।

८ मुख्वाधादुरसः (अत्राप्यायामुरसः)—मुख्वा अर्थवाचक उरम् शब्द के उत्तर ट होता है । यथा, अश्वानां उरः इव अश्वोरमन्, मुख्वाऽथ इत्यर्थः ।

९ अतोऽश्माय सरसां जातिसंज्ञयोः—जनि और संज्ञ अर्थ में अनस, अमन्, अयम् और सरस् के उत्तर ट होता है । यथा, जाति—उपानसम्, अमृतामन्, कालायसम्, मरुद्वारमन्; संज्ञा—मदानमन्, विण्डागमः, लोहितायसम्, जलसरसम् ।

१० ग्रामकोटाभ्यां तद्वजः (ग्रामकोटाभ्यां च तद्वजः)—ग्राम और कौट शब्द के परवर्ती तद्वन् के उत्तर ट होता है । यथा, ग्राम-तद्वः, साधारण इत्यर्थः, कौटतद्वः, स्वतन्त्र इत्यर्थः । अन्यत्र राजतद्वः ।

समास ।

११ अन्तेः शुनः—अन्ति शब्द के परवर्ती शब्द के उभर ट होता है यथा, अतिक्रान्तः भवान् अतिशयो वराहः, अतिशयो सेवा ।

१२ उपमानाद्वाणिषु—उपमानवाचक शब्द के उत्तर ट होता है यथा, आकर्षः श्वेव आकर्षवः । प्राणी अर्थ में नहीं होता; यथा, मानरः श्वे वानरश्वा ।

१३ उत्तर-मृग-पूर्वोपमानेभ्यः सकृत्तः (उत्तरमृगपूर्वार्थसकृत्तः)—उत्तर, मृग, पूर्व और उपमानवाचक के परवर्ती सकृत्ति शब्द के उत्तर ट होता है । यथा, उत्तरसकृत्तम्, मृगसकृत्तम्, पूर्वसकृत्तम्; उपमान—फलकमिव सकृत्ति फलवताकथम् ।

१४ नाचो द्विगोरतद्वितार्थे (नाचो द्विगोः)—द्विगुणमासद्वियत नौ के उत्तर ट होता है । यथा, द्विगोर्नाचोः समाहारः द्विनाचम्, पञ्च नाचो धनमस्य पञ्चनावधनः । तद्वितार्थे में नहीं होता; यथा, पञ्चभिः भूमिः ऋतः पञ्चनीः । द्विगुभिश्च स्थान में—राज्ञो नौः राजनीः, नदीना नौः नदीन-नौः ।

अर्द्धाद्य—अर्द्ध शब्द के परवर्ती नौ के उत्तर ट होता है । यथा, अर्द्धं नावः अर्द्धनावम् ।

१५ खाद्य्या विभाषा (खाद्य्याः प्राचाम्)—द्विगु समान होने अपना अर्द्ध शब्द के पहले रहने से सारी शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है । यथा, द्वे खाद्य्यां प्रमाणमस्य द्वितारम्, द्विसारिः अर्द्धं खाद्य्याः अर्द्धसारम्, अर्द्धसारिः ।

१६ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः—द्विगु समान होने पर द्वि और त्रि शब्द के परवर्ती अञ्जलि शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है । यथा, द्वे अञ्जली प्रमाणमस्य द्वपञ्जलम्, द्वपञ्जलिः; त्र्यञ्जलम्, त्र्यञ्जलिः । अन्यत्र द्वयोराञ्जलिः द्वपञ्जलिः ।

१७ जनपदाद् प्रह्वगः (प्रह्वणो जनपदाख्यायाम्)—प्रह्वद-

वाचक शब्द के परवर्ती मद्न् के उत्तर ट होता है । यथा, वृत्तद्वय प्रश्न गुणप्रश्नः , अवस्थिप्रश्नः , कृतिद्वयप्रश्नः । अन्यत्र देवप्रश्न नारदः ।

विभाषाकुमहदुभ्याम् (कुमहदुभ्यामन्यतरस्याम्)—कु और मद्न् शब्द के परवर्ती होने से विचल्य में होता है । यथा: कुस्मिते प्रश्न प्रश्नः , कुप्रश्ना; महाप्रश्नः , महाप्रश्ना ।

१८ अक्षिणोऽक्षभुषि (अक्षिणोऽदर्शानाम्)—अक्षि शब्द के उत्तर ट होता है । यथा; गवामक्षीव गवाक्षः । नेत्र समझे जाने से नहीं होता; यथा; बालहरव अक्षि बालवाक्षि ।

१९ वृद्ध-महज्जातेभ्य उक्षः (अचतुर विचतुर —)—वृद्ध महत् और जात शब्द के परवर्ती उक्षन् के उत्तर ट होता है । यथा; वृद्धः उक्षः वृद्धोक्षः, महान् उक्षः महोक्षः , जातः उक्षः जातोक्षः ।

२० निःश्रेयस-पुरुषायुषे (विभाषा सेवासुराच्छायाशाला-निशानाम्)—निःश्रेयस और पुरुषायुष निगतन से सिद्ध होते हैं । यथा; निश्चितं श्रेयाः निःश्रेयसम् , पुरुषस्य आयुः पुरुषायुषम् ।

२१ विभाषा छायादि नपुंसकम् (विभाषासेना ...)—छाया, शाळा, सेना, सुरा, निशा इत्यादि विकल्प से नपुंसक होते हैं । यथा; छच्छायम् , तरुच्छाया; गोशालम् , गोशाला ।

२२ नित्यं छाया बाहुल्ये (छाया बाहुल्ये)—पूर्व पदार्थ की बाहुल्यता में छाया शब्द नित्य नपुंसक होता है । यथा; द्यूणा छाया इच्छायम् , शराणां छाया शरच्छायम् ।

२३ सभाप्रभुपर्वाय पूर्व्या (सभाराजाऽमनुष्यपूर्व्या)—प्रभु का पर्वाय (अर्थसूचक दूसरा) शब्द पहले रहने से सभा शब्द नित्य नपुंसक होता है । यथा; प्रभुसभम् , ईश्वरसभम् राजसभा इत्यादि में नहीं होता ।

२४ रक्षापिशाचादि पूर्व्या च—रक्षसं; पिशाच इत्यादि पहले रहने से

समास ।

समा शब्द नित्य नपुंसक होता है । यथा; रक्षःसभम्, विशाचलप
 अन्यत्र मनुष्यसभा, देवसभा ।

अशाला च—शालाभिन्न अर्थवाचक समा शब्द नित्य नपुंसक हो
 है । यथा, स्त्रीसभम्, स्त्रीणां समूह इत्यर्थः; शिष्यसभम्, शिष्याणां समव
 इत्यर्थः ।

२४ पुंघत् कुक्कुटीप्रभृतीनामण्डादौ (कुक्कुटादीनामण्डा
 दिषु)—अण्ड इत्यादि शब्द परे रहने से कुक्कुटी इत्यादि का पुंघत्ता
 होता है । यथा, कुक्कुट्या अण्डं कुक्कुटाण्डम्, हंसा अण्डं हंसाण्डम्,
 कुक्कुट्याः शावः कुक्कुटशावः, हस्याः शावः हसशावः, मृग्याः पद-
 मृगपदम्, मृग्याः क्षीरं मृगक्षीरम् ।

बहुव्रीहि समास ।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः (शेषे बहुव्रीहिः)—जिसमें अन्य
 पदार्थ प्रधान हो अर्थात् जिन पदों का समास हो उनका अर्थ
 न समझा जाकर अन्य पदार्थ का अर्थबोध हो तो उसे बहु-
 व्रीहि समास कहते हैं । यथा, भारुदो यानरोऽयम् भारुदयानरो
 वृक्षः, कृतं कर्म येन कृतकर्मा पुण्यः, दत्तं धनं यस्मै दत्तधनो
 दरिद्रः, उद्धृतं उद्धृतं यस्मात् उद्धृतोदकः कृपः, दीर्घो पाद्म-
 रस्य दीर्घपाद्मः पुच्छः, प्रदुग्धानि कमलानि यन्मिन् प्रदुग्धा-
 नमलं सरः ।

५.१ संख्याभिरव्ययसन्तुराधिक संख्या (संख्याभ्यवाचकसंख्याभिर-
 व्याः संख्येदे)—संख्यावाचक शब्द के साथ अव्यय, भागप्र,
 रू, अधिक और संख्यावाचक का बहुव्रीहि समास
 ता है ।

संख्याया आहोर्हः (बहुव्रीहि वचनेरे इत्प्रबहुवचान्)—संख्या-
 वाचक शब्द के उत्तर इ होता है । यथा, दशानां समाप्ते ये ते

उपद्शाः, त्रिंशतेरासन्ना मासत्रिंशताः, त्रिंशतोऽदूरे म्दूर-
त्रिंशाः, चत्वारिंशतोऽधिका अधिकचत्वारिंशाः, द्वौ वा त्रयो
वा द्वित्राः, पञ्च वा षड् वा पञ्चपाः । बहु शब्द के उत्तर नहीं
होता । यथा, बहुनां समीपे उपबहवः ।

५२ दिङ् नामान्यन्तराले—अन्तराल अर्थ में दिग्वाचक पूर्व
इत्यादि शब्द का बहुमीहि समास होता है । यथा, दक्षिणस्याः
पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दक्षिणपूर्वा, उत्तरस्याः पश्चिमायाश्च
दिशोरन्तरालं उत्तरपश्चिमा ।

५३ सहसृतीयया (तेन सहेति तुल्ययोगे)—तृतीयान्त पद के
साथ सह शब्द का बहुमीहि समास होता है ।

सहः सो विभाषा (बोधसर्जनस्य)—बहुमीहि समास में सह
का विकल्प से स होता है । यथा, पुत्रेण सह सपुत्रः, सहपुत्रः,
अनुजेन सह सानुजः, सहानुजः, धान्धयेन सह सधान्धयः,
सहयान्धयः, भूयेन सह सभूत्यः, सहभूत्यः ।

५४ रणभ्यतिहारे तृतीयासप्तम्याः सरूपयोः (तत्रतेनेइमिति सहे)—
परस्पर युद्ध अर्थ में समान रूप तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पद
का बहुमीहि समास होता है ।

दीर्घोऽन्यः पूर्वस्य (अन्वेषामपि दृश्यन्ते)—रणभ्यतिहार में
समास होने से पूर्व पद के अन्त्य स्वर का दीर्घ होता है ।

इच् परात् (इच् कर्मभ्यतिहारे)—रणभ्यतिहार में समास होने
से पर पद के उत्तर इच् होता है और इसका इ रहता है ।
इच् प्रत्ययान्त शब्द भव्यय होता है । इच् परे रहने से भव्य
उपसर्ग का गुण होता है । यथा, केशेषु वशेषु गृहीत्या इ
युद्धं प्रवृत्तं केशकेशि, वण्टेश्च वण्टेश्च म्दूरय इत् युद्धं प्रवृत्तं
वण्टादण्ड, मुष्टामुष्टि, वाहवाहवि (बोधस्य के मत से पूर्व
पद के अन्त्यस्वर के स्थान में विकल्प से मा होता है) । यथा,

समास ।

मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टिः, पाहापाहवि, पाहूपाहवि; स
रहने से नहीं होता; यथा, अस्यसि ।

५५ स्त्रियाः पुं०द्वायितपुंस्कायाः स्त्रियाम् (स्त्रियाः पुं
रन्द् समासविचरणे स्त्रियामपूर्णीव्याप्तिसु) बहुव्रीहि सम
लिङ्ग शब्द परे ही तो उसका पुं०द्वाय होता है । य
बुद्धिरस्य स्थिरबुद्धिः, महती मतिरस्य महामतिः, वि
स्य चित्रगतिः, ब्रह्मा भक्तिरस्य ब्रह्मभक्तिः, प्रिय
प्रियमाध्व्यैः, शीता गौरस्य शीतगुः ।

विशेष द्रष्टव्यनोवदन्तस्य (स्त्रिया)—
मे ऊर्ध्व-प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुं०द्वाय नहीं होता ।
भाष्यास्य वामोहभाष्यैः ।

न कोपधस्य (न कोपधायाः)—जिस स्त्रीलिङ्ग की उ
या अह प्रत्यय का क रहे उसका पुं०द्वाय नहीं होता है । य
रसिका भाष्यास्य रसिकाभाष्यैः, अक प्रत्यय—वाचि
वाचिकाभाष्यैः । अन्यत्र होता है; यथा, एक भाष्यास्य एकभाष्यैः ।

न संज्ञा-पूरणयोः (संज्ञापूरणयोश्च)—संज्ञावाचक
वाचक का पुं०द्वाय नहीं होता । यथा, संज्ञावाचक—
दत्ताभाष्यैः, गता भाष्यास्य गताभाष्यैः, पूरणवाचक—द्वि
द्वितीयाभाष्यैः, पञ्चमी भाष्यास्य पञ्चमीभाष्यैः ।

न जाति स्वाङ्गयोः (स्वाङ्गाद्योश्च । जातेश्च)
और स्वाभाविक स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुं०द्वाय नहीं होता ।
वाचक—ब्राह्मणी भाष्यास्य ब्राह्मणीभाष्यैः, क्षत्रिया भाष्य
भाष्यैः, स्वाङ्गवाचक—सुकेशी भाष्यास्य सुकेशीभा
भाष्यास्य सुकेशीभाष्यैः ।

न त्रियादिपूरणयोः (त्रिया...)—बहुव्रीहि गणस में त्रि-
मनोज्ञा, कल्याणी, सुभगा, दुर्भगा, नयिका, रसा, कान्ता, क्षान्ता, मम,
काला, गाममा (भक्ति, तनया और दुहिता भी त्रियादि गण में पठित
होता है; परन्तु गर्वत्र हो विरोध प्रयोग देना जाता है, अण्ण्व इव ण्व
में इसको नहीं रखा) इत्यादि और पूरणवाचक शब्द परे रहने से पूर्व-
वर्ती स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंल्लान नहीं होता । यथा, शोभना त्रियण्य
शोभनाप्रियः, गुलोचना कान्ताण्य गुलोचनाकान्तः ।

२ अप् पूरणी-प्रमाणीभ्याम् (अप् पूरणी-प्रमाणयोः)—पूरणवाचक
और प्रमाणी शब्द के उत्तर अप् होता है और इसका अ रहता
है । यथा, कल्याणी पञ्चमी यासां रात्राणां ताः कल्याणी पञ्चमा
रात्रयः । मुख्य पूरणी के उत्तर अप् होता है, गौण के उत्तर
नहीं होता । कल्याणी पञ्चमी रात्रिर्यस्मिन् पक्षे स कल्याण-
पञ्चमीकः पक्षः । यहाँ पूरण वाचक शब्द गौण है, इसलिये
इसके उत्तर अप् नहीं हुआ । असमस्त दशा में जिस अर्थ का
वाचक है, समस्त दशा में भी उसी अर्थ का वाचक होता
मुख्य, पर असमस्त दशा में जिस अर्थ का वाचक है समस्त
दशा में उसके भिन्न अर्थ का वाचक होने से गौण कहते हैं ।
कल्याणपञ्चमा रात्रयः, यहाँ पूरणवाचक असमस्त और समस्त
दोनों दशा में रात्रिवाचक है, इसलिये मुख्य है; पर कल्याण-
पञ्चमीकः पक्षः, इस स्थान में पूरणवाचक शब्द असमस्त दशा
में रात्रिवाचक किन्तु समस्त दशा में तद्वाचक न होकर
तद्विन्नार्थ पक्षवाचक होता है, अतएव यह गौण है ।

नञ्-सु-विद्युपेभ्यश्चतुरः (अचतुर विचतुर सुचतुर ...)—नञ्, सु,
वि, त्रि और उप के परवर्ती चतुर् के उत्तर अप् होता है ।
यथा, अविद्यमानानि चत्वार्यस्य अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः,
त्रिचतुरः, उपचतुरः ।

नेतुर्नक्षत्रात् (नेतुर्नक्षत्रे भव् वक्तव्यः)—नक्षत्रवाचक शब्द के परवर्ती नेतृ के उत्तर भप् होता है । यथा, मृगनेत्राः, पुष्पनेत्राः, शिष्यः ।

नाभेः संज्ञायाम्—संज्ञा अर्थ में नाभि के उत्तर भप् होता है । यथा; उर्णनाभः, पद्मनाभः ।

अन्तर्वहिर्यां लोमः—अन्तर् और वहिस् शब्द के परवर्ती लोमन् शब्द के उत्तर भप् होता है । यथा; अन्तर्लोमानि यस्य अन्तर्लोमः, वहिर्लोमानि यस्य वहिर्लोमः ।

नञ् दुः-सुभ्यः सकृधो वा (नञ् दुःसुभ्यो इति सर्वधोरन्वयतास्याम्)—नञ्, दुर् और सु के परवर्ती सकृधि के उत्तर विकल्प से प्रप् होता है । यथा; असकृधः असकृधिः, दुःसकृधः, दुःसकृधिः, सुसकृधः, सुसकृधिः ।

३ सवर्धक्षिभ्यां क स्वाङ्गे (बहुव्रीही सर्वध्वजोः साङ्गात् क्)—स्वाङ्ग अर्थ में सकृधि और भक्षि शब्द के उत्तर क् होता है और इसका अ रहता है । यथा; दीर्घे सकृधिनी अस्य दीर्घे-सकृध (one having long thighs) पुरुषः, वृत्ते सकृधिनी अस्यः वृत्तसकृधि नारी, दीर्घे भक्षिणी अस्मिन् दीर्घासं वद-नम्, विशाले भक्षिणी अस्याः विशालाक्षी दीर्घी । स्वाङ्ग न समझे जाने से नहीं होता, यथा, दीर्घसकृधि शकटम्, स्थूलाक्षिः इक्षुदण्डः ।

अङ्गुलेदारुणि—दाह समझे जाने से अङ्गुली शब्द के उत्तर ण होता है । यथा; पञ्चाङ्गुलं दाह । दाहमिन्न स्थान में पञ्चाङ्गुलिर्हस्तः ।

द्विक्रिशां मूर्ध्नि (द्विक्रिशां कः मूर्ध्निः)—द्वि और त्रि शब्द के परवर्ती मूर्ध्नि के उत्तर ण होता है । यथा; द्वौ मूर्धानौ

द्विपूर्वः त्रयो मूर्त्तानोऽस्य त्रिपूर्वः । अन्यत्र नहीं होता । यथा; पञ्च मूर्त्तानोऽस्य पञ्चमूर्त्ता ।

४ भग् नन्-दु सुव्यः प्रजायाः (नित्यमसिच् प्रजामेषयोः)—नन्, दुर्, सु, भर् और सु के परवर्ती प्रजा के उत्तर भस् होता है । यथा; अप्रजाः, दुःप्रजाः, सुप्रजाः ।

मन्दाव्याभ्याश्च मेधायाः (नित्यमसिच् प्रजामेषयोः)—नन्, दुर्, सु, मन्द और मल्प के परवर्ती मेधा शब्द के उत्तर भस् होता है । यथा; भमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः, मन्दमेधाः, मल्पमेधाः ।

धर्माश्च केवलात् (धर्मादिनिच् केवलात्)—धर्म के उत्तर भन् होता है । यथा; सुधर्मा, शुभधर्मा, अजितधर्मा । धर्म शब्द के साथ दूसरा शब्द मिला हो तो नहीं होता; यथा; परमस्वधर्मः ।

५ दक्षिणादीर्म्मर्द्दधयोगे (दक्षिणेर्म्मर्द्दधयोगे)—व्याघ सम्बन्ध समझे जाने से दक्षिण के परवर्ती ईर्म्म के उत्तर, भन् होता है । यथा; दक्षिणे ईर्म्मं घणं यस्य, दक्षिणेर्म्मर्द्द मृगः, व्याघ्रेन दक्षिणे पार्श्वे कृतव्रण इत्यर्थः ।

६ प्रसम्भ्या जानुनोः जुः—प्र और सम् अव्यय के परवर्ती जानु का जु होता है । यथा; प्रजुः, संजुः ।

ऊर्द्ध्वादिभाया—ऊर्द्ध्ध्व शब्द के परवर्ती जानु का विकल्प से जु होता है । यथा; ऊर्द्ध्ध्वजुः, ऊर्द्ध्ध्वजानुः ।

७ नसोनासिकायाः संशायाम् (भन् नासिकायाः संशया नसं वास्यत्)—संशा अर्थ में नासिका का नस होता है । यथा; द्रु, रि, नासिका अस्य द्रु नसः, वाहीव नासिका अस्य वाहीव नसः, गौरिव नासिका अस्य गोनसः । स्थूल शब्द के उत्तर नहीं होता; यथा; स्थूला नासिका अस्य स्थूलनासिकः । संशा नहीं

समझे जाने से नहीं होता; यथा, तुङ्गा नासिकास्य तुङ्गनासिकः पुरुषः ।

उपसर्गश्च—उपसर्ग के परवर्ती नासिका का नस् होता है । यथा; प्रणसः, उन्नसः, अपनसः ।

खरखुराम्भां नस् च (खरखुराम्भां वा नस्)—खर और खुर शब्द के परवर्ती नासिका का नस और नस् होता है । यथा, खरणसः, खरणाः; खुरणसः, खुरणाः ।

विप्रादयः (विप्रो वक्तव्यः । ल्यश्च)—वि उपसर्ग के परवर्ती नासिका का विप, विहर और विष् निपातन से विद्ध होते हैं ।

८ जानिजायावा (जायाया निष्)—जाया का जानि होता है । यथा, युवतिजायास्य युवजानिः, प्रिया जायास्य प्रियजानिः, सुन्दरी जायास्य सुन्दरजानिः ।

९ इगन्धादुत्पत्तिगुरभिभ्यः (गन्धस्वेदुत्पत्तिगुरभिभ्यः)—उत्, सु, पूति और सुरभि के परवर्ती गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है । यथा, उद्गन्धिः, सुगन्धिः, पूतिगन्धिः, सुरभिगन्धिः । दूसरे द्वय के गन्ध के सम्बन्ध में नहीं होता । यथा, सुगन्धः पवनः ।

अन्वययोगे (अन्वयात्वात्)—अन्वययोग समझे जाने से गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है । यथा, पूतगन्धि, दधिगन्धि, सूपगन्धि भोजनम् ।

उपमानाश्च—उपमानाश्चक पद के परवर्ती गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है । यथा, पद्मस्यैव गन्धोऽस्य पद्मगन्धिः, करी-पगन्धिः (शीपदेव के मत से विकल्प से होता है) ।

१० पादात् पादुपमाशब्दस्त्वितिः (पादात् तेषांऽप्युपमाशब्दः)—उपमानाश्चक पद के परवर्ती पाद का पान् होता है । यथा, व्याघ्रस्यैव पादाशस्य व्याघ्रपान् । इस्तिन्, पुद्गल, भक्ष्य, मज्ज,

कपोल, जाल, गण्ड, गण्डोल और कुम्भ इत्यादि के परसर्ग होने में नहीं होता; यथा, हर्षा इव वादायस्य हस्तिगदः ।

संख्यापूर्वकम् च (संख्या पूर्वकम्)—संख्यावाचक और सु रहने रहने से वाद का पाठ होता है । यथा, द्विषान्, त्रिषान्, चतुष्पात् ।

स्त्रियो कुम्भादेः पाठ (कुम्भवर्दीषु च)—श्रोत्रिण में कुम्भ, द्वि, त्रि, चत, गूल, जाल, मुनि, गुण, मूत्र, गोधा, कृण, विष्णु, अर्द्ध, कृष्ण, शुनि, रूणा इत्यादि के परसर्ग वाद का पाठ होता है । यथा, कुम्भवदी, एकवदी, द्विवदी, त्रिवदी, विष्णुवदी, अर्द्धवदी ।

११ वयसि इत्येष दन्तु—वयस् समझे जाने से संख्यावाचक और सु पूर्वक दन्त का दन्तु होता है और इसका दन्त रहता है । यथा; द्विदन्त, चतुर्दन्त, सुदन्त, सुदन्ती । वयस् नहीं समझे जाने से द्विदन्तः करी, सुदन्तः नटः ।

अग्रान्तशुद्धशुभ्रवराहैभ्यश्च—अग्र, अन्त, शुद्ध, शुभ्र, वृष और वराह के परसर्ग दन्त का विकल्प से दन्तु होता है । यथा; अग्रदन्त, अग्रदन्तः ।

सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः—मित्र और अमित्र अर्थ में सुहृद् और दुर्हृद् निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा; शोभनं हृदयमस्य सुहृद् मित्रम्, दुष्टं हृदयमस्य दुर्हृद् अमित्रः ।

१२ उरः प्रवृत्तिभ्यः कर्—उरस्, उपानह्, पुमस्, पयस्, दधि, मधु, शालि, सर्पिस्, अनहुद्, नी, निर् और नर् पूर्वक अर्थ के उत्तर कर् होता है और इसका क रहता है । यथा; व्यूढमुरोऽस्य व्यूढोरस्कः, उपानदुभ्यां सह सोपानस्कः, भापितः पुमाननेन भापितपुस्कः, न विद्यते अर्थोऽस्मिन् निरर्थकम्, अनर्थकम् (अर्थान्तरम्) ।

इनन्तात् त्रिषयाम् (इनः त्रिषयाम्)—छीलिलङ् में इन् मागान्त

शब्द के उत्तर कर् होता है । यथा; बहुवोऽस्यां घनिनः बहु-
घनिका नगरी, बहुवोऽस्यां वाग्मिनः बहुवाग्मिका समा ।

१४ दन्तनदीभ्याश्च (नवतन्त्र)—शुकारान्त और नदीसंज्ञक शब्द
के उत्तर कर् होता है । यथा; दन्त-एकपिनृकः, समानृकः,
मृतमर्त्तृका; नदीगणक—मृतपत्नीकः, बहुकुमारीकः ।

दोषविभाष—पूर्वोक्त भिन्न के उत्तर विकल्प से कर् होता
! । यथा; लक्ष्यशस्काः, लक्ष्यशः, समानवयस्काः, समान-
वयाः, मुण्डितशिरस्काः, मुण्डितशिराः, भर्जितघनकः, भर्जित-
घनः ।

नेयमुनः (रियतश्च)—रियन् प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर कर् नहीं
होता । यथा; बहुप्रेयान्, बहुप्रेयसी ।

न प्रसृतार्थं स्नातुः (यन्दिने स्नातुः)—प्रसृता अर्थ में स्नातु के
उत्तर कर् नहीं होता । यथा; पुष्पाता, दक्षितप्रता, गापुष्पता । अन्वय
मूर्धाभृकः, बहुभृकः ।

न नाडोत्तमयोः श्याङ्गे (नाडी उत्तमयोः श्यांगे)—शङ्ग अर्थ में
नाडी और तःवी के उत्तर कर् नहीं होता । यथा; बहुनाडीः काक, बहुतम्यो
पीवा । शङ्ग नहीं मन्तो अने से बहुनाडीः शम्भः, बहुतम्योः पीवा ।

१३ सुमाताश्चः । सुमानसुमानसुदियमासिधुभयसुधीर्णा
पद्मप्रदमोहपदाः)—बहुनीह मन्तम में कर्त्तव्य रूपसे निम्न में
निम्न होते हैं । यथा; होमक प्रत्यय सुमान, लोमक दिवस सुदिन,
नमोऽधरः अन्वय सुमान ।

१४ बहुवाच—बहुवाचि समास में उत्तरपदविद्यम घनम् के
उत्तर भक्त् होता । यथा; शाङ्गे घनः अन्वय शाङ्गे घम्भा ।

न विभक्त—संज्ञा अर्थ में विकल्प में होता है । यथा,
नपम्भा, शानघनुः, पुष्पपम्भा, पुष्पघनुः ।

द्वन्द्व-समास

उभयप्रधानो द्वन्द्वः (चापे द्वन्द्वः)—जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों प्रधान हों उसे द्वन्द्व समास कहते हैं ।

५६ परलिङ्ग द्वन्द्वे (परलिङ्गं द्वन्द्वत्पुरुषयोः)—द्वन्द्व समास में समस्त भाग परपद के लिङ्ग को प्राप्त होता है ।

६० इतरेतरयोगे—परस्पर योग समझे जाने से द्वन्द्वसमास होता है । यथा; हरिश्च हरश्च हरिहरी, रामश्च लक्ष्मणश्च राम-लक्ष्मणी, भीमश्च अञ्जु नश्च भीमाञ्जुनी, घवश्च खदिरश्च पलाशश्च धवखदिरपलाशाः; कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च कन्दमूलफलानि, शब्दश्च स्पर्शश्च रूपञ्च रसश्च गन्धश्च शब्दस्पर्शरूप-रसगन्धाः । हरिहरी, यहाँ हरि और हर का परस्पर योग समझा जाता है; धवखदिरपलाशाः, यहाँ धव, खदिर और पलाश का परस्पर योग समझा जाता है ।

(क) ऋदन्तादृदन्ते डा विद्यागोत्रसम्बन्धे (भान्त् क्तो द्वन्द्वे)—विद्या और गोत्र सम्बन्ध हो तथा ऋकारान्त शब्द के परे ऋकारान्त शब्द हो तो पूर्ववर्ती शब्द के उत्तर डा होता है, और इसका आ रहता है । यथा; विद्यासम्बन्ध—होता च पीता च होतापोतारी, नेष्टा च उद्गाता च नेष्टोद्गातारी; गोत्रसम्बन्ध—माता च पिता च मातापितरौ, याता च नानाया च याताननान्दरौ ।

पुत्रे च (सुत्रेऽन्वतरस्याम्)—पुत्र शब्द परे रहने से भी ऋ का डा होता है । यथा; पिता च पुत्रश्च पितापुत्री, माता च पुत्रश्च मातापुत्री ।

देवतावाक्यां पूर्वात् (देवता द्वन्द्वे च)—देवतावाची वर्तों का समास हो तो पूर्वपद के परे डा होता है । यथा, इन्द्रश्च वर-

पञ्च इन्द्रावहनी, मित्रश्च वरुणश्च मित्रावहनी, सूर्यश्च चन्द्रमाश्च सूर्याचन्द्रमसौ ।

न ब्रह्मप्रजापत्यादेः—ब्रह्मप्रजापति इत्यादि के उत्तर डा नहीं होता । यथा, ब्रह्मा च प्रजापतिश्च ब्रह्मप्रजापती, अग्निश्च वायुश्च अग्निवायु, वायुश्च अग्निश्च वाय्वग्नी ।

(स) ईशनेः सोमवरुणोः—सोम और वरुण शब्द परे रहने से अग्नि शब्द के उत्तर ईत् होता है और इसका ई रहता है । यथा, अग्निश्च सोमश्च अग्नीसोमी, अग्निश्च वरुणश्च अग्नी-वरुणी ।

(ग) दिवो घावा—पूर्वघर्त्तो दिव् का घावा होता है । यथा, द्यौश्च भूमिश्च घावाम्भौ, द्यौश्च शमा च घावाशमे ।

दिवस् च पृथिव्याम् (दिवश्च पृथिव्याम्)—पृथिव्यां शब्द परे हो तो दिव् का घावा और दिवस् होता है । यथा, द्यौश्च पृथिवी च घावापृथिव्यां, दिवश्चपृथिव्यां ।

(घ) मातरपितरौ (मातरपितरापुत्रीकाम्)—निपातन से सिद्ध होता है । यथा, माता च पिता च मातरपितरौ ।

(च) दम्पती जम्पती वा (जायाशब्दस्य जम्पतीःदम्भाशब्द वा निपात्यते)—जाया और पति शब्दों का समास होने से विचरत्य से दम्पती और जम्पती होता है । यथा, जाया च पतिश्च जायापती, दम्पती, जम्पती ।

११ समाहारे च—दो या अधिक पदार्थों का समाहार समझा जाय तो द्वन्द्व समास होता है ।

(क) प्रकृत्यर्थसेनाङ्गनाम् (द्वन्द्वश्च प्रकृत्यर्थसेनाङ्गनाम्) द्वन्द्व समास में प्राण्यङ्ग, तुष्यङ्ग और सेनाङ्गवाचक शब्दों का समाहार होता है । यथा, शम्भुः—पाणी च पादौ च तयोः समाहारः पाणिपादम् ऐसे ही करौ च धरणी च करधरणम्, दन्ताश्च

ओष्ठौ च दन्तौष्ठम्, कर्णौ च नासिका च कर्णनासिकम्, भ्रुवौ च ललाटश्च भ्रूललाटम्, पृष्ठञ्च उदरञ्च पृष्ठोदरम्; त्वयं—पणवध्म मृदङ्गश्च पणवध्ममृदङ्गम्, शङ्खश्च दुन्दुमिश्च शङ्खदुन्दुमि, भेरी च पटहश्च भेरीपटहम्, ऋषभश्च गान्धारश्च ऋषभगान्धारम्; धैवतश्च पञ्चमश्च धैवतपञ्चमम्, वज्रश्च मध्यमश्च वज्रमध्यमम्; सेनाङ्—रथिकाश्च अश्वारोहाश्च रथिकाश्वारोहम्, शाक्तिकाश्च याष्टीकाश्च शाक्तीकयाष्टीकम्, पाशवश्च करवालाश्च परशुकरवालम्, घनूँषि च शराश्च घनुःशरम्, शराश्च तूणीराश्च शरतूणीरम् ।

सेनाङ्गवाची पदों के केवल बहुवचन ही में समाहार होता है । यथा, शरश्च तूणीरश्च शरतूणीरी, शक्तिश्च परशुश्च करवालश्च शक्तिपरशुकरवालाः ।

(स) नदीवाचिनालिङ्गभेदे (विकिर्शल्लिगो नदीदेशोऽम्माः)—लिङ्ग में भेद हो तो नदीवाचक पदों का समाहार होता है । यथा, गङ्गा च शोणश्च तपोः समाहारः गङ्गाशोणम्, उदुभ्यश्च इरापती च उदुभ्येरापति, ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रमागा च ब्रह्मपुत्रचन्द्रमागम् । लिङ्ग भेद न हो तो नहीं होता; यथा, गङ्गा च यमुना च गङ्गायमुने, सरस्वती च इरापती च सरस्वतीइरापती ।

(ग) देशवाचिनाञ्च (विशिष्ट.....)—लिङ्गभेद हो तो देशवाची पदों का समाहार होता है । यथा, कुरवश्च कुरवीरश्च कुरवकुरवीरम्, कुरवश्च जाङ्गलश्च कुरवजाङ्गलम्, मथुरा च पाटलिपुत्रश्च मथुरापाटलिपुत्रम् । लिङ्गभेद न हो तो नहीं होता; यथा, मद्राश्च केकयाश्च मद्रकेकयाः, निदेशाश्च कलिङ्गाश्च निदेशकलिङ्गाः । ग्रामवाचक पदों का समाहार नहीं होता; यथा, जाम्बवश्च शाश्वकिनी च जाम्बवशाश्वकिनी ।

(घ) वा बहुवचनानुसङ्गवचिना बहुवचने (गुणवचनं । विनाच

निवाचक और क्षुद्रजन्तुवाचक बहुवचनान्त पर्दा ।
 ल्य से समाहार होता है । यथा; पशुवाचक— गावश्च मर्दि
 तेषां समाहारः गोमहिषम्, गोमहिषाः; वृकाश्च कुरङ्गाः
 कुरङ्गम्, वृककुरङ्गाः; गोमायवश्च गर्द्भाश्च गोमायुगर्द्भम्
 युगर्द्भम्; शकुनिवाचक— हंसाश्च सारसाश्च हंससारसम्
 सारसाः; वकाश्च चक्रवाकाश्च वकचक्रवाकम्, वकचक्र-
 वाकाः; कोकिलाश्च मयूराश्च कोकिलमयूरम्, कोकिलमयूराः;
 वाचक— दंशाश्च मशकाश्च दंशमशकम्, दंशमशकाः;
 मक्षिकाश्च यूकमक्षिकम्, यूकमक्षिकाः; मत्कुणाश्च
 मत्कुणविपीलिकम्, मत्कुणविपीलिकाः ।

(फलतृणतत्त्वाचकानाम् (विभाषा वृक्षमृग ...))— फल, तृण
 आदी बहुवचनान्त शब्दों का विकल्प से समाहार
 । यथा; फलवाचक— बदराणि च आमलकानि च बदरा-
 बदरामलकानि; खड्गुराणि च नारिकेलानि च खड्गु-
 खड्गुरनारिकेलानि; म्रीदयश्च यवाश्च म्रीदियवम्,
 म्रीदयवम्; मुद्गाश्च मापाश्च मुद्गमापम्, मुद्गमापाः; मृगवाचक—
 काशाश्च कुशकाशम्, कुशकाशाः; तक्ष्वाचक—
 न्यग्रोधाश्च भ्रश्वत्थन्यग्रोधम्, भ्रश्वत्थन्यग्रोधाः ।

नित्यं नित्यविरोधिनाम् (वेपाद्य विरोधः शाश्वतिकः)— जिन
 परस्पर नित्य विरोध हो उनके वाचक बहुवचन
 ल्य समाहार होता है । यथा; अहयश्च मकुलाश्च
 मकुलाः; अहिनकुलम्, फाकाश्च उत्तूकाश्च काकोत्तूकम्,
 काकोत्तूकम्; मूषिकाश्च मार्जारमूषिकम् ।

गवाश्वप्रभृतौनाम् (गवाश्वप्रभृतीनि च)— गवाश्च इत्यादि
 समाहार होता है । यथा; गावश्च भ्रवाश्च तेषां

समाहारः गवाश्चम्, अजाश्च अविकाश्च अजाविकम्, पुत्राश्च
 पौत्राश्च पुत्रपौत्रम्, गवाविकम्, गवैडकम्, अजैडकम्, कुञ्जवा-
 मनम्, कुञ्जकिरातम्, श्वपचचण्डालम्, स्त्रीकुमारम्, दासी-
 माणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीप्रच्छदम्, शाटीपट्टिकम्,
 उष्ट्रस्वरम्, उष्ट्रशशम्, मूत्रशकृन्, मूत्रपुरीषम्, यहस्मेदः, मांस-
 शोणितम्, दर्मशरम्, दर्मपृतीकम्, अङ्गुनशिरोपम्, अङ्गुन-
 पुरुषम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, मागवती भागवतम् ।

(ऋ) विभाषा पूर्वोपरादीनाम् (विभाषा वृक्षणा ...)—पूर्व
 और अपर इत्यादि का विकल्प से समाहार होता है । यथा;
 पूर्व्यञ्च अपरञ्च पूर्व्यापरम्, पूर्व्यापरे; अधरञ्च उत्तरञ्च अधरोत्त-
 रम्, अधरोत्तरे; दधि च घृतञ्च दधिघृतम्, दधिघृते ।

(ट) विरुद्धानामविशेषणानाञ्च (विप्रतिविद्धं घनाधिहरणवाचि)—
 परस्पर विरुद्ध पदार्थों में विकल्प से समाहार होता है ।
 यथा; शीतञ्च उष्णञ्च शीतोष्णम्, शीतोष्णे, सुखञ्च दुःखञ्च
 सुखदुःखम्, सुखदुःखे, आलोकश्च अन्धकारश्च आलोकान्ध-
 कारम्, आलोकान्धकारी । विशेषण होने से नहीं होता । यथा;
 शीतोष्णे पयसा ।

(ठ) शूद्राणामनिरवसितानां नित्यम् (शूद्राणामनिरवसितानाम्)—
 शूद्रवाचक पदों का नित्य समाहार होता है । यथा; गोपाश्च
 गोपाश्च तेषां समाहारः गोपनापितम्, कर्मकाराश्च कुम्भ-
 काराश्च कर्मकारकुम्भकारम्, ताम्बूलिकाश्च तन्तुवायाश्च
 ताम्बूलिकतन्तुवायम् । निरवसित (ये भुङ्क्ते पात्रं तंरभरेणानि न
 भुञ्जति ते निरवसिताः) शूद्रों का नहीं होता; यथा; चण्डालाश्च
 मृतवाश्च चण्डालमृतवाः ।

(ड) न दधिपयः प्रवृत्तीनाम् (न दधिरव आदीनि)—दधिपयस्
 इत्यादि में समाहार नहीं होता । यथा; दधिपयती, सर्पिमंथुती

पुष्पलकृष्णौ, दीक्षातपसी, उलूखलमूसले, मधुसर्पिणी, प्रहसप्रजा-
पती, शिववैश्वणी, स्कन्दविशाखा, परिघाटकीशिकी, प्रवर्ग्यो-
पसदी, इधमवर्हिषो, श्रद्धातपसी, मेघातपसी, बध्वयनतपसी,
भाययसाने, धृद्धामेधे, शृङ्गसामे, वाङ्मनसे ।

N. B. अश्वयुग्मद्वयान्तात् समाहारे (द्वन्द्वान्तात्सुद्वयान्तात्
समाहारे)—समाहार द्वन्द्व में चरगन्ति, दक्षान्त, पक्षान्त और
द्वयान्त शब्दों के परे अ होता है । यथा, वाक्स्वयम्, धीमत्रम्, शमी-
रपदम्, सम्प्रतिपदम्, वाक्स्वियम्, वाग्विशुक्म्, एषोषानहम्, पेदुगोदु-
दम् । समाहार नहीं होने से नहीं होता । यथा, धीमत्री, शत्रुद्वारादी ।

२ निर्दयं स्त्रीपुंसादयः (अचतुरविचतुर ...)—द्वन्द्व

समास में स्त्रीपुंसी इत्यादि निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, स्त्री च पुमान् च
स्त्रीपुंसी, वाक् च मनश्च वाङ्मनसे, नक्षत्रं दिवा च मर्तृदिवम्, रात्रौ
च दिवा च रात्रिदिवम्, अहनि च दिवा च अहदिवम्, अहश्च रात्रिश्च
अहोरात्रः, पेम्बनदुही, अक्षिशुक्म्, दारगवम्, कर्ण्यधीवम्, पदप्रीवम्,
शृङ्गयजुवम्, सरजगम्, निम्भेयगम्, पुण्यायुक्म्, जनोश्च, महोश्च,
ब्रह्मोश्च, उपशुनम्, गोच्छावः, अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः ।

(२ सरुपाणनेकशेष एकविमती—एकविमति में जितने एक
से रूप होते हैं उनमें से एक ही (अवशिष्ट) रह जाता है,
इसको एकशेष द्वन्द्व कहते हैं । दो पदों का एकशेष होने से
अवशिष्ट पद द्वियचनान्त होता है और अनेक पदों का एकशेष
होने से अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है । यथा, तदश्च तदश्च
तदश्च, तदश्च तदश्च तदश्च तरयः, फलञ्च फलञ्च फले, पत्रञ्च
पत्रञ्च फलञ्च फलानि ।

(३) पुमान् विभवा—स्त्री और पुरुष के साथ समास होने
पर पुरुषार्थी पद अवशिष्ट रह जाता है । यथा, ब्राह्मणश्च
ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ, कुम्भकुट्टश्च कुम्भकुटी च कुम्भकुटी । यदि मिथ

समाहारः गवाश्चम्, अजाश्च अविकाश्च अजाविकम्, पुत्राश्च
पौत्राश्च पुत्रपौत्रम्, गधाविकम्, गवैडकम्, अजैडकम्, कुञ्जवा-
मनम्, कुञ्जकिरातम्, श्यपचचण्डालम्, स्त्रीकुमारम्, दासी-
माणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीप्रच्छदम्, शाटीपट्टिकम्,
उद्दस्वरम्, उद्दशशम्, मूत्रशकृत्, मूत्रपुरीषम्, यद्वन्मेदः, मांस-
शोणितम्, दर्मशरम्, दर्मपूतीकम्, अज्जुनशिरोपम्, अज्जुन-
पुरुषम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भागवती भागवतम् ।

(क) विभाषा पृथ्वीपरादीनाम् (विभाषा वृश्मण ...)—पूर्व
और अपर इत्यादि का विकल्प से समाहार होता है । यथा;
पूर्वच अपरच पूर्वपरम्, पूर्वपरि; अधरच उत्तरच अधरोत्त-
रम्, अधरोत्तरे; दधि च घृतं च दधियृतम्, दधियृते ।

(ट) विरुद्धानामविशेषणानञ्च (विप्रतिविद्धं वानाधिकरणवाचि)—
परस्पर विरुद्ध पदार्थों में विकल्प से समाहार होता है ।
यथा; शीतं च उष्णं च शीतोष्णम्, शीतोष्णे, सुखं च दुःखं च
सुखदुःखम्, सुखदुःखे, आलोकश्च अन्धकारश्च आलोकान्ध-
कारम्, आलोकान्धकारी । विशेषण होने से नहीं होता । यथा;
शीतोष्णे पयसी ।

(ड) शूद्राणामनिरवसितानां निन्दम् (शूद्राणामनिरवसितानाम्)—
शूद्राचक पदों का नित्य समाहार होता है । यथा; गोपार्य
नापिताश्च तेषां समाहारः गोपनापितम्, कर्मकाराश्च कुम्भ-
काराश्च कर्मकारकुम्भकारम्, ताम्बूलिकाश्च तन्तुवायाश्च
ताम्बूलिकतन्तुवायम् । निरवसित (वे शुद्धे पात्रे तंशारेनापि न
शुष्यति ते निरवसिताः) शूद्रों का नहीं होता; यथा; अण्डालाश्च
मृगवाश्च चण्डालमृतयाः ।

(इ) न दधियवः प्रवृत्तीनाम् (न दधियव आदीनि)— दधियवश्च
इत्यादि में समाहार नहीं होता । यथा; दधियवती, सर्विमंपुती

शुक्लकृष्णौ, दीक्षातपसी, उलूखलमूसले, मधुसर्पिणी, प्रहस्रप्रजा-
पती, शिववैश्रवणी, स्कन्दविशाखा, परिघाट्कौशिकी, प्रवर्ग्यो-
रसदौ, इधमवर्द्धिपो, श्रद्धातपसी, मेधातपसी, अध्ययनतपसी,
माधवसाने, धत्तामेधे, ऋक्सामे, वाङ्मनसे ।

N. B. अश्चवर्गद्वयहान्तात् समाहारे (द्वन्द्वान्चुदयहान्तात्
समाहारे)—समाहार द्वन्द्व में चवगन्ति, दधगन्त, पद्मगन्त और
हवान्त शब्दों के परे अ होता है । यथा, वाक्त्वचम्, धीमत्रम्, दामी-
रपदम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्वचम्, वाग्निपुत्रम्, उग्रोशनदम्, पेनुगोडु-
दम् । समाहार नहीं होने से नहीं होता । यथा, धीमत्रौ, वाङ्मनसे ।

२ नित्यं स्त्रीपुंसादयः (अचतुरविचतुर ...)—द्वन्द्व
उत्पत्ति में स्त्रीपुंसी रूपदि निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, स्त्री च पुमाश्च
स्त्रीपुंसी, वाक् च मनश्च वाङ्मनसे, नक्षत्रं दिश च नक्षत्रदिवम्, राधौ
च दिवा च रात्रिदिवम्, अहनि च दिवा च अहदिवम्, अहश्च रात्रिश्च
अहोरात्रः, पेन्वनदुहौ, अग्निधुवम्, दारगवम्, कर्मन्धीवम्, पदद्वीवम्,
आग्यजुषम्, सरजगम्, निःशंयतम्, पुण्यापुत्रम्, जगोत्सवः, महोत्सवः,
वृद्धोत्सवः, उग्रशुभम्, गोष्ठरवः, अचतुरः, पुषतुरः, विचतुरः ।

(*) सरूपाणामेकशेष एवविभक्तौ—एकविभक्ति में जितने एक
से रूप होते हैं उनमें से एक ही (अवशिष्ट) रह जाता है,
रसको एकशेष द्वन्द्व रहते हैं । दो परों का एकशेष होने से
अवशिष्ट पद द्विवचनान्त होता है और अनेक परों का एकशेष
होने से अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है । यथा, तदश्च तदश्च
तदश्च, तदश्च तदश्च तदश्च तदश्च, पालश्च पालश्च पाले, पालश्च
पालश्च पालश्च पालानि ।

(*) पुमान् स्थितौ—स्त्री और पुंस्य के साथ समास होने
पर पुंस्यशर्ची पद अवशिष्ट रह जाता है । यथा, ब्राह्मणश्च
ब्राह्मणी च ब्राह्मणी, कुम्भकुटीश्च कुम्भकुटी च कुम्भकुटी । यदि विभक्त

जातीय स्त्री और पुंस्य का समास हो तो ऐसा नहीं होता यथा, हंसश्च सारसी च हंससारसी ।

(स) न व्यक्तिज्ञानाम्—विशेष व्यक्ति-बोधक पदों का एक शेष समास नहीं होता । यथा, इन्द्रश्च इन्द्राणी च इन्द्रेन्द्राण्यम् ।
भवश्च भवानी च भवभवान्यी ।

(ग) भ्रातृ-पुत्री स्व-दुहितृभ्याम्—स्वम् के साथ भ्रातृ और दुहितृ के साथ पुत्र का समास होने पर यथाक्रम भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट रहता है । यथा, भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ ।
पुत्रश्च दुहिता च पुत्री ।

(घ) विभाषा पिता मात्र—मातृ के साथ समास होने पर विकल्प से पितृ शब्द अवशिष्ट रहता है । यथा, माता च पितरौ च पितरौ, मातापितरौ ।

(ङ) श्वशुरः श्वभूवा—श्वभू के साथ समास होने पर विकल्प से श्वशुर शब्द अवशिष्ट रहता है । यथा, श्वभूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ, श्वभूश्वशुरौ ।

(च) नपुंसकमनपुंसकेनैकवचनं वा (नपुंसकमनपुंसकेनैकवचनमन्तरस्याम्)—नपुंसक भिन्न शब्द के साथ नपुंसक शब्द समास होने पर नपुंसक शब्द अवशिष्ट रहता है और विभक्ति से एकवचन होता है । यथा, शुकृश्च शुक्रा च शुकृच-शुक्रशुक्रानि । नपुंसक शब्द के साथ समास होने से एकवचन नहीं होता । यथा, शुकृच शुकृच शुकृच शुकृानि ।

N. B. इन्द्र समास में किस पद को कहाँ रचना चाहिये । निम्नलिखित नियमों पर ध्यान देना चाहिये ।

(१) अल्पस्वरे इन्द्रे (अल्पाच् तरम्)—इन्द्र समास के पद में कम स्वर हो उसे पहले रचना चाहिये । यथा, कालामती, गजुर

विभक्ति का लोप नहीं होता; उसे अलुक् समास कहते हैं।

६४ पञ्चम्याः स्तोकास्तिकदूरार्थकृच्छेभ्यः (पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः) स्तोकार्थं, अन्तिकार्थं, दूरार्थं और कृच्छ्र शब्द की परचमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, स्तोकाण्मुक्तः, अन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादागतः, विप्रकृष्टादागतः, कृच्छ्रान्मुक्तः।

६५ भोजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः (भोजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः अज्जम उवसंख्यानम्)— भोजस्, सहस्, म्भस्, तमस् और अंजस् की परचर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, भोजसाहृतम्, सहसाहृतम्, म्भसाहृतम्, तमसाहृतम्, अंजसाहृतम्।

(क) पुंसोऽनुजे (पुंसानुजो अनुपान्धो विरुताध इति च)—अनु शब्द परे हो तो पुमस् की परचर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता; यथा, पुंसानुजः।

(ख) अनुपान्धे (पुंसानुजो...)—अन्ध शब्द परे हो तो अनुस् की परचर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, अनुपान्धः।

(ग) भारमनः पूणे (भारमनश्च पूणे इति वक्तव्यम्)—पूरण याचक पद परे हो तो भारमन् की परचर्त्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, भारमनापूरणः, भारमनापूरणः।

६६ वैशकशालाख्यायां चतुर्थ्याः—व्याकरण की सहा रामर्त्ती जाय तो भारमन् की परचर्त्ती चतुर्थी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, भारमनेपदम्, भारमनेभाषा।

(घ) पराच (परम्य च)—पर शब्द के उपर में लोप नहीं होता। यथा, परमैपदम्, परमैभाषा।

६७ इत्यन्तान् सत्वायः संशयम्—संज्ञा अर्थ में इत् परचर्त्ती

और अकारान्त शब्द को परवर्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; युधिष्ठिरः, त्वचिसारः, अरण्येतिलकाः, तनेकिशुकाः, कूपेपिशाचकाः ।

(क) अन्तमध्याभ्यां गुरी (मध्यात् गुरी । अन्ताच्च) — गुरु शब्द परे तो अन्त और मध्य की परवर्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; अन्तेगुरुः, मध्येगुरुः ।

(ख) अमूर्द्धमस्तकात् स्वाज्ञादकाने — स्वाङ्गवाचक शब्द की परवर्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; कण्ठेकालः, रसिलोमा, शिरसिशिख । काम शब्द परे तो विभक्ति का लोप होता है; यथा; मुखकामः । मूर्द्धन् और मस्तक शब्द के परे की विभक्ति का लोप होता है । यथा; मूर्द्धशिखः, मस्तकशिखः ।

(ग) विभाषा वन्धे (वन्धे च विभाषा) — वन्ध शब्द परे होने से विकल्प से लोप होता है । यथा; हस्तैवन्धः, हस्तवन्धः; पदैवन्धः, पदवन्धः ।

(घ) तत्पुरुषे इति बहुलम् — तत्पुरुष समास में क्त प्रत्यय से बना हुआ पद परे तो सप्तमी विभक्ति के लोप का कोई नियम नहीं है अर्थात् कहीं लोप नहीं होता, कहीं होता है और कहीं विकल्प से होता है । यथा; अलुक्-अन्तेवासी, स्तन्ये-रामः, कर्णेजपः, पङ्केरुहः, मनसिशयः, प्राकृषिजः, शरदिजः (शरत्परत्कालदिवा जेः) । लुक्-कुरुचरः, स्थण्डिलशाया, कूटस्थाः, गृहस्थः । विकल्प से-सरसिजम्, सरोजम्; मनसिजः, मनोजः; ग्रामेवासः, ग्रामवासः; ग्रामेवासी, ग्रामवासी ।

पात्रेसमितादयः कुत्सायाम् (पात्रेसमितादयश्च) — कुत्सा अर्थ में पात्रेसमित इत्यादि की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा, पात्रेसमिताः (मोजनकाले पात्रे एव सङ्गताः, नतु कार्य्य-

काले इत्यर्थः) गेहेश्वरः (गेहे एव श्वरः, ननु अन्यत्र इत्यर्थः
पात्रे बहुव्याः, गेहेनहो, गेहेक्षेत्री, गेहेविजिती, गेहेष्टः, गे
भृष्टः, गर्भेत्पतः, गोष्ठेश्वरः, गोष्ठेष्टः, गोष्ठेष्टपिडनः, गोष्ठेष्टप्रक
इत्यादि ।

६८ पश्चात् आक्षेपे—भर्त्सना अर्थ में षष्ठी विभक्ति का लोप
नहीं होता । यथा; नौरस्या कृत्स्नम्, दासस्य तनयः ।

(क) पुत्रे विमाणा (पुत्रेऽन्वतरस्याम्)—भर्त्सना समझे जाने और
पुत्र शब्द परे रहने से षष्ठी विभक्ति का विकल्प से लोप
नहीं होता । यथा; दास्याःपुत्रः, दासीपुत्रः, वृषल्याःपुत्रः
वृषलीपुत्रः ।

(ख) वाग्दिकृपदब्धयोः युक्तिदण्डहेतु—युक्ति, दण्ड और हेतु
शब्द परे रहने से यथाक्रम वाच्, दिश् और पश्यत् शब्द की
परवर्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; वाचोयुक्ति
विशोदण्डः पश्यतोहरः ।

(ग) देवात् प्रिये (देवानां प्रिय इति च मूर्धे)—प्रिय शब्द परे होने
से देव शब्द की परवर्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता
यथा; देवानाम्प्रियः । अन्यत्र देवप्रियः ।

(घ) शुनः शेष-पुच्छ-लाङ्गूलेषु संज्ञायाम् (शेषपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः)—
संज्ञा समझे जाने और शेष, पुच्छ और लाङ्गूल शब्द परे
रहने से श्वन् की परवर्ती षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता ।
यथा; शुनः शेषः, शुनः पुच्छः, शुनो लाङ्गूलः ।

(च) दिवध दासे—संज्ञा अर्थ में दास शब्द परे होने से दिव
की षष्ठी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; दिवोदासः ।

(छ) श्रुतो विद्यागोत्रसम्बन्धात् (श्रुतो विद्याधोनिःसम्बन्धात्)—विद्या
सम्बन्धवाचक और गोत्र सम्बन्धवाचक श्रुकारान्त शब्द

समास ।

की यही विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा; ह
होतुरन्तेवासी, पितुः पुत्रः, पितुरन्तेवासी ।

विभक्त्योः—स्वसू और पति शब्द परे हो
से लोप होता है । यथा; मातुःस्वसा (मातुः पितुर्भ्यामन्
मातृस्वसा; पितुः स्वसा पितृस्वसा; दुहितुः पतिः
ननान्दुः पतिः ननान्दुपतिः ।

मध्यपदलोपी समास

६९. लोपः इविन्मध्यस्य (शाक्याधिकारीनां सिद्धये
स्वोपसंख्यानम्)—समास होने पर कहीं कहीं मध्य पद
होता है उसी को मध्यपदलोपी समास कहते हैं । य
मिधं भोदनं पुनोदनम् , पलमिधं भन्नं पलाशम् ,
वार्ययः शाकवार्ययः, गत एव प्रत्यागतः गतप्रत्याग
स्थितः कालोन्वय कण्ठेकालः, उरसि स्थितानि सं
उरसिलोमा, शिरसि स्थिता शिखास्य शिरसिशिखः, म
पर्णान्यस्मात् पर्णः, भवगतः शोकोऽस्य भवशोक
मलमस्मान् निर्मलः, भभुक्तानि पर्णान्पनया भपर्णा, वि
धस्मान् व्यर्थः, अनुगतोऽर्थोऽस्मिन् अन्यर्थः, यथाभूतोऽ
यथार्थः, प्रतिगतमशमस्मिन् प्रत्यक्षः, उन्नमितं मुगमने
अपःवृत्तं मुसमनेन अपोमुख . निर्नष्टं धनमस्य निर्धनः
मनोऽस्य विमनाः, उत्कण्ठितं मनोऽस्य उन्नताः,
मनोऽस्य सुमताः, सुवर्णविकारोऽन्तद्वारोऽस्य सुव
अपिचमानः पुत्रोऽस्य अपुत्रः, भविचमानः भोषोऽस्य
एकाधिका विशतिः एकाविशतिः, एकाधिका त्रिशत् . प
अतुरधिका दश अतुरेण, पञ्चाधिका दश पञ्चदश
विशतिः पञ्चाविशतिः, पञ्चाधिका त्रिशत् पञ्चत्रिंशत् ।

(क) एकस्यैका दशति—दशन् शब्द परे होने से एक का एक होता है । यथा; एकाधिका दश एकादश ।

(स) द्व्यष्टनोर्दश संख्यायाम् (द्व्यष्टनःसंख्यायामबहुव्रीहौशतयोः)—संख्यायाचक शब्द परे हो तो द्वि का द्वा और अष्टन् का अष्ट होता है । यथा, द्व्यधिका त्रिंशतिः द्वात्रिंशतिः, द्व्यधिका त्रिंशन् द्वात्रिंशन् ; अष्टाधिका दश अष्टादश, अष्टाधिका त्रिंशतिः अष्टात्रिंशतिः, अष्टाधिका त्रिंशत् अष्टात्रिंशत् ।

त्रयस्यः—त्रि का त्रयस् होता है । यथा; त्र्यधिका दश त्रयोदश, त्र्यधिका त्रिंशतिः त्रयोत्रिंशतिः, त्र्यधिका त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत् ।

विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृती सञ्ज्ञायाम्—चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नवति परे हो तो द्वि का द्वा, त्रि का त्रय; और अष्टन् का अष्ट विकल्प से होता है । यथा; द्व्यधिका चत्वारिंशत् द्वाचत्वारिंशत्, द्व्यधिका पञ्चाशत् द्वापञ्चाशत्, द्व्यधिका षष्टि द्विषष्टि, द्व्यधिका सप्तति द्विसप्तति, द्व्यधिका नवति द्विनवति; त्र्यधिका चत्वारिंशत् त्र्यचत्वारिंशत्, त्र्यधिका पञ्चाशत् त्र्यपञ्चाशत्, त्र्यधिका षष्टि त्र्यषष्टि, त्र्यधिका सप्तति त्र्यसप्तति, त्र्यधिका नवति त्र्यनवति; चत्वारिंशत् चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् पञ्चाशत्, षष्टि षष्टि, सप्तति सप्तति, नवति नवति ।

नाशीतिशतादी बहुव्रीहौ (द्व्यष्टनः)—अशीति और शत इत्यादि संख्यायाचक शब्द परे हो तो बहुव्रीहि समास में उपर्युक्त कार्य नहीं होता । यथा; द्व्यशीतिः त्र्यशीतिः, द्विशतम्, त्रिशतम् । बहुव्रीहि समास में द्वित्राः, त्रिचतुराः ।

(ग) एकोनस्यैकान्नेकादशौ विभाषा (एकादशस्यैकान् बहुव्रीहौ)—एकोन का विकल्प से एकाध और एकादश होता है । यथा; एकोनत्रिंशतिः, एकादशत्रिंशतिः, एकादशत्रिंशतिः ।

सर्वसमान-साधारणविधि

७० त्रयोदशमाते (त्रयोदशः पञ्चमाशते)—समास होने

पर समस्त भाग के अन्तस्थित पश्चिन् के उत्तर ड होता है और इसका अ रहता है । यथा, पथः समीपं उपपथम्, जले पन्थाः जलपथः, प्रथाणां पथां समाहारः त्रिपथम्, चतुर्णां पथां समाहारः चतुष्पथम्, रम्यः पन्थाः अस्मिन् रम्यपथं नगाम्, क्षेत्रञ्च पन्थाश्च क्षेत्रपथौ । मध्यप के परवर्ती होने से नपुंसक होता है । यथा, विद्वद्ः पन्थाः त्रिपथम्, गर्हितः पन्थाः उत्पथम्, भयवृष्टः पन्था भयपथम् ।

७१ धनः—समास होने पर अन्तस्थित भष् के उत्तर अन् होता है और इसका भ रहता है । यथा, विमला भाषोऽस्मिन् विमलार्पं मरः, उद्धृता भाषोऽस्मान् उद्धृतापः कृपः, कूप-स्थावः कूपापः, निर्मला भाषः निर्मलापः ।

द्व्यन्तद्वयसर्गोऽय ईन(द्व्यन्तद्वयसर्गोऽय ईन्)—द्वि, अन्तर् और उपसर्ग के परवर्ती भष् के भ का ई होता है । यथा, द्वयोर्द्विभोः आपोऽस्य द्वीपम्, अन्तरीपम्, समीपम्, प्रतीपम्, मन्वीपम् ।

अवर्णादिमात्र (अवर्णांशाद्वा)—अवर्णान्त उपसर्ग के परवर्ती होने से विकल्प से होता है । यथा, प्रेषम्, प्रापम्, परेषम्, परापम्, भर्षा समीपं उपेषम्, उपापम् ।

७२ समागन्तौ—समाप और भद्रूप निपाठन से सिद्ध होते हैं । यथा, समापो देवयजनम्, भद्रूपो देवः ।

७३ पुरोऽमङ्गं (२२२२.....)—समास होने पर अन्तस्थित पुर के उत्तर अन् होता है । यथा, राज्ञो धुः राजपुरा, महर्षो धुः महापुरा, धृता धूनेन धृतपुरः । महत् शब्द का सम्बन्ध हो तो नहीं होता । यथा, भरास्य धुः महाधुः इडा धूरस्मिन् इन्धुः महाः ।

७४ २२२२ (२२२२.....)—अन्तस्थित भष् के उत्तर अन्

होना है । यथा, अर्द्धं ऋचः अर्द्धर्षः (पुंलिङ्गं होता है)
अधिगता ऋक् अनेन अधिगतर्षः ।

नशो माणवके—माणवक अर्थ में नञ् के परवर्ती ऋच् के
उत्तर अन् होता है । यथा, अनृचो माणवकः । अन्यत्र अनृक्
साम ।

यहोरयाणे (ऋक्पूर्.....)—चरण अर्थ में बहु के परवर्ती
ऋच् के उत्तर अन् होता है । यथा, यहृचश्चरणः । अन्यत्र
यहृक् सूक्तम् ।

७५ प्रत्यन्वेभ्यो लोमः (अच् प्रत्यन्वेषुर्वात् सामलोमः)—प्रति,
अनु और अच् के परवर्ती लोमन् के उत्तर अन् होता है ।
यथा, प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम् ।

७६ साम्नश्च (अच्.....)—प्रति, अनु, और अच् के परवर्ती
सामन् के उत्तर अन् होता है । यथा, प्रतिसामम्, अनुसामम्,
अवसामम् ।

७७ कृष्णोदक् पाण्डुसंख्याभ्यो भूमेः (कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वात्
भूमेःसंज्ञयते)—कृष्ण, उदक्, पाण्डु और संख्यायाचक शब्द
के परवर्ती भूमि के उत्तर अन् होता है । यथा, कृष्णभूमः,
उदग्भूमः, पाण्डुभूमः, द्विभूमः, चतुर्भूमः ।

७८ ब्रह्महस्तिराज्यराजभ्यो वर्चसः (ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसोऽच् पत्य-
राजभ्यां चेति वक्तव्यम्)—ब्रह्मन्, हस्तिन्, पत्य और राजन् के
परवर्ती वर्चस् के उत्तर अन् होता है । यथा, ब्रह्मवर्चसम्,
हस्तिवर्चसम्, पत्यवर्चसम्, राजवर्चसम् ।

७९ अवतमन्धेभ्यस्तमसः—अथ, तम् और अन्ध के परवर्ती
तमन् के उत्तर अन् होता है । यथा, अवतमसम्, तमन्तमसम्,
अन्धतमसम् ।

८० अन्ववतमन्धेभ्यो रदसः (अन्ववतमन्धेभ्यो रदसः)—अनु, अन्

और तत् के पर्यन्तों रहस् के उत्तर भन् होता है । यथा; अनु-
रहसम्, अवरहसम्, तत्ररहसम् ।

८१ उपसर्गादिध्वनः—उपसर्ग के पर्यन्तों अध्वन् के उत्तर
भन् होता है । यथा; प्रगतः अध्वान् प्राध्वो रथः, अध्वानोऽमाधः
निरध्वम्, अध्वानं प्रति प्रत्यध्वम् । अन्यत्र उत्तमोऽध्वा
उत्तमाध्वा ।

८२ खसो वनीव-धेयोभ्याम्—ध्वस् के पर्यन्तों वसीवस्
और धेयस् के उत्तर भन् होता है । यथा; श्वोवसीवसम्,
श्वःधेयसम् ।

N.B. न प्रशंसायां स्थस्तिभ्याम् (न पूजनात् । स्थस्तिभ्या-
मेव) प्रशंसावाची श्रु और भक्ति पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती ।
यथा; शोभशो राजा सुराजा, शोभनो राजा भस्तिन् सुराजा देशः, भक्तिसयेन
राजा भक्तिराजा; सुसखा, भक्तिसखा, सुगौः, भक्तिगौः, सुगन्धाः, स्वध्या ।

२ न किमः कुटसायाम् (किमःशेषे)—कुत्सावाची किम् शब्द
पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती । यथा, कुत्सितो राजा किराजा,
कुत्सितः सखा किसखा, कुत्सितः पन्थाः भस्तिन् क्विपन्थाः देशः ।

३ न नम्रस्तत्पुरुषे (नम्रस्तत्पुरुषात्)—तत्पुरुष समास में नम्
पहले रहने से समासान्त विधि नहीं होती । यथा, अराजा, असखा, भगौः ।

४ पथो विभाषा—पथिन् के उत्तर विकल्प से होता है । समासान्त
रह में वपुंसक होता है । यथा; अपथम्, अपन्थाः ।

८३ सः समानस्य गोत्रादी (ज्योतिर्जनपदभाषित्वादिभ्यामनोप्रस्पर्शान-
वर्णवशेषकवन्दुषु)—समास में गोत्र इत्यादि शब्द परे हो तो
समान का स होता है । यथा; समानं गोत्रमस्य सगोत्रः,
सरूपः, सवर्णः, सब्रह्मः, सनाभिः, सविण्डः, सनामा, सपथाः,
सवीर्यः, सवन्दुः, सवचनः, सरात्रिः, सज्योतिः, सजनपदः,
सप्रह्वारी ।

(ग) ईपदों न—ईपन् अर्थ में कु का 'का' होता है । यथा, कामधुरम्, ईपन्मधुरमित्यर्थः; कालवणम्, ईपलवणमित्यर्थः ।

विभाषा पुरुषे—पुरुष शब्द परे हो तो विकल्प से होता है । यथा, कापुरुषः, कुपुरुषः ।

(घ) का-कत्-कवान्युणे (कव बोधे)—उष्ण शब्द परे हो तो कु का का, कत् और कव होता है । यथा, कौष्णम्, कदुष्णम्, कथौष्णम् ।

८६ विश्वामित्रादयः (मित्रो वर्णो । विश्वव वसुहोः । नरे स'ज्ञापाम्)- विश्वामित्र आदि निपातन से सिद्ध होते हैं । यथा, विश्वस्य मित्रं विश्वामित्रः, विश्वावसुः, विश्वानरः, अष्टायकाः, अष्टापदम्, अष्टागतम्, शुनो दन्तः श्वाश्रतः, श्वाश्रुः, श्वाकर्णः, श्वापुच्छः, शुन इव पादावस्य श्वापदः (अष्टकः स'ज्ञान् । शुनं दन्तदंष्ट्राकर्णजुन्दन्नाहपुच्छपदेषु शीर्षोवायः)

८७ समोऽन्वयलोप-काम-मनसोः—काम और मनस् शब्द परे हो तो लम् अव्यय के अन्त्य वर्ण का लोप होता है । यथा, सकामः, समताः ।

(क) ह्यनुवाच (ह्यः काम-मनसोः)—काम और मनस् शब्द परे हो तो लुम् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है । यथा, गन्तुकामः, गन्तुमताः ।

(ख) अक्यमः ह्ये—ह्येय प्रत्यय परे हो तो अक्यम् के अन्त्य वर्ण का लोप होता है । यथा, अक्यदेवम्, अक्यकर्त्तव्यम् ।

पूर्व-निपात

८८ उगर्जन पूर्वम्—समास में उपसर्जन पद का पूर्व-निपात होता है ।

प्रथमनिर्दिष्टं तस्य उपसर्गम्—समास में प्रथमा विभक्ति के सहायोग में जिसका निर्देश रहता है उसे उपसर्ग के कहते हैं । अर्थात्समास में अथवा इत्यादि पद, न्युक्त्य में द्वितीयादि विभक्त्यन्त पद, कर्मधारय में विशेषण इत्यादि पद, द्विगु में संख्यावाचक पद उपसर्ग के हैं । यथा, अथकीभाव-कूलस्य समीपं उपकूलम्, ज्ञानमतिक्रम्य यथाज्ञानम्, वर्णानामानुपूर्व्येण अनुवर्णम्, नृणमप्यपरित्यज्य सनृणम्, प्रामाद्विदिः वहिर्प्रामम्, पाटलिपुत्रात् भापाटलिपुत्रम्, समुद्रस्य पारे पारे-समुद्रम् । तत्प्राप्तं सुखं प्राप्तं सुखप्राप्तम्, भग्नं शुभुक्षुः अन्न-शुभुक्षुः, वर्षं भोग्यः वर्षभोग्यः, पित्रा समः पितृसमः, अङ्गेन विकलः अङ्गविकलः, पाणिनिना प्रणीतं पाणिनि-प्रणीतम्, भूताय वलिः भूतवलिः, पुत्राय दितम् पुत्रदितम्, व्याघ्रात् भयम् व्याघ्रभयम्, गृहात् निर्गतः गृहनिर्गतः, नरोः छाया तरुच्छाया, भग्नोः शिखा अग्निशिखा, शास्त्रे प्रवीणः शास्त्रप्रवीणः, पूर्वार्द्धे कृतम् पूर्वार्द्धकृतम् । कर्मधारय-नीलं उत्पलं नीलोत्पलम्, नवः पल्लवः नवपल्लवः, सन् पुरुषः सत्पुरुषः । द्विगु-पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्

८६ राजदन्तादियु परम्—राजदन्त इत्यादि में उपसर्ग के पद परनिपात होता है । यथा, दन्तानां राजा राजदन्तः, वदस्य अपे अभवेनम् ।

९० वा कडाराद्यः कर्मधारये (कडागः कर्मधारये)—कर्मधारय-समास में कडार, खञ्ज, काण, कुण्ड, गौर, वृद्ध, भिक्षुक, पिङ्ग, पिङ्गल, तनु, जठर, चधिर, घर्वर इत्यादि पदों का विकल्प से पूर्वनिपात होता है । यथा, कडारगजः, गजकडारः, खञ्जशिखुः, शिशुखञ्जः, वृद्धपुरुषः, पुरुषवृद्धः ।

११ सप्तमीविशेष्ये बहुवीही—बहुवीहि समास में सप्तम्यन्त और विशेषण पद का पूर्वनिपात होता है । यथा; सप्तम्यन्त—कण्ठेकालः, उरसिलोमा; विशेषण-दीर्घबाहुः, महाबलः ।

१२ विभाषा प्रियस्य—प्रिय शब्द का विकल्प से पूर्वनिपात होता है । यथा; गुह्यप्रियः, प्रियगुहः ।

१३ सप्तमी पर गड्यादेः—गडु इत्यादि के योग में सप्तम्यन्त पद का पानिपात होता है । यथा; गडुः कण्ठे यस्य गडुकण्ठः, गडुः शिरसि यस्य गडुशिरसः ।

१४ प्रहरणार्थेष्व (प्रहरणार्थेष्व्यः परे निष्ठासप्तम्यौ)—प्रहरणवाचक पद के योग में सप्तम्यन्त पद का पानिपात होता है । यथा; वात्रं पानी यस्य वात्रपानिः, दण्डः पणौ यस्य दण्डपानिः, यज्ञः वरे यस्य यज्ञवः, धनुर्वस्त्रे यस्य धनुर्वस्त्रः ।

१५ निष्ठा पूर्वा—निष्ठा से उत्पन्न पद का पूर्व निपात होता है । यथा; एतकर्म्या, अधोतध्याकरणः, भक्षित्वादितः, पूनायुधः, उदुभृतदण्डः, भग्नरथः, पक्ववेद्याः ।

१६ कादितान्यादिभ्यु—भादितानि इत्यादि में निष्ठा से उत्पन्न पदों का विकल्प से पूर्वनिपात होता है । यथा, भादितानिः, भग्न्यादितः, जातसुखः, सुखजातः, जातपुत्रः, पुत्रजातः, जातदन्तः, दन्तजातः, सैलपीतः, पीतसैलः, मघपीतः, पीतमघः, सुरापीतः, पीतसुरः, माघ्योदः, उदमाघ्यः, मघंगतः, गतार्थः, प्राप्तकालः, कालप्राप्तः, भग्न्युद्यतः, उद्यतासिः, जातश्मधुः, श्मधुजातः, पूतपीतः, पीतपूतः ।

सर्व्व समास दोष ।

१७ समासभ्रतुविधः—पानिनि के मन में व्यवहृतत्वाद्, तन्पुण्यत्वाद् और इत्, ये चर प्रहार के समास हैं । कर्मपरर और इत्

तत्पुरुष के अन्तर्गत है । कहीं कहीं कर्मधारय और द्विगु को स्वतन्त्र समास मान कर समास ६ प्रकार का माना जाता है ।

६८ पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः—अव्ययीभाव समास में पूर्व पदार्थ प्रधान है । उपगृहम्, यथाशक्ति इत्यादि में उप, यथा इत्यादि पूर्व पदार्थ प्रधान हैं ।

६९ उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः—तत्पुरुष समास में उत्तर पदार्थ प्रधान है । तरुच्छाया, गङ्गात्रलम् इत्यादि में छाया, जल इत्यादि परपदार्थ प्रधान हैं ।

१०० उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः—द्वन्द्व समास में दोनों पदार्थ प्रधान हैं । अखण्डौ, तालतमालौ इत्यादि में अख, ताल, तमाल, ये सभी प्रधान हैं ।

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः—जिन पदों से बहुव्रीहि समास बनता है उनके अर्थ को छोड़ कर इसमें अन्य अर्थ की प्रधानता रहती है । यथा; बहुधनः, दीर्घबाहुः इत्यादि में बहु धन दीर्घ और बाहु इत्यादि की प्रधानता न समझी जाकर बहुत धन और बहुत बाहु वाले व्यक्ति रूप अन्य पदार्थ की प्रधानता समझी जाती है ।

परन्तु सर्वत्र ये नियम नहीं लगते । कहीं कहीं इराका मन्त्रिजम् देखा जाता है । सातगोदावरम्, उन्मत्तगङ्गम् इत्यादि अव्ययीभाव में पूर्व-पदार्थ प्रधान न होकर अन्वय पदार्थ प्रधान है । अकिञ्चनः, आतन्त्रजोषिकः, इत्यादि तत्पुरुष में उत्तरपदार्थप्रधान न होकर अन्यपदार्थ प्रधान है । विप्रः पञ्चमः इत्यादि बहुव्रीहि में अन्यपदार्थ प्रधान न होकर उभय पदार्थ प्रधान है । दृगतामसम्, दशमशकम् इत्यादि द्वन्द्व में उभयपदार्थ प्रधान न होकर लगामादारक्य पदार्थ प्रधान है । अतएव उपर्युक्त नियम सर्वत्र न लागू कर प्रायः लगते हैं । इनलिये उपर्युक्त बातों सूची के पहले कोट प्रायेण जोड़ दिया करते हैं ।

उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः—यद् गृह्य सन्धश्च स्व से नहीं लगता ।

उभय पदों में जिस प्रकार इन्द्र समास होता है उसी प्रकार अनेक पदार्थों में भी होता है; अतएव सूत्र में उभय के स्थान में अनेक होना चाहिये । अव्ययीभाव समास में दो पद और अनेक पद होते हैं, इन्द्र और बहुमीहि समास में दो पद और अनेक पद होते हैं; पर तत्पुरुष समास में प्रायः सर्वत्र दो पद होते हैं ।

१०१ बहुमीहि द्विविधस्तद्गुणसंविज्ञानोऽतद्गुणसंविज्ञानश्च—बहुमीहि समास दो प्रकार के होते हैं, तद्गुणसंविज्ञान, अतद्गुणसंविज्ञान । जहाँ समास बोधित अन्वयार्थ के सदृश समास होने वाले पदार्थ का क्रिया इत्यादि के साथ सम्बन्ध हो उसे तद्गुणसंविज्ञान कहते हैं और जहाँ समास होने वाले पदार्थ का क्रिया के साथ सम्बन्ध न हो उसे अतद्गुणसंविज्ञान कहते हैं । लम्बकर्णमानय इत्यादि में आभय क्रिया का लम्बकर्ण व्यक्ति के साथ सम्बन्ध है और लम्बकर्ण का भी परम्परा सम्बन्ध है, इन्से तद्गुणसंविज्ञान कहते हैं । दृष्टसमुद्रमानय इत्यादि में अन्य क्रिया का दृष्ट-समुद्र व्यक्ति के साथ सम्बन्ध है, पर समुद्र का सम्बन्ध नहीं है इसलिये इसे अतद्गुणसंविज्ञान कहते हैं ।

१०२ समानाधिकरणपदघटितो व्यधिकरणपदघटितश्च— बहुमीहि प्रकारान्तर में दो प्रकार का होता है; समानाधिकरणपदघटित और व्यधिकरणपदघटित । विशेष्य और विशेषण पद के बहुमीहि को समानाधिकरणपदघटित कहते हैं; यथा, नीला-म्बरः, दीर्घशाहुः, कृष्णकायः इत्यादि । जहाँ अन्य प्रकार के पदों में बहुमीहि होता है उसे व्यधिकरणपदघटित कहते हैं; यथा; दण्डपालिः, अनुदंस्तः इत्यादि ।

Exercise—43

1. Explain the distinction between—तत्पुरुष & बहुमीहि, कर्मधारय & द्विगु, कर्मधारय & बहुमीहि, तन्माहार इत्येक प्रकार द्विगु, and पीतम्भारम् & पीतम्भारः ।

2. Expound the Samasas of:—अतिशोचम्, यथाशक्ति, पारेसमुदम्, पञ्चनदम्, उपगङ्गम्, कृपयतिः, पितृशमः, भ्रातृश्वम्, वन्धनमुक्तः, कार्यकुशलः, कृपोदकम्, ब्राह्मणमार्या किरात्र ब्राह्मणीमार्याः, चतुष्पदी, दण्डदण्डि, निरर्थकम्, हरिहरी, दंशमशकम्, मातापितरौ, दम्पती and भ्रानरी ।

3. Give compound words for:—कण्ठे स्थितः कालोऽस्य तृणमप्यपरित्यज्य, पञ्चाधिका विशतिः, तमसा कृतम्, कुत्सितं भक्षम्, नक्तञ्च दिवा च, द्योश्च, भूमिञ्च, काकाश्च उच्यन्ते, पद्येव गण्डोऽस्य सुन्दरी जायास्य, पाचिका भार्यास्य, अज्ञाना राजा, नास्ति पुत्रोऽपि मायस्य, पूर्वं स्नातः परचादनुलिप्तः, सुन्दरी महिला and सम्पत् जयति ।

4. Translate into Hindi:—नदी सुभवती बहवो प्रशंसन्ति । रावणेन भीता वानरा दिशि दिशि पलायन्ते । बडोरगर्माभिः जानकी विमुच्य गुरुजनस्तत्र गतः । न मे हस्तपादं प्रसरति । इयं फलकुसुमपल्लवाद्येण मामुपतिष्ठते । स समार्यः सपुत्रः सपत्निरियतः । विष्णुशर्मा नाम ब्राह्मणः सद्गुणोतिशास्त्रपररज्ञ आसीत् । ममायुःशेषेणापि जीवन्तु सपुत्ररारोऽय राजपुत्रः ।

5. Translate into Sanskrit:—(a) सोलह वर्षों की यह कन्या बड़ी ही सुन्दर है । गुणों की मीठी बात सुनकर हृदय संतुष्ट हो गया । यह मनुष्य नीतिशास्त्र में बड़ा ही कुशल है । विद्यापन सब धर्मों से उत्तम है । माना जाता है कि सेश करो । विशालपाती की कोई प्रतिष्ठा नहीं करता । मैं ईश्वर के विषय में जितना अधिक विचारता हूँ उतना ही कम जानता हूँ ।

(b) Kindly send there the person possessed of long arms. You have a bad minister. I saw there an assembly of women. I will order them to go to another village. Ram accompanied by Sita and Lakshmana went to the forest. I shall try for

your good to the utmost of my power.

6. Correct:—एवं चिन्तयन् सा निशा अति चक्राम । रोगिः
निशाया निशा याति । नृपो प्रजान् पालयति । कथं त्वं इदमिति । मे पापान्
क्षम । विध्यावादी धिक् । अहं वेति शुको वेत्ति । अथ ज्वलते तस्यां शमी-
कोटरेऽर्धशरीरः स्फुटितेक्षण कस्यात् परिदेवयन् तस्य पिता निर्वक्राम ।

लिङ्गानुशासन ।

पुंल्लिङ्ग Masculine.

- १ धन्यन्ताः—घञ् और अच् (अल्) प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं; यथा, पाकः, त्यागः, भावः; कण्ठ, गरः Sickness.
- २ धात्वन्तरव—घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं; यथा; विस्तरः, गोचरः, खयः, जयः । पर भय, लिङ्ग, भग (fortune), और पद शब्द स्त्रील्लिङ्ग है ।
- ३ नक्तः—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग है, यथा; यज्ञः, यज्ञः । पर याच्ञा स्त्रील्लिङ्ग है ।
- ४ वधन्तोऽङुः—कि प्रत्ययान्त दा और धा धातु से बने हुए शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं; यथा, माधिः (anxiety), उदधिः, तिधिः । पर इषुधि (quiver) पुंल्लिङ्ग और स्त्रील्लिङ्ग दोनों है ।
- ५ देव, असुर, आत्मन् स्वर्ग, चन्द्र, सूर्य, अग्नि, वायु, मेघ, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, अङ्ग, गर, पङ्क, शत्रु, वर्ण, प्रद और वृक्ष वाचक शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं; यथा,
देव—अमरः, निर्जरः, देवः, सुरः, विबुधः, दिवोकः, त्रिदशः ।
असुर—असुरः, दैत्यः, दनुजः, दानवः, सुरद्विद् । आत्मन्—
आत्मा, क्षेत्रज्ञः । स्वर्ग—स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः । चन्द्र—चन्द्रः,

हिमांगुः, चन्द्रमाः, इन्द्रुः, विष्णुः, सुषांगुः, सोमः, मृगा
 शशधरः, भ्रपाकरः । गृध्रं-मूर्त्तः, मादित्यः, दिवाकरः
 मास्करः, महस्करः, विमाकरः, मार्त्तण्डः, मिहिरः, विमाव
 सयिता, रधिः, सपतः, मित्रः, सहस्रांगुः, भानुः, अंगुमाली
 अग्नि-अग्निः, वैश्यावरः, पद्भिः, पायकः, मनलः, द्रुतमुक्
 वायु-वायुः, भनिलः, समीरः, माहतः, मरुत्, समीर
 पवनः, प्रगज्वत, घातः । मेघ-मेघः, धारिषाहः, यलाह
 जलधरः, धारिद्, जलमुक्, अम्बुमृत् । निरि-पर्यतः, अग्नि
 निरिः, मचलः, शीलः । समुद्र-समुद्रः, सागरः, अग्नि
 पाराधारः, उद्धिः, सिन्धुः, अर्णवः, जलनिधिः, रत्नाकर
 सरित्पतिः, नभ-नभः, कररुहः । केश-केशः, विष्णु
 पुन्तलः, कचः, शिरोरुहः । इन्त-इन्तः, दशनः । स्तन-स्तन
 कुचः । भुज-भुजः, बाहुः, दोः । कण्ठ-कण्ठः, गलः । अङ्ग
 खड्गः, असिः, कण्वाळः । शा-शरः, घाणः, विशिषः, मार्गेण
 पद्-पद्मः, कर्दमः । शत्रु-शत्रुः, रिपुः, अरिः, दैरी, सपत्न
 द्विपत्, द्विट्, अमित्रः, अरातिः । वर्ण-शुक्लः, श्वेतः, शुभ्र
 पाण्डुरः । प्रद-रविः, सोमः, बुधः, केतुः इत्यादि । वृष-वृष
 तरुः, विटपी, शार्खा, अनोक्हः, महीरुहः, द्रमः, पादकः । प
 त्रिविष्टप शब्द क्लीबलिङ्ग, दिष् शब्द स्त्रीलिङ्ग, इषु तथा बाहुशब्द
 पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग तथा अस्र शब्द क्लीबलिङ्ग है ।

६ क्रतु (यज्ञ) पुरुष, कपोल और गुल्फ के पर्याय शब्द
 पुंलिङ्ग हैं; यथा; क्रतुः, अध्वरः, पुरुषः, नरः, कपोलः, गण्डः
 गुल्फः, प्रपदः ।

७ रश्मिदिव्यमभिमानि-रश्मि और दिवस के पर्याय
 शब्द पुंलिङ्ग हैं । यथा, रश्मिः, करः, किरणः, अंगुः, गमस्तिः,
 मयूखः, दिवसः, घनः । पर दीधिति (ray of light)

स्त्रीलिङ्ग है और दिन तथा अह्न शब्द बलीबलिङ्ग है ।

८ मानामिधानि—मान के पर्याय शब्द पुलिङ्ग है; यथा; कुंडरः, ग्रन्थः । पर द्रोण तथा आढक पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग, सारी और मालिका स्त्रीलिङ्ग है ।

९ दाराशतलाजामूना बहुत्व—दार, अक्षत, लाज, असु (माण) पुलिङ्ग और बहुवचनान्त है ।

१० नास्वरपदानि प्रत्याहपदानि—नाडी, अप और जन के परवर्ती यथाक्रम षण, अङ्ग और पद शब्द पुलिङ्ग हैं । यथा, नाडीषणः, अपाङ्गः, जनपदः ।

११ उकारान्त तथा क्, ण्, य्, न्, म्, य्, र् या स्, उपधा वाले शब्द पुलिङ्ग होते हैं; यथा,

उ—प्रभुः, रक्षुः (ईष) । पर धेतु, रज्जु, कुट्टु-दू, सरयु, तनु रेणु, म्रियङ्ग (a plant) स्त्रीलिङ्ग है; श्मथु (beard), जानु, स्यादु, अथु, जतु (lac), त्रपु (tin), तालु (palate), वसु बलीबलिङ्ग है; मद्गु (A kind of bird), मधु, शीघु, (wine), सानु (table-land) और कमण्डलु पुलिङ्ग तथा बलीबलिङ्ग है ।

स्त्वन्तः—र और तु प्रत्ययान्त शब्द पुलिङ्ग है; यथा, मेघः (पर्वत), सेतुः । पर दाघ, कसेघ (grass), घस्तु, मस्तु (पत्तोर) पुलिङ्ग और बलीबलिङ्ग है ।

क—स्त्वकः, कल्कः (sediment) । पर चिचुक, शालुक, प्रतिपदिक, अंशुक, उल्लुक बलीबलिङ्ग है; कपटक, धनीक, रक (rum), मोदक, लपक (wine glass), मप्लक, भक्त, तडाक, निष्क, शुष्क, यच्चैस्क (brightness), नाक, भाण्डक, दण्डक, पिटक (फोड़ा), तालक (bolt), शक (shield), पुलक (रोमाञ्च) पुलिङ्ग और बलीबलिङ्ग है ।

ट—घटः, पटः । पर किरीट, मुकुट, ललाट, वट, पीट (ए
पीघा), शूद्राट (मौराहा), कराट, लोचू पलीवल्लिग है, कुट
कूट, कणट, कपाट, कर्पट, कट, निकट, कीट पुल्लिग और
पलीवल्लिग है ।

ण—गुणः, गणः, पापाणः । पर ऋण, लयण, पर्ण, तोरण
रण, उष्ण पलीवल्लिग है; ध्वर्ण, सुवर्ण, व्रण, चरण, विशाण
(सींग), नृण, पुंलिग और पलीवल्लिग है ।

य—रथ । पर काष्ठ, पृष्ठ, सिक्व (wax), उक्य (साम-
वेद) पलीवल्लिग है; तीर्थ, प्रोथ (lip), यूय, गोथ (a resre)
पुंलिग और क्लीबलिग है ।

न—इनः (सूर्य), केनः । पर जघन, अजिन (मृग चर्म),
तुहिन, कानन, यन, घृजिन (पाप), विपिन, वेतन, शासन
सोपान, मिथुन, श्मशान, रत्न, निम्न, विह्न, क्लीबलिग है; मान
यान, अग्निघान, नलिन, पुलिन (तट), उद्यान, शयन, आसन,
स्थान, चन्दन, आलान (a letter), समान, मवन, सम्भावन,
विमान, पुंलिग और क्लीबलिग है ।

प—यूपः, दीपः, सर्पः । पर पाप रूप, उडुप (a raft),
तल्प (bed), शिल्प, पुष्प, शष्प समीप, अन्तरीप क्लीबलिग है;
शूर्प, द्वीप, विटप, पुंलिग और क्लीबलिग है ।

भ—स्तम्भः, कुम्भः । पर जृम्भ (yawning), पुंलिग
और क्लीबलिग है ।

म—सोमः, मीमः । पर दक्म (स्वर्ण), सिष्म (a scab),
ईष्म (fuel), युग्म, गुल्म, अध्यात्म, कुड्कुम, क्लीबलिग है;
संग्राम, दाडिम, कुसुम, आश्रम, क्षेम, क्षीम (रेशमी वस्त्र),
होम, उहाम पुंलिग और क्लीबलिग है ।

व—समयः, हयः । पर किसलय, हृदय, इन्द्रिय, उत्तरीय,

मय ह्योवलिङ्ग है; कपाय, मलय, अन्वय, अव्यय पुंलिङ्ग
रि ह्योवलिङ्ग है ।

र-क्षुरः (razor), अङ्कुरः । पर द्वार, अग्र, सक, सक,
र, क्षिप, छिद्र, नीर, तीर, दूर, कृच्छ्र, रन्ध्र, अश्रु, श्वस्र (a
ole), गभीर, क्रूर, विचित्र, फेयूर, वेदार, उदर, अजस्र
उदा), शरीर, कन्दर, मन्दर, पञ्जर, चत्वर, काश्मीर, नार,
म्वर, शिशिर, तन्त्र, यन्त्र, क्षत्र, क्षेत्र, मित्र, कलत्र, चित्र, सूत्र,
रु (मुख), नेत्र, गोत्र, अङ्गुलित्र, अस्त्र, शास्त्र, वस्त्र, पत्र, पात्र
छत्र बलीवलिङ्ग है; चक्र, वज्र, बन्धकार, सार, पार, क्षीर,
तोमर, शृङ्गार, भृङ्गार, तिमिर, पुंलिङ्ग और बलीवलिङ्ग है ।

य-धूपः वृक्षः । पर शिरीष, जोष (ease), अन्तरीष
(a frying pan), पोथूप, पुरीष (मल), किलिष, कल्मष
(पाप) बलीवलिङ्ग है; यूप (soup), करीष (dried cow-
dung), मिष, विष, यर्ष पुंलिङ्ग और बलीवलिङ्ग है ।

ष-परसः, पायसः, महानसः (kitchen) । पर पतस,
पस, साहस बलीवलिङ्ग है; सरस, निर्वास, उववास, कार्पास,
यास, मास, कास (cough), कांस (metal), मांस पुंलिङ्ग
और बलीवलिङ्ग है ।

स्त्रीलिङ्ग—Feminine

११ अकारान्तं मत्तुदित्सस्योऽनुनन्दारः—अकारान्तं मातु,
दुहितु, स्वरु, पोतु (parent), ननाटु और यातु (पति की
मातृपपु) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं ।

१२ अन्यप्रत्ययान्तो षातुः—अनि और ऊ प्रत्ययान्त शब्द
त्र्यलिङ्ग हैं, यथा, अपतिः, व्रमः । पर भशनि (वज्र), मरणि,
ररणि (काष्ठ) पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग है ।

१४ मिन्यन्तः—घातु के परे मि और नि प्रत्यय के योग से उत्पन्न शब्द स्त्रीलिंग है; यथा, मूमिः, ग्लानिः । पर बडि, वृष्णि, भग्नि पुल्लिंग है; श्रेणि, योनि और ऊर्मि पुल्लिंग और स्त्रीलिंग है ।

१५ क्विन्यन्तः—क्विन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग है; यथा; एतिः, मतिः, भक्तिः ।

१६ ईकारान्तम्—ईप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग है; यथा; लक्ष्मीः ।

१७ ऊर्ध्वाक्षन्तम्—ऊर्ध्, ऊो और भाप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग है; यथा, कुरूः, विद्या, काली ।

१८ ध्वन्तमेकाक्षम्—एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; यथा, थोः, भूः (पृथिवी) ।

१९ विशत्यादिरानन्तेः—विंशति से नवति पर्यन्त संख्यावाचक शब्द स्त्रीलिंग है; विंशतिः, विंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः, नवतिः ।

२० इन्दुभिरक्षेत्रे—अक्ष अर्थ में इन्दुभि स्त्रीलिंग है ।

२१ नाभिरक्षत्रिये—अक्षत्रिय अर्थ में नाभि स्त्रीलिंग है ।

२२ तलन्तम्—तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग है; यथा, शुक्लता, ग्रामता (ग्रामस्य समूहः), देवता, प्राज्ञता ।

२३ भूमिविद्युत्सरिद्धतावनिताभिधानानि—भूमि, विद्युत्, सरित्,

लता और वनिता वाचक शब्द स्त्रीलिंग है, यथा; भूः, सौदामिनी, निमग्ना, बल्ली, योषित् । पर यादस् (aquatic animal) पुल्लिंग है ।

२४ मास् (light) घक्, स्रुक् (spoon), दिक्, उष्णिह् (वेदांग) और उपानह् स्त्रीलिंग है ।

२५ स्थूणा (post) और ऊर्णास्त्रीलिंग और पुल्लिंग है ।

२६ प्राक्, विष्णु (जलविन्दु), एप्, विप् और अप् स्त्रीलिंग हैं ।

२७ दन्वि (spoon), वेदि, खनि, कृषि, भोषधि, कृष्टि और अंगुलि स्त्रीलिंग हैं (पक्षान्तर में ईप् होता है; यथा; वेदी, दध्वी इत्यादि) ।

२८ अप् सुमनस्यामासिकतावशेषा बहुवच- अप्, सुमनस्, समा (year), सिकता और वर्षा स्त्रीलिंग और बहुवचनान्त हैं ।
२९ देवतायाची सुमनस्, पुंलिंग और बहुवचनान्त है ।

क्लीबलिङ्ग—Neuter.

२९ भावे श्युङन्तः— माषयाच्य में श्युट् (यनट्) प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिंग हैं; यथा, हसनम्, शयनम् ।

३० तिष्ठा क- तिष्ठा प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिंग हैं; यथा, हसितम्, पीतम् ।

३१ स्वयधी तद्धिती—सहित के स्व और प्यश् प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिंग हैं; यथा, शुक्त्वम्, शुक्त्वम् ।

३२ भाष और कर्म अर्थ में धप्, य, इप्, यक्, अङ्, मन्, ऊ, उ प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग हैं । यथा, स्तेयम् (चोरी), सकयम्, आधिपत्यम्, दौहायनम् (दो वर्ष का), पितापुत्रम् ।

३३ अव्ययीभावः— अव्ययीभाव समास के शब्द क्लीबलिंग हैं; यथा, उपनगरम्, यथाशक्ति, अधिहरि ।

३४ इन्द्रैस्त्वम्—समाहार इन्द्र के शब्द क्लीबलिंग हैं; यथा, पाणिपादम् ।

३५ अनल्लेच्छया—पाहुत्य अर्थ में उया क्लीबलिंग है; यथा, शरच्छायम्, रघुउायम् (रघूनां उया) ।

३६ राजा मनुष्यपूर्वात्सभा— राजन् तथा मनुष्यमित्थं अन्य शब्दों के परे सभा शब्द क्लीबलिङ्ग है; यथा, राजसभम्, विशाचसभम् ।

सुरा, सेना, छाया, शाखा और निशा समास में विकल्प से स्त्रालिङ्ग होते हैं; यथा, ययसुरा, ययसुरम्; शत्रुसेना, शत्रु-सैनम्; वृक्षछाया, वृक्षच्छायम्; गोशाला, गोशालम्; महा-निशा, महानिशम् ।

३७ संख्यापूर्वाराशिः—संख्यावाचक पद पूर्व्य में हो तो राशि शब्द क्लीबलिङ्ग होता है; यथा, द्विराश्रम् ।

३८ इत्थन्तः—इस् और उस् भागान्त शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं; यथा, हयिस्, धनुस् । पर अशिस् क्लीबलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग है ।

३९ मुख, नयन, लोह, धन, मांस, रुधिर, धनुः, विषर, जल, दल, धन और अन्न वाचक शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं ।

४० लोभः—ल् उपधा वाले शब्द क्लीबलिङ्ग होते हैं; यथा, कुलम्, फूलम्, स्थलम् । पर तूल, उपल, ताल, ताल, कम्पत पुलिङ्ग है । शील, मूल, मंगल, कमल, तल, मूसल और शूल पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग है ।

४१ शतारिः संख्या—संख्यावाचक शब्द इत्यादि क्लीबलिङ्ग है; यथा, शतम्, सदस्यम् । पर अयुत, प्रयुत पुलिङ्ग है । कोटि स्त्रीलिङ्ग है ।

४२ मन् इष्यकोऽवर्त्तरि—कस्तरि-मित्थं वाक्य में मन् भागान्त शब्द क्लीबलिङ्ग है; यथा, वाम्, वाम् । पर मलिमा, रुधिमा, पुलिङ्ग है; प्रहन् पुलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग है ।

४३ भगनोः इष्य कः—भस् भागान्त शब्द क्लीबलिङ्ग है; यथा, यशः, मनः, तपः । पर यम्भना पुलिङ्ग और मत्साम्

स्त्रीलिंग है ।

४४ शतः— प्र-भागान्त शब्द क्लीबलिंग है, यथा, पत्रं छत्रम् । पर यात्रा, मात्रा, भस्त्रा (bellows), दंष्ट्रा स्त्रीलिंग हैं; सूत्र, आमत्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र, उष्ट्र पुल्लिंग हैं; पत्र (leaf), पात्र, पवित्र, सूत्र पुल्लिंग और क्लीबलिंग है ।

४५ बल, कुसुम, पत्तन, रण धाचक शब्द क्लीबलिंग है । पर आह्वय (रण) और संभ्राम पुल्लिंग और भाञ्जि (रण) स्त्रीलिंग है ।

४६ आमलकम्, भाघम् इत्यादि फलजाति तथा विषम्, जगत्, नघनीत्, अमृत, विमिक्त, विन्न, चित्त, घत, रजत, मूल धातु, कुलिश, पीठ, अङ्ग, अत्र, भास्वद, आकाश, धान्य, शस्य, काष्य, पण्य, सत्य, भवत्य, मूल्य, मद्य, हर्ष्य, सौम्य, कुटुम्ब, कदच इत्यादि क्लीबलिंग है ।

N. 13. इनके अतिरिक्त सुबन्त प्रकरण में अक्षर के क्रमानुसार पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग शब्दों की तालिका दी गयी है, उसके भी लिङ्ग का ज्ञान हो सकता है ।

धातुकोष

"1. 2. 3. इत्यादि Conjugation के षोडश हैं । A. से आत्मनेपदी, P. से परस्मैपदी, T. से उभयपदी धातु समझना चाहिये । "

गच्छ् । P. to go tortuously लट्-भक्ति, लोट् भक्तुः लट्-भाबत्, विधिलिट्-प्रकेत् । लुट्-भक्तिता । लुट्-भक्तिष्यति । लट्-भाकिष्यत् । भाशीलिट् भक्तात् । लिट्-भाक्, भाकिष । लुट्-भाकीत्, भाकिष्टाम् । क्त-भक्तिः, लब्ध-भक्तिष्यः, त्या-भक्तिषा, तुम्-भक्तिषुम् । लिच्-भक्तयति-ते । चर्म्मलि-भक्तने ।

अङ् १ P. to go, to worship. अङ्गति । अङ्गिता । अङ्गिष्यति । आङ्गिष्यन् । अङ्ग्यात् । आनङ्ग, आनङ्गिष्य । आङ्गीन्, आङ्गिष्णाम् । अङ्गिनः (worshipped), अक्तः (moved), अङ्गितव्यः; अङ्गित्वा, अङ्गित्वा; अङ्गितुम् । अङ्गयति । अङ्गयते, अङ्गयते ।

अट् १ P. to go. अटति, अटिता, अटिष्यति, आटिष्यत्, अट्यात्, आट, आटीत्, अटितः । अटित्वा, अटितुम्, आटयति-ते, अटयते, अटायते (यङन्त), अटिटिषति (सनन्त) ।

अण् ४ A. to breathe, to live. अण्यते, अणिता, अणिष्यते, आणिष्यत्, अणियोष्ट, अणे, आणिष्ट, अणितः, आणयति, अण्यते, अणिणियते ।

अत् १ P to go अतति, अतिता, अतिष्यति, आतिष्यत्, अत्यात्, आत, आतीत्, अतितः, आतयति-ते, अत्यते, अतितिषति ।

अद् २ P. to eat, अत्ति, अत्ता, अत्स्यति, आत्स्यत्, अद्यात्; जघास, जक्षतुः, जक्षुः, जघसिष्य (आद्, आदिष्य), अघसत्, अघसताम्, अघसनः; जग्धः, अघम्, घासः, जग्धा, अत्तुम्, आदयति-ते, अद्यते, जिघरसति ।

अन् २ P. to breathe, to live. आनति, अनितः, अनन्ति; आनीत्, आनत्, अनिता, अनिष्यति, आनिष्यत्, अन्यात्, आन, आनीन्, आनिष्णाम्; अनितः, आनयति-ते, अन्यते, अनिनिषति ।

अय् १ A. to go अयते, अयिता, अयिष्यते, आयिष्यत्, अयिषीष्ट, अयाञ्चक्रे, आयिष्ट, आयिषाताम्, आयिष्ठाः; अयितः, आययति-ते, अय्यते, अयिषियते, with परा—पलायते ।

अर्च १ P. १० U. to worship अर्चति, अर्चयति-ते; अर्चिता, अर्चयिता, अर्चिष्यति, अर्चयिष्यन्; अर्च्यात्, आनर्च, अर्चयाञ्चकार, अर्चीत्, अर्चितः, अर्चनीयः, अर्चयति-ते, अर्च्यते,

इ 1. P. 2. P. to go. अयति, एति; एता, एष्यति, ऐष्यन्, ईयात्, ईयाय, ईयतुः, ईयुः, अगान्, इनः; गमयति, अययति, ईयते, जिगमिषति ।

इ with अधि 2A. to study. अधीते, अध्येता, अध्येष्यते; अध्यगीष्यत्, अध्येष्यत्, अध्येयीष्ट, अधिजगे; अध्यगीष्ट, अध्येष्टः, अधीतः, अधीन्व, अध्येत्तुम्, अध्यापयति, अधीयते ।

इप् 1. P. to wish. इच्छति, एषिता, एष्टा; एषिष्यति, ऐशिष्यत्, इष्यात्, इयेप; ऐयीत्, इष्टः, एषिष्ठा, इष्ठा; एषितुम्, एषयति-ते, इष्यते, एषिषिषति ।

इप् 4 P. to go. इष्यति, एषिता, इयेप. ऐयीत्, इषितः ।

ईक्ष् 1 A. to see ईक्षते, ईक्षिता, ईक्षिष्यते, ऐक्षिष्यत्, ईक्षिषीष्ट, ईक्षाञ्चक्रे; ऐक्षिष्ट, ऐक्षिषात्ताम्, ऐक्षिष्टाः, ईक्षितः, ईक्षयति-ते, ईचिक्षिषते ।

ईड् 2 A. to praise. ईडे, ईडिता, ईडिष्यते, ऐडिष्यत्, ईडिषीष्ट, ईडाञ्चक्रे, ऐडिष्ट, ईडितः, ईडयति-ते, ईडयते, ईडिडिषते ।

ईर् 2 A. to go to move. ईर्ते, ईरिता, ईरिष्यते, ऐरिष्यत्, ईरिषीष्ट, ईराञ्चक्रे, ऐरिष्ट, ईरितः, इरयति-ते, ईर्यते, ईरिषिषति ।

ईर्ष्य् 1. P. to envy. ईर्ष्यति, ईर्ष्यता, ईर्ष्यष्यति, ईर्ष्याञ्चकार, ऐर्ष्योत्, ईर्ष्यत्, ईर्ष्ययति-ते, ईर्ष्यते, ईर्ष्य-पिषति ।

ईश् 2 A. to rule, ईष्टे, ईशिता, ईशिष्यते, ऐशिष्यत्, ऐशिषीष्ट, ईशाञ्चक्रे, ऐशिष्ट, ईशितः, ईशयति-ते, ईशयते ।

ईद् 1 A. to aim at. ईदते, ईदिता, ईदिष्यते, ऐदिष्यत्, ईदिषीष्ट, ईदाञ्चक्रे, ऐदिष्ट, ईदितः, ईदयति-ते, ईदते,

ईडिहिते ।

उङ् 1, 6 P. to glean. उङ्छति, उङ्छिष्यति, उङ्छाञ्चकारः भीङ्छोत् ।

उप् 1, P. to burn, to punish. औपति, औपिता, औपिष्यति, औपिष्यत्, उष्यात्, औषाञ्चकार, उषोष, औषीत्, औषितः, उषितः, उष्टः, औषयति, उष्यते, औषिविषति ।

ऊर्णु 2 U. to cover, to hide. ऊर्णोति, ऊर्णोति, ऊर्णुते, ऊर्णविता. ऊर्णु विता, ऊर्णु विष्यति-ते, ऊर्णु विष्यति-ते, और्णुविष्यत, और्णुविष्यत्, और्णु विष्यत्; ऊर्णुविषीष्ट, ऊर्णु विषीष्ट, ऊर्णु नाव, ऊर्णु नुधे; और्णुविष्ट, और्णु विष्ट, ऊर्णुयते ।

ऋ 1 P. to go, to get. 3 P. to go. ऋच्छति, इयति; अर्हा, अरिता, अरिष्यति, अरिष्यत् अर्थात्, अरः, आर्पीत्; ऋतः, ऋत्या; अर्षयति-ते, अर्ष्यते, अरिरिषति ।

ऋष् 4 P. to prosper, to please. ऋष्यति, अर्षिता, अर्षिष्यति, आनर्ष, आर्षीत्, ऋद्दः, ऋद्गा, अर्षित्वा, अर्षितुम्, अर्षयति-ते, ऋष्यते; अर्दिषिषति, ईत्संति ।

ऋ 9 P. to go. ऋणाति, अरिष्यति, अरीष्यति, इष्यात्, अराडचकार, आरोत्, ईर्णः ।

एष् 1 A. to grow, to prosper. एषते, एषिता, एषिष्यते, ऐषि यत्, एषिषीष्ट, एषाञ्चक्रे, ऐषिष्ट, एषितः, एषयति-ते, एष्यते, ऐदिषिषते । with उप-उपैषते ।

कण् 1 P. to cry in distress. कणति, कणिता, कणिष्यति, अकणिष्यत्, कण्यात्, चकाण, अकणीत्, अकणीत्; कणितः, कणयति-ते, कण्यते ।

कथ् 10 U. to tell. कथयति, कथयिता, कथयिष्यति, अकथविष्यत्, कथ्यात्, कथयिषीष्ट; कथपाञ्चकार, अकथ-

त्-त्, कथितः, कथ्यते, चिकथयिषति ।

कम् 1 A. to desire. कामयते, कामयिता, कामिता;
कामयिष्यते, कामिष्यते, अकामयिष्यत्, अकामयिष्यत्, कामयि-
षीष्ट, कामिषीष्ट; कामयाञ्चक्रे, चक्रे, अर्चाकम्, अचकम्;
कान्तः, कामायत्वा, कान्त्वा, कामित्वा, कामयितुम्, काम्यते,
कम्यते; चिकामयिषते, चिकमिषते; चङ्कम्यते ।

कम् 1 A. to shake, to tremble. कम्पते, कम्पिता,
कम्पिष्यते, अकम्पिष्यत्, कम्पिषीष्ट, चकम्पे, अकम्पिष्ट, कम्पितः,
कम्प्यते, चिकम्पिषते ।

कर्ण् 10 U. to pierce. कर्णयति-ते, कर्णयिता,
कर्णयिष्यति-ते, अकर्णयिष्यत्-त्, कर्णयाञ्चकार, अचकर्णत्-त् ।

कल् 10 U. to go, to count कलयति-ते, कलयिता,
कलयिष्यति-ते, अकलयिष्यत्-त्, कलयाञ्चकार, अचकलत्-त्,
कलितः ।

काश् 1 P. to desire, to wish. काश्ति, काशिता
काशिष्यति, अकाशिष्यत्, काशित्वा, चकाश, अकाशीत्,
काशितः, काशयति-ते; वाश्यते, चिकाशयति ।

काश् 1, 4 A. to shine. काशते, काश्यते, काशिता,
काशिष्यते, अकाशिष्यत्, काशिषीष्ट, अकाशे, काशाञ्चक्रे,
अकाशिष्ट, काशितः, काशयति-ते, चिकाशयते ।

कान् 1 A. to cough. कान्ते, कान्ताञ्चक्रे, अकातिष्ट,
(like काश्) ।

कित् 1 P. to cure. चिकित्सति, चिकित्सिता, चिकित्सि-
ष्यति, अचिकित्सिष्यत्, चिकित्साञ्चकार, अचिकित्सीत्,
चिकित्सितः, चिकित्सायति, चिकित्सायते, चिकित्सयति ।

कृत् 4 P. to be angry. कृष्यति, कृषिता, कृषिष्यति,

अकोपिष्यत्, कुभ्यात्, चुकोप, अकुपत्, कुपितः, कोपयति-ते
कुप्यते, चुकोपिषति, चुकुपिषति ।

कुस् 4 P. embrace. कुस्यति, कोसिता, कोसिष्यति,
अकोपिष्यत्, कुस्यात्, चुकोस, अकुसत् कुसितः, कोसयति-ते
कुस्यते, चुकोसिषति, चुकुसिषति ।

कुज् 1 P. to soo. कुजति, कुजिता, कुजिष्यति, अकुजि-
ष्यत्, कुज्यात्, चुकुज; अकुजीत्, कुजितः, कुजयति-ते,
कुज्यते, चुकुजिषति ।

कृ 8 U to do. करोति, कुरुते; कर्त्ता, करिष्यति-ते,
अकरिष्यत्-त; क्रियते, क्रियात्, कृषीष्टः, चकार, चक्रे;
अकार्षीत्, अकृत; कृतः, कर्त्तुम्, कारयति-ते, विकीर्षति ते,
वेकीर्यते ।

कृत् 6 P. to cut. कृन्तति, कर्त्तिता, कर्त्तिष्यति, कर्त्स्यति,
अकर्त्तिष्यत्, अकर्त्स्यत् । कृत्यात्, चकत्से, अकर्त्सेत्, कृतः,
कर्त्तयति; कृत्यते; चिकर्त्तिषति, चिकृत्सति ।

कल्प् 1 A. to be able. कल्पते, कल्पिता, कल्पिष्यते,
कल्प्यते, अकलिष्यत्, अकल्प्यत्, कल्पिषीष्ट, कल्प्यीष्टः
चकल्पे; अकल्पत्, अकल्पिष्ट, अकल्प्यत्, कल्पितुम्, कल्पतुम्;
कल्पयति-ते, कल्प्यते; चिकल्पयते, चिकल्प्यते ।

कृश् 4 A. to become thin. कृश्यति, कर्शिष्यति,
चकशे, अकृशात् ।

कृष् 1 P. to draw, to plough. कर्षति; कर्षा, कर्षाः;
कर्षयति, कर्षयति; अकर्षयत्, अकर्षयत्; कृष्यात्, चर्षे;
अकर्षीत्, अकर्षीत्, अकृशत्, कृष्टः, कर्षयति-ते, कृष्यते,
चकृशति ।

कृप् 6 U. to plough. कृपति-ते, कर्षयति-ते, कृष्यति-ते,
कृष्यति-ते,

रुप्यात्, रुशीष्ट ।

क 6 P. to scatter. किरति, कर्तिता, करीता, करिष्यति, करीष्यति, कीर्यात्, चकार, अकारीत्, कीर्णः, कारयति-ते, कीर्यते, चिकरिषति ।

कृत् 10 U to sound. कीर्त्तयति-ते, कीर्त्तयाञ्चकार-चक्र-कीर्त्यात्, कीर्त्तयिषीष्ट; अचीकृत्-त्, अचिकीर्त्तत्, कीर्त्तितः, कीर्त्तितः, कीर्त्तयते ।

कन्दु 1 P. to cry कन्दति, कन्दिता, कन्दिष्यति, अकन्दिष्यत्, कन्द्यात्, चकन्द, अकन्दीत्, कन्दितः, कन्दयति-ते, कन्दयते, चिकन्दिषति, चाकन्दयते ।

कम् 1 U. and P. to walk. कामति, काम्यति, कमते; कामिता, कम्ता; कमिष्यति, कंस्यते, अकमिष्यत्, अकंस्यत्; कम्यात्, कंसीष्ट, चकाम, चकमे, अकामीत्, अकंस्त, कान्तः, कमयति-ते, चिकमिषति, चिकंसते ।

क्री 9 U. to buy. क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीता क्रीष्यति-ते, क्रीयात्, क्रीषीष्ट, चिक्राय, चिक्रिये; अक्रीषीत्, अक्रीष्ट; क्रीतः, क्रापयति-ते, क्रीयते, चिक्रीर्यति-ते ।

क्रीड् 1 P. to play. क्रीडति, क्रीडिता, क्रीडिष्यति, अक्रीडिष्यत्, क्रीड्यात्, चिक्रीड, अक्रीडोत्, क्रीडितः, क्रीडयति-ते, क्रीडयते, चिक्रीडिषति ।

क्रुध् 4 P. to be angry. क्रुध्यति, क्रोधा, क्रोत्स्यति, अक्रोत्स्यत्, क्रुध्यात्, चुक्रोध, अक्रुधत्, क्रुधः, क्रोधयति-ते, क्रुध्यते, चुक्रुहसति ।

क्रुश् 1 P. to cry, to call. क्रोशति, क्रोष्टा, क्रोशयति, अक्रोशयत्, क्रुश्यात्, चुक्रोश, अक्रुशन्, क्रुष्टः, क्रोशयति-ते, चुक्रुशति ।

कृम् 1 & 4 P. to be tired. कृामति, कृाम्यति, कृामिता, कृाम्यति, अकृामिष्यत्, कृाम्यान्, अकृाम, अकृामन्, कृामन्तः, कृाम्यते, चिकृामिषति ।

कृिश् 4 A. to be afflicted. कृिशयते, कृिशिता, कृिशिष्यते, अकृिशिष्यत्, कृिशिष्यान्, अकृिशिष्य, अकृिशिष्यन्, कृिशिष्यते, चिकृिशिष्यते, चिकृिशिष्यते ।

कृिश् 9 P. to distress कृिशनाति; कृिशिता, कृिष्टा, कृिशिष्यति, कृिशिष्यति, कृिश्यात्, चिकृिशो; अकृिश्यान्, अकृिश्यात्, चिकृिशिष्यति, चिकृिशिष्यति, चिकृिशति ।

क्षम् 1 A. to bear. क्षमते, क्षमिता, क्षमता, क्षमिष्यते, क्षमिष्यते, क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट, अक्षम, अक्षमिष्ट, अक्षंन्तः, क्षमितः, क्षमयति, क्षम्यते; चिक्षमिषते, चिक्षंसते ।

क्षम् 4 P. to endure. क्षाम्यति, क्षाम्यान्, अक्षाम, अक्षमन् ।

क्षर् 1 P. to flow. क्षरति, क्षरिता, अक्षरिष्यन्, क्षर्यान्, अक्षार, अक्षारीत्, क्षरितः, क्षारयति, क्षर्यते, चिक्षरिषति ।

क्षल् 1 P. to wash, क्षलति, अक्षाल, अक्षालीन्, (like क्षर्) । क्षल् 10 P. to wash, क्षालयति-ते, क्षालयाद्बकारव्यये, अक्षिष्यन्तः ।

क्षि 1. 6. 5. 9. P. क्षवति, क्षिषति, क्षिनोति, क्षिनाति, क्षेया, क्षेप्यति, क्षीयात्, चिक्षाय, अक्षीयात्, क्षीयः, क्षिणः, क्षिपयति, क्षीयते, चिक्षीषति ।

क्षिप् 4 P. 6 U. क्षिष्यति, क्षिष्यति-न्, क्षेप्या, क्षेप्यति, क्षिष्यते, क्षिष्यात्, क्षेप्यीष्ट, क्षिष्येत्, अक्षिष्यान्, अक्षिष्यन्, क्षिष्यति, क्षिष्यते, चिक्षिष्यति-न् ।

घृइ 7 U. to pound, to grind घृनति, घृन्ते, संघ्ना,

शोष्यति-ते, शूषात्, शूषाद्, भक्ष्यन्, भक्षोत्सनीन्, भक्षत्, भुष्यन्, शोष्यति, शूषते, शूष्यन्ति-ते ।

शुष् 4P, to be hungry. शूष्यति, शोषा, शोष्यन्ति, भक्षोत्स्यन्, शूषात्, भक्ष्यन्, शपितः ।

शुम् 1A, 4, 9P, to disturb शोमते, शुम्ब्यति, क्षम्नाति, शोमिना, शोमिष्यन्ति-ने, शोमिषीष्ट, क्षुम्यान्, शुशभे, शुशोम भक्षोमिष्ट, भक्षमत्, भक्षोमात्, क्ष्वः, क्षमिनः, शोमयन्ति-ते शुम्ब्यते, शुशुमिष्यन्-ति, शुशुमिष्यन्ते-ति ।

श्रण् 10 U. श्रण्यति-ते, श्रण्ययामास, श्रण्यन्त, गण्डितः ।

श्रन् 1 U, to dig श्रनति-ते, श्रनिता, श्रनिष्यति-ने, श्रनिष्यन्-त, श्रन्यात्, श्रयात्, श्रनिषीष्ट; श्रान, श्रन्ते, श्रनीम्, श्रानीम्, श्रानिष्ट, श्रातः, श्रानयति-ते, श्रन्यते, श्रियति-ते ।

श्राद् 1 P. to eat श्रादति, श्रादिता, श्रादिष्यति, श्रादिष्यन्, श्रादात्, श्रादाद्, श्रादोत्, श्रादितः, श्रादयति-ते, श्राद्यते, श्रिदादिपति ।

श्रिद् 6P. to afflict, 4&7A, to suffer pain श्रिन्दति, श्रिद्यते, श्रिन्ते; श्रेत्ता, श्रेत्स्यति-ते; श्रिसेद्, श्रिषिद्, श्रिसेत्सोत्, श्रिषित्त, श्रिन्तः, श्रिषित्सति-ते ।

श्ले 1 P. to play श्लेति, श्लेतिता, श्लेलिष्यति, श्लेलिष्यत्, श्लेलेत्, श्लेलेत्, श्लेलितः, श्लेलयति, श्लेलेलिपति ।

श्या 2P. to tell श्याति, श्याता, श्यास्यति, श्यास्यत्; श्यायात्, श्येयात्; श्ययी, श्ययत्, श्यातः, श्यापयति, श्यापयते, श्रियासति ।

शण् 10 U. to count गणयति-ते, गणयिता, गणयि-

धातुकोष ।

व्यति-त्ते, गणयात्, गणयिषीष्ट, गणयाञ्चकार-ञ्चक्रे; भज
त्, भजगणम्-त्, जिगणयिषति-त्ते ।

गद् 1 P. to speak गदति, गदिता, गदिष्यति
दिष्यत्, गद्यात्, जगाद्; भगदीत्-भगादीत्, गदितः
यति-त्ते, गद्यते; जिगदिषति ।

गम् 1 P. to go गच्छति, गन्ता, गमिष्यति, भग
गम्यात्, जगाम, भगमन्, गतः, गमयति-त्ते,
जिगमिषति ।

गर्जे 1 P & 10 U. to roar. गर्जति, गर्ज
गर्जिता, गर्जिष्यति, गर्ज्यात्, जगर्जे, भगर्जीत्, गर्जितः,
जिषति, जामर्ज्यते ।

गर्ह् 1 A & 10 U. to censure गर्हते (गर्हति), र
त्ते, गर्हयित्वा, गर्हिता, गर्हयिष्यति-त्ते, गर्हिष्यति; गर्हणा
ञ्चक्रे, गर्हिषीष्ट, जगर्हे-जगर्हे, भगर्हिष्ट, भजगर्हम्-त्, भ
जिगर्हयिषति-त्ते, जिगर्हिषति ।

गाद् 1 A, to bathe गार्हते, गार्हिता, गार्हा, गा
चाश्वते; गार्हिषीष्ट, चाश्वीष्ट; जगार्डे; भगार्हिष्ट, भगार्हाः,
जिगार्हिषते, जिगार्शने ।

गुप् 1 P. to defend, conceal. गोपायति; गोप
गोपिता, गोप्ता, गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप
गोपाप्यात्, गुप्स्यात्, जुगोप, गोपायाञ्चकार, भगोप
भगोप्सीन्, गोपायित्., गुप्तः, जुगोपायिषति, जुगु
जुगोपिषति, जुगुप्सति ।

गुह् 1 U. to cover, to keep secret. गूहति ते, ग
गोदा, गूहिष्यति-त्ते, घोश्चति-त्ते, गुह्यात्, गूहिषीष्ट, !
जगूह, जुगूहे, भगूदीत्, भगूदिष्ट, भगूशम्-त्, भगूह, ग

गृह्णा, गृह्ण गृह्णति ते, गृह्णते, गृह्णन्ति ते ।

गृ १ P. to swallow, गिरति, गिरतिः, गिरिता, गिरिता,
गिरिणा, गिरीणा, गिरिभ्यति, गिरीभ्यति, गिरिभ्यति, गिरीभ्यति,
गीर्षांश्च, जगार, जगाम, जगामीश्च, जगामीश्च; गीर्षां,
गावति, गावति, गीर्षंते, त्रिगिरिभति, त्रिगिरिभति ।

गृ ७ P. to speak, गृणाति, गरिष्यति, गरीष्यति (likeष्टे) ।

गी १ P. to sing, गाति, गाता, गाम्यति, जगाम्यत्,
गैवाम्, जगी, जगामीश्च, गीतः, गीतिः, गापयति ते, गीष्यते,
त्रिगासत ।

प्रन्थ् १ V. to bend, to twine, प्रन्थते, प्रन्थिता, प्रन्थि-
ष्यते, अप्रन्थिष्यत्, जप्रन्थे, अप्रन्थिष्ट, प्रन्थित, प्रन्थयति,
प्रन्थते, त्रिप्रन्थिष्यते ।

प्रन्थ्, ७ P. to lie, प्रप्याति, प्रयात, (लोष्ट हि) अप्रन्थीत् ।

प्रस् १ A. to swallow, प्रसने, प्रसिता, प्रसिष्यते,
अप्रसिष्यत्, प्रसिषीष्ट, जप्रसे, अप्रसिष्ट, प्रस्तः, प्रसित्वा, प्रस्ता,
प्रासयति-ते, त्रिप्रासियते ।

प्रह् ७ U. to take, गृह्णाति, गृह्णीते; ग्रहीता,
ग्रहीष्यति-ते, गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट, जग्राह, जगृहे; अग्रहीत्,
अग्रहीष्ट, गृहीतः, गृहीतुम्, गृह्यते, त्रिगृह्णति-ते ।

ग्लै १ P. to be weary, ग्लायति, ग्लायता, ग्लायति,
अग्लायत्; ग्लेयात्, ग्लेयात्; जग्लौ, अग्लायीत्, ग्लान-
ग्लानिः, ग्लाययति-ते, ग्लायते, त्रिग्लायति ।

घट् १ A, to happen, घटते, घटिता, घटिष्यते, अघटि-
ष्यत्, अघटिष्यत्; घटिषीष्ट, जघटे, अघटिष्ट, घटितः, घटयति-ते,
त्रिघटिषति ।

घुप् १ P, to declare, घोषति, घोषिता, घोषिष्यति, अघो-

1

विष्यत्, घुष्यात्, जुघोष, अघुषत्, अघोषीत्, घोषितः, घुषितः, घोषयति, घुष्यते, जुघुषिषति ।

घुष् 10 U, to proclaim aloud, घोषयति-ते, घोषयिता, घोषयिष्यति-ते, घुष्यात्, घोषयाञ्चकार-चक्रे, अघुषुषत्, घुषितः, घुष्टः, घोषयति, घुष्यते, जुघुषिषति ।

घ्रा 1 P, to smell, जिघ्रति, घ्राता, घ्रास्यति, अघ्रास्यत्, घ्रायात्, घ्रेयात्, जघ्रौ, अघ्रात्, अघ्रासीत्, घ्रातः, घ्राणः, घ्रापयति-ते, घ्रायते, जिघ्रासति ।

चकास् 2 U, to shine, चकास्ति-ते, चकासिष्यति-ते, चकासिता, चकासाञ्चकार-मास-चक्रे, अचकासीत्, अचकासिष्ट, चकासितः, चकासयति-ते, चकासिषति ।

चक्ष् (with आ) 2 A, to speak, चष्टे, क्श्याता, क्श्याता, क्श्यास्यते-ति, क्श्यास्यते-ति, क्श्यायात्, क्श्येयात्, क्श्यासीष्ट, क्श्यायात्, क्श्रोयात्, क्श्यासीष्ट चचक्षे, चक्ष्यौ, चक्ष्ये, चक्ष्शी, चक्ष्शी, अक्ष्यतत्-अक्शासीत्, अक्शास्त, स्यातः, क्श्यापयति-ते, क्श्यापयति-ते, चिक्श्यासते-ति, चिक्शासते-ति ।

चम् 1 P, to eat, (with आ) to drink, आचमति, आचमिता, आचमिष्यति, आचवाम, आचमीत्, चान्तः, चान्त्वा, चमित्वा, चिमिषति ।

चर् 1 P, to walk, चरति, चरिता, चरिष्यति, अचरिष्यत्, चर्यात्, चवार, अचारीत्, चरितः, चारयति-ते, चर्यते, चिचरिषति ।

चल् 1 P, to go, चलति, चलिता, चलिष्यति अचलिष्यत्, चवाल, अचालीत्, चलितः, चलयति, चालयति-ते; चिचलिषति ।

चि 5 U, to collect, चिनोति, चिनुने, चेता, चेष्यति-ते, चीयात्, चेषीष्ट, चिकाय, चियाय, चिकये, चिव्ये,

भवेष्ट, चिन्तः, चापयति, चापयति, चीयते, चिर्यापति-ते,
निकीपति-ते

चिन्त् 10 U, to think चिन्तयति-ते, चिन्तयिष्या,
चिन्तयिष्यति-ते, चिन्तयात्, चिन्तयिषीष्ट, चिन्तयाञ्चकार-चक्रे,
भविचिन्तन्-त, चिन्तितः, चिन्तयिष्या, चिन्त्यते, चिचिन्त-
यिषति, चिचिन्तिषति ।

चुर् 10 U, to steal, चोरयति-ते, चोरयिता, चोरयिष्यति-
ते, चोर्यात्, चोरयिषीष्ट; चोरयाञ्चकार-चक्रे, मचूचुत्-त,
चोरितः, चोरयिष्या, चोर्यते, चचोरयिषति-ते ।

चेष्ट् 1 A, to strive, चेष्टते, चेष्टिता, चेष्टिष्यते, चेष्टिषीष्ट,
विचेष्टे, मचेष्टिष्ट, चेष्टितः, चेष्टयति, चेष्टयते ।

च्युत् 1 P, to flow, to drop down, च्योतति, च्यो-
तिता, च्योतिष्यति, च्युत्यात्, चुच्योत; मच्युतत्, मच्योतीत्,
च्युतितः, च्योतितः, च्योतयति-ते, चुच्योतिषति, चुच्युतिषति ।

छद् 1 & 10 U, to cover, छदति-ते, छादयति-ते; छदिता,
छादयिता, छदिष्यति-ते, छद्यात्, छाद्यात्, चच्छाद्, चच्छदे,
छाद्याञ्चकार-चक्रे; मच्छदीत्, मच्छादीत्, मच्छदिष्ट, मचि-
च्छदत्; छन्नः, छादितः; चिच्छदिषति-ते, चिच्छादिषति-ते ।

छिद् 7 U, to cut, छिनत्ति, छिन्ते, छेत्ता, छेत्स्यति-ते,
छिद्यात्, छेत्सीष्ट; चिच्छेद्, चिच्छिदे; मच्छिदत्, मच्छेत्सीत्,
मच्छित्त; छिन्नः, छेदयति-ते, छिद्यते, चिच्छित्सति-ते ।

जक्ष् 2 P, to eat, जक्षति, जक्षिता, जक्षिष्यति, जक्ष्यात्,
जजक्ष, जजक्षुः, मजक्षीत्, जक्षितः, जक्षयति, जक्ष्यते, जिज-
क्षिषति ।

जन् 4 A, to be born, जायते, जनिता, जनिष्यते,
जनयिषीष्ट, जज्ञे, मजनिष्ट, जातः, जनयति, जायते, जन्वते,

जिह्ननिषते ।

जप् 1 P, to mutter, जपति, जपिता, जपिष्यति, जप्यात्, जजाप, भज्जपीत्, भज्जापीत् ; जपितः, जापयति-ते, जप्यते, जिह्नपिषति ।

जागृ 2 P, to wake, जागर्ति, जागरिता, जागरिष्यति, जागर्ष्यात्, जजागार-गर, जागराञ्चकार, भजागरीन्, जागर्तिः, जागर्ष्यते, जिजागरिषति ।

जि 1 P, to conquer, जयति, जेता, जेष्यति, भजेष्यन्, जोषान्, जिगाय, भजेषीन्, जितः, जापयति-ते, जीवने, जिगीषति ।

जीष् 1 P, to live, जीयति, जीयिता, जीयिष्यति, भजीयिष्यन्, जीष्यान्, जिजीय, भजीषीन्, जीविनः, जीययति-ते, जीष्यते, जिजीविषति ।

जृ 4 P, to grow old, जीर्ष्यति, जृष्टिता, जृष्टिता, जृष्टिष्यति, जृष्टीष्यति, जीर्ष्यान् ; जृष्टार, भज्जारीन्, भज्जरन् ; जृष्णः, जृषति-ते, जृष्यते ; जिजृषिषति, जिजृषीषति, जिजृषीषति ।

ज्ञा 9 P, to know, जानाति, जानीते, ज्ञाना, ज्ञापयति-ते, ज्ञाप्यात्, ज्ञेप्यात्, ज्ञासीष्ट, जज्ञो, ज्ञे, भज्जासीन्, ज्ञानः, ज्ञापयति-ते, ज्ञपयति-ते, ज्ञापते, जिज्ञासति ।

उग्र 1 P, to be hot with fever or passion, उग्रति, उग्रिता, उग्रिष्यति, उग्र्यान्, उग्रार, भज्जारीन्, उग्रः, उग्रति, उग्रयति-ते, जिज्जृषिषति ।

उज् 1 P, to burn, उजति, उजिता, उजिष्यति, उज्यान्, उज्जाल, भज्जालीन्, उज्जितः, उज्जालयति-ते, उज्जयति-ते, उज्जयते, जिज्जलिषति ।

ही 1 & 4 A, to fly, ह्वते, हीवते, ह्विता, ह्विष्यते,

डयिषीष्ट, डिष्पे, भडयिष्ट; डयितः, डीतः, डाययति-त्ते,
डिडयिषते ।

ढीक् 1 A, to go, to approach, ढीकते, ढीकता,
ढीकियते, ढीकियीष्ट, डुढीके, भढीकिष्ट, ढीकितः, ढीकयति-
ने, ढीययते, डुढीकियत ।

तश् 1 & 5 P, to cut to wound, तश्ति, तश्पोति,
तश्तिता; तश्तिष्यति, तश्त्यति, तश्त्यान्, ततश्, अनर्शात्, तष्ट,
तश्चित्वा, तितश्तिषति ।

तन् 8 U, to spread, तनीति, तनुते; तनिता, तनिष्यति-
त्ते; तन्यात्, तनिर्षीष्ट; तनान, तेने, अतनीत्, अनानीत्, अतनिष्ट,
अतश्, ततः, तनित्वा, तानयति-त्ते; तन्यते; तायते, तितांसति-त्ते;
तितंसति-त्ते, नितनिषति-त्ते ।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति,
तप्यात्; तताप, तैपनुः; अताप्सीन्, तप्तः, तापयति-त्ते, तप्यते,
तितप्सति ।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सीष्ट, तैपे; तैपाते; अतत ।
तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते;
तर्जिष्यति, तर्जियिष्यते; तर्ज, तर्जयाञ्चक्रे, अतर्जीत्, अतर्जत,
तर्जितः, तितर्जिषति ।

तड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-त्ते, ताड्यात्,
ताडयिषीष्ट; ताडयाञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताड-
यित्वा, ताडयते ।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-
त्ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतोत्सीत्, अतुत्त, तुन्न-
तोदयति-त्ते, तुतुत्सति-त्ते ।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-त्ते, तोलयिता, तोलयि-

प्यति ते; तोड्यात्, तोलविपीष्ट; तोलयाञ्चकार-चक्रे, अतु तुलत्-
व, तोलितः, तुतोलविपति ।

तुप् । P, to be pleased, तुप्यति, तोष्टा, तोक्षति, मतो-
क्ष्यत्, तुभ्यात्, तुतोष, अतुपत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुप्यते, तुतुक्षति ।

तृप् । P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तृप्ता,
प्रप्ता; तर्पिष्यति, तृप्स्यति, तृप्स्यति; तृप्यात्, तर्प, अतृपत्,
अतर्पित्, अत्राप्सोत्, अत्राप्सित्; तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते;
तितर्पिषति, तितृप्सति ।

तृ । P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरी-
ष्यति; तीर्प्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्ष्यते;
तितरीषति, तितरिषति, तितरीषति ।

त्यञ् । P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति,
त्यज्यात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते,
तित्यक्षति ।

त्रप् । A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते,
त्रप्स्यते; त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट, त्रपे; अत्रपिष्ट, अत्रप्त्, त्रप्तः; त्रप्त्वा,
त्रपयति-ते, तित्रपिषते ।

त्रस् । 1 & 4 P. to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसि-
ष्यति, त्रस्यात्, तत्रास; अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा,
त्रासयति-ते, त्रस्यते, तित्रसिषति ।

त्रै । A, to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते; अत्रास्यत्,
त्रासोष्ट, तत्रे, अत्रास्त; त्रातः, त्राणः; त्रापयति-ते, त्रायते, तित्रासने ।

त्वर् । A, to hurry, त्वरते, त्वरिता, त्वरिष्यते, त्वरिषीष्ट,
तत्वरते, अत्वरिष्ट, त्वरितः, तुर्णः, त्वरयति-ते, त्वर्यते, तित्वरिषने ।

दण्ड् । 10 U. to punish, दण्डयति-ते, दण्डयिता, दण्डयि-
ष्यति-ते, दण्डयिषीष्ट, दण्डयाञ्चकार-चक्रे, अदण्डत्-व ।

इतिगीष्ट, हिलं, मरुतिर, इतिग, रीतः, आपरिगने,
दिदगिगने ।

हीक् । A. to go to approach, हीकते, हीकित्,
हीकन्ते हीकितोष्ट, हुडीके, महीकिय, हीकित, हीकयति-
ने हीकयते, हुडीकियत् ।

तप् । S. 5 P. to cut to wound, तप्ति, तप्ति-
तप्तिता, तप्तिगयति, तपयति, तपयान्, तपश, मन्त्रीन्, तप-
तपिग्या, तपयित्ति ।

तन् 8 U. to spread, तन्ति, तन्ते; तन्तिता, तन्ति-
ते, तन्वाम्, तन्तिगीष्ट, तन्तान्, तेने, मन्त्रीन्, मन्त्रीन्,
मन्त्र, तन्; तन्तिग्या, तन्तिग्यति-ने; तन्ते, तपते, तन्ति-
तिन्तिग्यति ते, तन्तिग्यति-ते ।

तप् । P. to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्यति-
तप्याम्, तपाय, तपनुः; मन्त्रीन्, तप्य, तपयति-ते, तप्ये,
तिरप्यति ।

तप् 4 A. to trouble, तप्यते, तप्साष्ट, तपे; तपते; मतन् ।
तर्ज् 1 P. & 10 A. to threaten, तर्जति, तर्जयते;
तर्जिष्यति, तर्जिष्यते; तर्ज, तर्ज्याञ्चक्रे, मतर्जित्, मतर्जित्,
तर्जितः, तितर्जिषति ।

ताड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्,
ताडयिगीष्ट; ताड्याञ्चकार-चक्रे, मतर्जित्-त; ताडितः; ताड-
यित्वा, ताड्यते ।

तुड् 6 U, to give pain, तुडति, तुडते; तोत्ता, तोत्स्यति-
ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदै; मतोत्सीत्, मनुत्त, तुन्-
तोदयति-ते, तुतुदसति-ते ।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

प्यति-ते; तोल्यात्, तोलयिषीष्ट; तोल्याञ्चकार-चके, अतु तुलत्-
त, तोलितः, तुतोलयिषति ।

तुप् 1 P, to be pleased, तुप्यति, तोष्टा, तोष्टयति, अतो-
ष्टयत्, तुप्यात्, तुतोष, अतुपत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुप्यते, तुतुषति ।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्षिता, तर्षा,
प्रप्ता; तर्षिष्यति, तर्ष्यति, प्रत्स्यति; तृप्यात्, तर्ष, अतृपत्,
अतर्षीत्, अत्राप्सोत्, अताप्सोत्, तृप्तः, तर्षितुम्, तर्षयति-ते;
तितर्षिषति, तितृप्सति ।

तृ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरी-
ह्वति; तीर्ष्यात्, तनार, मतारीत्, तीर्षः, तारयति-ते, तीर्ष्यते,
तितीर्षति, तितरिषति, तितरीषति ।

त्यञ् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यज्यति,
त्यज्यात्, तत्याज, अत्याशीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यायते,
तित्यक्षति ।

प्रप् 1 V, to be ashamed, प्रवने, प्रपिता, प्रप्ता, प्रविष्यते,
प्रष्यते; प्रविषीष्ट, प्रप्सीष्ट, प्रेषे, अप्रविष्ट, अप्रप्न; प्रप्न, प्रप्ना,
प्रपित्या, प्रपयति-ते, तिप्रपियत ।

प्रस् 1 & 4 P, to fear, प्रसति, प्रस्यति, प्रमिता, प्रसि-
प्यति, प्रभ्यात्, त्वास, अभ्रासीत्, मप्रसीत्, प्रस्न, प्रसिष्या,
वासयति-ते, प्रस्यते, तिप्रसियति ।

प्रो 1 V, to protect, प्रायते, प्रोता, प्रायते प्रायते-

इविषोष्ट, हिले, मइविष्ट; इपितः, ईतः, इापयति-ते,
इइविपते ।

द्रीक् 1 A, to go, to approach, द्रीकते, द्रीकित्, द्रीक्यते,
द्रीकितोष्ट, द्रुद्रीके, मद्रीकित्, द्रीकितः, द्रीक्यति-
ते द्रीकयते, द्रुद्रीकियत ।

तद् 1 & 5 P, to cut to wound, तद्गति, तद्गति,
तद्गिता, तद्गित्यदि, तद्ग्यति, तद्ग्यात्, तन्ध, मन्धीन्, तद्,
तद्गिवा, तद्गियति ।

तन् 8 U, to spread, तन्ति, तन्ते, तन्ति, तन्ति,
ते, तन्त्यात्, तन्तिष्ये; तन्त, तेने, मन्तीन्, मन्तीन्, मन्तिष्य-
मन्त, ततः, तन्तिवा, तन्तिवति-ते; तन्ते, तापते, तन्तिवति-ते;
तन्तिवति ते, तन्तिवति-ते ।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति,
तप्यात्; तपाय, तपनुः; मताप्सीन्, तप्नः, तपायति-ते, तप्यते,
तितप्सति ।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्साष्ट, तपे, तपाते; मत्त ।
तर्ज् 1 P. & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते;
तर्जिष्यति, तर्जिष्यते; तर्ज, तर्ज्याञ्चक्रे, मत्तर्ज, मत्तर्ज-
तर्जितः, तितर्जियति ।

ताड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्,
ताडयिषोष्ट; ताड्याञ्चकार-चक्रे, मत्ताडित्-व; ताडितः; ताड-
यित्वा, ताड्यते ।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोत्स्यति-
ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुरै; मत्तोत्सीत्, मत्तुत्त, तुत्त-
तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते ।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

प्यति-ते; तोल्यात्, तोलविपीष्ट; तोल्याञ्चकार-चक्रे, भतू तुलत्-
त्, तोलितः, तुतोल्हियति ।

तुप् 1 P, to be pleased, तुप्यति, तोष्टा, तोष्टयति, भतो-
क्षयत्, तुभ्यात्, तुतोष, अतुपत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुप्यते, तुतुषति ।

तृप् 1 P, to become satisfied, तृप्यति, तर्पिता, तर्प्ता,
प्रप्ता; तर्पिष्यति, तर्प्स्यति, अर्प्स्यति; तृप्यात्, ततर्प, अतृपत्,
अतर्पोत्, अत्राप्सोत्, अत्राप्सोत्; तृप्तः, तर्पितुम्, तर्पयति-ते;
तितर्पिषति, तितृप्सति ।

तृ 1 P, to cross, तरति; तरिता, तरीता, तरिष्यति, तरी-
हयति; तीर्ष्यात्, तार, अतारीत्, तीर्णः, तारयति-ते, तीर्ष्येते;
सित्तीषेति, तितरिषति, तितरीषति ।

त्यञ् 1 P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति,
त्यज्यात्, तत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-ते, त्यज्यते,
तित्यक्षति ।

त्रप् 1 A, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपिष्यते,
त्रप्स्यते; त्रपिपीष्ट, त्रप्सीष्ट; त्रपे; अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्तः; त्रप्ता,
त्रपित्वा, त्रपयति ते, तित्रपिषते ।

त्रस् 1 & 4 P. to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसि-
ष्यति, त्रस्यात्, तत्रास; अत्रासीत्, अत्रसीत्, त्रस्तः, त्रसित्वा,
त्रासयति-ते, त्रस्यते, तित्रसिषति ।

त्रै 1 A. to protect, त्रायते, त्राता, त्रास्यते; अत्रास्यत्,
त्रासीष्ट, तत्रे, अत्रास्त; त्रातः, त्राणः, त्रापयति-ते, त्रायते, तित्रासने ।

त्वर् 1 A. to hurry, त्वरते, त्वरिता, त्वरिष्यते, त्वरिपीष्ट,
तत्वरै, अत्वरिष्ट, त्वरितः, तुर्णः, त्वरयति-ते, त्वर्यते, सित्वरिषने ।

दण्ड् 10 U. to punish, दण्डयति-ते, दण्डयिता, दण्डयि-
ष्यति-ते, दण्डयिपीष्ट, दण्डयाञ्चकार-चक्रे, अद्दण्डत्-त् ।

इषिषोष्ट, इषिषे, मडविष्ट; इषिषः, इषिषः, इषिषयति-ते, इषिषयिषते ।

दौक् 1 A, to go, to approach, दौकते, दौकितः, दौकियते, दौकियोष्ट, दूदौके, मदौकिष्ट, दौकितः, दौकयति-ते, दौकयते, दूदौकियत ।

तश् 1 & 5 P, to cut to wound, तश्ति, तश्नोति, तश्तिता, तश्नियति, तश्नियते, तश्नियोष्ट, दुदौके, मदौकिष्ट, दौकितः, दौकयति-ते, दौकयते, दूदौकियत ।

तन् 8 U, to spread, तनोति, तनुते; तनितः, तनियति-ते; तन्यात्, तनियोष्ट; तनान, तेने, अननीन्, अनानीत्, अननिय-तः, सतः, तनित्या, तनयति-ते; तन्यते; तायते, तिन्यांसति-ते; तितंसति ते, तितनियति-ते ।

तप् 1 P, to shine, to eat, तपति, तप्ता, तप्स्यति, तप्यात्; तताप, तेषनुः; अताप्सीन्, तप्तः, तापयति-ते, तप्यते, तितप्सति ।

तप् 4 A, to trouble, तप्यते, तप्सोष्ट, तेषे; तेषाले; अतः ।
तर्ज् 1 P, & 10 A, to threaten, तर्जति, तर्जयते; तर्जिष्यति, तर्जयिष्यते; तर्ज, तर्ज्याञ्चक्रे, अतर्जीत्, अतर्जत, तर्जितः, तितर्जयति ।

ताड् 10 U, ताडयति, ताडयिता, ताडयिष्यति-ते, ताड्यात्, ताडयिषोष्ट; ताड्याञ्चकार-चक्रे, अतीतडत्-त; ताडितः; ताडयित्वा, ताडयते ।

तुद् 6 U, to give pain, तुदति, तुदते; तोत्ता, तोदयति-ते; तुद्यात्, तोत्सीष्ट; तुतोद, तुतुदे; अतोत्सीत्, भुत्त, तुन्त-तोदयति-ते, तुतुत्सति-ते ।

तुल् 10 U, to weigh, तोलयति-ते, तोलयिता, तोलयि-

ति.ते; तोलयात्, तोलविधीष्ट; तोलयाञ्चकार चक्रे, अतुतुलत्-
तोलितः, तुतोलयिवति ।

तुप् १ P, to be pleased, तुष्यति, तोष्टा, तोक्ष्यति, मतो-
त्, तुष्यात्, तुतोष, अतुषत्, तुष्टः, तोषयति-ते, तुष्यते, तुतुक्षति ।

तृप् १ P, to become satisfied, तृष्यति, तर्षिता, तर्प्ता,
तः, तर्षिष्यति, तर्प्स्यति, त्रप्स्यति; तृष्यात्, ततर्ष, अतृषत्,
तर्त्, अत्राप्सोत्, अत्राप्सोत्, तृप्तः, तर्षितुम्, तर्षयति-ते;
विषति, तितृप्सति ।

तृ १ P, to cross, तरति; तरिता, तरिता, तरिष्यति, तरो-
त्, तीर्ष्यात्, ततार, अतारीत्, तीर्षः, तारयति-ते, तीर्ष्यते,
येति, तितरियति, तितरीवति ।

त्यञ् १ P, to abandon, त्यजति, त्यक्ता, त्यक्ष्यति,
यात्, अत्याज, अत्याक्षीत्, त्यक्तः, त्याजयति-तं, त्यज्यते,
सति ।

त्रिप् १ V, to be ashamed, त्रपते, त्रपिता, त्रप्ता, त्रपियः
ते, त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्टः त्रपे; अत्रपिष्ट, अत्रप्त; त्रप्तः; त्रप्ता
त्, त्रपयति ते, तित्रपियत ।

त्रु १ & ४ P, to fear, त्रसति, त्रस्यति; त्रसिता, त्रसि-

दंश् 1 P, to bite दशति, दृष्टा, दंश्यति, दश्यात्, ददंश, अदंशीत्, दष्टः, दष्टुम्, दष्ट्या, दंशयति-ते, दश्यते, दिदंशति ।

दम् 4 P, to conquer, to be tamed, दाम्यति, दमिता, दमिष्यति, दम्यात्, ददाम, देमतुः, मदमत्, दमितः, दान्तः, दमयते, only, दिदमिषति ।

दय् 4 A, to pity, to protect, to give, दयते, दयिता, दयिष्यते, दयिषीष्ट, दयाञ्जके, अदयिष्ट, दयितः, दिदयिषते ।

दरिद्रा 2 P, to be poor, दरिद्राति, दरिद्रिता, दरिद्रिष्यति, दरिद्र्यात्, दरिद्राञ्जकार, ददरिद्रौ, अदरिद्रौत्, मदरिद्रासीत्, दरिद्रितः, दरिद्रयते, दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति ।

दल् 1 P, to burst open, दलति, दलिता, ददाल, अदालीन् ।

दद् 1 P, to burn, ददति, दग्धा, दद्यति, मद्ययन्, दद्यात्, ददाद्, देदतुः; अघाशीत्, अदाम्घाम्, दग्धः, दाहयति-ते, दद्यते, दिघक्षति ।

दा 1 P, & 3 U, to give, दच्छति, ददाति, दत्ते, दाता, दास्यति, देवात्, दासीष्ट, ददौ, ददे, अदात्, अदितः, दतः, दातुम्, दापयति-ते, दायते, दित्सति-ते ।

दीय् 4 P, to shine, to play, दीष्यति, देविना, देनिष्यति, दीष्यात्, दिदेष, दिदियतुः, अदीपोन्, द्यूतः, द्यूनः, देययति-ते, दीष्यते, दुद्युषति, दिदेषिषति ।

दिश् 6 U, to allow, दिशति-ते, देष्टा, देष्टयति-ते, दिश्यात्, दिशोष्ट, दिदेश, दिदिशौ; अदिक्षत्, दिष्टः, दिष्ट्या, देष्टुम्, देशयति-ते, दिश्यते, दिदिशति-ते ।

दीप् 4 A, to shine, to burn, दीप्यते, दीपिना, दीपिष्यते, दीपिषीष्ट, दिदीपे, अदीपिष्ट, अदीपि, दीपतः, दीपयति-ते, दीप्यते, दिदीपिषते ।

दुद् 2 U, to milk, दोग्धि, दुग्धे, दोग्धा, धोक्षयति-ते; दुग्धात्, दुक्षिष्ट, दुदोह, दुदुहे, अधुक्षत्-त्, अदुग्ध, दुग्धः, दोग्धुम्, दोहयति-ते, दुहते, दुधुक्षति-ते ।

ह् (with आ) 6 A, to regard, आद्रियते, आदर्त्ता; आदरिष्यते, आह्वीष्ट, आददे; आहृत, आह्वपाताम्, आहृतः, आदरयति-ते, आद्रियते, आदिदरिषते ।

दृश् 1 P, to see, पश्यति, दृष्टा, दृक्षयति, दृश्यात्, ददर्श; अदर्शत्, अद्राक्षीत्, दृष्टः, दर्शयति-ते, दृश्यते; विदृक्षते ।

द्यत् 1 A, to shine, द्योतते, द्योतिता, द्योतिष्यते, द्योतिषीष्ट, दिद्युते; अद्योतिष्ट, अद्युत्त्, द्युतितः, द्योतितः, द्योतयति-ते; दिद्युतिषते, दिद्योतिषते ।

दृ 1 P, to melt, to run, द्रवति, द्रोता, द्रोष्यति, द्रुयात्, द्रुदाय; अद्रुद्वत्, द्रुनः, द्रावयति-ते, द्रूयते, द्रुद्वपति ।

द्रुद् 4 P, to bear malice, द्रुहति; द्रोहिता, द्रोग्धा, द्रोहा, द्रोहिष्यति, धोक्षयति, द्रुह्यात्, द्रुदोह (द्रुदोहिष, द्रुदोह, द्रुद्रोग्ध-लिट्-थ), अद्रुहत्, द्रुग्धः, द्रुहः; द्रोहितुम्, द्रोग्धुम्; द्रोदुम्, द्रुहित्वा, द्रोहित्वा, द्रुष्या, द्रुद्या; द्रोहति-ते, द्रुहते, द्रुदोहिषति, द्रुदुहिषति ।

द्विप् 2 U, to hate, द्वेष्टि, द्विष्टे; द्वेष्टा, द्वेष्टयति-ते; द्विष्यात्, द्विषीष्ट; द्विष्टेय, दिद्विषे; अद्विषत्-त्, द्विष्टः, द्वेष्टम्, द्वेष्टयति-ते, द्विष्यते, दिद्विषति-ते ।

धा 3 U, to maintain, दधाति, धत्ते; धाता, धात्यति-ते; धेयात्, धासीष्ट, धर्षा, धधे; अधात्, अधितः, हितः, धापयति-ते; धीयते, धित्सति-ते ।

धाष् 1 U, to rue, धावति-ते, धाविता, धाविष्यति-ते, धाव्यात्, धाविषीष्ट; दधाव, दधाधे; अधाधीत्, अधाविष्ट;

घावितः, घीतः, घावयति-त्ते, दिघांविपति-त्ते ।

धु 5 U, to shake, धुनोति, धुनुते; घोता, घोष्यति-त्ते; धूयात्, धोषीष्ट; दुधाव, दुधुवे, अधोषीत्, अधोष्ट; धुतः, घावयति, धूयते, दुधुवति-त्ते ।

धू 6 P, 5 & 9 U. धुवति, धुनोति, धुनुते, धुनाति, धुनीते; घोता, घविता; घोष्यति-त्ते घविष्यति-त्ते; धूयात्, घविषीष्ट; दुधाव, दुधुवे, अधावीत्, अधविष्ट, अधुवीत्; धूतः, धूनः; धूनयति, धूयते, दुधूवति-त्ते ।

धृ 1 U, to hold, धरति-त्ते, धर्ता, धरिष्यति-त्ते; ध्रियात्, ध्रूषीष्ट, दधार, दध्ने; अधार्षीत्, अधृत; धृतः, धारयति-त्ते, ध्रियते, दिधीर्षति-त्ते ।

ध्मा 1 P, to blow, धमति, ध्माता, ध्मास्यति; ध्मायात्; ध्मेयात्, दध्मी, अध्मासात्, ध्मातः, अध्मापयति, ध्मापते, दिध्मासति ।

ध्मै 1 P, to think of, ध्यायति, ध्याता, ध्यास्यति; ध्यायात्, ध्येयात्; दध्यौ, अध्यासीत्, ध्यातः, ध्यापयति-त्ते, ध्यायते, दिध्यासति ।

ध्वंस् 1 A, to perish, ध्वंसते, ध्वंसिता, ध्वंसिष्यते, ध्वंसिषीष्ट, दध्वसे, अध्वंसत्, अध्वंसिष्ट, ध्वस्तः; ध्वंसित्वा, ध्वस्तवा, ध्वंसयति-त्ते, ध्वस्यते, दिध्वंसियते ।

ध्वन् 1 P, to sound, to echo. ध्वनति, ध्वनिता, ध्वनिष्यति, ध्वन्यात्, दध्वान, अध्वनीत्, अध्वानीत्; ध्वनितः, ध्वान्तः; ध्वानयति-त्ते, दिध्वनियति ।

नद् 1 P, to sound नदति नदिता ननाद; ननादीन्, ननरीन् ।

नम् 1 P, to be pleased, नन्दति, नन्दिता, नन्दिष्यति, नन्द्यात्, ननन्द, ननन्दीन्, नन्दितः, नन्दयति-त्ते, नानन्दे,

निनन्दिषति ।

नम् 1 P, to salute, नमति, नन्ता, नंस्यति, नम्यात्, ननाम, अनंसात्, नतः; नामयति, नमयति, नम्यते, निर्नसति ।

नर्दु 1 P, to roar, नर्दति, नर्दिष्यति, ननर्द, अनर्दोत् ।

नश् 4 P, to be lost, नश्यति; नष्टा, नशिक्ता; नशिष्यति, नश्यति; नश्यात्, ननाश, अनशत्, नष्टः; नष्टा, नशित्वा; नाशयति-ते, नश्यते, निनशिवति ।

नद् 4 U, to bind, नद्यति-ते, नद्धा, नत्स्यति-ते, नद्यात्, नत्सीष्ट; मनाद्, नेहे; अनारत्सीम्, अनरु; नद्धः, नाहयति-ते, नह्यते, निनत्सति-ते ।

निन्दु 1 P, to censure, निन्दति, निन्दिता, निन्दिष्यति, निन्द्यात्, निनिन्द, अनिन्दीम्, निन्दितः; निन्दयति-ते, निन्द्यते, निनिन्दिषति ।

नी 1 U, to lead, नयति-ते, नेता, नेष्यति-ते, नीयाम्, नीषीष्ट; निनाय, निन्ये; अनैषीम्, अनेष्ट, नीतः, नेतुम्, नाययति, नीयते, निनीयति-ते ।

नु 2 P, to praise, नीति, नकिता, नयिष्यति, नुनाय, अनायीम्, नुतः; नाययति-ते, नुनूयति ।

नृत 4 P, to dance, नृत्यति, नर्तिता, नर्तिष्यति, नृत्यात्, ननर्त्त, अनर्तोत्, नृतः, नर्तितुम्, नर्त्तयते; only, नृत्यते, निनर्तिषति, निनृतसति ।

पच् 1 U, to cook, to digest, पचति-ते, पक्ता, पक्ष्यति-ते, पच्यात्, पशीष्ट; पपाच, पचे; अपाशीम्, अपचः; पक्ष, पक्षत्वा, पक्षत्प्यः, पाचयति-ते, पच्यते, पिपासति-ते ।

पठ् 1 P, to read, पठति, पठिता, पठिष्यति, पठ्यात्, पपाठ, पेटुः; अपठीत्; अपठीम्, पठिनः, पाठयति-ते, पठ्यते,

विपडिपति ।

पद् 1 P, to fall, पतति, पतिता, पतिष्यति, पत्यात् ;
पतात, पेतुः, भवत्यत्, पतितः, पातयति-ते, पश्यते; पित्तान्,
विपतिपति ।

पद् 4 A, to grow, पचने, पत्ता, पच्यते, पत्ताट, पेटे,
भवति, पचः, पचा, पाद्यति-ते, पियते, पित्तते ।

पा 1 P, to drink, पिबति, पाता, पाम्यति, पेयात्, पपी,
भवात्, पीतः, पातुम्, पाद्यति-ते, पीयते, पिपासति ।

पा ३ P, to protect, पाति, अपासीत्, पायात्, पाल-
यति-ते, पायते ।

पाल् 10 U, to protect, पालयति ते, पालयिष्यति-ते;
पाल्यात्, पालविपीट, पालयाञ्चकार-चक्रे, अपीपलत्, पालितः ।

पिप् 7 P, to grind, पित्ति, पेटा, पेट्यति, पिष्यात्,
पिपेष, अपिष्यत्, पिष्टः, पेट्टुम्, पेपयति-ते, पिष्यते, पिपिषति ।

पीड् 10 U, to give pain, पीडयति, पीडयिष्यति-ते,
पीड्यात्, पीडयाञ्चकार-चक्रे, अपीपिडत्-त्, अपिपीडत्-त्,
पिपीडयिपति-ते ।

पुप् 1 9, 4, P, to nourish, पोपति, पुष्णाति, पुष्यति;
पोयिता, पोष्टा; पोषिष्यति, पोष्यति; पुष्यात्, पुरोष; अपोषात्,
अपुषत्; पुषितः, पुष्टः, पुषितुम्, पुषयति-ते, पुष्यते; पुपुषिपति,
पुपापिपति, पुपुक्षति ।

पू 9 U, to purify, पुनाति, पुर्नाते, पविता, पविष्यति;
पूयात्, पविपीट; पुपाय, पुपुवे; अपाषीत्, अपविष्ट; पूतः,
पुपुपति-ते ।

पूज् 10 U, to worship, पूजयति-ते, पूजयिता, पूजयि-
ष्यति-ते, पूजयाञ्चकार-चक्रे, अपूपुजत्, पूजितः, पुपूजयिपति-ते ।

पूर् ४ A, to satisfy, पूर्यते, पूरिता, पूरिष्यते, पुपुरे, अपुरिष्ट, अपूरि, पूर्णः, पूर्तः, पूर्यति-ते, पुपूरिषते ।

पृ ५ P, to be satisfied, पृणाति, पृर्ता, परिष्यति, पवार, अपार्षीत् ।

पृ ९ & ३ P, to fill, पृणाति, विपरिषि; परिता; परीता, परिष्यति; परीष्यति, पूर्यात्, पवार, अपारीत्, पूर्णः; पूरितः; पार्यति-ते, पुपूर्यति, विपरिषति, विपरीषति ।

प्याच् १ A, to grow, प्यायते, प्यायिष्यते, पिप्ये, अपार्या; पानः, प्यानः ।

प्रच्छ् ६ P, to ask, पृच्छति, प्रष्टा, प्रक्ष्यति, पृच्छ्यात्, पप्रच्छ; अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्लुङ्-ताम्, पृष्टः, प्रष्टुम्, प्रच्छयति-ते, पृच्छयते, विपृच्छयति-ते ।

प्रथ् १० U, to publish, प्रथयति-ते, प्रथयिता, प्रथयिष्य-ति ते, प्रथयाञ्चकार-चक्रे, अप्रथत्-न्, प्रथितः, विप्रथयति-ते ।

प्री ४ A, to feel affection, प्रीयते, प्रेता, प्रेष्यते, प्रेषीष्ट, विप्रिये, अप्रेष्ट, प्रीतः, प्रेतुम् प्राययति-ते, प्रीयते, विप्रीयते ।

प्री ९ U, to please, प्रीणाति, प्रीणीते; प्रीयात्, वि-अप्रीषीत् ।

प्री १० U, प्रीणयति, प्रीणयिष्यति, प्रीणयाञ्चकार-च-

प्लु १ A, to float, to go प्लवते, प्लोता, प्लोच प्लौषीष्ट, पुप्लुवे, अप्लोष्ट, प्लुतः, प्लावयति-ते, प्लू-प्लुषते ।

फल् १ P, to result, फलति, फलिता, फलिष्य फाल, अफालीत्; फलितः, फुल्लः, फालयति, फलयते, वि-फलयति ।

बन्ध् ९ P, to bind, बध्नाति, बन्धा, बन्धस्यति, बन्ध्या-

यन्ध, अमान्सीत्, यद्धः, यन्धयति-ते, यध्यते, विमन्सति ।

याघ् 1 A, to oppress, याघते, याघिता, याघिष्यते, याघिषीष्ट, यवाघे, अयाघिष्ट, याघितः, याघयति-ते, याघ्यते, विवाघिषते ।

युष् 1 U, to know, बोधति-ते, बोधिता, बोधिष्यति-ते; युष्यात्, बोधिषीष्ट; युषोघ, युषुधे; अयुधत्, अबोधोत्, अबोधिष्यते; युद्धः, युधितः; बोधयति-ते, युध्यते, युयुधिषति-ते; युषोधिषति-ते ।

युष् 4 A, to know युध्यते, बोद्धा, भोत्स्यते, भुत्सीष्ट; अयुद्ध, अबोधि; युद्धः, बोद्धुम्, युभुत्सते ।

यृ 2 U, to speak यवीति-यृते, आह, वक्ता, वक्ष्यति-ते; उच्यात्, वक्षीष्ट; उवाच, ऊचे; अयोचत्-त्, उकः, वक्तुम्, वाचयति-ते, उच्यते, विवक्षति-ते ।

भश् 10 U, to eat भक्षयति-ते, भक्षयिष्यति, भक्ष्यात्, भक्षयाञ्चकार-चक्रे, अयभक्षत्, भक्षितः, भक्षयितुम्, भक्ष्यते, विभक्षयिषति-ते ।

भञ् 1 U to serve भजति-ते, भंक्ता, भंक्ष्यति-ते, भज्यात्, भक्षीष्ट; यमाज, भेजे; अमाक्षीत्, अमक्त, भक्तः, भाजयति-ते, भज्यते, विभक्षति-ते ।

भञ् 7 P, to break भनक्ति, भंक्ता, भंक्ष्यति, भज्यात्, अमञ्ज, अमांक्षीत्, अमनः, भञ्जयति-ते, भज्यते, विभंक्षति ।

भा 2 P, to shine भाति, भाता, भास्यति, भाष्यात्, अभांक्षीत्, भातः, भाषयति-ते, भाष्यते, विभासति ।

भाप् 1 A, to speak भाषते, भाषिता, भाषिष्यते, भाषिषीष्ट, अभाषे, अभाषीष्ट, भाषितः, भाषयति, भाष्यते, भाषिषीष्ट ।

भास् 1 A, to shine, मासते, यमासे, अमासिष्ट, like माप् ।

भिष् 1 A, to beg मिक्षते, मिक्षिष्यते, मिक्षिषीष्ट, विमिक्षे, अभिक्षिष्ट ।

भिद् 7 U, to break down, भिनत्ति, भिन्ते; भेत्ता, भेत्स्यति-ते; भिद्यात्, भित्सीष्ट; विभेद, विभिदै; अभिदन्, अभेत्सीत्, अभिक्त; भिक्तः; भिन्तः, भेद्यः, भित्था, भेत्तुम्, भेद्यति ते, भिद्यते, विभित्सति-ते ।

भी 3 P, to fear, विभेति, भेत्ता, भेत्स्यति, भीयात्; विभाय, विभ्यतुः; विभयिष्य, विभेद्य, विभयाञ्चकार, अभैषीत्, भीत्तः; भायति, भायते, भीयते; भीयते, विभीषति ।

भुञ् 7 U, to eat, to protect मुनक्ति, भुङ्क्ते, भोक्ता, भोक्षति-ते, भुञ्जात, भुञ्जीष्ट; बुभोज, बुभुजे; अभोक्षीत्, अभुक्त; भुक्तः; भोजयति-ते, भुञ्जते, बुभुक्षति-ते ।

भू 1 I, to be, भवति-ते, भविता, भविष्यति-ते; भूयात्, भविषीष्ट; बभूव, बभूवे; बभून्, अभविष्ट; भूतः, भावति, भूयते, बुभूषति ।

भूष् 1 P & 10 U, to adorn भूयति, भूयति-ते; भूषिष्यति, भूषिष्यति-ते; भूष्यात्, भूषयिषीष्ट, बुभूष, भूष्याञ्चकार-चक्र; अभूषीत्, अबुभूषत् ।

भृ 1 & 3 U, to nourish, to fill भरति-ते, विभ्रति, विभ्रते; भर्ता, भरिष्यति-ते; भ्रियात्, भ्रयीष्ट; बभार, बभ्रे; विभराञ्चकार-चक्र; अभारीत्, अभृत, भृतः; भारयति-ते, भ्रियते; वैभरिषति, बुभ्रयति-ते ।

भ्रम् 1 & 4 P, to roam, भ्रमति, भ्राम्यति, भ्रम्यति, भ्रमिता, भ्रमिष्यति, भ्रम्यात्; बभ्राम; अभ्रमीत्, अब्रमत् ।

स्राग्नः, समयति, सम्यते, विभ्रमिपति ।

संशृ 1 A & 4 P, to fall, संशने, संश्यति, संशिला, संशिष्यति-ते, संशिषोष्ट, संशयान्; वस्रंश, वस्रंशेः वस्रंशन्, वस्रंशिष्ट, वस्रंशन्; स्रष्टः, संशिष्या, संशयति-ते, संश्यते, विस्रंशिपति-ते ।

स्रष्ट् 6 U, to cry, भृञ्जति-ते; स्रष्टा, मश्रां; स्रष्ट्यति-ते मश्र्यति; भृञ्जान्, मश्रीष्ट, मश्रीष्ट; वस्रञ्ज, वस्रञ्जे, वस्रञ्जे, वस्रञ्जे; वस्राश्रीत्, वस्रश्रीन्; वस्रष्ट, वस्रष्टे; स्रष्टुम्, मश्रुम्; स्रञ्जयति-ते, मश्रयति-ते; भृञ्जते, विस्रञ्जति-ते, विस्रश्रयति-ते; विस्राञ्जयति-ते, विस्रजिपति-ते ।

स्राज् 1 A, to shine, स्राजते, स्राजिता, स्राजिष्यते, स्राजिषीष्ट; वस्राजै, स्राजे; वस्राजिष्ट, स्राजितः, स्राजयति-ते, स्राज्यते, विस्राजिपते ।

मद् 4 P, to be glad, to be mad, माद्यति, मदिता, मदिष्यति, मद्यात्, ममाद्; वमदीत्, मत्तः, मदित्वा, मद्यति-ते, मद्यते, मिमदिपति ।

मन् 4 A, to think, मन्यते, मन्ता, मंस्यते, मंसीष्ट; मेने, वमंस्त, मत्तः, मानयति-ते, मन्यते, मिमंसते ।

मन्त्र् 10 A, to advise, मन्त्रयते, मन्त्रयिता, मन्त्रयिष्यते, मन्त्रयिषीष्ट, मन्त्रयाञ्चके, वममन्त्रत, मन्त्रितः, मिमन्त्रयिपते ।

मन्थ् 9 & 1 P, to churn, मथ्नाति, मथ्नाति; मन्थिता, मन्थिष्यति, मथ्यात्, ममन्थ, वमथ्नीत्, मथितः, मन्थित्वा, मन्थयति-ते, मथ्यते, मिमन्थिपति ।

मसृज् 6 P, to sink, मज्जति, मज्जता, मज्ज्यति, मज्जात्, वमज्ज, वमज्जिषीत्, मज्जः, मज्जयति, मज्जाते, मिमज्जति ।

मा 2 P, to measure, माति, माता, मास्यति, मेयात्,

ममौ, अमासीत्, मितः, मापयति-ते, मीयते, मित्सति ।

मान् 1 A, to search, मीमांसते, मिमांसता, मिमांसिष्यते, मीमांसिषीष्ट, मीमांसाश्चभूव-आस-चक्रे, अमीमांसीष्ट, मिमांसेतः, मीमांसिषत् ।

मार्गं 10 U, to seek for, मार्गयति-ते, मार्गयिता, मार्गयिष्यते, मार्गयिषीष्ट, मार्ग्यात्, मार्गयिषीष्ट; अममार्गत्-त, मार्गितः, अमार्गिषति ते ।

मार्जं 10 U, to purify, मार्जयति-ते, मार्जयिता, मार्ज्यात्, मार्जयिषीष्ट; मार्जयाश्चकार-चक्र, अममार्जत्-त, मार्जितः, मिमार्जयिषति-ते ।

मि 5 U, to scatter, मिनोति-मिनुते; माता, मास्यति-ते; मीयात्, मासीष्ट; ममौ, मिभ्ये; अमासीत्, अमास्त; मितः, मापयति-ते, मीयते, मित्सति-ते ।

मिल् 6 U, to join मिलति-ते, मेलिता; मिल्यात्, मेलिषीष्ट; मिमेल, मिमिले; अमेलीत्, अमेलिष्ट; मिलितः, मेलयति-ते, मिनेलिषति-ते ।

मुच् 6 U, to leave, मुञ्चति-ते, मोक्ता, मोक्षयति-ते; मुच्यात्, मुक्षीष्ट; मुमोच, मुमुचे; अमुचन्, अमुक्त; मुक्तः, मुक्त्वा, मोचयति-ते, मुमुक्षति-ते ।

मुद् 1 A, to rejoice, मोदते, मोदिता, मोदिष्यते, मोदिषीष्ट, मुमुदे, अमोदिष्ट; मुदितः-मोदितः, मोदयति, मुदते, मुमुदिषते ।

मुप् 9 P, to steal, मुष्णाति; मोपिता, मोपिष्यति, मुप्यात्, मुमोष, अमोपीत्, मुषितः, मुष्यते, मुमुषिषति ।

मुद् 4 P, to faint, मुह्यति; मोहिता, मोह्या-मोहा; मोहिष्यति, मोक्षयति; मुह्यात्, मुमोह, अमुहत्; मूढः, मोहित्वा-मुह्याः

मूढ्वा, मोहयति-ते, मुह्यते; मुमुह्वति, मुमोह्वति, मुमुह्वति ।
 मृ 6 A, to die, म्रियते, मर्ता, मरिष्यति, मृषीष्ट, ममार,
 अमृत, मृतः, मर्त्तुम्, मारयति-ते, म्रियते, मुमूर्धति ।
 मृग् 10 A, to hunt, मृगयते, मृगयिष्यते, मृगयाञ्चक्रे,
 अममृगत ।

मृश् 6 P, to touch, to consider, मृशति, मर्षा, म्रश;
 मर्ष्यति, म्रश्यति, मृश्यात्, ममर्शः, अमर्शात्, ममृ-
 क्षन्, मृष्टः, मर्शयति-ते, मृश्यते, मिमृक्षति ।

मृष् 1 P, to sprinkle, to bear, मर्षति, मर्षिता;
 मर्षिष्यति, म्रश्यति, मर्ष्यति; मृष्यात्, ममर्षः, अमर्षात्, मृष्टः;
 मृषित्वा, मर्षित्वा, मर्षयति-ते, मृष्यते, मिमर्षयति ।

मृय् 4 U to suffer, to allow, मृष्यति-ते, मर्षिषोष्ट,
 ममृषे, अमर्षिष्ट ।

यज् 1 U, to worship, यजति-ते, यष्टा, यश्यति-ते,
 इत्यान्, यशीष्ट; इयाज, ईजे; अयाशीत्, अयष्ट; इष्ट, याजयति-ते,
 वियक्षति ते ।

यत् 1 A, to attempt, यतते, यतिता, यतिष्यते, यतिषोष्ट,
 येने, अयतिष्ट, यतः, यतित्वा, यातयति-ते, यत्तते, वियतिषते ।

यम् 1 P, to go, यच्छति, यत्ता, यंशति, अयंशन्, यत्तान्,
 ययान्, अयंसीन्, यतः, यामयति ते, यमयति ते, ययने, वियंसति ।

या 2 P, to go, याति, याता, यास्यति, अयास्यत्, यावान्,
 यर्षा, अयासीन्, यातः, यापयति-ते; यायने, यायासति ।

याष् 1 U, to beg, याचति-ते, याचिता, याचिष्यति,
 याच्यान्, याचिषोष्ट, अयाचीन्, अयाचिष्ट, याचिन, याचयति ते,
 याचयने, वियाचिषति-ते ।

युञ् 4 A, & 7 U, to unite, युजयते, युजति, युजन्,

योका; योक्ष्यति-त्ते, युज्यात्, युक्षीष्ट; युयोज, युयुजे; अयुजत्, अयुक्षीत्, अयुक्त; युक्तः, योजयति-त्ते, युज्यते, युयुक्षति-त्ते ।

युष् 4 A, to fight, युध्यते, योद्धा, योत्स्यते, युत्सीष्ट, युयुधे, अयुद्ध, युद्धः, योधयति-त्ते, युध्यते, युयुत्सते ।

रक्ष् 1 P, to protect, रक्षति, रक्षिता, रक्षिष्यति, रक्ष्यात्, ररक्ष, अरक्षीत्, रक्षितः, रक्षयति-त्ते, रक्ष्यते; रिरक्षिषति ।

रच् 10 U, to arrange, to make, रचयति-त्ते, रचयिता, रच्यात्, रचयिषीष्ट; रचयाञ्चकार-चक्रे, अररचत्-त्, रिरचयिषति-त्ते ।

रञ्ज् 1 & 4 U, to be pleased, रजति-त्ते, रज्यति-त्ते; रक्ता; रंक्षति-त्ते, रज्यात्, रंक्षीष्ट; ररञ्ज, ररञ्जे; अरंक्षीत्, अरंक्त; रक्तः, रजयति-त्ते, रज्यते, रिरंक्षति-त्ते ।

रम् 1 A, to begin, रमते, रप्धा, रप्स्यते, रप्सीष्ट, रेमे, अरम्य, रम्यः, रमयति-त्ते, रम्यते; रिप्सते ।

रम् 1 A, to play, रमते, रन्ता, रंस्यते, रंसीष्ट, रेमे, अरंस्त, रतः, रमयति-त्ते, रम्यते, रिरंसते ।

राज् 1 U, to shine, राजति-त्ते, राजिता, राजिष्यति-त्ते, राज्यात्, राजिषीष्ट; रराज, रराजे, रेजे; अराजीत्, अराजिष्ट; राजितः, राजयति-त्ते, राज्यते, रिराजिषति-त्ते ।

राष् 4 P, to finish, राष्यति, राद्धा, राह्यति, राष्यात्, रराध, अरात्सीत्, राद्धः, राधयति-त्ते, राष्यते, रिरात्सति ।

रु 2 P, to sound, रीति, रवीति, रविता, रविष्यति, रुयात्, रुराव, अरावीत्, रुतः, रावयति-त्ते, रुयते, रुरुपति ।

रुच् 1 A, to be pleased with, रोचते, रोचिष्यते, रोचिषीष्ट, अरोचिष्ट, रुचितः, रोचयति-त्ते, रुच्यते, रुरोचिषते ।

रुद् 2 P, to cry, रोदिति, रोदिता, रोदिष्यति, रुयात्,

रुद, अरुदत्, अरोदीत् ; रुदितः, रोदयति-ते, रुदियति ।

रुष्, 7 U, to shut up, रुणद्धि, रुन्धे; रोद्धा, रोत्स्यति-ते; रुध्यात्, रुत्सीष्ट; रुरोध, रुन्धे; अरुधत्, अरोत्सीत्, अरुद्ध, रुद्धः, रोदुधुम्, रोधयति-ते, रुध्यते, रुत्सति-ते ।

रुह् 1 P, to rise, रोहति, रोढा, रोक्ष्यति, रूहात्, रुरोह, अरुहत्, रुद्धः, रोहयति, रुह्यते, रुक्षति ।

लम् 1 A, to get, लमते, लब्धा, लप्स्यते, लप्सीष्ट, लेभे, अलब्ध, लब्धः, लम्मयति-ते, लम्यते, लिप्सते ।

लम् 1 A, to hang down, लम्बते, लम्बिता, लम्बिष्यते, लम्बिषीष्ट, ललम्बे, अलम्बिष्ट, लम्बितः, लम्बयति-ते, लम्यते, लिलम्बिषति ।

लप् 1 & 4 U, to desire, लपति-ते, लप्सति-ते, लपिता, लपिष्यति-ते, लप्यात्, लपिषीष्ट, ललाप, लेपे; अलापीत्, अलापीत्, अलपिष्ट; लपितः, लापयति-ते, लप्यते, लिलपिषति-ते ।

लञ् 1 & 6 A, to be ashamed, लज्जते, लज्जिता, लज्जिष्यते, लज्जिषीष्ट, ललज्जे, अलज्जिष्ट, लज्जितः, लज्जयति-ते, लज्जयते, लिलज्जिषते ।

लिप् 6 P, to write, लिखति, लेखिता, लेखिष्यति, लिख्यात्, लिलेख, अलेखीत्; लिखितः, लेखयति-ते, लिख्यते, लिलेखिषति ।

लिप् 6 U, to paint, लिम्पति-ते, लेप्ता, लेप्यति-ते; लिभ्यात्, लिप्सीष्ट; लिलेप, लिलिपे; अलिपत्-त्, अलिप्तः; लेपयति-ते, लिप्पते, लिलिप्सति-ते ।

लिह् 2 U, to lick, लेदि, लीडे, लेढा, लेक्ष्यति-ते; लिह्यात्, लिह्येष्ट, लिलिहे; अलिहत्, अलीह; लीहः, लेहयति-ते, लिह्यते, लिलिहति-ते ।

श्री 4 A, to perish, लीयते; लेता, लेष्यते, लास्यते;
; लासीष्ट; लिह्ये; अलेष्ट, अलास्त, लीनः, लाययति-ते
यते ।

इ 1 & 4 U, to roll, लोटति-ते, लुट्यति, लोटिता;
; लुलुटे; अलुटत्, अलोटिष्ट, अलोटीत्, लुटितः, लोटितः;
ते-ते, लुलोटिपति-ते ।

पू 4 P, to covet, लुभ्यति; लोमिता, लोभ्या; लोभि-
लोभ्यनि; लुभ्यात्, लुलोभ, अलोभीत्, अलुभत्, लुभ्यः;
ते-ते, लुभ्यते, लुलुभिपति, लुलोभिपति ।

उ 1 U, to cut, लुनाति, लुनीते; लघिता, लघिष्यति-ते;
; लघिषोष्ट; लुलाघ, लुलुवे; अलघीत्, अलघिष्ट; लूनः, लाघ-
ल्यते, लुल्यति-ते ।

ऌ 1 A, to see, लोक्ते, लोकितः, लोकिष्यते, लोकिषीष्ट,
प्रलोकिष्ट, लोकितः, लोकयति-ते, लोक्ते, लुलोकिपते ।

1 A, to see, लोचते, लोचिता, like लोक् ।

२ P, to speak, वक्ति, वक्ता, वक्षति, उच्यत्,
वोचत्, उक्ता, वाचयति, उच्यते, विवक्षति ।

P, & 10 U, to speak, वचति, वाचयति-ते,
अर्थावचत्-त् ।

P, to say, वदति, वदिता, वदिष्यति, उद्यात्, उयाद्,
उदितः, वादयति-ते, उद्यते, विवदिपति ।

A, to salute, वन्दते, वन्दिता, वन्दिष्यते, वन्दि-
अवन्दिष्ट, वन्दितः, वन्दयति-ते, वन्द्यते, विवन्दिपते ।

उ, to sow, वषति-ते, वषता, वष्यति-ते, उप्स्यात्,
वष, ऊषे; अवाप्सीत्, अवषत्, उप्तः, वाषयति-ते,
वषति-ते ।

वम् 1 P, to vomit, वमति, वमिता, वमिष्यति, वम्यात्, ववाम, अवामीत्; वमितः, वान्तः, वमयति-ते, वम्यते, विवमिषति ।

वर्ण 10 U, to explain, वर्णयति ते, वर्णयिष्यति-ते, वर्णयाञ्चकार-चक्रे, अववर्णतु-त, वर्णितः, विवर्णयिषति-ते ।

वस् 1 P, to dwell, वसति, वस्ता, वत्स्यति, उष्यात्, उवास, अवात्सीत्, उषितः, वासयति, उप्यते, विवत्सति ।

वह् 1 U, to carry, to flow, वहति-ते, वोढा; उह्यात्, वक्षीष्ट; उवाह, ऊहे; अवाक्षीत्, अयोढ; ऊढः, वाहयति-ते, उहते, विवक्षति-ते ।

वा 2 P, to blow, वाति, वाता, वास्यति, वायात्, ववौ, अवासीत्, वातः, वापयति-ते, वायते, विवासति ।

वाञ्छ् 1 P, to desire, वाञ्छति, वाञ्छता, वाञ्छिष्यति, वाञ्छयात्, ववाञ्छ, अवाञ्छोत्, वाञ्छितः, वाञ्छयति-ते, वाञ्छयते, विवाञ्छिषति ।

विद् 2 P, to desire, वेत्ति, वेद; वेदिता, वेदिष्यति, विद्यात्, विवेद, विदाञ्चकार, अवेदीत्, विदितः, वेदयति-ते, विवेद्यते, विविदिषति ।

विद् 4 A, to be, विद्यते, वेत्ता, वेत्स्यते, विविदे, अविस्त, विवित्सते ।

विद् 6 U, to get, विन्दति-ते; वेदिता, वेत्ता, विद्यात्, वित्सीष्ट, वेदिषीष्ट, अविदन्, अविस्त, अवेदिष्ट; विवित्सति-ते, विवि (वे) दिषति-न्ते ।

विश् 6 P, to enter, विशति, वेष्टा, वेष्टयति, विश्यात्, विशेश, अविक्षत्, विष्टः, वेशयति-ते, विश्वते, विविशति ।

वृ 1 & 6 U, A, to choose, वरति-ते, वृणोति, वृणुने, वरिता; वरीता; वरिष्यति-ते, वरीष्यति-ते; त्रिवान् ।

वरिषीष्ट, वृषाष्ट; ववार, ववरे; अवारीत्, अवरिष्ट, अवरीष्ट; अवृत; वृतः, वग्नुम्, वाप्यति-त्ते, व्रियते; विवरिषति-त्ते, विवरीषति-त्ते, वृवृषति-त्ते ।

वृत् 1 A, to exist, वर्त्तते, वर्त्तिता, वर्त्स्यति, वर्त्सिष्यते, वर्त्सिषीष्ट; अवृत्ते, अवृत्तत, वृत्तः, वर्त्तयति-त्ते, वृत्त्यते; विवृत्सति, विवर्त्सयते ।

वृष् 1 A, to grow, वर्द्धते, वर्द्धिता; वर्द्धिष्यति, वर्त्स्यते; वर्द्धिषीष्ट, ववृषे; अवृषत्, अवर्द्धिष्ट, वृद्धः, वर्द्धयति-त्ते, वृष्यते; विवर्द्धयते, विवृत्सति ।

वृष् 1 P, to rain, वर्षति, वर्षिता, वर्षिष्यति, वृष्यात्, ववर्षे, अवर्षीत्, वृष्टः, वर्षयति-त्ते, विवर्षयति ।

वृ 9 U, to choose, वृणाति, वृणीते; वरिता, वरीता; वृष्यात्, परिषीष्ट, वृषीष्ट, ववार, ववरे; अवारीत्, अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवृष्ट ।

वेप् 1 A, to shake, वेपते, वेपिता, वेपिष्यते, वेपिषीष्ट, विवेपे, अवेपिष्ट, वेपितः, वेपयति-त्ते, विवेपयते ।

व्यध् 1 P, to hurt, विध्यति, व्यद्धा, व्यत्स्यति, विध्यात्, विध्याध्, अस्यात्सीत्, विद्धः, व्याधयति-त्ते, विव्यत्सति ।

व्रज् 1 P, to go, व्रजति, व्रजिता, व्रजिष्यति, व्रज्यात्, वव्राज, अव्राजीत्, व्रजितः, व्राजयति, व्रज्यते, विव्रजयति ।

शंस् 1 P, to praise, शंसति, शंसिता शंसिष्यति, शंस्यात्, शशंस, अशंसीत्, शस्तः, शंसित्वा, शंसयति, शिशंसिषति ।

शक् 5 P, to be able, शक्नोति, शक्ता, शक्तिता, शक्यति, शक्यात्, शशाक, अशकत्, शक्तः, शाकयति-त्ते, शक्यते, शिश्नति ।

शंक् 1 A, to doubt, शङ्कते, शङ्कित्वा, शशङ्के, अशङ्किष्ट ।

सविध्यते; सोपीष्ट, सविषीष्ट; सुपुवे; असोष्ट, असविष्ट; सूतः, सूतः ।

सृ 1 P, to go, सरति, सर्ता, सरिष्यति, श्रियान्, ससार; असरत्, असापीत्; सृतः, सारयति-ते, श्रियते, सिरीर्षति ।

सृज् 6 P, to create, स्रष्टा, स्रश्यति, सृज्यात्, ससर्ज, अम्राक्षीत्, सृष्टः, सृष्टृम्, स्रष्टिः, सृज्यते, सिसृक्षति ।

सृष् 1 P, to go, सर्षति; स्रप्ता, सर्प्ता; स्रप्स्यति, स्रप्स्यति; सृष्यात्, ससर्ष, असृपत्, सृप्तः; सप्तुम्, सर्षयति-ते, सिषृप्सति ।

सेव् 1 A, to serve, सेवते, सेविता, सेविष्यते, सेविषीष्ट, सिषेवे, असविष्ट, सेयितः; सेययति-ते, सेभ्यते, तिसेविषते ।

सो 4 P, to destroy, स्यति, साता, सास्यति, संयात्, ससौ; असात्, असासीत्, सितः, साययति-ते, सीयते, सिपासति ।

स्तम् 1 A, 5 & 9 p, to support, स्तम्भते, स्तम्भोति, स्तम्भाति, स्तम्भिता, स्तम्भिष्यति, स्तम्भ्यात्, तस्तम्भ, अस्तम्भिष्ट, स्तम्भ्यः, स्तम्भित्वा, स्तम्भयति-ते, तिस्तम्भयति ।

स्तु 2 U, to praise, स्तोति, स्तुते, स्तुपीते, स्तोता, स्तोष्यति-ते, स्तूयात्, स्तोपीष्ट, तुष्टाय, तुष्टुये; अस्तापीत्, अम्नोष्ट; स्तुतः, स्ताययति-ते, स्तूयते, तुष्टयति-ते ।

स्तृ 5 U, to cover, स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृतां, स्तृतिष्यति-ते; स्तृष्यात्, स्तृपीष्ट, स्तरिषिष्ट; तस्तार, तस्तरे, अस्तरीन्, अस्तरिष्ट, अस्तरीष्ट; अस्तीष्ट, स्तृतः स्तीष्यते, तिस्तरिष्यति-ते ।

स्तृ 9 U, to cover, स्तृष्याति, स्तृणीते; स्तरिता, स्तरीता, like स्तृ ।

स्था 1 P, to stand, तिष्ठति; स्थाता, स्थास्यति, स्थे-
 , तस्थौ, अस्थात्, स्थितः, स्थापयति, स्थीयते, तिष्ठासति ।

स्ना 2 P, to bathe, स्नाति, स्नाता, स्नास्यति;
 णत्, स्नेयात्; तस्नौ, अस्नासीत्, स्नातः, स्नापयति,
 गति; स्नायते, सिष्णासति ।

स्नेह् 4 P, to have, affection for, स्निह्यति; स्नेहिता,
 1, स्नेहा; स्निह्यति, स्निह्यात्, सिष्णेह, अस्निहत्,
 1-स्नीहः; स्निहित्वा, स्नेहित्वा, स्निग्ध्वा, स्नीह्या;
 णति, सिस्निह्यति, सिस्नेह्यति ।

स्पन्द् 1 A, to throb, to go, स्पन्दते, स्पन्दिता, स्पन्दि-
 तस्पन्द, अस्पन्दिष्ट, स्पन्दितः, स्पन्दयति, स्पन्दते, विस्प-
 1 ।

स्पर्ध् 1 A, to challenge, to contend with,
 , स्पर्दिता, स्पर्दिष्यते, स्पर्दिषीष्ट, पस्पर्धे, अस्पर्दिष्ट,
 , विस्पर्धिषते ।

स्पृश् to touch, स्पृशति; स्पृष्टा, स्पृष्टा; स्पृशयति, स्प-
 स्पृश्यात्, पस्पर्श, अस्पर्शात्, अस्पृशतः, विस्पृशति ।

10 U, to desire, स्पृहयति-ते, स्पृहयाञ्चकार-चक्रे,
 1-त् ।

1 A, to smile, स्मेयते, स्मेता, स्मेयते, सिष्मिये,
 स्मितः, स्मापयति-ते, स्माययति-ते, स्मीयते, सिष्मयिषते ।

1 P, to remember, स्मरति, स्मर्ता, स्मरिष्यति,
 तस्मार, अस्मार्षीत्, स्मृतः, स्मारयति-ते, स्मरयति-
 1 ।

1 A, to embrace, स्वजते, स्वञ्जता, स्वञ्जते,

स्वङ्शीष्ट; सस्वजे, अस्वङ्कत, स्वङ्कतः, स्वङ्कयति-ते, स्वङ्कयते सिस्व-
क्षते ।

स्वप् 2 p, to sleep, स्वपिति, स्वप्ता, स्वप्स्यति, सुप्यात्,
सुप्याप, अस्वाप्सोत्, सुप्तः, स्वप्यते, सुपुप्सति ।

हन् 2 p, to kill, हन्ति, हन्ता, हन्तिष्यति, वध्यात्, जघानः
अवधीत्, अहत, अवधिष्ट; हतः, घातयति-ते, हन्त्यते, जिघांसति ।

हस् 1 p, to laugh, हसति, हसिता, हसिष्यति, हस्यात्,
जहास, अहसीत्, हसितः हासयति, हस्यते, जिहसिषति ।

हा 3 p, to abandon, जहाति, हाता, हास्यति, हेयात्, जहौ,
अहासीत्, हीनः, हित्वा, हातुम्, हापयति-ते, हीयते, जिहासति ।

हु 3 p, U, to sacrifice, जुहोति, होता, होष्यति, हूयात्,
जुदाय, अहोषीत्, हुतः, होतुम्, दापयति-ते ।

हृ 1 U, to steal, हरति ते, हर्षा, हरिष्यति-ते, हियान्,
हृषीष्ट, जहार, जहौ, अहर्षीत्, अहत; हतः, हारयति-ते, हियने
जिहीषति-ते ।

होष् 1 A, to neigh, होषते, होषिता, जिहोषे ।

हाद् 1 A, to be glad, हादते, हादिता, हादिष्यते,
हादिषीष्ट, जहादे, महादिष्ट, हादिनः, हादयति ते, जिहादिषते ।

हो 1 U, to call, हयति-ते, हाता, हायति हाता, हाप्यति-
ते, ह्यात्, हासीष्ट, जुदाय, जुदये, अहन-त, हतः, हुष्या,
हातुम्, हापयति-ते, ह्यते, जुहयति-ते ।

ENGLISH-SANSKRIT VERBS.

Abandon स्वञ्ज्, दा	Adopt परि ग्रह्	Arrive आ गम्
Abide वच्, रथा	Adore पूज्, अर्च्	Ascend आ-रह्
Abuse वृत्तम्, भर्त्सन्	Adorn भूष्, मण्ड्	Ascertain ज्ञा
Accept प्रति-ग्रह्, आ-दा	Advise उपा-दिशि	Ask प्रच्छ्
Accompany अनु-या	Afflict दुः, व्यथ्	Attack आ-ग्रम्
Accomplish साध्, विष्	Agitate शोभि	Attain प्र-भाप्
Account गम्	Agree स्वी-ह्	Attend उपा-रथ्
Accuse अभि-युज्	Allow अनु-मुद्	Attempt कर्, चर्
Acknowledge स्वी-ह्	Amend परि-शोधि	Attract आ-कृष्
Acquaint बोधि	Annex सम्-युज्	Await आ-रि
Acquire उपा-भर्त्	Answer प्रति-भात्	Awake जगृ
Act क्रे, ह्, कर्	Appear आ	Awaken प्रति-बोधि
Adapt बोधि	Appease साह्	Bake बप्
Add गम्-कम्	Apply कर्, गम्-युज्	Bathe गर्, स्ना
Address सम्-बोधि	Appoint नि-युज्	Be कर्, भू, विद्, कृद्
Admire प्र-बोधि	Approach पर-गम्	Be able कर्
Admit स्वी-ह्	Approve अनु-मुद्	Be afraid कर्
	Arrange कर्	Be angry कर्

Be born जन्	Breathe श्वास्	Commit कृ
„ careful अशुभ-धा	Bring आ-नी	Compare तुल्य
„ humble वि-नी	Bring forth सू	Compose प्र-नी
„ hungry दुग्ध	Build निर्-मा	Conceal गुह्य
„ pleased सुख	Burn दह्, ज्वल्य	Confess स्वी-कृ
„ poor दरिद्र	Buy क्री	Conquer जि
„ proud दम्	Calculate गण्य	Consider मन-स्य
Bear क्षम्, सह्य	Call ह्वे, आ-ह्वे	Consult सम्-संज्
Beat तड्, प्र-ह	Carry नी-वह्य	Control शास्य
Become भू	Catch पृ-ग्रह्य	Cook पच्य
Beg निश्च, याच्य	Cease वि-रम्य	Correct सं-शोधि
Begin आ-रम्भ्य	Censure निन्द्य	Count गण्य
Behave आ-चर्य	Challenge स्पर्ध्य	Cover प्र-आ-च्छद्य
Behold दृश्य, ईक्ष्य	Change परि-वर्त्य	Covet लुभ्य
Believe विश्वास्य	Cheat वञ्च्य	Create सृज्य
Bend नम्य	Check नि-सं-यम्य	Creep सर्य
Bewail दुःख्य	Chew चर्ष्य	Cross त्र्य
Bid आ-दिश्य	Choose चूष्य	Crush पृग्, ध्वज्य
Bind बन्ध्य, ग्रन्थ्य	Churn मन्थ्य	Cry कन्द्य, ध्वज्य
Bite दंश्य	Close सं-वृ-नि-मील्य	Cure किर्य
Blame निन्द्य	Collect वि, स-ग्रह्य	Curse शप्य
Bless आशिष्य दा	Colour रज्य	Cut ह्य, ध्वज्य
Blow धमा, प्र-ह	Combine सं-युज्य	Dance नृत्य
Boast वि-कथ्य	Come आ-गम्य	Deceive वञ्च्य
Bow नम्य, प्र-नम्य	Command आ-दिश्य	Decide निती
Break मत्स्य, मत्स्य	Commence आ-रम्भ्य	Declare वृज्य

Decorate मण्ड्	Disrespect अव-मन्	Enumerate गन्
Defeat पाथ भू	Distinguish वि-भिद्	Envy ईर्ष्य्
Defend रक्ष्, पा	Distress क्लिष्ट्	Escape निर्-गम्
Delay वि-रम्ब्	Distribute वि-भज्	Examine परि-ईक्ष्
Deny न-स्वी-कृ	Disturb बाध्	Exceed अति-कम्
Deposit न्यग्	Divide वि-भज्	Exempt मुञ्च्
Depute नि-युञ्च	Do कृ, वि-धा	Exercise अभि-कम्
Descend अव-त्	Doubt शक्य्	Exist भू, धृन्
Describe वर्ण्	Drag आ-हृप्	Expand वि-स्तन्
Deserve अर्ह्	Draw कृप्	Expect प्रति-ईक्ष्
Desire इप्, कम्	Drink पा	Expend वि-द्
Destroy छि, सो	Dry शुष्	Explain वर्ण्
Develop पुष्	Dwell वस्य्	Express प्र-दशि
Devour मस्य्, मृ	Earn अर्ज्	Fade म्लै, म्लै
Die मृ	Eat भद्, भज्, खाद्	Fail विफली-भू
Dig खन्	मश्, मुश्, मय्	Faint मुद्, मृ
Digest पच्	Echo प्रति-ज्वन्	Fall भ्रंश्
Disappear तिरो-भू	Elapse अति कम्	Fall down प्वत्
Disappoint आशा भङ्	Embrace निष्प, स्वञ्	Fasten क्क्य्, क
Discuss चर्च	Employ प्र-युञ्च	Favour अनु म्
Disguise आ-छद्	Endure शम्, शक्	Fear प्रस्य्, भी, ।
Dispense प्र-वी	Engage नि-युञ्च	Feed भोजि, वेदि
Disperse भग-कृ	Enjoy उप-भुञ्च	Feel अनु-भू
Dispute वि-वद्	Enquire अनु-श्च	Fetch आ-हृ
Disregard उप-ईक्ष्	Enter विश्	Fight युष्
	Entreat अनु-वी	Fill प, मृ

Find आत्, लम्	Govern शात्	Inform वि-जा, जि-विद्
Find out कुप्, मा	Grant अनु-मन्	Injure पीद्, ड्, हिम्
Fine दम्	Grasp मद्, घ	Inquire अनु-इद्, इन्द्
Finish सम् आत्	Graze घात्	Introduce मन्-
Fix क्त्, युत्	Grind मि, मूर्त्	आ हिम्
Flatter भमि र्त्	Grow वप्, र्द्, एर्	Invite आ हे
Flow वह्, पाप्	Grow old नृ	Join मिल्, युम्
Fly टी	Guess तर्त्	Jump षु
Follow अनु, गम्	Hang भा-अप-लभि	Keep रश्, पा
Forget वि-रम्	Happen षद्	Kill हन्, हिम्
Form रष्, कृ	Harass वुद्	Kindle ह्व्, जलि
Fry भ्रश्, मृञ्	Hate दुद्, अन्-पीर्	Kiss चुम्ब्
Gain लम्, प्र-भाप्	Have affection	Know ज्ञा, विद्, बुध्
Gather वि	for स्निह्	Labour श्रम्
Gaze निर-ईश्	Hear श्रु, भा-कर्ण्	Lament वि-लय, रद्
Get लम्, प्र-आत्	Heat कृ, दद्	Laugh हस्
Get up उत्-स्था	Help साहाय्यं-कृ	Lead नी, वह्
Give दा, अवि	Hesitate भा-शक्	Leap षु, लंप्
Give pain दु	Hide गुद्, पुर्	Learn शिक्ष्, पठ्
Give up त्यम्, दा	Hold ध्, मह्	Leave त्यन्, दा, मुन्
Glean उञ्च्	Hunt मृग्	Lick लिह्
Go द्, या, गम्	Hurry स्वर्	Lie down शी
Go away अय-गम्	Hurt पीद् वाष्	Live जीव्
Go beyond अति-कम्	Imagine ध्वै, चिन्त्	Long for इप्, एर्
Go forth प्र-स्था	Improve सं-वि-बुध्	Look दृग्, ईश्
Go out निर-गम्	Increase वृध्, पृध्	Lose भव हारि

Love प्र-नी	Order आ-दिश्	Proclaim वृप्
Make कृ, सृज्	Overcome वि-जि	Produce प्र-सृ
Marry परि-नी	Pain व्यथ्, पीड्	Prohibit नि-सिध्
Measure मा, तुज्	Paint चिच्, रञ्	Promise प्रति-शा
Meditate ध्यै, जप्	Pardon मृप्	Prosper कृष्, एष्
Melt गल्, वि-ही	Pass भति-षम्	Protect रक्ष्, पा, प्रै
Milk दुह्	Perform कृ, नि-धा	Pull कृप्
Mix मिध्	Perish नश्, ध्वस्	Punish दपद्
Mount आ-सद्	Permit अनु-ज्ञा	Purify पू
Mourn वि-रुध्	Pierce व्यध्, छिद्	Pursue अनु-सृ
Move सृप्, प्र-सृ	Play क्रीड्	Put स्थापि, नि-धा
Murmur जल्प्	Please प्री, तोषि	Put on परि-धा
Mutter जप्	Plough हृप्	Quarrel वि-वद्
Narrate कथ्, वर्ण्	Plunder लुण्, मुप्	Rain वृप्
Neglect उप-ईश्व्	Point out सूच्	Raise तुष्, डग्-हृप्
Neigh ह्येष्	Polish परि-कृ	Ramble परि-भद्
Nourish पुर्	Possess कथि कृ	Reach उपा-आ-गम्
Nurse सेव्	Pour पाति	Read पठ्, अधि-ह
Obey वचनं धु	Pour out कृ, वम्	Receive आ-श-पद्
Observe दश्	Practise अभि-भस्	Recognise धमि-ज्ञा
Obstruct रुध्	Praise वृत्, श्लाप्	Recommend प्र-वृत्
Obtain आप्	Pray ह्यु, प्र-अर्थ्	Refuse प्रत्या-रुधा
Occupy वि-आप्	Present उप-हृ	Regard भाव
Offer उप-हृ	Press पीड्, सृद्	Regret अनु-वृत्, श्चि
Open आ-वृ, उद्-घाटि	Prattle जल्प्	Reject निरी-कृ
Oppose नि-रुध्	Prevent नि-विप्	Rejoice मुहृ

Remain	स्था	Scratch	अप-कृ	Sound	ज्वर, गर्ज्
Remedy	प्रति-कृ	Search	वि-वि	Sow	वृ
Remember	स्मृ	See	ईध्, रश्, लोक्	Speak	वद्, वञ्, वृ
Remove	अप-नी	Seek	सृ	Spit	टिप्
Repeat	अनु-रूप	Seek for	वाञ्छ्	Split open	खुद्
Reply	प्रति-भाष	Seem	भा	Sport	क्रीड्, रम्
Report	वि-ज्ञापि	Sell	वि-को	Spread	तर, रृ
Reproach	गर्ह्	Send	प्र-हि, सं-त्रेरि	Spring	लंप्
Request	अनु-रूप	Serve	सेव्	Sprinkle	सिप्
Require	अप-ईध्	Set off	प्र-स्था	Stand	स्था
Respect	भा-ह	Set free	मुष्	Stand over	अधि-स्था
Return	प्रत्या-गम	Sew	सिप्	Start	प्र-स्था
	प्रति-दा, प्रति-अदि	Shake	कम्प्, वेप्	Starve	उप-वस
Rise	उत् इ, र्ह	Sharpen	तीक्ष्णी कृ	Steal	चुर, चुर
Roam	परि-कृ	Shave	मुण्ड्	Sting	इंस
Roar	गर्ज्, नद्	Shine	भा, घृत्, शुम्	Stop	नि वृत्
Rob	चुर, छुञ्	Show	निर्-दिश	Strike	प्र-ह, आह
Rub	घृ	Show	निर्-दिश	Strive	प्र-वृत्, वेत्
Rule	शास्	Sin	अप्, पापं कृ	Struggle	सुष
Run	धाष्, इ	Sing	गै	Study	अधि-ह
Sacrifice	हु, वञ्	Sink	मस	Succeed	सिप्
Salute	नम्	Sit	आस, उप-विश	Suffer	सम्
Satisfy	तोषि	Sleep	शी, रश्, निद्रा	Suggest	उप-नि-मन्
Save	रश्, त्रै	Smell	ग्रा	Suit	सुप्
Say	वद्, वृ, मन्	Smile	सिप्, वि-इत्	Surprise	अधि-वम्
Scatter	वृ	Smile	सिप्, वि-इत्	Surround	वृ

